मानसिक विकलांग व्यक्तियों में संप्रेषण कुशलताओं का विकास पर एक पुस्तिका

टि. ए. सुब्बराव

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)
मनोविकास नगर, सिकन्दराबाद - 500 009. आ. प्र. भारत

मानसिक विकलांग व्यक्तियों में संप्रेषण कुशलताओं का विकास पर एक पुस्तिका।

टि. ए. सुब्बराव

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)
मनोविकास नगर, सिकन्दराबाद - 500 009. आ. प्र. भारत

टि. ए. सुब्बराव
प्रमुख शोधकर्ता
मानसिक विकलांग व्यक्तियों में संप्रेषण कुशलताओं का विकास - प्रॉजेक्ट

सहायक शोधकर्ता
कविता नरसिम्हन
सौरव मुखोपाध्याय
एम राम किशन
राजु प्रताप

प्रमुख हिंदी अनुवादिका
डा मीरा दुबे

सहायक :
श्रीमति आरती होरा
कु. नागरानी

आवश्यक सूचना
इस प्रकाशन का पूरा अथवा कोई भी भाग, शिक्षण, प्रशिक्षण एव अनुसंधान के उद्देश्य से, एन. आई. एम. एच. से लिखित अनुमति लेने पर, किसी भी रूप मे प्रतिकृत किया जा सकता है जिसमे इसका हिन्दी अथवा किसी अन्य राज्यीय भाषा मे अनुवाद भी सम्मिलित है बरातै कि वह किसी अन्य लाभ के लिए न हों।

सर्वाधिकार सुरक्षित
कॉपी राईट © 1992
राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान,

ISBN 81-86594-03-5

प्रथम मुद्रण : 1992
पुनमुद्रण : 1997
पुनमुद्रण : 1999

कलाकार : **के. नागेश्वरराव**

*मुद्रक : **श्री रमणा प्रासेस**, सरोजिनी देवि शेड, सिकंदराबाद तार : 7811750*

मानसिक विकलांग व्यक्तियों में संप्रेषण कुशलताओं का विकास पर एक पुस्तिका

(युनिसेफ द्वारा सहायता प्राप्त "संप्रेषण कुशलताओं के विकास" पर अनुसंधान प्रॉजेक्ट)

प्रॉजेक्ट टीम

प्रमुख शोधकर्ता

टी.ए. सुब्बराव, वाक् एवं श्रवण विज्ञान व्याख्याता

सहायक शोधकर्ता

सुश्री कविता नरसिम्हन (18.9.89 से 12.4.90) **श्री रामकिशन** (16.10.90 से 5.8.91)
श्री सौरव मुखोपाध्याय (3.10.89 से 29.7..91) **श्री राजु प्रताप** (28.8.91 से 31.3.92)

प्रॉजेक्ट सलाहकार समिति

डॉ एन. रत्ना
660, डबल रोड,
कुवेम्पु नगर, मैसूर–570023

डॉ. एन. शिवशंकर,
सहायक आचार्य
वाक् चिकित्सा, निम्हैन्स, बेंगलूर

श्री पी. जयचंद्रन
प्रिंसिपल
बालविहार ट्रेनिंग स्कूल
6 लक्ष्मीपुरम स्ट्रीट, मद्रास

श्री ए रामाचार्या
समन्वयक
एस.आर.सी., ए.वाई.जे.एन.आई.एच.एच.
मनोविकास नगर, बोएनपल्ली, सिकंद्राबाद

डॉ. वसंता
वाक् विज्ञान व्याख्याता
उस्मानिया युनिवर्सिटी, हैदराबांद–500007

एन.आई.एम.एच.के. सदस्य

डॉ.डी.के. मेनन
निदेशक

डॉ. जयंती नारायण
सहायक आचार्य, विशेष शिक्षा

डॉ.टी. माधवन
सहायक आचार्य, मनोचिकित्सा

डॉ. सरोज आर्या
सहायक आचार्य, चिकित्सा मनोविज्ञान

श्री एन.सी. श्रीनिवास
वाक् चिकित्सक

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)

मनोविकास नगर, सिकन्दराबाद - 500 009. आ. प्र. भारत

आभार

प्रॉजेक्ट के निर्माण के लिये युनिसेफ द्वारा प्राप्त आर्थिक तथा अन्य सहायता के लिये हम युनिसेफ के हार्दिक आभारी है । राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान के निदेशक, उप निदेशक, लेखा-विभाग तथा प्रशासन कर्मचारी जिन्होंने इस प्रॉजेक्ट की पूर्णता के लिये सहयोग दिया हम उन सबका आभार प्रकट करते हैं ।

सुश्री कविता नरसिम्हन, श्री सौरव मुखर्जी तथा श्री रामकिशन, एम का हम हार्दिक आभार मानते हैं, जिन्होंने इस प्रॉजेक्ट के लिये विभिन्न स्तरों पर खोज करने में मदत की । श्री राजु प्रताप, सहायक शोधकर्ता जो प्रॉजेक्ट पूर्ण होने तक हमारे साथ रहे, हम उनका भी कृतज्ञ हैं ।

प्रॉजेक्ट सलाहकार समिति के सदस्यों ने इस प्रॉजेक्ट की उन्नति में आवश्यक मार्गदर्शन व प्रोत्साहन दिया व पुस्तिका को अंतिम रूप देने में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हम उनका भी हृदयपूर्वक आभार मानते हैं । ठाकुर हरिप्रसाद इन्स्टिट्यूट फॉर रिसर्च एंड रिहैबिलिटेशन ऑफ द मेंटली हैंडिकैपड चिल्ड्रन, दिलसुखनगर, हैदराबाद, हैदराबाद युनिट फॉर मेंटली रिटार्डेड पर्सन्स, आंध्र महिला सभा, विद्यानगर, हैदराबाद, तथा मनोचैतन्या ईस्ट मारेडपल्ली, सिकंदराबाद, के व्यवस्थापकों ने अपने स्कूल में क्षेत्र परिक्षण कार्य आयोजित करने की आज्ञा दी, उनके भी आभारी हैं । विशेष शिक्षा के सभी शिक्षक जिन्होंने क्षेत्र परिक्षण में भाग लिया, प्रेरणा दी, जिज्ञासा बताई व मदत की और हमें अमूल्य सहायता दी, जिसके कारण पुस्तिका की सामग्री में मदत मिली, उनके हम हमेशा आभारी है ।

इस प्रॉजेक्ट के हिंदी अनुवाद कार्य में तीन प्रतिष्ठित व दक्ष महिलाओं ने सहयोग दिया । डॉ. मीरा दुबे हिंदी प्राध्यापिका, एन.आई.एम.एच., श्रीमती आरती होरा, कु. नागरानी बहुत ही कम समय में अनुवाद कार्य पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । डॉ. डी. वसंता, उस्मानिया युनिवर्सिटी, श्रीमती गायत्री, लेक्चरर इन अप्लाइड लिंग्विस्टिक्स, सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ हिंदी हैदराबाद, जिन्होंने सूची तैयार की तथा हिंदी स्वनिमों का वर्णन किया, हम उनके कृतज्ञ हैं ।

इससे पूर्व हिंदी में किसी प्रकार की सामग्री उपलब्ध नही है, इसी कारण कई शब्दों को हमने उचित जानकर उनका प्रयोग किया है । इस कठिनाई को दूर करने के लिये हमने हिंदी शब्द के साथ अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है । अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद में तकनीकी सूचना का भावानुवाद करने में कठिनाईयाँ बहुत हुई । आशा है कि, पाठक इन वाक्यों का अर्थ व उद्देश्य जान सकेंगे। प्रॉजेक्ट टीम को यह ज्ञात है कि, जब एक बार और इसकी पुनरावृत्ति करेंगें तब इसके अनुवाद में कुछ अधिक परिवर्तन दिखाई देगा । दिये-गये समय के अंदर हमने बहुत ही पुनरावृत्ति करते हुये उत्तम कार्य का हर संभव प्रयास किया है ।

श्रीमती गायत्री ने इस पुस्तिका के कई अंशों को पढ़कर उसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने का सुझाव दिया । डॉ. मीरा दुबे ने हिन्दी अनुवाद में परिवर्तन करने में घंटों बैठकर हमारी मदत की उनके पांडित्य एवं सहिष्णुता के बिना इस पुस्तिका की पूर्णता असंभव थी, हम उनका आभारी है हिंदी अनुवादकों ने इस पुस्तिका को पढ़ने योग्य बनाया हम उन सबके सहयोग के लिये कृतज्ञ हैं।

कु. पी. नागराणी ने अपने दैनिक कार्य के बावजूद जो मदत की, उनके भी कृतज्ञ है । श्री ए. वेंकटेश्वर राव, आशुलिपिक ने भी मदत की हम उनके कृतज्ञ है ।

श्री एन.सी. श्रीनिवास, श्री जी. मोहन मूर्ती वाक् चिकित्सक, एन.आई.एम.एच. ने स्वाभाविक हावभाव एव भाषा निर्धारण टूल्स के क्षेत्र परिक्षण मे सक्रिय भाग लिया । इन दोनों का मॅन्युअल में प्रयोग किया गया है । एन.आई.एम.एच. के सूचना एवं प्रसार विभाग ने मदत दी हम उनका भी आभार है । सांख्यिकी विश्लेषण में की श्री सूर्य प्रकाशम् ने जो मदत श्री उनका भी कृतज्ञ है ।

मानसिक विकलांग बच्चे जिन्होंने अति महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिनके द्वारा हम बहुत कुछ संप्रेषण समस्याओं के बारे में सीखा और सुधारा, इस अनुभव के बिना इस मॅन्युअल की पूर्णता असंभव थी । हमें आशा है कि, इस पुस्तक के द्वारा संप्रेषण समस्याओं के लिये उनको अच्छी सेवायें प्राप्त होंगी ।

इस मॅन्युअल की सफलता के लिये जिन सबने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता की, उनका धन्यवाद । इस मॅन्युअल के अगले संस्करण में सुधार लाने के लिये पाठकों की टिप्पणियाँ, सुझाव आमंत्रित हैं ।

टी.ए. सुब्बराव
प्रमुख शोधकर्ता

अनुक्रमणिका

		पृष्ट संख्या
पुस्तक स्वंधी सूचना		V
अध्याय 1	मानसिक मंदन	1
अध्याय 2	प्रमुख शब्दावली एवं धारणाएँ	17
अध्याय 3	वाक्-ध्वनि उत्पादन	39
अध्याय 4	सामान्य बच्चों में वाक् तथा भाषा अधिगम का विकास	83
अध्याय 5	मंद बुद्धि बच्चों में संप्रेषण एवं भाषायी समस्यायें	123
अध्याय 6	मानसिक मंद बच्चों में वाक् व भाषा कठिनाईयों का निर्धारण	137
अध्याय 7	भाषा व संप्रेषण अंतराक्षेपण	267
शब्दावली –		375
संदर्भ-ग्रंथ-सूची –		381
अतिरिक्त पुस्तकों की सूची –		384

पुस्तक संबंधी सूचना

हम सब मानसिक मंद बच्चों से संबंधित है, और उनको आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं । आत्मनिर्भर बनाने के लिये संप्रेषण, भाषा और वाक् में त्रूटियाँ बाधक होती हैं ।

यह कोई आश्चर्यजनक बात नही कि, बच्चो में अधिक से अधिक बोलने की मांग होती है। यह भूमिका पारंपरिक रूप से वाक् चिकित्सक या थैरेपिस्ट को दी गई है, और यह सोचा जाता है कि, स्पीच थिरैपी चार दिवारी के अंदर की जाती है । समय बदलता जा रहा है और उसके साथ विचार भी । अब कहा जा सकता है कि, वाक् चिकित्सक जैसे ही अभिभावक और विशेष शिक्षक जो मानसिक मंद बच्चों के प्रमुख संपर्क बिंदु हैं, दोनों समान रूप से मानसिक मंद बच्चों को संप्रेषण कुशलताओं को सीखा सकते हैं । विशेष शिक्षकों के लिये प्राप्त वर्तमान प्रशिक्षण कार्यक्रमों में वाक् व भाषा के बारे में बहुत कम सूचना मिलती है वो भी सैध्दांतिक पहलू (थियरेटिकल) पर । इस क्षेत्र में साधन व लिखित सामग्री की भी कमी है, और साथ ही वाक् चिकित्सकों की संख्या कम है, और वे बड़े शहरों में ही मिलते हैं । इसलिये जो कठिन पाठ्य-पुस्तकों से सूचना प्राप्त करना व इकट्ठ करना महत्वपूर्ण है । इस पुस्तिका में ऐसा प्रयास किया गया है, वाक् / भाषा चिकित्सा के क्षेत्र से विशेष शिक्षकों तक संप्रेषण कुशलता की सूचना पहुँचाना चाहते हैं । वाक् चिकित्सक की भूमिका मुख्यतः सुसाध्यकारी ही है । पुस्तक का सामान्य उद्देश्य विशेष शिक्षा के शिक्षकों को प्रेरणात्मक मार्गदर्शन करना है ।

मॅन्युअल का विशेष उद्देश्यः

1. मंदबुद्धि बच्चों की भाषा और संप्रेषण के बारे में सूचना विशेष शिक्षकों को देना ।
2. विशेष शिक्षकों को मदत देना कि, विशेष सूचना जैसे-सामान्य भाषा-विकास और उसका निर्धारण व अंतराक्षेपण प्रणालियों पर प्रभाव ।
3. उनको यह बताना है कि, नैसर्गिक परिस्थितियों में अवलोकन की पद्धतियाँ, अभिभावकों से सूचना प्राप्त करने की कुशलताओं का प्रयोग करते हुये बेस लाईन आंकडे का निर्धारण करना।
4. विशेष शिक्षकों को एक विवरणात्मक और बहु उद्देशीय-अंतराक्षेपण कार्यक्रम बनाने में और कक्षाओं में उनको लागू करने में भी सहायता करना ।

विशेष प्रशिक्षण शिक्षक जो इस मॅन्युअल के लक्ष्य पाठक हैं, वे डिप्लोमा इन मेंटल रिटार्डेशन (डी.एम.आर.) या उसके समांतर शिक्षण प्राप्तकर्ता होंगे । क्षेत्र परीक्षण (फिल्डटेस्टिंग) के समय इस बात का मूल्यांकन किया गया है कि, इस मॅन्युअल का उपयोग करने में प्रशिक्षण आवश्यक है कि,

नही । क्षेत्र–परिक्षण से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि, दो समूहों के बीच में कोई विशेष अंतर नही। एक समूह है विशेष शिक्षक जिन्हे मॅन्युअल का प्रयोग करने से पहले प्रशिक्षण लिया और एक समूह है, जिन्होंने मॅन्युअल का प्रयोग करने से पहले प्रशिक्षण नही लिया । इसलिये पूर्वापेक्षित अधिक प्रशिक्षण अनिवार्य नही है, लेकिन ऐसे पूर्व–प्रशिक्षण कार्यक्रम मैन्युअल की उपयुक्तता को बढ़ावा देती है ।

इस मॅन्युअल में कुल मिलाकर सात प्रमुख अध्याय हैं । जो मूल जानकारी, निर्धारण तथा अंतराक्षेपण के विषयों पर नजर डालते हैं । अध्याय एक में मानसिक मंदन की जानकारी है, जो पुनश्चर्या के रूप में प्रयुक्त है, अध्याय दो, तीन और चार में दी गई सूचना निर्धारण और अंतराक्षेपण कार्यक्रम लागू करने के लिये मूल है । इनमें प्रमुख विषय हैं शब्दावली और धारणायें, वाक्–ध्वनि उत्पादन और सामान्य भाषा विकास । अध्याय पाँच–मानसिक मंद में बच्चों में संप्रेषण समस्याओं पर है। अध्याय छः निर्धारण संबंधी सूचना है, जो निर्धारण की धारणा, निर्धारण के क्षेत्र, सूचना प्राप्त करने की पद्धतियाँ आदि पर प्रकाश डालता है । संबंधित प्रोफॉमें भी दिये गये हैं । अध्याय सात में वाक्, भाषा व संप्रेषण समस्याओं का अंतराक्षेपण की जानकारी है, जो मौखिक व सांकेतिक दोनों पद्धतियों को अपनाता है । यह आशा है कि, यह सूचनायें विशेष प्रशिक्षण शिक्षकों को सहायता करेंगें और अपने दैनिक कार्य में सम्मिलित होंगें । सभी अध्यायों के अंत में स्वतः परीक्षण और उनकी कुजी भी दी गई है, जिससे सीखने में आसानी होगी । मॅन्युअल में प्रयुक्त भाषा का स्तर सरल है और उचित आकृतिया, चित्र तथा आंकडे में दिये गये हैं ।

सुझाव और टिप्पणिया स्वागत है ।

अध्याय-1

मानसिक मंदन (मेंटल रिटार्डेशन)

हमारे आसपास के लोगों से संप्रेषण करना हमारे जीवन की एक विशेषता है । "संप्रेषण" को सक्षम बनाने के लिये मनुष्य के सभी गुणों का समुचित रूप में समन्वयन होना चाहिये । संदर्भानुकूल संप्रेषित करना, विभिन्न मनसत्वों के व्यक्तियों के साथ कुशलतापूर्वक व्यवहार करना, तथा अपने अनुभवों के आधार पर संप्रेषण-क्षमता बढ़ाना आदि मुख्य विशिष्ट गुण मनुष्य में विराजमान होते हैं । अतः यह आश्चर्य की बात नही है कि, मानसिक मंद बच्चों में संप्रेषण की कमियाँ होती हैं, ऐसे बच्चों में संप्रेषण शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता होती है । इसका अर्थ है- संप्रेषण की कमियों को समझने के लिये बच्चे और पर्यावरण दोनों को समझना जरूरी है । मानसिक मंदन की धारणा को समझना, इस कार्यक्रम का पहला कदम है ।

इस अध्याय का उद्देश्य मानसिक मंदन की धारणा तथा मुख्य लक्षण बताना है । इन उद्देश्यों में प्रमुख हैं -

1. मानसिक मंदन की परिभाषा देना
2. मानसिक मंद व्यक्तियों के लक्षण, कारण तथा निवारण की जानकारी देना, और
3. मानसिक मंद व्यक्तियों में संप्रेषण कमियों का विवरण देना ।

मानसिक मंदन* (मेंटल रिटार्डेशन)

"मानसिक मंदन" या "मानसिक विकलांग" यह एक ऐसी स्थिति है,

* इस अध्याय का अधिक भाग एन.आई.एम.एच. के "मॅन्युअल्स् ऑन मेंटल रिटार्डेशन" से लिया गया है । ये मॅन्युअल्स "युनिसेफ प्रॉजेक्ट, डेवल्पमेंट ऑफ ट्रेनिंग मॅन्युअल्स" के अंतर्गत 1988 में पूरा किया गया है । निवेदन पर यह मैन्युअल की प्रतियाँ एन.आई.एम.एच. द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं ।

जिसमें मानसिक तथा शारीरिक विकास धीमें होता है । ऐसी मानसिक मंद बच्चा हम उम्र बच्चों से मानसिक गतिविधियों के विकास में धीमा होता है । उदाहरण के लिये-दस वर्षिय मंदबुद्धि बच्चा तीन या चार वर्षीय बच्चे जैसा व्यवहार कर सकता है ।

कई बार एक मानसिक मंद व्यक्ति, मानसिक रोगी व्यक्ति से परेशान (कम्फ्युज) होता है । किंतु, वे एक नहीं है ।

मानसिक रोगी व्यक्ति का शारिरिक विकास, मानसिक योग्यता सामान्य होती है । यह बिमारी (रोग) किसी भी आयु में पाई जा सकती है, पढ़े-लिखे लोगों में भी । मानसिक रोग को साधारणतः औषधिय सहायता से रोग मुक्त किया जा सकता है । जबकि, मानसिक मंदिता एक ऐसी स्थिति है, जिसे रोग मुक्त नहीं किया जा सकता । किंतु ऐसे व्यक्तियो को सीखने में मदत की जा सकती है ।

मानसिक मंदिता की परिभाषा –

मानसिक मंदिता की कई परिभाषायें है । सभी व्यावसायिकों द्वारा सामान्यतः पाई गई परिभाषा अमेरिकन असोसियेशन ऑफ मेंटल रिटार्डेशन का अधिक प्रयोग किया गया है।

"मानसिक मंदन ऐसी स्थिति को कहा जाता है, जिसमें व्यक्ति में साधारण बुद्धि व्यवहार में औसत से कभी, (सिग्निफिकेंटली सब ॲवरेज, जनरल इन्टेलेक्चुअल फंक्शनिंग) जिससे साथ साथ अनुकुल व्यवहार में क्षति पहुँचती है, करकरेंट इम्पेअरमेंट्स इन अडॅपटिव बिहेवियर) तथा यह सब विकास की अवधि में होते है (डेवल्पमेंटलपिरेड)" ग्रासमैन 1983.

इस परिभाषा के अनुसार एक व्यक्ति को मंदबुद्धि कहने के लिये तीन पहलुओं की आवश्यकता है ।

1. साधारण बुद्धि व्यवहार में औसत से कभी,
2. अनुकूल व्यवहार में क्षति ।
3. यह दोनों क्षतियाँ विकास की अवधि में प्रकट होना ।

जब आई.क्यु. 68 या 70 से कम होता है तब साधारण बुद्धि व्यवहार में औसत की कमी कहलाती है । इस आई. क्यु को किसी मानक बुद्धि मापक (इंटेलिजेन्स टेस्ट) पर पाया जाता है ।

दूसरा पहलू अनुकूल व्यवहार में कमियों के बारे में विचार करता है । अनुकूल व्यवहार की ऐसे परिभाषित किया जाता है, जैसे– "एक व्यक्ति को अपने सांस्कृतिक तथा व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को प्रभावकारी रूप से निभाना । यह अनुकूल व्यवहार संवेदनात्मक (सेंसरी मोटर) कुशलता, संप्रेषण कुशलता, स्वावलंबन कुशलता आदि प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखा जाता है । यही अनुकूल व्यवहार बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था में, तर्क का प्रयोग करना (रिजनिंग) तथा निर्धारण करने (जजमेंट) में प्रकट होता है । वैसे ही प्रौढ़ावस्था में व्यावसायिक तथा सामाजिक जिम्मेदारियों में अनुकूल व्यवहार व्याप्त है । इनमें से किसी भी कमी को अनुकूल व्यवहार की कमी कहा जाता है। निम्नलिखित स्थितियों में व्यवहार की कभी कहा जा सकते हैं । उदाहरण के लिये– एक 3 वर्षिय बच्चा जिसे कोई शारीरिक दोष नहा है, वो नही चल सकता है, एक दस वर्षिय बच्चे में मलमूत्र नियंत्रण नही है, तथा 18 वर्षिय लडके में 5 रूपये के नोट की पहचान नहीं है ।

परिभाषा का तीसरा पहलू – मानसिक मंदन का प्रारंभ कहां होता है, उस पर निर्भर है । यह विकास की अवधि 18 वर्ष से कम है । संक्षेप में, एक व्यक्ति को 18 वर्ष की आयु से पहले, साधारण बुद्धि व्यवहारमें कमी दिखाता है, और अनुकुल व्यवहार में क्षति पाई जाती है तब उसे मंद बुद्धि कहा जाता है ।

मानसिक मंदन का वर्गीकरण–

इस वर्गीकरण का उद्येश्य है –

1. विश्व में स्वीकृत एक समान पद्धति की रचना.

2. नैदानिक चिकित्सीय तथा अनुसंधान उद्येश्यों में सहायता देना.

3. निवारण (प्रिवेंन्शन) प्रयत्नों में सहायता देना.

मानसिक मंदन के वर्गीकरण भी विभिन्न पद्धतियाँ है । वे है– चिकित्सिय (मेडिकल), मनोवैज्ञानिक, तथा शैक्षिक, जैसे कि, सारणी 1 में दिया गया है, चिकित्सीय वर्गीकरण कारणों के आधार पर, मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण बौद्धिक स्तर (लेवेल ऑफ इंटेलिजेन्स) पर, तथा शैक्षिक वर्गीकरण वर्तमान कार्य स्तर (करंट लेवेल ऑफ फंक्शनिग) पर आधारित है ।

वर्गीकरण की सामान्य पद्धतियाँ है – चिकित्सिय, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षणिक ।

सारणी 1

मानसिक मंदन का वर्गीकरण

चिकित्सिय	शैक्षिक	मनोवैज्ञानिक
मानसिक मंदन के कारण		
1. संक्रमण तथा (इंटॉक्सिकेशन)	1. शैक्षिक (एजुकेबल)	1. अल्प (भाईल्ड) आई.क्यु. 50–69 के बीच में
2. आघात या शरीर संबंधि (फिजिकल एजेंट)	2. प्रशिक्षणीय (ट्रेनेबल)	2. मध्यम (मॉडरेट) आई.क्यु. 35–49 के बीच में
3. उपपाचन या पोषण (मेटाबॉलिज्म एंड न्युट्रिशन)	3. अभिरक्षात्मक (कस्टोडियल)	3. अति (सिवियर) आई.क्यु. 20–34 के बीच में
4. स्थूल मस्तिष्क रोग (ग्रॉस ब्रेन डिसिज) (प्रसवोत्तर)		4. अत्यधिक (प्रोफाउंड) आई.क्यु.–20 से कम
5. प्रसव पूर्व अज्ञात प्रभाव		
6. क्रोमोजोम्स् की अव्यवस्था		
7. गर्भावस्था की अव्यवस्था (गेस्टेशनल डिसऑर्डर)		
8. मनोचिकित्सिय कारण		
9. वातावरण का प्रभाव		
10. अन्य प्रभाव		

विभिन्न वर्गीकरण एक मानसिक मंद व्यक्ति के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं । यह अपनी स्थिति, शिक्षण, उचित व्यवहार तथा स्वतंत्रता की डिग्री आदि के बारे में जानकारी प्रदान करते है । मानसिक मंद व्यक्तियों के लक्षण अपने मंदन के स्तर पर आधारित है । आजकला मानसिक मंदन के स्तर को व्यक्त करने के लिये मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण के अल्प, मध्यम, अति, अत्यधिक-शब्द प्रयुक्त हुये है ।

अधिकतर प्रशासनिक उद्येश्यों के लिये वर्गीकरण तथा लेबल का प्रयोग करना चाहिये।

सामान्यतः वर्गीकरण को लेबल प्रशासनिक उद्येश्यों के लिये ही प्रयुक्त करना चाहिये । उदाहरण के लिये-सामाजिक सुविधायें (सोशल बैनिफिट्स) जैसे यात्रा रियायतें, संवहन भत्ता, नौकरी में आरक्षण आदि ।

एक शिक्षक (एजुकेटर) को चाहिये बच्चे वर्तमान कार्य स्तर पर ध्यान दें यह बच्चों के लिये कार्यक्रम तैयार करने में सहायक होगा, जिससे बच्चा समाज में स्वतंत्र रूप से जियें ।

मानसिक मंद व्यक्तियों के लक्षण -

एक मानसिक मंद व्यक्ति के लक्षण की रूपरेखा देना कठिन है, क्योंकि, सभी व्यक्तियों के लक्षण एक से नही हैं । और एक बच्चे में सभी प्रकार के लक्षण भी नहीं देख सकते । फिर भी, एक शैक्षणिक कार्यक्रम बनाने के लिये शिक्षक को लक्षणों की जानकारी आवश्यक है ।

शारीरिक लक्षण -

1. अक्सर ये बच्चे सामान्य बच्चों की तुलना में अपने विकास में धीमें दिखाई देते हैं । जैसे बैठना, खड़े होना, चलना, बातचीत करना आदि । अल्प मंद बुद्धि बच्चे सामान्यतः हम उम्र् बच्चों से शारीरिक लक्षणों से भिन्न नही है कुछ मध्यम या अति मंद बुद्धि बच्चों के चलने का ढंग, (गेट), भद्दा (क्लम्जी)

होता है तथा गामक (मोटर) समन्वय मे कमी होती है ।

2. शारीरिक लक्षण व्यक्ति के मानसिक मंदन का कारण तथा चिकित्सीय रूपरेखा (क्लिनिकल फीचर्स) पर आधारित है । उदाहरण के लिये –

अत्यधिक मंदबुद्धि व्यक्ति में शारीरिक विकलांगता दिखाई देता है ।

जैसे माइक्रोसिफिली व्यक्ति का सर छोटा होता है, तथा ठुड्डी और मस्तक पश्चगामी होता है वैसेही हायड्रो सिफलस व्यक्ति का सिर बड़ा होता है । डाउन सिन्ड्रोम बच्चे के कुछ विशिष्ट लक्षण इस प्रकार होते है – जैसे – तिरछी आँखे, चपटी नाक, खुरदरी (ब्लेंबी) चमडी, तथा तर्जनी पिछे की ओर मुडी हुई , पैर के अंगुठे के बीच का अंतर अधिक होना तथा फटी हुई जीभ आदि । जब मानसिक मंद व्यक्ति में सेरेब्रल पाल्सी भी होता है, तब हाथ–पैर में कडापन होता है, तथा मुँह में लार टपकती है ।

3. कुछ अल्प संख्यक मानसिक मंद व्यक्ति में विविध या बहुविध विकलांगता होती है, जैसे दृष्टि, श्रवण तथा गामक क्षमता में क्षति होती है ।

सामाजिक लक्षण –

मानसिक मंद व्यक्तियों में सामाजिक लक्षण अधिकतर पहचाने जाते है । ये इसलिये है कि, अपनी योग्यता और समाज से अपेक्षित योग्यता में बडा अंतर है । इसके कुछ लक्षण इस प्रकार है ।

1. मानसिक मंद व्यक्तियों में एक सामान्य लक्षण है अल्पकालिक सावधानी तथा एकाग्रता का अभाव, है । वे एक क्रिया पूर्ण करने से पहले, दूसरी क्रिया प्रारंभ करते है ।

2. ऐसे मानसिक मंद व्यक्ति भी है जो निष्क्रिय है, किसी कार्य को करने के लिये उत्साह नही दिखाते । किसी एक ही कार्य

को लगातार करते है या एक क्रिया से दूसरे क्रिया में बदलने में कठिनाई अनुभव करते है ।

3. कुछ में समस्यात्मक व्यवहार दिखाई देते हैं जो अपने व दूसरो के लिये हानि कारक हो सकते हैं । स्वयं हानिकारक व्यवहार के उदाहरण हैं –हाथ काटना, अपने ही बाल खिंचना, नाखून काटना, आँख में चुभोना, चेहरे पर मारना, दिवार पर सर पटकना, आदि । जो व्यवहार अन्य व्यक्तियों के लिये हानिकारक है, मारना और चिकोटी काटना, वस्तुयें फेंकना, कपडे फाडना तथा वस्तुयें तोडना आदि हैं । अन्य समस्यात्मक व्यवहार घर से भाग जाना, चोरी करना आदि है । इनमें से कई व्यवहारों को प्रशिक्षण द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है ।

मानसिक मंद बच्चों के अधिकतर समस्यात्मक व्यवहारों को नियमित अंतराक्षेपण के द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है ।

4. कुछ मानसिक मंद व्यक्ति ऐसे होते है जो अपने आसपास के वातावरण से तटस्प होते है तथा श्रवण दोष न होने पर भी वे संप्रेषण मे भाग नही लेते । इनमें से कुछ व्यक्तियों में बिना कारण हंसना या बात करना भी देखा जाता है ।

5. जबकि, कुछ अल्प और मध्यम मानसिक मद व्यक्ति प्रशिक्षित नियमित कार्य कर सकते है, उनकी समस्या सुलझाने की योग्याता कम होती है ।

वे निर्णय लेने में अशक्त होते है, उनकी कार्य – कुशलता अच्छी होने पर भी समाजिक प्रतियोगिता कम होने से कारण भी नौकरी खो सकते है ।

वाक्र व भाषा के लक्षण –

वाक्र व भाषा के विकास देरी मानसिक मंदन का एक लक्षण है । लगभग 80% व्यक्तियों में वाक् व भाषा के संप्रेषण के दोष देखे जा सकते है संप्रेषण दोष की व्याप्ति में दूसरों की बात समझने व बोलने में कठिनाईयाँ और बोलचाल नही भी हो सकती है । कुछ सामान्य लक्षण निम्नलिखित है ।

1. लगभग 40% बच्चे सांकेतिक (नॉन वर्बल) होते है । जो नही बोल सकते । कुछ लोग कुछ शब्दों और इशारों का उपयोग करते है ।

2. व्यक्ति, वस्तुओं तथा वातावरण में क्रियाओं के बारे में जानकारी कम होने के कारण मानसिक मंद व्यक्ति की भाषा क्षमता सीमित होती है ।

3. मानसिक मंद व्यक्ति दैनिक आदेशों को छोड़कर दूसरों की बात समझने मे कठिनाई दिखाते है । सामान्यतः अप्रत्यक्ष प्रश्न (इनडायरेक्ट क्वश्चन) कहानियों, चुटकुले, व्यंग्य समझने में कठिनाई अनुभव करते है ।

4. कुछ मानसिक मंद बच्चे शब्दों को अलग - अलग बता सकते है, किंतु शब्दों को मिलाकर वाक्य नही बना सकते। जब वाक्यों का प्रयोग करते है, वो ऐसे लगते है जैसे तार संदेश हों ।

5. जब ये बच्चे बात करते है, उच्चारण दोषों के कारण स्पष्टता या ग्राहयता कम होती है । इससे उनको बातचीत समझने में कठिनाई होती है ।

6. कुछ मानसिक मंद बच्चे अन्यों की बातचीत का अनुकरण करते है (इकोलेलिया) । ये अनुकरण अंशतः या पूर्ण बात भी हो सकता है ।

7. उनमें से कुछ व्यक्ति वाक्य बोल सकते है लेकिन उनका व्याकरण शुध्द नही होता । साथ ही वाक्यों का अनुचित रूप से भी प्रयोग किया जा सकता है । वे एक जैसा (स्टिरियो टाईप) भी हो सकता है ।

8. कई मानसिक मंद बच्चे प्रश्न पूछने व बातचीत प्रारंभ करने में कठिनाई दिखाते है ।

अधिकांश (80% से अधिक) मानसिक मंद बच्चों के वाक्, भाषा व संप्रेषण समस्यायें होती है ।

मानसिक मंद बच्चों में दूसरों की वाक् को समझने की समस्या होती है ।

प्रसव पूर्व कारण – (प्रीनेटल कॉजेस)

इसमें गर्भावस्था के समय प्रभावी कारण है । इसमें माँ को हानिकारक संक्रामक रोग है जैसे – पीलिया (जॉन्डिस), छोटी माता (चिकन पॉक्स), खसरा (मीजल्स) आदि । ये रोग गर्भावस्था के पहले तीन महिने में अति हानिकारक सिध्द होते है । इसके अतिरिक्त अनेक कारण प्रभावी हो सकते हैं जैसे – दुर्घटना के कारण माँ के उदर को हानी, गर्भावस्था के पहले महिनों में एक्सरे का प्रभाव, बिना सलाह के दवाईयाँ लेना, गर्भापात का प्रयास, गर्भावस्था के समय मिगी के दौरे पडना, आर.एच. इक्यॅटिबिलिटी आदि । खून के आर. एच. इनकम्पॅटिबिलिटी में माँ और भ्रूण का खून अलग–अलग होता है : जैसे माँ का एच नेगेटिव और बच्चे को आर.एच. पॉजीटिव गर्भावस्था के समय स्त्री का मद्यपान करना तथा तम्बाखु खाना बच्चे के लिये हानिकारक है । क्रोमोजोमस, की अव्यवस्था भी मानसिक मंदन का कारण हो सकती है । जैसे – डाउन्स सिन्ड्रोम में एक क्रोमोजोम ज्यादा होता है माँ का कुपोषण भी एक कारण सिद्ध हुआ है ।

गर्भावस्था के समय बिना सलाह के दवाई लेना हानिकारक है ।

प्रसव संबंधी कारण – (नेटल कॉजेस)

इसमें बच्चे के प्रसव के समय के कारण बच्चे के लिये जो हानिकारक होते है वो शामिल है । उदाहरम के लिये – समय से पूर्व जन्म होना, दीर्घकाल तक प्रसूति, जब ऑक्सीजन का सप्लाई बच्चे के मस्तिष्क में कम होता है, प्रसुति के समय बच्चे का असामान्य प्रस्तुतिकरण (प्रेजेन्टेशन), छोटी श्रेणी के कारण आसान प्रसव न होना, फोरसेप्स, का अनुचित प्रयोग, या अशिक्षित व्यक्तियों से प्रसव कराना, तथा बच्चे का जन्म के समय देर से रोना

बच्चे का देर से रोना मस्तिष्क आघात का कारण बन सकता है ।

प्रसवोत्तर कारण (पोस्टनेटल कॉजेस)

प्रसवोत्तर कारण या बच्चे के जन्म के बाद के कारण अनेक हैं जिसके प्रभाव से बच्चे मानसिक मंद हो सकते हैं । उदाहरण के लिये – जन्म वजन कम (लो बर्थ वेट) मेटॉबॉलिक दोष, ब्रेन फिवर,

या मेनिनजाईटिस, इनसिफेलाईटिज्, मिरगी के दौरे, खसरा, छोटी माता, सर पर चोट लगना (हेड इन्जुरी) कुपोषण, किशोरावस्था में पीलिया,

निवारण

मानसिक मंदन की रोकथाम के लिये – प्राथमिक कदम है, गर्भावस्था के समय नियमित रूप से जांच पडताल करायें । स्वस्थ तथा पोषक आहार लेना, संक्रमण रोगों (खसरा, छोटी माता आदि) से दूर रहना शारीरिक आघात (फिजिकल ट्रामा) से बचने के लिये भारी वजन नही उठाना, उँचाई पर रखी गई वस्तुओं को नही निकालना आदि चर्या ले सकते है । यदि गर्भपात की आवश्यकता है, वैद्यकीय विशेषज्ञों से करवाना ।

कम से कम कुछ कैसों के लिये रोकथाम का एकक अच्छा तरीका है नियमित प्रतिरक्षीकरण

यदि एक बच्चा मानसिक मंद हों तो दूसरा बच्चा होने से पहले वैद्यकीय सलाह लेना आवश्यक है । 20–30 वर्ष की आयु के बीच में माता का गर्भधारण करना उचित होगा । प्रसव प्रशिक्षित व्यक्तियों से ही करायें, और जब भी हो सके अस्पताल में जहाँ आपात कालिन सुविधायें है । माँ के लिये यह आवश्यक है कि, प्रसव अस्पताल में करवायें, खासकर जब पिछले मानसिक मंद बच्चे के जन्म के समय आघात हुआ ।

जन्म के पश्चात् प्रतिरक्षीकरण टीका लगवाना, जिससे क्षय रोग, पोलियो माइलाइटिस, रोहिणी (टिप्टेरिया), काली खांसी (उफिंग कॉफ), और टिटनस जैसे रोग से बच सकते है । बच्चे को अति ज्वर से बचाना चाहिये, जिससे होश खोतें है । तुरंत वैद्यकिय चिकित्सा करवायें, जिससे ताप कम हो सकें । मिरगी के दौरे के लिये भी वैद्यकिय सलाह और नियमित दवाई दोनों मुख्य है, अगर बच्चे का विकास देर से हो रहा है । जैसे देर से बढना, खडे होना, चलना या बात करना तुरंत विशेषज्ञों से सलाह लें ।

संबंधित समस्यायें -

कुछ मानसिक मंद बच्चों में सम्मिलित समस्यायें होती हैं, उन बच्चों को बहु विकलांग (मल्टिपल हैंडिकैप) कहते हैं । एक व्यक्ति में शारीरिक श्रवण, दृष्टि, और मानसिक विकलांगताओं में से एक से अधिक विकलांगता हों तब उसे बहुविकलांग कहते हैं । ऐसे बच्चों का विकास, सीखने की गति एक विकलांग बच्चे से अधिक धीमी होती है । उन्हें जीवन बिताने के लिये आवश्यक कुशलताओं को सीखने की भी तीव्र प्रशिक्षण की आवश्यकता है ।

मानसिक मंदता के साथ सेरेब्रल पाल्सी बहु विकलांगता की एक सामान्य स्तिति है।

सेरेब्रल पाल्सी मानसिक मंद के साथ एक साधारण बहुविकलांग का उदाहरण है । सेरेब्रल पाल्सी एक ऐसी स्थिति है जिसमें गामक (मोटर) विकास में रुकावट है, तथा विभिन्न तीव्रताओं की मांसपेशीयों के समन्वय (इन्कॉडीनेशन ऑफ मुवमेंटस्) की कटिनाईयाँ भी हैं । बहुविकलांग व्यक्तियों के समूह विजातीय (हैटरोजिनस) है इन व्यक्तियों में समानताओं से अधिक भिन्नतायें हैं ।

सारांश

1. ए ए एम आर द्वारा दी गई मानसिक मंद की परिभाषा में तीन मुख्य अंश हैं । ये हैं साधारण बुध्दि व्यवहार में औसत से कमी, अनुकुल व्यवहार में क्षति, तथा 18 वर्ष के आयु के पहले प्रकट होना । दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति को मानसिक मंद कहने के लिये बौध्दिकता में कमी, और एक संदर्भ में पूरी तरह से अनुकुल व्यवहार दिखाने में कठिनाई ये दो कारण है ।

2. मानसिक मंदन के वर्गीकरण में चिकित्सिय, मनोंवैज्ञानिक तथा शैक्षिक विधान हैं । ये क्रमशः बौध्दिक स्तर, तथा वर्तमान कार्यस्तर पर आधारित हैं ।

3. मानसिक मंदन व्यक्ति में सामाजिक समस्याओं के अतिरिक्त शारीरिक समस्या भी होती हैं ।

4. लगभग 80% मानसिक मद व्यक्तियों में किसी भी तरह की संप्रेषण समस्यायें होती हैं । इन समस्याओं की व्याप्ति बहुत अधिक हैं ।

5. भारत में मानसिक मंदन की प्रबलता का अनुमान आबादी को लगभग 2% जाना गया है ।

6. मानसिक मंदन के कई कारण हैं, जिनका वर्गीकरण इस प्रकार है गर्भधारण के पूर्व, (प्रीनेटल), प्रसव पूर्व, प्रसव संबंधि तथा प्रसवोत्तर ।

7 कुछ मानसिक मंद व्यक्तियों में संबंधित विकलंगतायें हैं – जैसे – दृष्टि, श्रवण, शारीरिक या वैद्यकीय समस्यायें जैसे मिरगी का दौरा, हेपर कायनासिस, कुपोषण, या मनोचिकित्सिय समस्यायें आदि ।

स्वः परीक्षा – 1

I. **निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर दीजिये :**

1. ए. ए. एम. आर. की मानसिक मंदन की परिभाषा के मुख्य अंग है ।

   अ) ..... आ) .....

   इ) .....

2. साधारणतः उपयोगी वर्गीकरण ..... है ।

3. जोडे लगाईये ।

1) अति (सिवियर)	अ) बुध्दि लब्धि (आई. क्यु.) 50 से 69
2) अल्प (माइल्ड)	आ) बुध्दि लब्धि (आई. क्यु.) 35 से 49
3) मध्यम (मॉडरेट)	इ) बुध्दि लब्धि (आई. क्यु.) 20 से कम,
4) अत्यधिक (प्रोफाउंड)	ई) बुध्दि लब्धि (आई. क्यु) 20 से 34.

4. मानसिक मंदन के लक्षण के अंतर्गत ..... को छोडकर सभी है ।

   अ) धीमी प्रतिक्रिया

   आ) आत्महत्या प्रवृत्ति

   इ) समझने में कठिनाई.

   ई) अस्पष्ट वाक्

5. ..... को छोड़कर निम्नलिखित में से सभी मानसिक मंदन के कारण हो सकते है

   अ) बच्चे में ब्रेन फिवर ।

   आ) जादुटोना या कर्मफल ।

   इ) प्रस्तुती कठिनाई ।

   ई) गर्भावस्था के समय कुपोषण ।

6. एक मानसिक मंद बच्चे में साधारण संप्रेषण समस्यायें है ..... (कोई चार लिखिये).

   अ) .....

   आ) .....

   इ) ....

   ई) .....

II. **निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िये और सही/गलत बताईये ।**

7. मानसिक मंदन का इलाज दवाईयों से नही हो सकता । सही/गलत.

8. मानसिक मंदन और मानसिक रोग एक ही है । सही/गलत.

9. मानसिक मंद बच्चे में संप्रेषण समस्यायें नही है । सही/गलत.

• • •

स्वः परीक्षा–1 की कुंजी

1. अ साधारण बौध्दिकता में औसत से कमी.

   आ अनुकुल व्यवहार में कमी.

   इ विकास की अवधि (18 वर्ष से पहले) में प्रकट होना ।

2. मनोवैज्ञानिक

3. 1 – ई, 2) – अ, 3) – आ, 4) – इ.

4. आ, यह मानसिक रोग का लक्षण है ।

5. आ

6. अ) दूसरों का वाक् समझने में कठिनाई.

   आ) शब्दों को वाक्यों में जोडने में कठिनाई.

   इ) सुनकर समझने में कमी

   ई) लगभग 40% में वाक् नही होता ।

7. सही

8. गलत. (विवरण के लिये पाठ 1. देखें)

9. गलत. (80% में संप्रेषण समस्यायें हैं).

अध्याय–2

प्रमुख शब्दावली एवं धारणायें

हर विज्ञान में अपनी – अपनी शब्दावली तथा धारणायें होती हैं । यह शब्दावली व्यावसायिकों के विचार विनिमय के लिये अधिक तेजी व निपूणता लाती है । इसीलिये मैन्युअल को आगे पढ़ने के लिये, कुछ मूल शब्दावली व धारणाओं को समझना आवश्यक है ।

उद्देश्य –

1. संप्रेषण की धारणा और उसके महत्व (फंक्शन्स्) का विवरण देना ।

2. भाषा तथा उसके विभिन्न अंगों का स्पष्टीकरण.

3. विभिन्न शब्दावली की तुलना करना जैसे वाक् व भाषा, सामान्य तथा असामान्य वाक्, मौखिक (वर्बल) तथा सांकेतिक (नॉन वर्बल) संप्रेषण, श्रवण (हियरिंग) तथा सुनना (लिसनिंग) आदि ।

4 अन्य मुख्य शब्दावली जैसे मूल्यांकन (असेसमेंट), अंतरा क्षेपण (इटरवेंशन), अर्थ संबंधी उद्येश्य (सिमॅनटिक इंटेन्शन) पूर्व अपेक्षायें (प्री–रिक्वेजिट्स) आदि का विवरण देना ।

संप्रेषण

शिशु रोने पर माँ उसे उठा लेती है, बच्चे शिक्षक को बुलाते है और शिक्षक उत्तर देता है, एक मानसिक मंद बच्चा शिक्षक के कपडे पकडकर उनका ध्यान आकर्षित करता है । इन सभी क्रियाओं में संप्रेषण है । प्रत्येक जीव संप्रेषण का लाभ उठाता है ।

प्रत्येक जीव के लिये संप्रेषण अत्यावश्यक है !

उदाहरण के लिये – कुत्ते मे भी संप्रेषण होता है । जिनका माध्यम है भौंकना, पूँछ हिलाना, सूंघना, आदि ।

व्यक्ति अनेक उद्येश्यों के लिये संप्रेषण करता है । जैसे – विचारों का आदान–प्रदान करने, अपनी भावनायें, अभिलाषायें तथा संवेगों का विनिमय करने के लिये, तथा कई बार खुशी प्रकट करने के लिये भी करते हैं । हर रोज हम अनेक संप्रेषित अंतःक्रियाओं (कम्युनिकेटिव इंटरॅक्शन) में भाग लेते हैं और अवलोकन करते हैं । यह आपस में संबंध बनायें रखने में सहायक सिध्द होता है। हम सारा दिन सूचना देते और लेते रहते हैं ।

साधारणत : संप्रेषण एक सक्रिय तथा आशयजनक (इन्टेशनल) प्रक्रिया है । वक्ता उद्येश्यपूर्वक सूचना का प्रसार करता है और श्रोता उसे उद्येश्यपूर्वक ग्रहण करता है । इन दोनों की भूमिका बदलती रहती है । कई बार बिना उद्येश्य भी सप्रेषण होता है । उदाहरण के लिये– हम कोई अप्रसन्नता छिपाना चाहते हैं फिर भी प्रकट हो जाती है वो आँखों के द्वारा, शारीरिक हावभावो द्वारा व आवाज से ।

संप्रेषण एक सक्रिय तथा आशयजनक विनिमय कार्य है, जिसमें विचारों का आदान–प्रदान होता है ।

विचारों को विभिन्न पध्दति द्वारा कर सकते है । वास्तव में हम हर संभव संवेदनात्मक रूप का उपयोग कर सकते हैं । चित्र –2. संप्रेषण की विभिन्न रीतियों का चित्रण करता है ।

श्रवण माध्यम द्वारा संप्रेषण रीतियों का उदाहरण –

बोलना, सायरन, अलारमस, मोर्स संकेत, टेलिफोन आदि ।

दृश्य माध्यम द्वारा संप्रेषण रीतियों का उदाहरण –

पढना, लिखना, इशारे, चेहरे के हावभाव, शारीरिक हावभाव, टेलिग्राम, टी.वी. नृत्य, नाटक, सिनेमा आदि ।

स्पर्श व सूंघने के माध्यम द्वारा सप्रेषण रीतियों का उदाहरण –

हाथ मिलाना, चूमना, गले लगाना, घुँसा मारना, थप्पड मारना, जलने की गंध ।

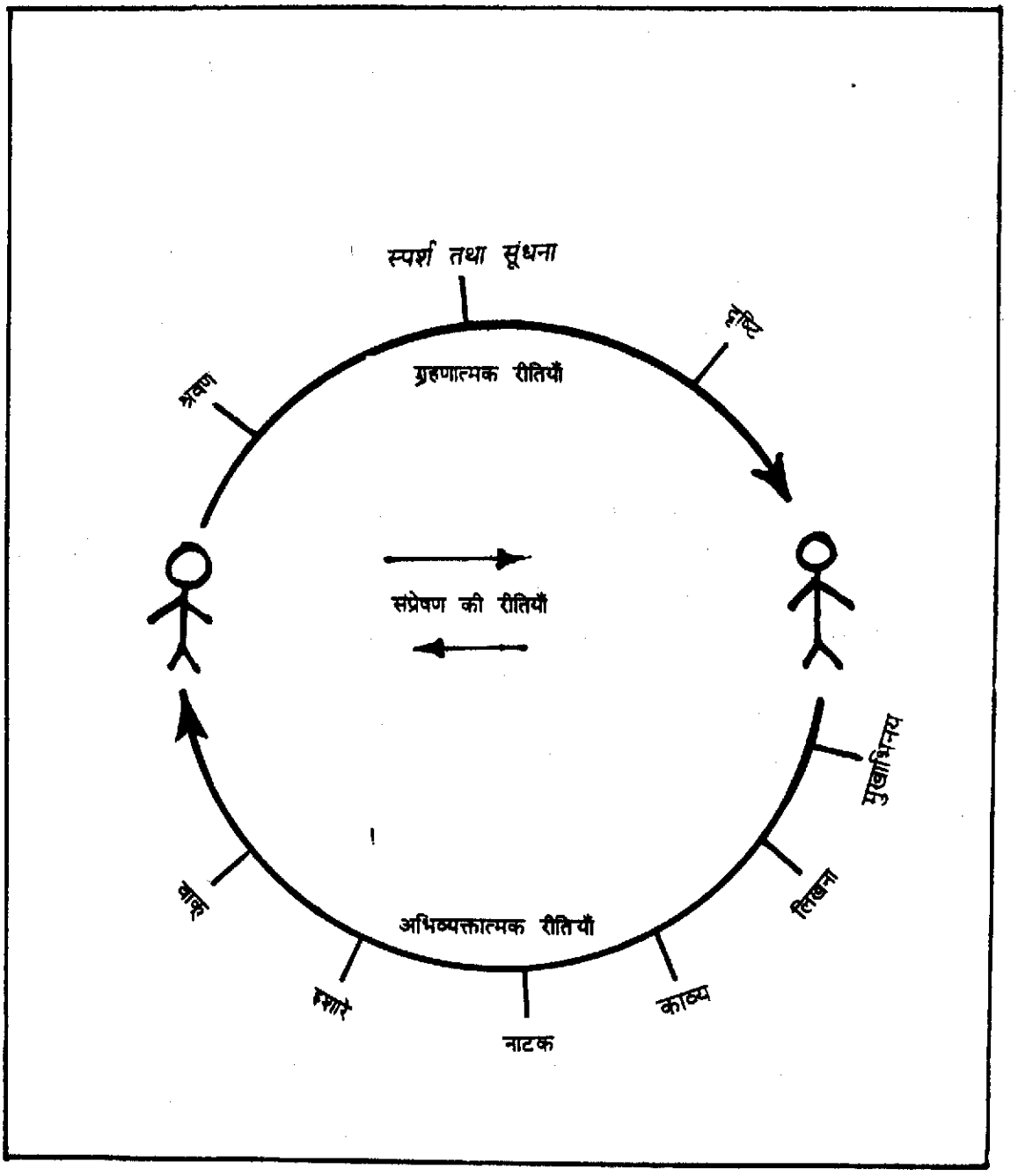

चित्र 2.1 संप्रेषण की रीतियां

हम कई रीतियों दवारा संप्रेषण करते हैं । संप्रेषण की रीति कोई भी हो, हम बिना कारण संप्रेषण नही करते । जैसे व्यर्थ वार्तालाप भी समय काटने के लिये किया जाता है । लोग विभिन्न कारणों के लिये सप्रेषण करते हैं, इनको संप्रेषण के उद्देश्य (फंक्शन ऑफ कम्युनिकेशन) कहते हैं ।

सप्रेषण के उद्देश्य/भूमिका (फॅक्शन्स)

हम मुख्यतः हमारी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिये संप्रेषण करते हैं, जो समय – समय पर बदलते रहते हैं । इसके साथ ही हम संप्रेषण की सूचना पाने के लिये, अंतः क्रिया आदि के लिये उपयोग करते हैं । इन सेप्रेषण के उद्योश्यों को तालिका 1 में दर्शाया गया है ।

यह उद्देश्य प्रति दिन के संप्रेषण संदर्भों में देखे ज़ा सकते हैं, जैसे अभी तक चर्चा की गई है, संप्रेषण के संदर्भ में विचार – विनिमय होता है । यह विचार विनिमय एक औजार के बिना नही हो सकता जो वक्ता और श्रोता दोनों के लिये सामान्य है । इसी उद्येश्य के लिये मानव ने भाषा का निर्माण किया । भाषा व्यक्ति के समूह या एक समाज के लिये सामान्य है । भाषा संप्रेषण को आसान बनाती है । अगले भाग मे भाषा की जानकारी दी गई है ।

तालिका–1.

संप्रेषण तथा भाषा के उद्देश्य

संप्रेषण उद्देश्य	अर्थ	उदाहरण
1. उपकरणीय (इन्स्ट्रूमेंटल)	एक व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करना ।	*मुझे पानी दो.*
2. नियमित (रेग्युलेटरी)	अन्य व्यक्ति के व्यवहारों को नियंत्रित करना, समझाना, विश्वास दिलाना, सुधारना आलोचना करना, धमकाना, आदि,	*"झूठ न बोलना "*
3. अंतः क्रिया (इंटरॅक्शन)	अभिवादन करना, विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में विचार व्यक्त करना, तथा लोगों से मिलजुल कर रहना ।	*नमस्कार, धन्यवाद आदि*
4. व्यक्तिगत (पर्सनल)	स्वयं को जानना, तथा अपना स्वतः व्यवहार नियंत्रित करना ।	*मुझे उस तरह नही करना चाहिये ।*
5. अन्वेषणात्मक (ह्युरिस्टिक)	सूचना प्राप्त करना विचार तथा ज्ञान के विकास के लिये धारणा बनाना	*"हमारे नये प्रधान मंत्री कौन हैं ?"*
6. काल्पानिक (इम्याजनेटिव)	कल्पना करना, सनक (फॅन्टासी) कला का कलात्मक उपयोग करना, भाषा के बारे में सोंचना आदि ।	*"फूल की तरह मुस्कुराती रहो ।"*
7. सूचनात्मक (इन्फरमेटिव)	सूचना, प्रदान करना विरोध, क्रोध, दर्द, आदि व्यक्त करना ।	*"वाक् और भाषा अलग है"*

भाषा

भाषा संप्रेषण का एक मुख्य साधन है । भाषा एक ऐच्छिक (ऑर्बीटरी) संकेत का समूह है जो अधिकतर परंपरागत (कनवेन्शनल) रूप से उपयोगी है । यह संकेतों का समूह समाज में व्यक्तियों द्वारा संप्रेषण के लिये प्रयुक्त होता है । भाषा को समझने के लिये संकेत और ऐच्छिक शब्दों का विवरण आवश्यक है ।

भाषा संकेतों की एक ऐसी व्यवस्था है जो समाज/लोगों के साथ आदान–प्रदान की जाती है ।

3

संकेत –

संकेत एक संहित (कोड) है, जो एक व्यक्ति, वस्तु या क्रिया का प्रतिनिधित्व करता है । संकेतों के उदाहरण हैं – शब्द और हाथ के इशोर, संकेतों को नियमों के आधार पर क्रम में रखा जाता है। समुदाय द्वारा इन नियमों का पालन किया पाता है । ये संकेत ऐच्छिक हैं ।

ऐच्छिक -

भाषा के संकेत ऐच्छिक हैं, अर्थात् एक वस्तु या उसका प्रतिनिधित्व करने वाले संकेत के बीच में अंतर्निहित (इनहेरेंट) संबंध नही है। ये सभी तरह के संकेतों के लिये सही है, जैसे – बोल गया, लिखा गया, या इशारों से व्यक्त किया गया संकेत । उदाहरण के लिये

उदा:	संकेत	वस्तु
	'सेब'	

जैसे कि, भाषा संप्रेषण का एक मुख्य साधन है, भाषा के उद्देश्य ही संप्रेषण के उद्देश्य हैं । (तालिका 1 देखिये) जैसे संप्रेषण की अलग रीतियाँ हैं वैसे ही भाषा में विभिन्न भाग हैं । ये भाग हैं क्या कहना चाहिये 'विषयवस्तु' (कन्टेन्टस्) कब कहें – 'उपयोग' (यूज) और कैसे एक शब्द या वाक्य बोलें–'रूप'–(फार्म) हैं। ये भाग भाषा के अंग कहे जाते हैं । इन तीनों भागों का उपयोग करके हम संप्रेषण को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं । आकृति 2.2, 2.3 में इन भागों की जानकारी दी गई है ।

1. **रूप (फार्म)** – इसमें भाषा की रचना के बारे में व्यवहार करना, कैसे व्याकरणीक रूप में शब्द और वाक्य बनाये जायें, होता है ।

2. **विषयवस्तु – (कन्टेन्ट)** – यह भाषा के अर्थ भाग के बारे में बताता है । जैसे क्या कहें या एक संदेश की विषय ।

3. उपयोग **(युज)** भाषा के उपयोग के भाग से संबंधित है । जैसे कब, कहाँ, किसके साथ और किस कारण के लिये भाषा का उपयोग हुआ ।

उदाहरण के लिये – "मैं मुकेश हूँ" वाक्य में रूप (फार्म) भाग है सर्वनाम + संज्ञा + क्रिया है, उसकी विषयवस्तु (कन्टेन्ट) अपना नाम बताना है और उसका उपयोग (युज) भाग है परिचय कराना ।

जैसे आकृति 2.2, 2.3 में देखा जा सकता है, भाषा के भागों को और छोटे भागों में बांटा गया है । इन हर भागों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है । इससे भाषा को स्पष्ट रूपसे समझ सकते हैं ।

स्वनिम विज्ञान (फोनॉलॉजी)

स्वनिम विज्ञान एक जन्मजात वक्ता द्वारा व्यक्त किया गया स्वनिम (स्पीच साउंडस्) भंडार कौनसा है और कैसे उत्पन्न किया जाता है, इन विषयों से संबंधित है, इसके अतिरिक्त स्वनियों को जोडने संबंधी नियमों का भी अध्ययन करता है । हर भाषा में कुछ सामान्य स्वनिम है, फिर भी हर भाषा के स्वनिमों की संख्या अलग–अलग है । उदाहरण के लिये – अंग्रेजी भाषा में 43 स्वनिम हैं, तेलुगु भाषा में 47 स्वनिम हैं ।

स्वनिमों के स्वभाव और उत्पत्ति के आधार पर व्यंजन और स्वर कों विभाजित किया गया है ।

रूपग्राम (मार्फालॉजी)

रूप ग्राम स्वनिम को शब्द बनाने के नियमों से संबंधित है । अर्थात् ये शब्द की आंतरिक व्यवस्था से संबंधित है । ये धातू–उपसर्ग–प्रत्यय आदि से शब्दों का निर्माण और शब्दों के नियमों का अध्ययन करता है ।

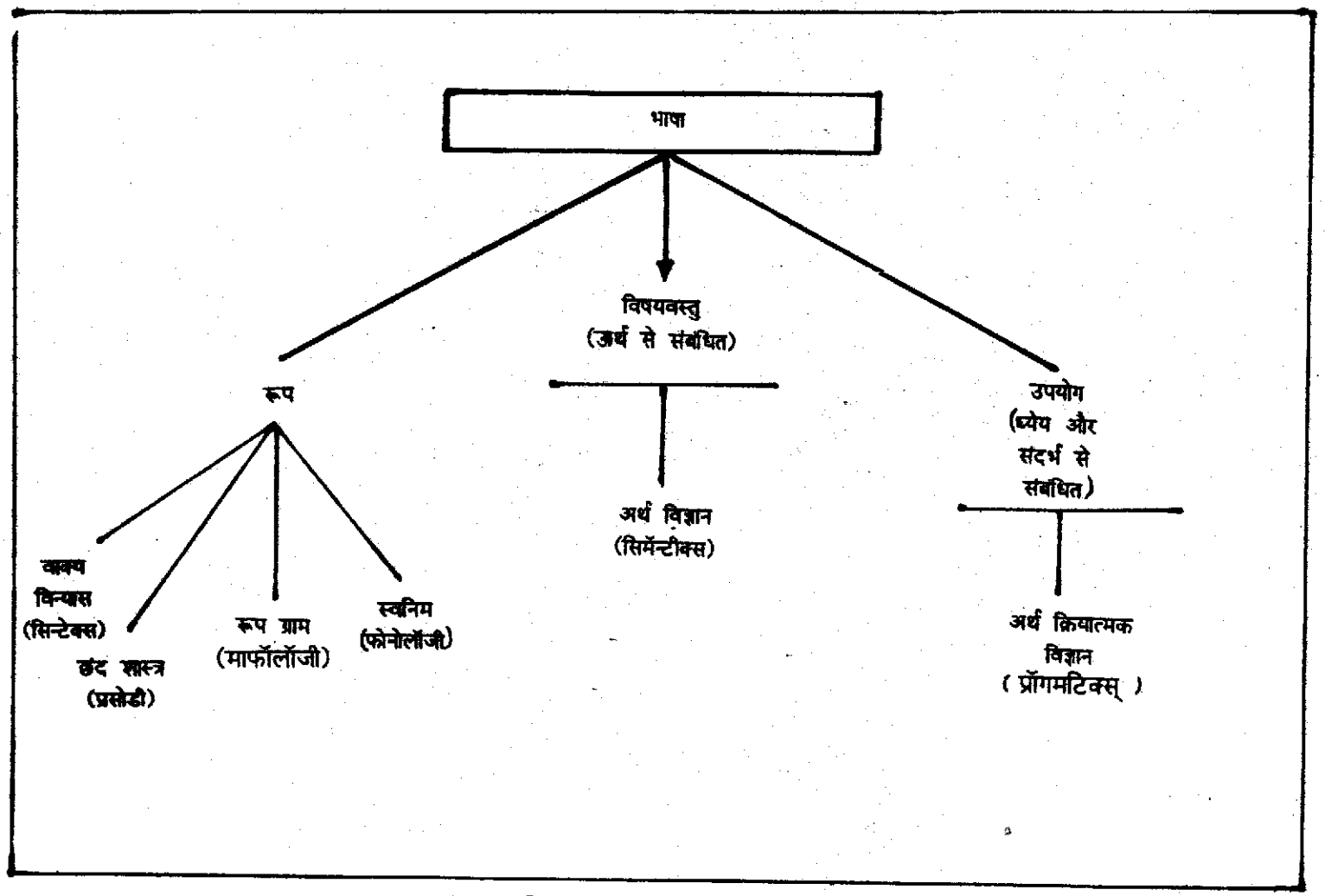
भाषा
रूप
विषयवस्तु
(अर्थ से संबंधित)
उपयोग
(ध्येय और
संदर्भ से
संबंधित)
वाक्य
विन्यास
(सिन्टेक्स)
छंद शास्त्र
(प्रसोडी)
रूप ग्राम
(माफॉलॉजी)
स्वनिम
(फोनोलॉजी)
अर्थ विज्ञान
(सिमॅन्टीक्स)
अर्थ क्रियात्मक
विज्ञान
(प्रॉगमटिक्स्)

चित्र 2.2 – भाषा के अंग

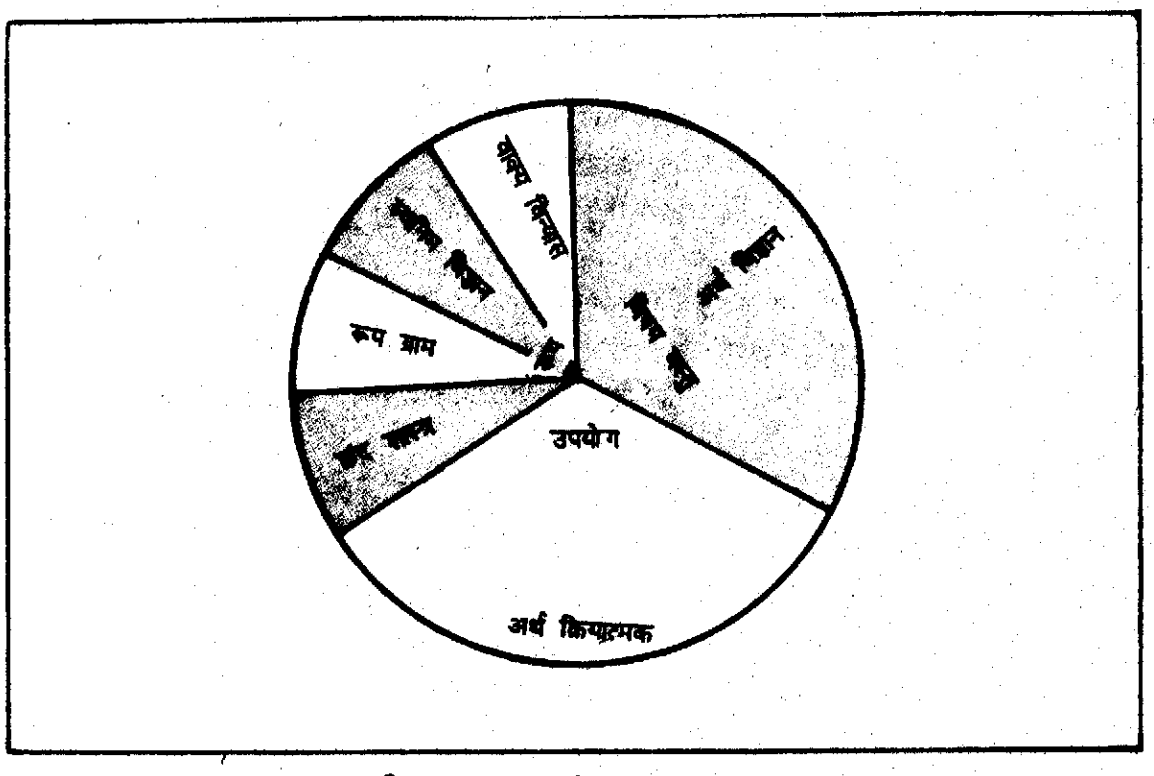

चित्र 2.3 भाषा के अंग

उदाहरण के लिये- "pstklr" अंग्रेजी भाषा में ये शब्द नही है । "kapaka" तेलुगु भाषा में शब्द नही है, क्योंकि, इन स्वनिमों का जोड़ अर्थपूर्ण नही है ।

रूपग्राम- स्वनिम को जोड़ने का नियम-अर्थपूर्ण शब्दों को बनाने के लिये है ।

रूपिम (मॉर्फिम्स्) जैसे चेयर (कुर्सी) टेबल, (मेज़) बॉय (लडका), आदि का स्वतंत्र रूप से उपयोग किया जा सकता है । रूपिम जैसे un...../.....ful,.....ness (अंग्रेजी में) वे स्वतंत्र रूप से अर्थपूर्ण नही है, लेकिन जब शब्दों से जोडे जाते है अर्थपूर्ण बनते है । उदाहरण के लिये – unlike (असमान) useful (उपयोगी) जैसे शब्द के भागों को व्याकरणीय रूपिम (ग्रॅमॅटिकल मार्फिम्स्) कहते है ।

वाक्य विन्यास

वाक्य विन्यास भाषा के व्याकरणिक विषयों से संबंधित है । वह शब्द क्रम शब्दों के बीच के संबंध तथा सूरपरिवर्तन– (इन्फ्लेक्शन्स) आदि से जुडा हुआ है । वक्ता वाक्यों को समझने व बनाने में जिन विषयों का चालन करते हैं, उनका भी विवरण वाक्य विन्यास में मिलता है । वाक्य विन्यास के नियम ये निर्धारित करते हैं कि, कौनसे शब्दों का संयोजन ठीक है और कौनसे नहीं। वाक्य विन्यास (सिन्टेक्ट) की व्यवस्था (ऑर्गनाईजेशन) के बिना भाषा अस्त–व्यस्त होती है । उदाहरण के लिये –" कुत्ता एक विश्वसनीय जानवर है" ये वाक्य विन्यास के नियमानुसार स्वीकृत है । लेकिन जानवर कुत्ता विश्वसनीय है एक" ये वाक्य विन्यास के नियमानुसार स्वीकृत नही है ।

वाक्य विन्यास (सिन्टॅक्स) शब्दों को वाक्य में संयोजन करने का नियम है ।

वाक्य विन्यास या रूप का दूसरा पहलू है छंद विन्यास ('प्रॅसोडी)। छदविन्यास एक वाक्य के शब्दों पर लगने वाले स्वर (टोन), लय (रीदम), जोर (स्ट्रेस) आदि के प्रभाव का अध्ययन करता है । इसकी अति खंडात्मक लक्षण (सुप्रा सेगमेंटल फीचर्स) के अंतर्गत भी चर्चा की गई है ।

अर्थ विज्ञान (सिमॅन्टीक्स)

अर्थ विज्ञान के अंतर्गत भाषा में अर्थ या मतलब का स्थान और अर्थ का विकास (डेवलपमेंट ऑफ मिनिंग) बारे में जानकारी मिलती है। भाषा के इस भाग में शब्द, वाक्यांश (फ्रेजेस) तथा वाक्य एवं अर्थ को जोडने के नियमों की चर्चा की जाती है । भाषा और वास्तविक संसार की वस्तुमें और घटनाओं के ज्ञान के बीच के संबंध से अर्थविज्ञान विशेषतः संबंधित है । अर्थ विज्ञान में यह ध्यान देना आवश्यक है कि, शब्द वस्तुओं का प्रतिनिधित्व नही करता किंतु वस्तुओं के विचार का प्रतिनिधित्व करता है । उदाहरण के लिये – "कुत्ता" शब्द किसी भी भाषा में चार पैरोंवाला, भौंकनेवाला तथा घरेलू जानवर है । ये संभव है कि, एक वाक्य व्याकरण की दृष्टि से सही हों, किंतु अर्थ विज्ञान की दृष्टि से अस्वीकृत हों । उदाहरण के लिये "मैं आसमान खाता हूँ" ।

अर्थ विज्ञान–संकेतों का वस्तुओं और घटनाओं से संबंध मतलब या अर्थ

अर्थक्रिया विज्ञान (प्रगमॅटिक्स्)

उपयोगकर्ता की दृष्टि से भाषा का अध्ययन अर्थ-क्रिया विज्ञान में होता है । यह ऐसे नियमों की व्यवस्था से संबंधित है जो ये निर्धारित करता है कि, कौन किस से किस संदर्भ में बातचीत करते है । अर्थात् अर्थविज्ञान भाषा के उपयोग का अध्ययन करता है । उदाहरण के लिये - "पानी मांगना घर और होटल में अलग-अलग शैली में किया जाता है, जहाँ शब्द और ढंग भिन्न होते हैं ।

अर्थ क्रिया विज्ञान- भाषा का एक सामाजिक संदर्भ में किसी भी उद्देश्य से उपयोग करना और उनके नियम से संबंधित है ।

एक सामाजिक अंतः क्रिया में अर्थ क्रिया विज्ञान के नियम का उदाहरण है । बातचीत के लिये तैयार होना और बनाये रखना, (मेनटेनिंग अ कॉनवरजेशन)। की गई त्रुटियों को ठीक करना, सूचना देना व लेना, बातचीत प्रारंभ करना व बंद करना, विषय बदलना, बारी बदलना, श्रोता और संदर्भ को समझना आदि भी सम्मिलित है ।

वाक् (स्पीच)

वाक् भाषा के व्यक्त करने के लिये निपूण और प्रायः प्रयुक्त साधन है । वाक् एक मौखिक संहिता (दर्बल कोड) की व्यवस्था है । बोल चाल की बहु प्रयुक्त संहिता का उदाहरण है - शब्द/शब्दों का संचालन विशेष ढंग से किया जाता है जिसमें अर्थस्पष्ट हों । वाक् की उत्पत्ति वाक् यंत्र (स्पीच मेक्यानिज्म) के भाग जैसे जिह्वा, जबड़ा, ओंठ, आदि से किया जाता है । यह वाक् यंत्र स्नायुतंत्र (नर्वस्सिस्टम) के साथ एक व्यवस्थित रूपसे कार्य करता है । भाषा पर आधारित वाक् उपयुक्त है वरना यह अनर्थक है ।

वाक् भाषा पर आधारित है, भाषा के बिना वाक् का अर्थ नहीं है ।

जैसा कि आ. 2.4 में देखा जाता है, कि, वाक् भाषा और संप्रेषण में तीनों परस्पर संबंधित हैं । संप्रेषण भाषा और वाक् के उपयोग से अधिक है । भाषा में वाक् के साथ अन्य विषय भी हैं, भाषा के बिना वाक् भी अनर्थक है ।

सामान्य और असामान्य भाषा और वाक्

यदि एक व्यक्ति की वाक् और भाषा अधिकांश लोगों जैसी है तब

उसे सामान्य कहते हैं । व्यक्ति की तुलना का पता उसकी उम्र, लिंग, संस्कृति-आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक स्तर के अधिकांश लोगों से करने पर पता चलता है । यदि यह वाक् व भाषा अधिकांश लोगों से मिलती नही है तब उसे असामान्य कहते हैं । वाक् और भाषा असामान्य होने के लिये वह अधिकांश लोगों से इतनी दूर हों कि, उन पर वे-ध्यान आकर्षित करते हैं (अप्रसन्नता) तथा संप्रेषण में बाधक होते हैं (समझने में कठिनाई) ।

सांकेतिक संप्रेषण (नॉन वर्बल कम्युनिकेशन)

संप्रेषण में जब वाक् का उपयोग होता है, तब मौखिक संप्रेषण (वर्बल कम्युनिकेशन) होता है । वाक् के अतिरिक्त अन्य रीतियों द्वारा संप्रेषण किया जाता है उसे सांकेतिक (नॉन वर्बल) संप्रेषण कहते हैं । सांकेतिक संप्रेषण का एक उदाहरण है-अमेरिकन साइन लैंगवेज ।

व्यक्ति संप्रेषण के लिये केवल शब्दों का ही - प्रयोग नही करता। हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करते के लिये शरीर की भाषा जैसे कपडे, चेहरे के हावभाव, दृष्टि, हाथ के इशारे आदि का उपयोग करते हैं । इशारे वाक्के साथ या वाक्के बिना भी व्यक्त किये जा सकते हैं । सामान्यतः वाक्को व्यक्त करने के लिये चेहरे के हावभाव वाक् के पूरक है । कई बार वाक् संप्रेषण को बढाने के लिये विशेष सांकेतिक संप्रेषण पद्धति का निर्माण करते हैं ।

सामान्य रूपसे बोलने वाले व्यक्तियों में सांकेतिक संप्रेषण पद्धतियाँ वाक् संप्रेषण को बढाती है .

स्वनकरण - (फोनेशन)

कंठ से वाणी (वाईस/वोकल टोन) उत्पन्न करने की प्रक्रिया को स्वनकरण कहते है । स्वनकरण में सम्मिलित मुख्य अंग है वाक् तंतु (वोकल फोल्डस्) जिनकी रचना झिल्ली जैसी होती है और उनका स्थान ध्वनी पेटी (लैरींग्स) में है । जब दोनो वाक् तंतु मिलते हैं तो वे श्वासमार्ग को रोकते हैं जिससे उच्छ्वास मार्ग बंद हो जाता है, ये बंद की गई हवा वाक् तंतु के नीचे दबाव बढ़ाती है । इस दबाव से वाक् तंतु खुल जाते हैं । इस बंद करने व खुलने की प्रक्रिया से श्वासमार्ग खुलता और बंद होता है, जिससे मार्ग में हवा

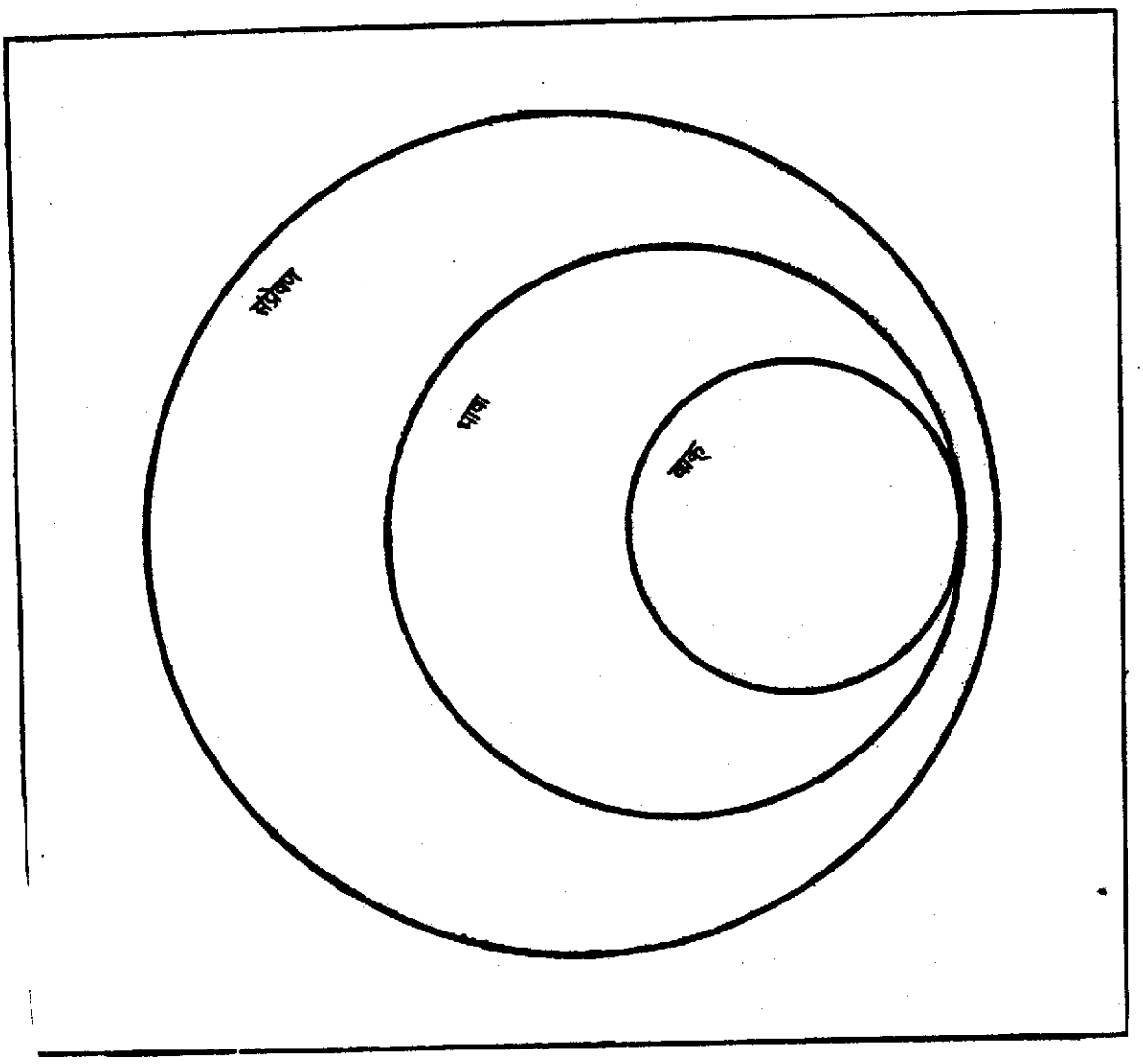

आ. 2.4 भाषा, वाक् तथा संप्रेषण का संबंध

और वाक् तंतु में कंपन उत्पन्न होता है यही "वाणी" (वॉईस) है । यह प्रक्रिया जिसमें वाक् तंतु से कपन से वाणी उत्पन्न होती है उसे "स्वनकरण " कहते हैं ।

उच्चारण (आरिक्युलेशन)

स्वनिम उत्पादन की प्रक्रिया को उच्चारण कहते हैं, इसमें कहना, ओंठ, जबड़ा हवा (एयरस्ट्रीम) की तीव्र रूप से रोकते हैं या गति बदलते हैं और वाणी का भी उपयोग करते हैं । इसके परिणाम स्वरूप स्वर और व्यंजन दो प्रकार के स्वनिम मिलते हैं । सभी स्वनिमों का विवरण करने के लिये यह बताना जरूरी है कि, कहाँ और कैसे हवा को वाक् नली (वोकल ट्रॅक) के अंगों ने रोका ।

वाक् उत्पत्ति के समय स्वनिमो को अलग-अलग जोडते नही लेकिन शब्द बनने के लिये श्रेणी में जोड़ते हैं ।

अतिकंठात्मक लक्षण (सुप्रा सेगमेंटल फीचर्स)

अतिकंठात्मक लक्षण हमारे वाक् में शब्दों पर और वाक्यों पर प्रयोग होते हैं जिससे वाक् मधुर होता है । इन लक्षणों के उदाहरण हैं – स्वर (टोन) लय (रीदम), जोर (स्ट्रेस), स्वर विन्यास (इंटोनेशन) आदि । इन लक्षणों की सहायता से हम वाक्यों के अर्थ बदल सकते हैं । इन लक्षणों के बिना वाक्य नीरस होते हैं और वाक्य के प्रकारों में भी अभाव होता है । जोर और स्वर विन्यास जैसे लक्षणों से एक वाक्य प्रश्न है, निवेदन है या कथन (स्टेटमेंट) है इसका निर्धारण होता है स्वर विन्यास को बदलने से वाक्यों के अर्थ भी बदलते हैं । यो वक्ता के भावनाओं और दृष्टिकोण को भी व्यक्त करते हैं ।

वाक् पटुता (फ्लुयेन्सी):

वाक् पटुता का अर्थ है कितनी आसानी से वाक् का प्रवाह या शब्दों या वाक्यों का उद्‌गमन होता है । इस वाक् पटुता के निर्धारण करने वाले लक्षण हैं, निरंतरता (कंटीन्युटी) गति (रेट) समयानुपात (टाइमिग) । जब इन लक्षणों का उपयोग उचित ढंग से नही किया जाता है तब वाक् पटुता पर प्रभाव पड़ता है । इसके परिणाम है – खंडित निरंतरता (ब्रोकन कंटीन्युटी), वाक् की तेजगति (हाई रेट)

या अनुचित समयानुपात (इन अप्रोप्रियेट टाइमिंग) । इनमें से कुछ लक्षण हमारे वाक् में कभी–कभी दिखाई देते हैं । बच्चे अपनी भाषा के विकास में एक स्थिति 3–4 साल के करीब पार करते हैं जिसको हम सामान्य अवाक्पटुता बॉर्न फ्लुयेंसी) कहते हैं ।

श्रवण प्रक्रिया (हियरिंग)

श्रवण प्रक्रिया में कान के द्वारा नाद (सांउज) को ग्रहण करना और संदेश को केंद्रिय नर प्रणाली (सेट्रल नर्वस सिस्टम) में भेजना समिलित है । श्रवण प्रक्रिया से लोग अपने आसपास के वातावरण से संबंध रखते हैं जो भाषा को सीखने का एक प्रमुख मार्ग है । श्रवण हमें खतरे से सावधान करता है । जन्म से लेकर जीवनपर्यंत श्रवण प्रक्रिया हमको वातावरण पर नियंत्रण करने के लिये सहायता देती है ।

श्रवण शरीर क्रिया वैज्ञानिक (फिजियॉलॉजिकल) कार्य है जो हमारे श्रवण साधक कान के द्वारा किया जाता है ।

श्रवण दोष बच्चे में वाक् उत्तेजना (वर्बल स्टिम्युलेशन) में बाधा डालता है, जो भाषा के विकास के लिये आवश्यक है । श्रवण दोष का अंश जो एक सामान्य बुध्दिमान में समस्या नही उत्पन्न करता वही मानसिक मंद बच्चे में बडी समस्या खड़ी कर सकता है । अधिकांश डाउन सिड्रोम बच्चों में श्रवण दोष और कान के संक्रामक रोग होते हैं ।

सुनना (लिजनिंग)

श्रवण प्रक्रिया और सुनना एक ही तरह की प्रक्रियायें नही हैं । शब्दोंके अर्थ देने के उद्येश्य से शब्द ग्रहण करना "सुनना" है । इसमें मुख्यतः सम्मिलित प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है । इसकी तुलना में श्रवण प्रक्रिया शरीर क्रिया हैं ।

सुनना एक श्रवण प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य अर्थ निकालना है ।

वाक् तथा भाषा के विकास में पूर्वापेक्षायें –

बच्चे जन्म से लेकर वयस्कावस्था तक वाक् तथा भाषा का विकास क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप से करते हैं । इस वाक् तथा भाषा को अर्जित करने की प्रक्रिया प्रारंभिक प्रतिक्रियात्मक रोने (रिममेकसीव क्राईंग) से शुरू होकर वाक्यों में बात करने तक चलती है । यह

प्रक्रिया आसान कार्य नही है और इस क्रिया को जारी रखने के लिये कुछ महत्वपूर्ण कुशलतायें तथा अंग होना आवश्यक है । इन आवश्यकताओं को हम पूर्वापेक्षायें कहते हैं । इन पूर्वापेक्षाओं में प्रकृति/जीव वैज्ञानिक (बायलॉजिकल) तथा प्रशिक्षण संबंधी ("नर्चर) (एनवायरेंनमेंटल) समिलित हैं । इन पूर्वापेक्षाओं में चार समूह हैं । (1) जीव वैज्ञानिक (2) प्रोसेसिंग (कॉगनेटिव) (3) सामाजिक (4) भाषा संबंधी (लिंगवीस्टिक)

जैविक और वातावरणीक तत्व दोनों वाक् व भाषा विकास में महत्वपूर्ण हैं ।

संग्राहक भाषा (रिसेप्टीव लैंगवेज)

संग्राहक भाषा की अवधि है बोले हुये और लिखे हुये शब्दों को समझना अर्थात् शब्द और उद्येशीय अर्थ को सुनने के बाद व्यक्ति जोडता है । अति सामान्य संग्राहक रीतियों है सुनना तथा पढ़ना ।

अभिव्यक्ति भाषा (एक्सप्रेसिव लैंगवेज)

जब हम लिखित, व्यक्त या सांकेतिक शब्दों से सुनने वालों को अर्थ तथा आवश्यकताओं को बताते हैं तब अभिव्यक्ति की भाषा का उपयोग करते हैं । अभिव्यक्त करने की सामान्य रीतियाँ है – वाक् और लेखन ।

स्वरूपिक शब्द (इडियोमार्फस)

स्वरूपिक शब्द या बच्चे द्वारा बनाये गये शब्द हैं स्थिर स्वन पध्दति (कन्सिस्टेंट साऊँड पैटर्न) है । जो बच्चे के लिये अनोखे (युनिक) है कुछ स्वरूपिक शब्द बच्चे के किलकारी मारने (जागने) जैसे उच्चारण विस्तृत रूप हैं । स्वरूपिक शब्दों के उदाहरण हैं – दू दू,ला ला (दूध के लिये) ये स्वरूपिक शब्द वयस्कों जैसे प्रारंभिक शब्द के पहले आते हैं ।

अर्थविज्ञान आशय (सिमॅन्टिक इन्टेन्शन्स)

बच्चे स्वरूपिक या वयस्क शब्दों को विभिन्न आशय व्यक्त करने के लिये प्रयुक्त करते हैं इन आशयों के उदाहरण हैं : निवेदन,

अस्वीकृति आदि । बच्चे एक ही शब्द को विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न अर्थों के लिये प्रयोग कर सकते है । ऐसे बच्चों से उद्येशित विभिन्न अर्थों को "अर्थ विज्ञान आशय" कहते है । धीरे - धीर बच्चों में भाषा के विकास में वृद्धि होती है और वह अधिक अर्थ विज्ञान आशयों का प्रयोग करता है ।

बच्चे एक ही शब्द को विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न अर्थों के लिये प्रयोग कर सकते है

निर्धारण (असेसमेंट)

संप्रेषण व भाषा का निर्धारण एक नियमित पद्धति है । जिससे बच्चे की कुशलताओं, योग्यताओ और सीमाओं का मूल्यांकन करते है । अक्सर बच्चों में यह मूल्यांकन परीक्षण (टेस्ट) द्वारा किया जाता है । और कुछ बच्चों में सामान्य और विशेष कुशलताओं को ध्यानपूर्वक अवलोकन करना और रेकॉर्ड करना उचित होगा । आदर्शरूप से परीक्षण से उपलब्ध आंकडे (डेटा) और स्वयं किया गया अवलोकन दोनों की तुलना बच्चे के निर्धारण के लिये सही पध्दति और क्रियाओं का चुनाव करें । निर्धारण का एक और उपयोग है अंतराक्षेपण के प्रभाव की तुलना । निर्धारण एक कार्यवाही (ऑनगोईंग) प्रक्रिया है, जो अंतराक्षेपण समय में भी जारी रहती है ।

तीव्र अवलोकन निर्धारण का एक अच्छा माध्यम है ।

अंतराक्षेपण (इंटरवेन्शन)

अंतराक्षेपण एक जानबुझकर करने का प्रयास है, जिसमें एक व्यक्ति में विद्यमान संप्रेषण कुशलताओं को बढाना है । अंतराक्षेपण का एक और उद्देश्य है नये संप्रेषण व्यवहारों का सुसाध्यीकरण (फेसिलिटेशन) करना ।

अंतराक्षेपण को बनाना (डिजाईन) तथा कार्य रूप में लाना, इन दोनों के लिये सूचना चाहिये । इस सूचना का मुख्य साधन है निर्धारण से मिली सूचना भाषा और वाक् विकास का आंकडा ।

सारांश

इस अध्याय में विभिन्न शब्दों की तथा धारणाओं की चर्चा की गई है, जो मैन्युअल को समझने में निपूणता प्रदान करती है । इस अध्याय में ध्यान दी गई कुछ धारणायें है संप्रेषण, भाषा, वाक्, श्रवण प्रक्रिया । कुछ और धारणायें सामान्य भाषा विकास को समझने के लिये आवश्यक है वो भी दी गई है । निर्धारण और अंतराक्षेपण संबंधी शब्दों का विवरण दिया गया है । इस मैन्युअल में उपयुक्त अन्य शब्दावली के वर्णन जहां आवश्यक हो वहां किये गये है ।

• • •

स्व परीक्षा – 2

1) "सही" या "गलत" बताइये :

1. साधारणतः संप्रेषण एक सक्रिय एवं आशयजनक प्रक्रिया है । सही/गहत.
2. भाषा का एक अति प्रभावशाली अभिव्यक्त करने का माध्यम है वाक् । सही/गलत
3. श्रवण प्रक्रिया मुख्यतः एक मनोवैज्ञानिक पध्दति है । सही/गलत.
4. संप्रेषण जिसमें वाक् के अतिरिक्त अन्य पध्दतियों का प्रयोग किया गया है, वो मौखिक प्रक्रिया है । सही/गलत
5. अंतराक्षेपण एक जानबुझकर करने का प्रयास है जिसमें एक व्यक्ति में विद्यमान संप्रेषण कुशलताओं को बढाना और नये संप्रेषण व्यवहारों का सुसाध्यीकरण करना उचित है । सही/गलत

2) सही उत्तर चुनिये :

1. भाषा में निम्नलिखित अंग होते हैं ।
   - अ) रूप (फॉम), अर्थीक्रियात्मक विज्ञान (प्रगमॅटिक) तथा उपयोग (यूज)
   - आ) स्वनिम (फोनालॉजी), रूपग्राम (माफॉलॉजी) वाक्य विन्यास (सिन्टेक्स) तथा उपयोग (यूज)
   - ई) रूप (फॉम), विषयवस्तु (कॉन्टेन्ट) तथा उपयोग (यूज).
   - ई) उपरोक्त एक भी नही ।
2. अमेरिकन साईन लैंगवेज ..... के लिये एक उदाहरण है ।
   - अ) मौखिक संप्रेषण पध्दति (वर्बल कम्युनिकेशन सिस्टम)
   - आ) मौखिक और सांकेतिक संप्रेषण पधध्दति का संयोजन (अकॉंबिनेशन ऑफ वर्बल एंड नॉन–वर्बल कम्युनिकेशन सिस्टम)
   - इ) सांकेतिक संप्रेषण पध्दति (नॉन वर्बल कन्युनिकेशन सिस्टम)
   - ई) उपरोक्त एक भी नही

3) वाक् और भाषा सामान्य कहे जाते हैं यदि वो .....के अधिकांश व्यक्तियों से मिलती–जुलती है ।
   - अ) एक ही आयु और एक ही लिंग के समूह ।
   - आ) एक ही सांस्कृतिक समूह ।
   - इ) एक ही सामाजिक आर्थिक, शैक्षिक सार ।
   - ई) एक ही आयु, लिंग, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्तर ।

4) व्यंजन शब्दों का वर्णन करने के लिये निम्नलिखित लक्षणों को जानना आवश्यक है ।
   - अ) उच्चारण का स्थान और रीति
   - आ) घोष संबंधी जानकारी और उच्चारण की रीति
   - इ) उच्चारण का स्थान, रीति और घोष संबंधी जानकारी
   - ई) उच्चारण स्थान और घोष संबंधी जानकारी ।

5) निर्धारण ..... के लिये किया जाता है ।

अ) बच्चे की शक्ति और अशक्तता जानने

आ) विभिन्न सीखने की नीतियों और अंतराक्षेपण की क्रियाओं को चुनने

इ) अंतराक्षेपण के उद्देश्यों को चुनने

ई) अंतराक्षेपण के प्रभाव को समझने

उ) उपरोक्त सभी के लिये ।

3) निम्नलिखत को जोडिये -

अ) संप्रेषण के कुछ उद्देश्य	1) भाषा को एक सामाजिक संदर्भ में उद्येशपूर्वक प्रयोग करने के नियम
आ) अति खंडात्मक लक्षण (सुप्रासेगमेंटल फिचर्स)	2) वाक् की निरंतरता, गति एवं समयानुपात
ई) वाक् पटुता के लक्षण	3) लय,स्वर विन्यास, जोर, समय आदि
ई) अर्थ क्रियाविज्ञान (प्रैगमॅटिक्स)	4) उपकरणीय नियमित अंतः क्रिया आदि ।

4) निम्नलिखित की उचित शब्दों व वाक्यों द्वारा पूर्ति कीजिये ।

1) व्यंजन शब्दों के उत्पन्न करते समय मूँह से कैसे हवा को रोक दिया जाता है इसको .....कहते हैं ।

2) वाक् उत्पादन के समय ..... के उत्पादन को स्वनकरण प्रक्रिया कहते हैं ।

3) सुनना ..... के उद्येश्य से शब्द ग्रहण करना है और यह मुख्यतः ..... प्रक्रिया है ।

4) संप्रेषण की पूर्वापेक्षाओं का चार समूह में वर्गीकरण किया गया है वो हैं .....

5) स्वरूपी शब्द ..... हैं ।

स्व परीक्षा–2 की कुंजी

1. 1. सही /

   2) सही /

   3) गलत / – श्रवण प्रक्रिया शरीर क्रिया विज्ञान प्रक्रिया है और सुनना मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है ।

   4) गलत / यह सांकेतिक संप्रेषण है । मौखिक का अर्थ वाक् है ।

   5) सही /

2. 1) इ

   2) इ

   3) ई

   4) इ

   ज्ञ) उ

3. अ. – 4

   आ – 3

   इ – 2.

   ई – 1

अध्याय-3

वाक्ध्वनि उत्पादन

मानसिक मन्द बच्चों के माता-पिता अधिकतर यह शिकायत करते हैं कि, उनका बच्चा साफ नहीं बोल पाता और यह भी बताते हैं कि, बच्चें को उच्चारण की कठिनाई भी होती है । ऐसा इसलिये होता है कि, या तो वे बच्चे उच्चारण करने में ही असमर्थ होते हैं या सही उच्चारण सीख नहीं पाये होते हैं । ऐसे दोषपूर्ण बच्चों के उच्चारण की सहायता करने से पहले यह जानना आवश्यक होता है कि, साधारण व्यक्ति का सामान्य उच्चारण क्या है तथा साधारण बच्चे में भाषा अधिगम विकास की भिन्न-भिन्न प्रकार की अवस्थायें कौन-कौन सी हैं । यह जानकारी मंद बुद्धि बच्चों के उच्चारण दोषों को दूर करने के लिये योजना बनाने में सहायक होंगी अर्थात इस से "उच्चारण चिकित्सा" में काफी मदद मिलेगी ।

मानसिक विकलांग बच्चों में अस्पष्ट भाषा सामान्य शिकायत है

उद्देश्य

पाठक को निम्न बातें समझाना ही इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य है ।

1. वाक् ध्वनि उत्पादन केवल ध्वनि निर्माण/उच्चारण प्रक्रिया का कार्य नही है ।
2. हर ध्वनि का उच्चारण स्थान (प्लेस) तथा प्रयत्न (मैनर) का ज्ञान रखना आवश्यक होता है ।
3. सामान्य बच्चों में विभिन्न वाक् ध्वनियों का विकास/अधिगमन किस उम्र में होता है ।
4. शब्द तथा वाक्यों में एवं स्वतंत्र रूप में वाक् ध्वनियों के उत्पादन के अंतर को पहचानने पर भी ध्यान देना चाहिये ।

वाक् उत्पादन में उपयुक्त उच्चारण अवयव

हम प्रतिदिन बोलते रहते हैं फिर भी हम इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि, यह हमारे मस्तिष्क के सबसे जटिल कार्यों में से एक है ।

वाक् उत्पादन एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि, यह विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं श्वास (रेस्पीरेटरी), संस्पंदन (फोनेटरी) संवहन (रीसोनेटरी) उच्चारण (आर्टीक्युलेटरी) का समग्र समन्वयन होने पर ही संपन्न होता है । इन्ही अंगों का द्वितीय कार्य बोलने में सहयोग देना होता है । इस लिये बोलना मनुष्य के लिये एक द्वितीय (सेकेन्ड्री) कार्य होता है । तालिका – 1 में उच्चारण अवयव तथा ध्वनि उत्पादन के संबंध का संक्षिप्त विवरण दर्शाया गया है । चित्र 3–1 में विभिन्न व्यवस्थाओं को दर्शाया गया है और इसमें कई प्रकार की मांस पेशियों और लाखों प्रकार के नसों का तालमेल भी होता है । बोलने में मदत देने वाले अंग जैसे गला, जिह्वा, जो जीवन में प्राथमिक कार्य जैसे खाना, श्वास–निश्वाश आदि करते हैं ।

हम में से बहुत से लोग इस बात को नही जानते कि, वाक् एक बहुत जटिल कार्य है, जिसका हम आसानी के प्रयोग करते है ।

उपर्युक्त व्यवस्थाओं पर मस्तिष्क तथा नस व्यवस्था का नियंत्रण होता है । वाक् ध्वनियों का निर्धारण उन बच्चों के भाषायी पर्यावरण पर आधारित होता है । चित्र 3.2 में उच्चारण अवयव तथा संवहन व्यवस्थाओं का विवरण दिया गया है । पाठक तालिका –1 से तुलना कर इन अवयवों को समझ सकते है ।

वाक् मानव में द्वितीय कार्य है

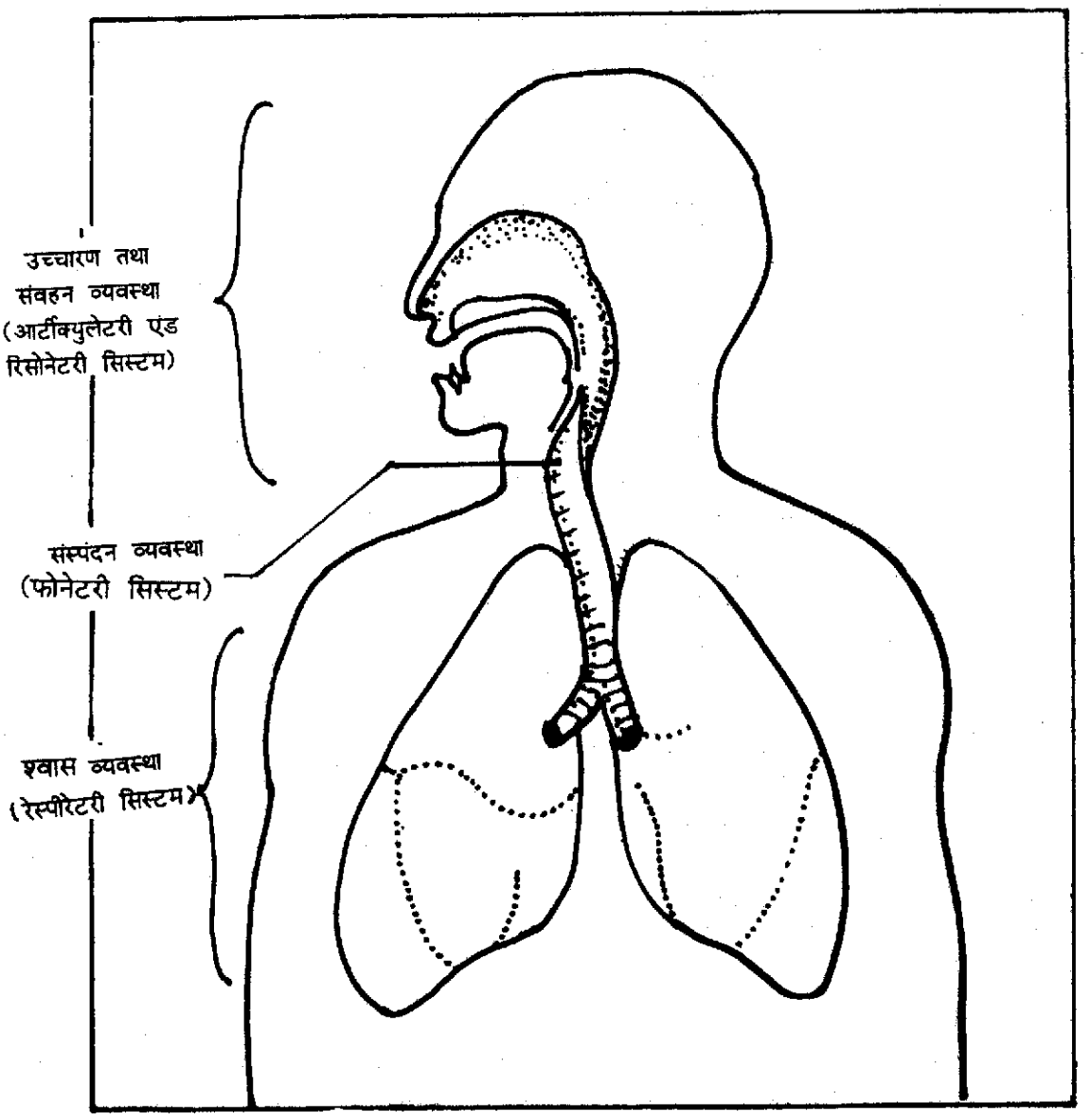

चित्र 3.1 वाक् उत्पादन के अंतर्गत विभिन्न व्यवस्थाएँ

तालिका - 1 :

वाक् उत्पादन में उपयुक्त विविध अवयव तथा प्रक्रियाएँ

व्यवस्था	मुख्य अवयव	प्राथमिक कार्य	द्वितीय कार्य
1. श्वास व्यवस्था	फेफड़े श्वासनी, (ब्रॉंकाई) श्वास नली (ट्रेकिया)	श्वसन प्रक्रिया	ध्वनि उत्पादन में हवा उपलब्ध करना
2. संस्पदन व्यवस्था	स्वर यंत्र लैंगोजस (वोकल फोल्डस)	आहार को श्वसन नालिका में जाने से बचाना भारी वस्तुओं को उठाने में, धक्का लगाने में मलहरण में हवा का दबाव बनाये रखना.	उच्छवास प्रवाह पर आधारित स्वर तंत्रियों का स्पंदन और वाणी उत्पादन
3. संवहन व्यवस्था	मुँह, नाक, गला	खाना, श्वास लेना	भिन्न भिन्न ध्वनियों के रूप में परिवर्तित होना और वाणी का अपनी विविधता में प्रस्फुटित होना ।
4. उच्चारण व्यवस्था	दाँत, ओंठ जिह्वा कठिन तालू, कोमल तालू.	चबाना, निगलना चूसना,	ध्वनियों, स्वर व्यंजन तथा उनके सम्मिलित विविध रूप उत्पन्न करना ।

प्रत्येक वक्ता के मस्तिष्क में, वाक् ध्वनियों को उत्पन्न करने से पूर्व तरह-तरह की जटिल प्रक्रियाओं की श्रृंखला होती है जिसके पश्चात् शब्द मुँ-ह से निकलता है । ये कार्य निम्न प्रकार से क्रमबद्ध किये जा सकते हैं:- सबसे पहले व्यक्ति को यह समझना आवश्यक होता है कि उसे कुछ कहना है फिर अपने विचारों को प्रकट करने के लिये उचित शब्दों का चुनाव करना होता है; (भाषा की अर्थ व्यवस्था सिमॅंटिक का आयाम),फिर शब्दों को सही ढंग से क्रम बद्ध करना होता है (भाषा की वाक्य विन्यास (सिनटॅक्टिक) का आयाम),

किसी विशेष स्थिति में वे शब्द या वाक्य किस ढंग से बोले जाएँगे इसका निर्णय लेना होता है, (भाषा का अर्थ क्रिया विज्ञान (प्रॅग्मॉटिक्स) के आयाम); ये सब कार्यो का निर्णय होने के पश्चात् ही मस्तिष्क से उच्चारण अवयवों को अपना काम करने का निर्देश प्राप्त होता है तब जाकर शब्दों का उच्चारण संभव होता है और उन्हें सुना जा सकता है (भाषा की स्वनिम व्यवस्था)। वाक् उत्पादन के समय हमें यह जानकारी रहती है कि, हम उसे पुनः सुन सकते है, और यह संदेश फिर मस्तिष्क में भेजा जाता है । इसे प्रतिपुष्टि प्रक्रिया (फीड बॅकसिस्टम) कहा जाता है । यह प्रति पुष्टि (फीडबॅक) प्रक्रिया किसी भी प्रकार की हो सकती है – दृश्य (विजुअल), श्रवण (औडोटरी), स्पर्श (टैक्टाइल), चालन (काइनैस्थैटिक,) दिशा (प्रोपायोसैप्टिव) इत्यादि । दृश्य (विजुअल) प्रतिपुष्टि का अर्थ है देखकर जानकारी प्राप्त करना । श्रवण (औडिटरी) प्रतिपुष्टि कान के द्वारा सुनकर मिलती है । स्पर्श (टैक्टाइल) में विभिन्न उच्चारण अवयन के द्वारा छू कर जानकारी प्राप्त करते हैं । चलन (काइनैस्थैटिक) में उच्चारण अवयन को हिलाने–डुलाने से जानकारी मिलती है और दिशा (प्रोपायौसैप्टिव) में उच्चारण अवयन की गति एवं संवेदना की जानकारी होती है । इन सब प्रतिपुष्टि प्रक्रिया द्वारा मस्तिष्क में प्राप्त जानकारियों से यह पता चलता है कि, किसी प्रकार के सुधार की आवश्यकता है । चित्र 3.3 में वाक् नियंत्रण व्यवस्थाओं को दर्शाया गया है ।

एक व्यक्ति को वाक् उत्पादन के पहले मस्तिष्क में विभिन्न क्रियाओं की श्रृंखला पूरी करने की आवश्यकता होती है

यदि भाषा ध्वनि उत्पादन के चरणों का निरीक्षण किया जाये तो यह स्पष्ट हो जाता है कि, उच्चारण प्रक्रियाओं की श्रृंखला में सब से अंत में मुख विवर से संबंधित प्रक्रिया होती है । इन ध्वनियों को उपयुक्त कर हमें क्या व्यक्त करना है यही हमारा सब से महत्वपूर्ण कार्य है । अतः ध्वनिउत्पादन में उच्चारण प्रक्रियाओं के अतिरिक्त अन्य प्रक्रियायें भी समिलित होती हैं ।

उच्चारण प्रक्रिया

मनुष्यों में ध्वनियों को उत्पन्न करने की प्रक्रिया की तुलना वायलन पर प्राप्त धुनो के साथ की जा सकती है । वायलन के तारों को एकत्र कर द्वारा बजाने से ध्वनि उत्पन्न की जा सकती है । इस प्रकार उत्पन्न की गयी ध्वनी की गरिमा को तारों के नीचे स्थित लकड़ी के खोल (अनुनादक) से संवधन कर बढ़ाया जाता है उस पर बजाई

मनुष्य में वाक् उत्पादन की तुलना वायलन पर बजी संगीत के धुनों के साथ की जा सकती है ।

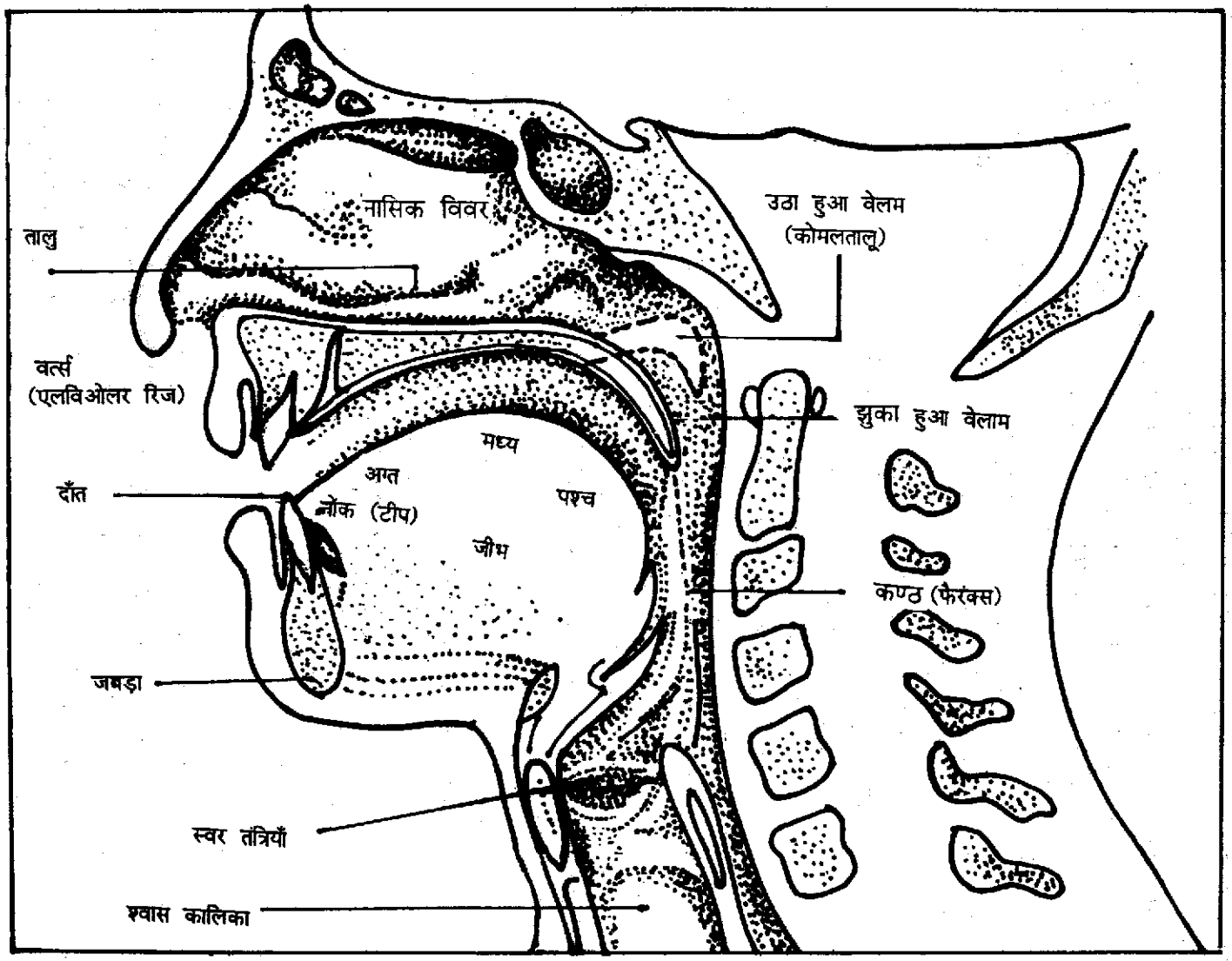

चित्र 3.2 उच्चारण (आर्टिकुलेटरी) एवं संवहन (रिजो नेटरी) व्यवस्थाओं के प्रमुख भाग

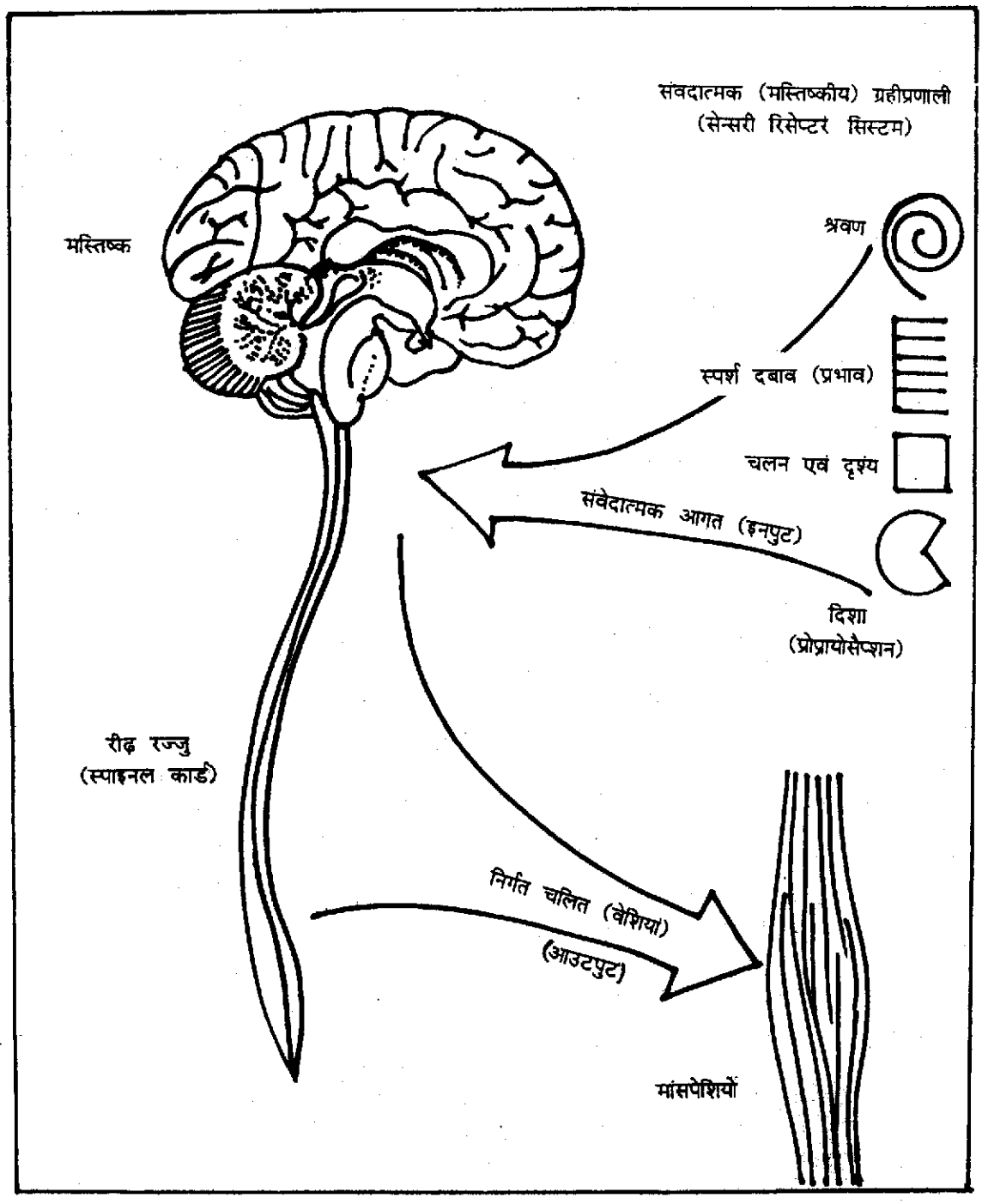

चित्र 3.3 : वाक् उत्पादन नियंत्रण व्यवस्था

गई धुनों की विशेषता और विविधता, तारों की मोटाई व उनकी झंकार की लम्बाई तथा कई अन्य बातों पर निर्भर करती है । ठीक इसी प्रकार मनुष्य में ध्वनि स्वरतंत्रिका के कंपन से उत्पन्न होती है यह कंपन उस वायु द्वारा होता है जो साँस लेते समय फेफड़ों से होकर बाहर निकलती है । उसी ध्वनि को वाणी का नाम भी दिया जाता है । यह आवाज जब बाहर आती है तो मुँह, गला, नाक व अन्य अवयवों द्वारा संवहित होकर रूपांतरित होती है जिससे विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का निर्माण होता है परन्तु वायलन से विपरीत जहाँ लकड़ी का अनुनादक एक ही आकार का होता है विवर हर ध्वनि पर अपना आकार बदल लेते हैं ।

लगातार वाक् के दौरान मुँह, नाक व गले के छिद्र प्रत्येक वाक् ध्वनि के समय अपने आकार को बद लते है।

वाणी (वाइस्) उत्पादन

स्वर यंत्रों में स्थित स्वर तन्तु ध्वनि के उत्पादन में मुख्य रूप से उत्तरदायी है वाणी उत्पादन के समय में स्वर तन्तु इकट्ठे हो जाते हैं और श्वास के मार्ग को बंद करते हैं । जिससे श्वास द्वारा फेफड़ो सेबाहर आने वाली हवा का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है (उच्छवास) जब वाक तंतुओं के नीचें हवा इकट्ठी हो जाती है तो हवा का दबाव बढ़ जाता है जिससे स्वर तंतु खुल जाते हैं और हवा का झोंका निकल जाता है । वाक् तंतु तत्काल ही पुनः बंद हो जाते है क्यों कि, हवा का दबाव, कम हो जाता है और स्वर तंतुओं का लचीलापन कुछ कम हो जाता है । यह खुलने और बंद होने (कंपन) की क्रिया ध्वनि उत्पादन के लिये एक सेकेण्ड में 100 से 300 बार होती है वाणी उत्पादन करने के लिये वाक् तंतु इसी तरह से कंपन पैदा करते हैं । इस प्रकार की वाणी बहुत कमजोर होती है इसलिये पदो या वाक्यों का निर्माण करने के योग्य नहीं होती है । जैसे जैसे यह वाणी मुँह की ओर बढ़ती है ये कई विवरों से हो कर गुजरती है जैसे गला, मुँह और नाक । जब यही ध्वनि इन विवरों से होकर बाहर आती है तो इसकी शक्ति बहुत बढ़ जाती है और इसके गुण भी बदल जाते हैं । विभिन्न विवरों द्वारा शक्ति व गुणों के बदलने की क्रिया को "अनुनाद संवहन" कहते हैं । क्यों कि, सभी व्यक्तियों के कंठ के ऊपर से विवर भिन्न-भिन्न व आकार के होते हैं । इसलिये संवहन किसी भी व्यक्ति की आवाज को गुण एवं विशेषता प्रदान करता है । यही वाणी भिन्न-भिन्न प्रकार के वाक् शब्दों, ध्वनियों के उच्चारण में काम आती है । वाणी के तीन पक्ष हैः तारत्व (पिच), गुण (क्वालिटी) एवं उच्चता (लाऊड—नैस) । तारत्व आवृति की मनौ वैज्ञानिक अनूभूति है । जितनी अधिक आवृत्ति होगी उतना अधिक तारत्व भी होगा । वाणी की उच्चता कम या अधिक हो सकती है। कुल मिला कर आवाज कितनी मधुर है, यह उसका गुण (क्वालिटी) है ।

वाणी का उत्पादन वाक् तंतुओं से होता है जो ध्वनिपेटी (लैरिंग्स) में उपस्थित है

वाक् ध्वनि

जैसा कि, पहले कहा जा चुका है कि, बोलना एक जटिल कार्य है । इस प्रक्रिया में वाक् अंग आपस में सामंजस्य बनायें रखकर इकट्ठे गति मान होते हैं । इनकी इस गति से मुख्यता दो प्रकार के शब्द उत्पन्न होते हैं – 'स्वर' और 'व्यंजन' । उनकी संख्या तथा विविधता एक भाषा से दूसरी भाषाओं में भिन्न होती है । इस अध्याय में अंग्रेजी तथा तेलुगु भाषा के शब्द व उदाहरण दिये गये हैं । पाठक परिशिष्ट 3.1 और 3.2 में तेलुगु भाषा के स्वर और व्यंजन, शब्द और उनके विवरण देख सकते हैं । और परिशिष्ट 3.3 व 3.4 में हिन्दी भाषा के ध्वनियों का विवरण दिया गया है । पाठकों को चाहिये कि, अपने अपने भाषा के वाक् शब्दों की सूची बनायें उनका विवरण दें ये उचित होगा ।

एक भाषा से दूसरी भाषा के स्वर और व्यंजनों की संकल्पा अलग अलग होती है ।

यहाँ यह ध्यान रहे कि, ध्वनियों के लिये वाक् यंत्रावली की गतिविधियां नियमित या स्थित नहीं है । वाक् यंत्रावलि में क्षतिपूरक क्षमता होती है इसलिये एक ही प्रकार की ध्वनि, यंत्रावली की गतिविधि को बदल या प्रतिबधित करके भी निकाली जा सकती–उदाहरण के लिये-जो/प/शब्द की आवाज ओंठों को बंद करके निकाली जाती है। यही शब्द ऊपर के दाँतों को नीचे के ओठ से दबा कर भी निकाली जा सकती है ।

स्वर

स्वरों के उत्पादन में हवा को स्वर तंत्रो द्वारा कंपित मुँह से बाहर निकाला जाता है । इस में मुँह को एक खुली तथा निश्चित अवस्था में रखा जाता है । जिह्वा और ओठ के आकार, मुख के आकार को बदल देते हैं जिससे विभिन्न स्वरों का विशेष रूप मिलता है उदाहरण के लिये-स्वर "ध्वनि" 'शूट' शब्द में /उ/ तथा 'शीट' शब्द में /इ/ के उच्चारण में संभावित ओठों की आकृति और जिह्वा की आकृति की तुलना कीजिये। चित्र 3.4 में /इ/ तथा /उ/ की भिन्नता स्पष्ट होती है । 'उ' बोलते समय हम देखते हैं कि, ओंठों की आकृति गोलाई में एवं जिह्वा का भाग कुछ ऊपर उठता है । जबकि, (इ) बोलते समय ओंठों की आकृति चौड़ी हो जाती है और जिहवा का

स्वरों के उत्पादन के समय उच्छ्वासी हवा को रोका नही जाता है ।

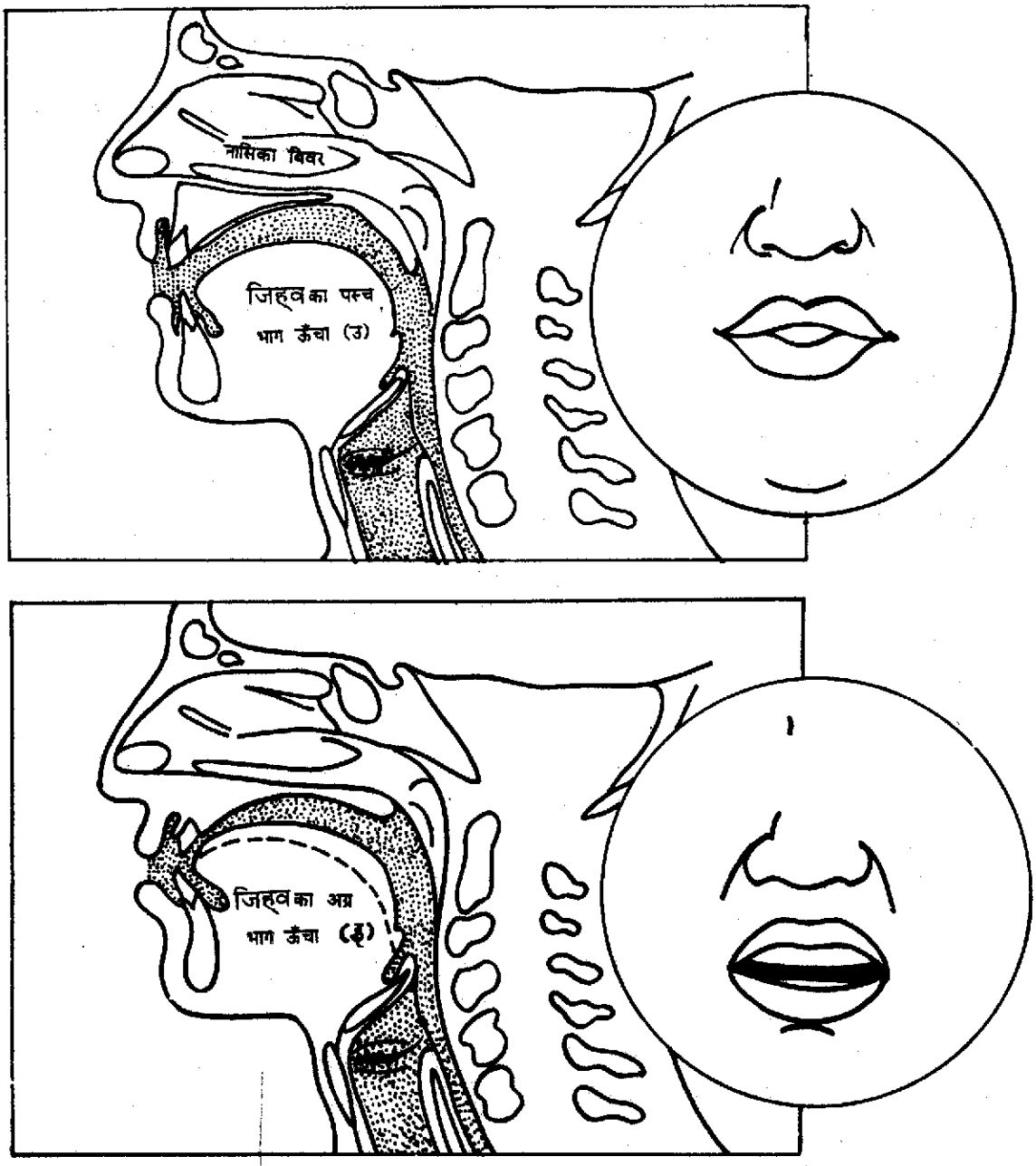

चित्र 3.4: स्वर (इ) तथा (उ) में जिह्व की स्थिति

भाग कुछ ऊपर उठ जाता है।तेलुगु के कुछ उदाहरण नीचे तालिका 2 में दिये गये हैं ।

तालिका - 2 - विभिन्न स्वर ह्रस्व एवं दीर्घरूप में उदाहरण सहित

ह्रस्व स्वर	उदाहरण	दीर्घ स्वर	उदाहरण
अ /a/	*आम्मा*	अ /a :/	*आऊ (गाय)*
इ /i/	*इल्लू (घर)*	इ /i :/	*इगा (मक्खी)*
उ /u/	*उप्पु (नमक)*	उ /u :/	*ऊगू (झूलना)*
ए /e/	*एक्कु (चढ़ना)*	ऐ /e :/	*एनगु (हाथी)*
ओ /o/	*ओकटी (एक)*	औ /o :/	*ओड़ा (जहाज)*

स्वरों का वर्णन करने के लिये जिह्वा की स्थिति और ओंठों का आकार बहुत आवश्यक है । जिह्वा की स्थिति का वर्णण करते हुए जो शब्दावली प्रयोग की गयी है वह है अग्र, केन्द्रीय, पश्च, मध्य, संवृत और विवृत । ओंठ के आकारों को समझाने के लिये वृताकार एवं आवृताकार शब्दों का प्रयोग किया गया है । जिह्वा की स्थितियों का वर्णन नीचे दिया गया है ।

अग्रभागः स्वर उत्पादन के लिये इस वर्ग में जिह्वा का अग्र भाग या तो नीचे होता है या ऊपर ।

मध्यभागः स्वर उत्पादन के लिये जिह्वा का मध्य भाग ऊपर या नीचे होता है ।

हर एक भाषा में स्वरों की संख्या अलग हो सकती है

पश्च भागः उसमें जिह्वा का पृष्ठ भाग विश्राम स्थिति के मुकाबले में ऊपर या नीचे किया जाता है ।

संवृत्तः इसमें जिह्वा अपनी विश्राम स्थिति के मुकाबले ऊपर की ओर रहती है ।

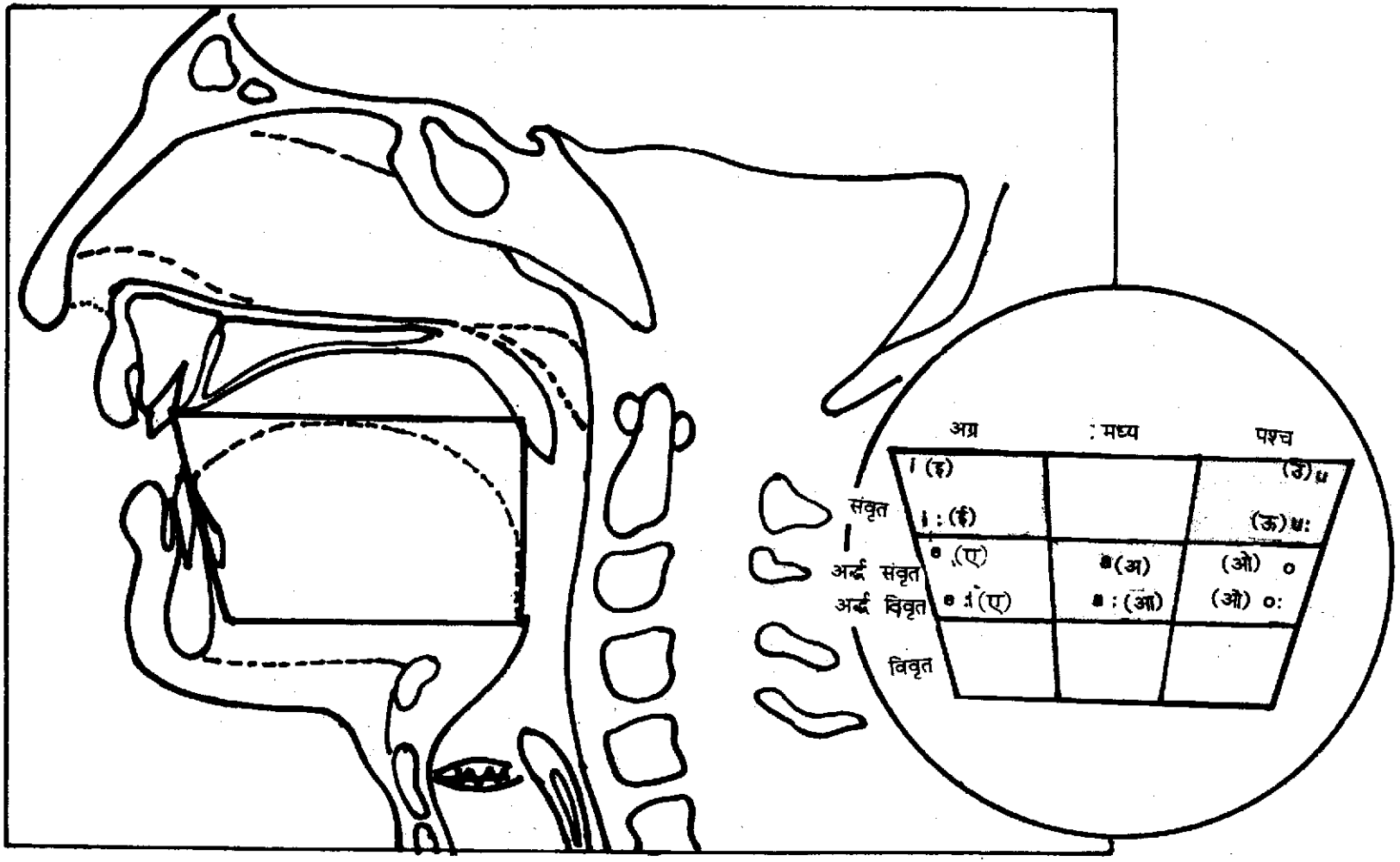

चित्र 3.5 : तेलुगु स्वर ध्वनियों का उच्चारण स्थान

अर्ध संवृत्तः जिह्वा अपनी ऊँचाई की अवस्था में कोई परिवर्तन नहीं करती ।

विवृत्तः जिह्वा अपनी विश्राम स्थिति के मुकाबले नीचे की ओर रहती है ।

तेलुगु भाषा में लगभग 10 स्वर है । परिशिष्ट 3.1 में इनका वर्णन विस्तार पूर्वक किया गया है । विभिन्न स्वरों के मुख में स्थान चित्र 3.5 में दिखाया गया है । उनके लिये प्रयोग की गयी शब्दावली पर ध्यान दीजिये ।

व्यंञ्जन

श्वास लेते समय उच्छ्वास हवा प्रवाह को अवरूद्ध करने का परिणाम है व्यंजन

व्यंञ्जन के उत्पादन के लिये मुख के कई भागों को संकुचित करके, पूर्ण रूप से अथवा अपूर्णरूप से बंद किया जाता है । इससे वायु का बहाव अवरुद्ध हो जाता है या उस बहाव को पुर्न निर्देशित किया जाता है जिससे व्यञ्जन मुँह से निकलते हैं । उनमें से कुछ व्यञ्जन घोष (वॉइस्ड्) होते हैं और कुछ अधोष (अनवॉइस्ड्) कुछ व्यञ्जनों के उच्चारण में नासिका विवर खुले रहते हैं व्यञ्जनों का वर्णन निम्नलिखित आधार पर किया जा सकता है ।

1. उच्चारण स्थान अथवा वायु के बहाव का अवरूद्ध स्थान।

2. उच्चारण के समय वायु का बाहर निकलने का ढंग ।

3. क्या वे घोष हैं या अघोष

प्रत्येक व्यंजन के उत्पादन को उनके स्थान, प्रयत्न और घोष के आधार पर अलग किया जा सकता है ।

(अ) व्यञ्जन बोलते समय ओंठों से वाक् तन्तुओं तक जहाँ वायु का बहाव (मार्ग) पूर्ण रूप से अथवा अपूर्ण रूप से अवरूद्ध हो जाता है वही उस व्यंञ्जन का उच्चारण स्थान है । उच्चारण स्थान के आधार पर व्यञ्जनों को 8 वर्गों में बाँटा गया है जैसा कि, तालिका 3 में उदाहरण के साथ दिखाया गया है ।

तालिका —3—व्यञ्जनों के उत्पादन (उच्चारण) स्थान पर आधारित वर्गीकरण

उच्चारण स्थान	विवरण	अंग एवं प्रक्रिया	व्यञ्जन	उदाहरणार्थ शब्द
द्विव्योष्ठ्य	वे व्यञ्जन जो दोनों ओठों द्वारा बोले जाते हैं ।	नीचे का ओष्ठ ऊपर के ओंठ को छूकट वायु के गति में बाधा डालता है ।	(p) (b) (प) (ल)	पेट, बॉल (थपथपाना, गेंद)
दन्त्योष्ठ्य	वे व्यञ्जन जो ऊपर के दांतों को नीचे के ओंठों से छूकर बोले जाते हैं ।	ऊपर के अग्र दांत नीचे के ओंठ को छूकर वायु के बहाव को अवरुद्ध करता है ।।	(v) (f) (व) (फ)	वैन, फॅन (वैन, पंख)
दंत्य	वे व्यञ्जन जो जिह्वाग्र के ऊपरी दाँतों के साथ छूने से बोले जाते हैं ।	जिह्वा का अग्रभाग ऊपर के दाँतों को छूता है ।	(th) (d) (थ) (द)	थॉट, दॅट (विचार, वह)
वर्त्स्य	वे व्यञ्जन जो जिह्वा के अग्र भाग द्वारा अंदर के मसूडे के ऊपर के हिस्से को (मूर्धा) छूकर वायु अवरूद्ध करके बोले जाते हैं ।	जिह्वा के अग्र भाग दांत के ऊपर के मसूडे के अगले हिस्सा (मूर्धा) को छूता है ।	(t) (d) (ट) (ड)	टॉम, डॅम ● (टॉम, बाँध)
तालव्य●●	वे व्यञ्जन जो जिह्वा के मध्य भाग को तालु से छूकर वायु अवरुद्ध कर बोले जाते हैं ।	जिह्वा का मध्य भाग कठिन तालु को छूता है।	(ch) (j) (छ) (ज)	चार्म, जॅम (सौंदर्य, जॅम)

कृ.पृ.प.

कंठ्य	वे व्यञ्जन जो जिह्वा के पृष्ठ बाग को कोमल तालु के भाग को छूकर वायु अवरुद्ध कर बोले जाते हैं ।	जिह्वा कोमल तालु को छूती है ।	(k) (g) (क) (ग)	कीट, गेन (कीट, लाभ)
स्वरयंत्र मुखी	गले में हवा की संकीर्णता वाक् तंतुओं के पास होती है ।	गले में वाक् तन्तु कंपित होकर हवा को फूँक कर निकाल देते हैं	(h) (ह)	अहिंसा
मूर्धन्य●●●	वे व्यञ्जन जिसमें जिह्वा निचला भाग छूम कर ऊपर तालु को छूता है जिससे वायु अवरुद्ध हो जाती है	जिह्वा छूम जाती है और उसका निचला भाग तालू को बार–बार छूता है ।	(r) (र)	रैन (दौडा)

नोटः तेलुगु भाषा के सामान्य व्यञ्जन व उनका वर्णन परिशिष्ट 3.2 में दिया गया है । और हिंदी भाषा के व्यंजन व उनका वर्णन परिशिष्ट 3.4 में दिया गया है ।

● अधिकतर भारतीय भाषा के वक्ता वर्त्स्य ट, ड़ को मूर्धन्य बना देते हैं । उपरोक्त उदाहरण नैसर्गिक अंग्रेजी वक्ताओं के हैं ।

●● इधर तालव्य शब्द तेलुगु में वर्त्स्य–तालव्य (ॲलवियो पेलॅटल) के समान है, उदाहरण के लिये /ष/ (शंकर); पलॅटो ॲलवियोलार/श/ (शरट्) (कंडीशन) ।
और पोस्ट ॲलवियोलार /च/ (चक्का) (लकडी) ।

●●● मूर्धन्य शब्दों को भारतीय भाषामें लिखित में एक बिंदु शब्द के नीचे लगाकर दिखाते हैं जैसे– /ṭ, ḍ/

तालिका-4— व्यञ्जनों का उच्चारण प्रयत्न पर आधारित वर्गीकरण

उच्चारण स्थान	विवरण	उच्चारण प्रयत्न	व्यञ्जन	उदाहरणार्थ शब्द
स्पर्श (स्टॉप प्लोजिव्स)	इसमें वायु पूर्ण तथा अवरुद्ध की जाती है । अचानक मार्ग खोल दिया जाता है जिससे पीछे रूकी हुई वायु तेजी से निकलती है ।	उच्चारण स्थान पर पूर्ण रूप से वायु को अवरुद्ध करना और अचनाक रिहा कर देना	(p, t, k) प, त, क	पैट कीट (थपथपाना, किट)
संघर्षी	इन व्यञ्जनों को बोलने के लिये एक संकरा मार्ग होता है । वायु इस संकरे मार्ग से तेजी से निकलती है ।	उत्पादन स्थान में अवरुद्दता, जिससे हवा के दबाव के कारण घर्षण के साथ शोर उत्पन्न होता है ।	(s, sh, z) (स, श, ज)	सील, झील (मोहर, उत्तेजना)
स्पर्श संघर्षी	स्पर्श एवं संघर्षी का संयोजन	पूर्ण बंद के बाद वायु के निकलने पर संघर्षी ध्वनि	(ch, j) (च, ज)	चीप, जीप (सस्ता, जीप)
नासिक्य	इन व्यञ्जनों में नासिका विवर का अनुनाद होता है । मुख पूर्ण तथा बंद होता है और वायु नासिका द्वारा निकलती है	उत्पादन स्थान पर पूर्ण बंद वायु का तेजी से नासिका द्वारा निकालना (सभी घोष है)	(m, n) (म, न)	माईट, नाईट (शायद, रात)
पाश्विक	वे व्यञ्जन जिनमें वायु को मध्य में रोक कर किनारे के स्थान से निकलने दिया जाता है ।	वायु को उच्चारण स्थान पर रोक कर किनारे से निकाला जाता है ।	(l) (ल)	लेडी (औरत)

कृ.पृ.प.

महाप्राण	ये अधिक वायु वाले विराम हैं जहाँ हवा एकाएक निकाल दी जाती है ।	इन व्यञ्जनों को बोलने के लिये ओठों को जोड़कर अथवा जिह्वा से वायु का बहाव अवरुद्ध करके एकदम छोड़ दिया जाता है ।	(ph) (फ)	फोन
लुंठित	यह मूर्धन्य का ही उदाहरण है ।	–	(r) (र)	गुर्रम् (घोड़ा)

सूचना– भारतीय भाषाओं में अनेक व्यञ्जन महाप्राण वर्ग के होते हैं जिनके उच्चारण में कुछ अधिक प्रयत्न करके वायु को छोड़ा जाता है । उदाहरण के लिये – फ, भ, थ ।

(ब) *उच्चारण विधि* – व्यञ्जन किस तरीके से बोला गया है, वही उत्पादन विधिहै । वायु का बहाव कुछ पल के लिये रोक लिया जाता हैजिससे ध्वनि उत्पन्न होती है । तालिका 4 में व्यञ्जन उच्चारण के ढंगों का वर्णन उदाहरण सहित दिया गया है

(स) सभी व्यञ्जन घोष नहीं होते अर्थात् सभी व्यञ्जनों के उच्चारण के लिये वाक् तन्तुओं का कंपन आवश्यकनहीं है । घोष व्यञ्जनों में वाक् तन्तुओं का कंपन होता है जबकि अघोष व्यञ्जनों में कुछ तन्तुओं का कंपन नहीं होता इसमें वायु सीधे मुख में आ जाती है । तालिका 5 में घोष – अघोष के आधार पर व्यञ्जनों का वर्णन किया जाता है ।

तालिका – 5.

घोष एवं अघोष व्यञ्जनों के जोड़ो का उनके उच्चारण स्थान के आधार पर वर्गी करण.

	घोष	अघोष
द्वि ओष्ठ्य	b (ब)	p (प)
वर्त्स्य	d (द)	t (त)
मूर्धन्य	ḍ (ड़)	ṭ (ट)
कंठ्य	g (ग)	k (क)
तालव्य	j (ज)	c (च)
उत्तर कोष्ठकीय	z (ज़)	s (स)
दन्तोष्ठ्य	v (व)	f (फ)

उदाहरण के लिये–'प' अघोष है और 'ब' घोष । यह समझने के लिये 'प' और 'ब' का उच्चारण उसके अन्तिम स्वर 'प' के बिना

कीजिये । यह ध्यान दीजिये कि, 'प' बोलते हुये वाक् तन्तु शान्त थे इसलिये इसे अघोष व्यञ्जन कहा जाता है ।

सभी व्यंञ्जनों को तीन विशेषताओं के आधार पर वर्णित किया जा सकता है – स्थान, प्रयत्न तथा घोष । उदाहरण के लिये 'प' एक द्वि ओष्ठीय, स्पर्श और अघोष व्यञ्जनहै जबकि, 'ब' एक द्विओष्ठीय, स्पर्श घोष व्यंञ्जन है । इस जानकारी के साथ व्यंञ्जनों को अच्छी तरह समझने के लिये चार-पाँच बार बोलकर उनके स्थान, प्रयत्न और घोष पर ध्यान दीजिये । शब्द किस प्रकार बोले जाते है यह जानने के लिये यदि हम दर्पण का प्रयोग करेंतो हमें मुख के अग्र भाग से बोले जाने वाले व्यञ्जनों के उच्चारण स्थान का पता चलेगा । यह याद रहे कि, व्यंञ्जनों की संख्या, उनका उच्चारण स्थान और उनके बोलने की विधि विभिन्न भाषाओं मे अलग-अलग होगी । तेलुगु भाषा में लगभग 36 व्यंञ्जन है जो कि, परिशिष्ट 3.2 में दिये गए है । हिन्दी भाषा के व्यंजन परिशिष्ट 3.4 में दिये गये है ।

घोष एवं अघोष व्यञ्जनों के बीच के अंतर को समझने के लिये इनको धीरे-धीरे फुसफुसा कर बोलिये

व्यंञ्जनो की संख्या एवं उनका उच्चारण प्रयत्न हर भाषा में अलग-अलग होता है

अन्य प्रकार की ध्वनियाँ

स्वर तथा व्यंञ्जनों के अलावा कुछ अन्य ध्वनियाँ भी होते है जिन्हें अर्ध स्वर, संयुक्त स्वर एवं मिश्रित स्वर कहा जाता है । अर्धस्वर न तो स्वर है न ही व्यञ्जन-उदाहरणके लिये 'व' W "वाईन" शब्द में । सयुक्त स्वर दो स्वरों का मेल हैं जैसे /ai/ ऐ /ou/ औ दो व्यञ्जनों के मेल को मिश्रित वर्ण कहा जाता है जैसे /tr/ ट्र, 'ट्री' शब्द में

स्वरों एवं व्यंञ्जनों के अलावा भाषा की अन्य ध्वनियाँ भी है अर्धस्वर, संयुक्त स्वर और मिश्रित ध्वनि

शब्दों एवं वाक्यों में वाक् ध्वनियाँ:

बोलते समय हम इन ध्वनियों को अलग-अलग नहीं बोलते यानि कि, प्रतिदिन की भाषा में 'प' 'ट' 'क' जैसी ध्वनियाँ अलग-अलग नही बोलते बल्कि, वाक् ध्वनियों एवं शब्दों के समुच्चय की एक कड़ी है । ऐसी कड़ियों का निर्माण उसकी भाषा के नियमों पर आधारितहोता है — भाषा का शब्द (मोरफालोजी) और वाक्य विन्यास (सिन्टैक्टिक) नियम । जब एक वयस्क शब्द कहता है तो वाक्

अंग बहुत शीघ्रता से एक उच्चारण स्थान से दूसरे उच्चारण स्थान में गतिमान होते हैं । इसमें एक विशेष जटिल योग्यता चाहिये जिसके द्वारा हम बहुत कम समय में अधिक शब्द बोल पाते हैं समय एवं स्थिति का ध्यान रखते हुये उच्चारण कर्ता प्रत्येक उच्चारण के लिये उनके स्थान एवं प्रयत्न में नहीं जाते बल्कि, उसके बदले में वह स्थान, जो लक्ष्य के नजदिक ही है । इस्तेमाल किया जाता है लगातार बोलते समय ध्वनि का उच्चारण बिल्कुल वैसा ही नहीं होता जैसा कि, उसे अलग-अलग बोलते समय होता है । उदाहरण के लिये अंग्रेजी भाषा में 'ग' g अलग से बोलने का स्थान व प्रयत्न देखिए और फिर देखिए कि, गिव, गन, गैम्बल, गिवन, गर्ग वैगरह में वही 'ग' नहीं है और अलग से बोले जाने वाले 'ग' से भिन्न है। ऐसा इसलिये होता है क्यों कि, ध्वनियाँ अपने आप-पास के ध्वनियों से प्रभावित होती है । एक ध्वनि का दूसरे ध्वनि के प्रभावकों सह उच्चारण (कोआर्टिकलेशन) कहा जाता है । उदाहरण के लिये अंग्रेजी भाषा में 'अ' ध्वनि मैंगो शब्द में अनुनासिक हो जाता है जबकि, वैसे यह अनुनासिक नहीं है 'स' S 'डॉग्स्' में घोष हो जाता है । को आर्टिकुलेशन द्वारा वक्ता अलग-अलग शब्दों या अक्षरों के लिये बिना रूके ही लगातार बोल सकता है । इसमें श्रोता भी वक्ता की बात को अधिक सरलता से समझ सकता है ।

लगातार बोलते हुए हम विभिन्न ध्वनियों के उत्पादन गुणों को मिला देतें है ।

शब्दों या वाक्यों में बोलना ही वक्ता को बात समझाने के लिये पर्याप्त नहीं है । स्वर संबंधी विशेषतायें जैसे कि, लय, स्वर-शैली, दबाव और समय भाषा को अधिक समझने योग्य बनाते हैं । इसके अलावा परिस्थिति और संदर्भ भी विषय को समझने में सहायता करते हैं ।

लय आदि गुण भाषा को अधिक स्पष्ट एवं मधुर बनाते है ।

क्योंकि, उच्चारण योग्यता (आर्टि कुलेटरी एबिलिटी) के अलावा भी कई दूसरे तत्व भी भाषा को अधिक स्पष्ट बनाते हैं इसलिये भाषा की स्पष्टता संबंधी कठिनाइयों का उपचार करते समय पूरा ध्यान केवल उच्चारण पर ही नहीं होना चाहिये ।

(69)

ध्वनियों की विकास/अधिगम क्रिया

समय के साथ-साथ नियमानुसार बच्चे वाक् ध्वनियों का उत्पादन सीख लेते हैं । कुछ प्रकार की ध्वनियाँ बच्चों के पहले शब्द में अन्य शब्दों से पहले दिखाई देती हैं जैसे कि, इन में म,ब,व,ड,न,

और "त" व्यंञ्जन दूसरे व्यंञ्जनों के मुकाबले प्रायः प्रयुक्त होते हैं । अधिकतर स्वर, व्यञ्जनों से पहले सीखे जाते हैं और यह तीन वर्ष की आयु तक सीखे जाते हैं । शब्द सीखने के समय में व्यक्ति की उम्र् में व्यक्तिगत भिन्नता होती है । यह भिन्नता कुछ ध्वनियों के लिये तीन वर्ष तक भी होती है । अंग्रेजी बोलने वाले बच्चों पर किए गये अध्ययन से ज्ञात हुआ कि, पहले ध्वनियों को शब्दों के प्रारंभ में सीखते हैं । चित्र 3.6 में दिखाया गया है कि, किस आयु तक अधिकतर बच्चे व्यञ्जन सीखते हैं ।

द्वि औष्ठीय व्यंञ्जन p "प" b "ब" m "म" और स्वरयंत्र मुखी h 'ह' पहले सीखे जाते है, जिसके बाद कंठ्य ch, jh, k, g (कग) वर्त्स्य t, d (त द), दन्त, t, d (त द) और तालव्य (च ज) सीखे जाते हैं । ध्वनियों जैसे कि q (थ) 'धिंक' शब्द में, d (द) दैन शब्द में और z (ज) जैसे कि, "मेज़र" शब्द में सबसे अन्त में सीखे जाते हैं । मिश्रित शब्द सात वर्ष की आयु के बाद सीखे जाते हैं ।

बच्चा जो वाक् ध्वनि सीखता है वह प्रथम भाषा विकास के समय जिस भाषा को वो अधिक सुनता है उस पर निर्भर करता है । ऐसा लगता है कि, बच्चा विभिन्न ध्वनि सीखने की प्रक्रिया एक क्रम से करता है । सामान्यतः आसान शब्द, कठिन शब्दों से पहले सीखे जाते हैं । शब्द सीखते हुये बच्चा पहले शब्द के लगभग मिलती जुलती (अप्रॉक्सीमेशन) ध्वनि सीखता है फिर धीरे–धीरे परिष्कृत शब्द बोल पाता है ।

वाक् संग्रहण पर टिप्पणी

वाक् उत्पादन की भांति भाषा का वाक् सग्रहण भाग भी जटिल है । इसकी प्रारम्भिक अवस्था में बोले हुये संकेतो को सुनना यानि शारीरिक क्रिया होती है । सुने हुए संकेतों का "वाक्" समझने के लिये व्यक्ति को अपने दिमाग के भंडार में से बोले हुए शब्दों को चुनने की योग्याता होनी चाहिये । यह मस्तिष्क की अनेक क्रियाओं की एक श्रृंखला के द्वारा होता है । मस्तिष्क सुने हुये संकेतों को पहचानने की कोशिश करता है कि, क्या वो अर्थ पूर्ण है, बच्चों में यह जन्म

• सैन्डर्स (1972) जैसे बॅन. राइपर सी और एमरीक एल. (1990) स्पीच करेक्शन में उध्दृत

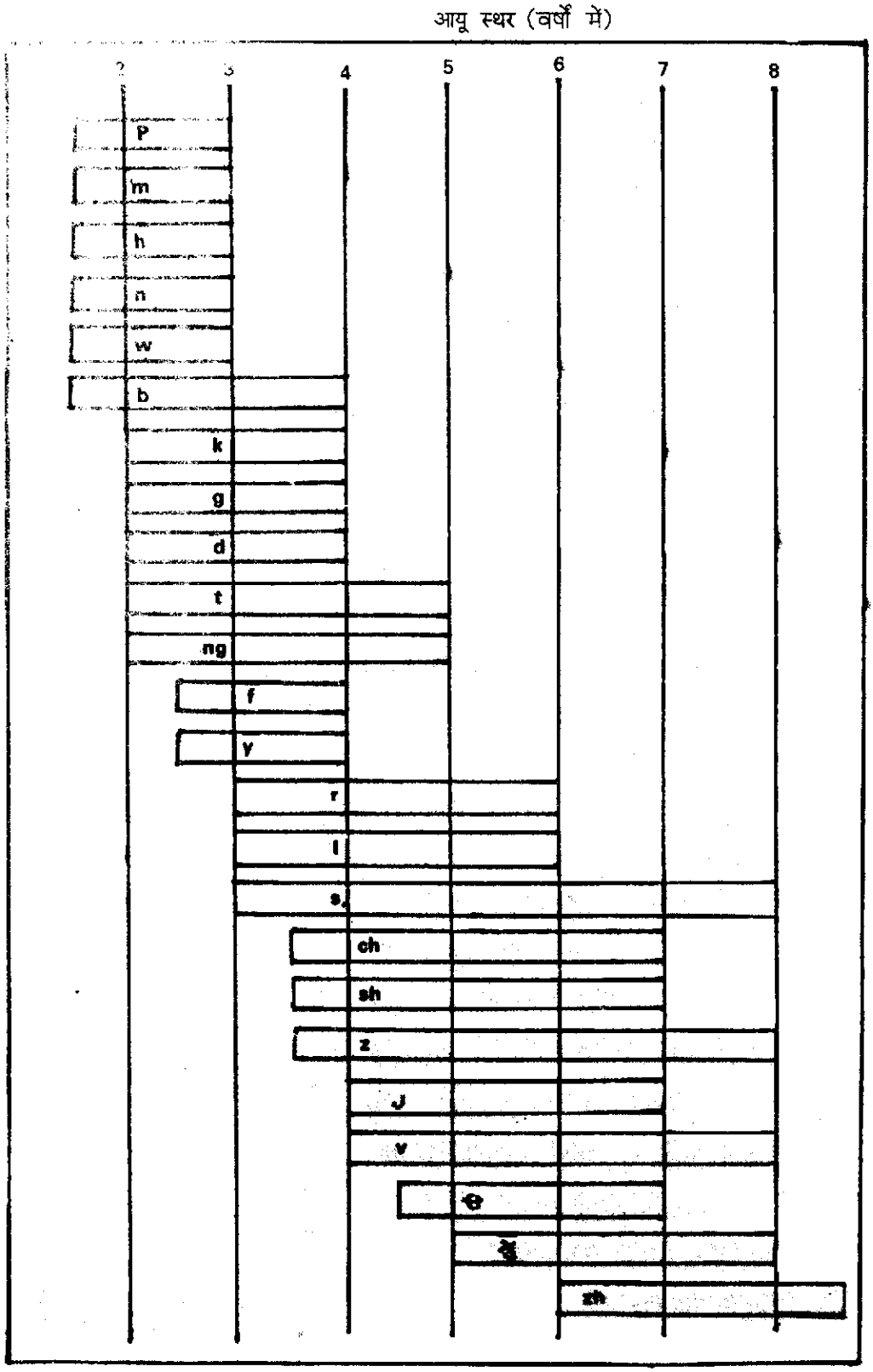

चित्र 3.6 (अ) वाक् ध्वनियों की अधिगमन क्रिया (सैन्डर्स 1972)

चित्र 3.6 (ब) वाक् ध्वनियों का विकास

जात योग्यता होती है कि, वे सुनी हुयी ध्वनियों को वाक् जैसे समझ लेते हैं । लेकिन, उन्हे यह भी समझ लेना आवश्यक है कि, कौन सी ध्वनियों का सयोंजन उनकी भाषा में कुछ अर्थ रखता है – यह भाषा सीखने की प्रक्रिया का एक भाग है । भाषा ग्रहण की अंतिम अवस्था है सुनी हुई ध्वनियों को भाषा के रूप में पूरी तरह समझना । यह अवस्था भाषा के वाक्य विन्यास (सिन्टेक्स) और भाषा के अर्थ व्यवस्था के नियमों की जानकारी के साथ विभिन्न संकेतों एवं शब्दो के विकास पर निर्भर करती है । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि, बोलना सीखना भाषा ग्रहण की लम्बी क्रिया का एक भाग है। अगले अध्याय में इसी विषय को विस्तार पूर्वक पढ़ेगें ।

सारांश

इस अध्याय में विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के उत्पादन के बारे में बताया गया है । पहले स्वरों का और फिर विभिन्न प्रकार के व्यंज्जनों का उनके उच्चारण स्थान, ढंग और आवाज के साथ वर्णन किया गया है । यह अध्याय ध्वनियों को अलग-अलग बोलने में और ध्वनियों को शब्दों और वाक्यों में बोलने के अंतर पर प्रकश डालता है । अंत में एक सामान्य बालक किस प्रकार अलगअलग आयु वर्ग में विभिन्न प्रकार के शब्द सीखता है इसके बारे में बताया गया है वाक् ग्रहण की धारणा को प्रस्तुत किया गया है । तेलुगु भाषा का विस्तृत वर्णन परिशिष्ट 3.1 और 3.2 में दिया गया है। हिंदी स्वर और व्यंजनों का विवरण परिशिष्ट 3.3 और 3.4 में दिया गया है ।

परिशिष्ट 3.1

तेलुगु भाषा के स्वर

स्वर		वर्णन●	उदाहरण
i	(ई)	अग्र, संवृत्त, आवृत्ताकार, दीर्घ,	ईगा, (मक्खी) ईदू (तैरना)
i	(इ)	अग्र, संवृत्त, आवृत्ताकार, ह्रस्व,	इदी (यह) इल्लू (घर)
e :	(ए)	अग्र, अर्धसंवृत्त, आवृत्ताकार, दीर्घ	एनगु (हाथी) एडू (सात)
e	(ए)	अग्र अर्धसंवृत्त, आवृताकार, ह्रस्व	एत्तू (उठाओ) एक्कू (चढ़ो)
a :	(आ)	मध्य, अर्धसंवृत्त, आवृताकार, दीर्घ	आट (खेल) आरु (छः)
a	(अ)	मध्य, अर्धसंवृत्त, आवृताकार ह्रस्व	अम्मा (माँ) अक्का (बहन)
o :	(ओ)	पश्च, अर्धसंवृत्त, वृत्ताकार, दीर्घ	नोरू (मुख) कोती (बंदर)
o	(ओ)	पश्च, अर्धसंवृत्त, वृत्ताकार, ह्रस्व	ओकटी (एक), ओल्लू (शरीर)
u :	(ऊ)	पश्च, संवृत्त, वृत्ताकार, दीर्घ	ऊरू (गांव), ऊगु (झूलना)
u	(उ)	पश्च, संवृत्त, वृत्ताकार, ह्रस्व	उप्पू (नमक) उतुकू (धोना)
ai	(ऐ)	संयुक्त स्वर	आइदू (पाँच)
au	(औ)	संयुक्तस्वर	आऊनू (हाँ).

● इन स्वरो का उत्पादन दिखाने के लिये चित्र दिये गये है, इन चित्रों का केवल मार्गदर्शन के लिये ही प्रयोग करें ।

"कार्स्टेक डि.जे. मिहर, ए. कृष्णमूर्ती बि.एच. (1987)

'ए शार्ट आऊत लाइन ऑफ तेलुगू फोनेटिक्स"

इंडियन स्टातिस्टिकल इनस्टिट्यूट, कलकत्ता. आधार पर ।

चित्र 3.7 /a/ (अ) स्वर का उच्चारण स्थान

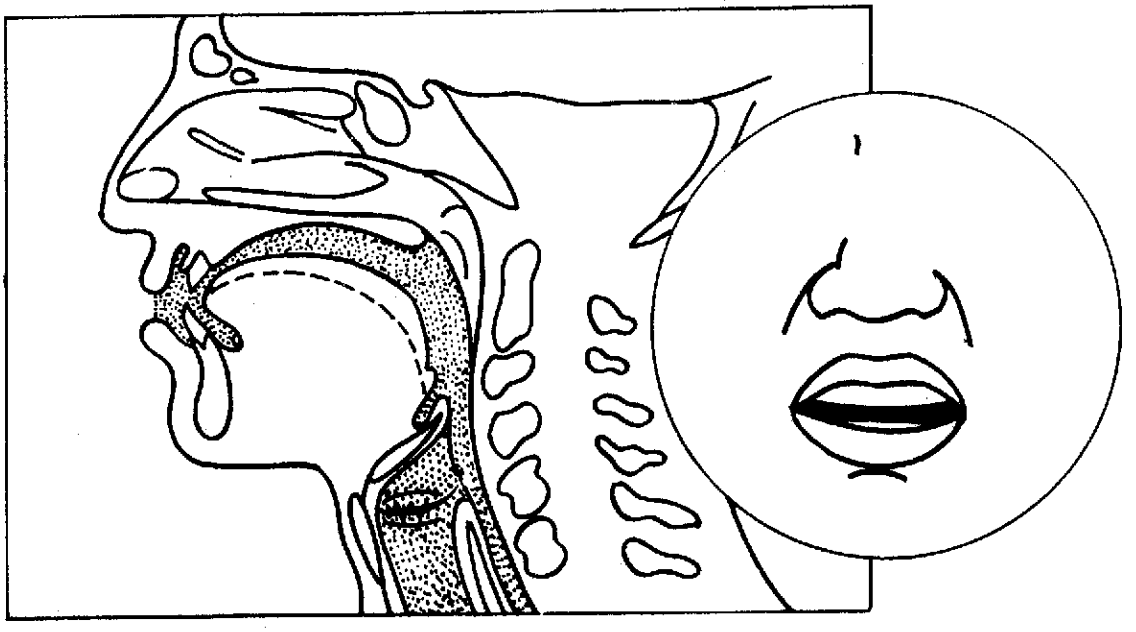

चित्र 3.8 /i/ (इ) स्वर का उच्चारण स्थान

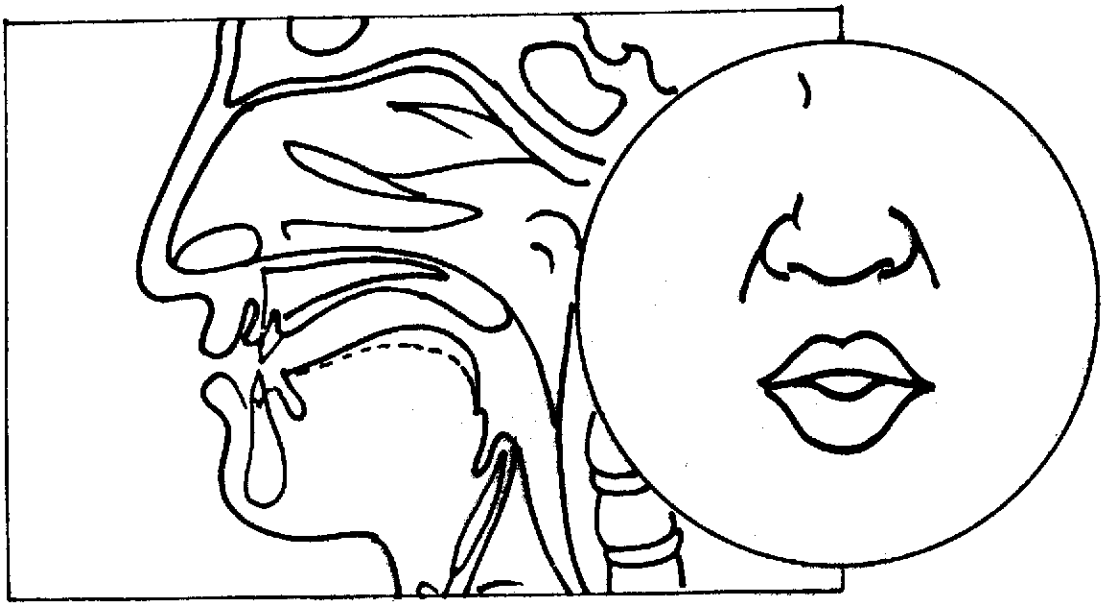

चित्र 3.9 /u/ (उ) स्वर का उच्चारण स्थान

चित्र 3.10 /e/ (ए) स्वर का उच्चारण स्थान

चित्र 3.11 /o/ (औ) स्वर का उच्चारण स्थान

परिशिष्ट 3.2

तेलुगु व्यञ्जनों का वर्णन

व्यञ्जन ध्वनि	वर्णन	उदाहरण
p (प)	अघोष, द्विओष्ठीय, अल्पप्राण, स्पर्शी,	पलका (स्लेट)
pʰ (फ)	अघोष, द्विओष्ठीय, महाप्राण, स्पर्शी,	फलम (फल)
b (ब)	घोष, द्विओष्ठीय, अल्पप्राण, स्पर्शी,	बल्ली (चिपकली)
bʰ (भ)	घोष, द्विओष्ठीय, महाप्राण, स्पर्शी	भूमी (धरती)
t (त)	अघोष, दंन्त्य, अल्पप्राण, स्पर्शी	तीपी (मीठा)
tʰ (थ)	अघोष दंन्त्य, महाप्राण, स्पर्शी	स्थलम् (स्थान)
d (द)	घोष, दंन्त्य, अल्पप्राण, स्पर्शी	दारी (रास्ता)
dʰ (ध)	घोष, दंन्त्य, महाप्राण, स्पर्शी	धर्मम् (धर्म)
k (क)	अघोष, कंठय्, अल्पप्राण, स्पर्शी	कोती (बंदर)
kʰ (ख)	अघोष, महाप्राण, कंठय्, स्पर्शी	खरीदू (दाम)
g (ग)	घोष, कंठ्य अल्पप्राण, स्पर्शी	गाली (हवा)
gʰ (घ)	घोष कंठ्य महाप्राण, स्पर्शी	संघम (संघ)
f (फ)	अघोष, दन्योष्ठच संघर्षी	काफी (कॉफ़ी)
s (स)	अघोष, वत्स्र्य, संघर्षी	सूर्यडू (सूर्य)
s (ष)	अघोष, वत्स्र्य, तालव्य, संघर्षी	शक्ति (शक्ति)
sʰ (श)	अघोष, तालव्य, वत्स्र्य, संघर्षी	शरतू (शर्त)
r (र)	घोष, वत्स्र्य, संघर्षी,	राई (पत्थर)
h (ह)	घोष, स्वर यंत्र मुखी संघर्षी	हस्तम् (हस्त)
ʧ (च)	अघोष, वत्स्र्य, अल्पप्राण, स्पर्श संघर्षी	चाकली (धोबी)
dz (ज)	घोष, वत्स्र्य, अल्पप्राण, स्पर्श संघर्षी	ज़लुबु (सर्दी)
c (च)	अघोष, पश्च-वत्स्र्य, अल्पप्राण, स्पर्श संघर्षी	चेट्टू (पेड़)
cʰ (घ)	अघोष, पश्च-वत्स्र्य, महाप्राण, स्पर्श संघर्षी	छाती (छाती)
j (ज़)	घोष, पश्च-वत्स्र्य, अल्पप्राण, स्पर्श संघर्षी	जनम (लोग)
jʰ (झ)	घोष, पश्च-वत्स्र्य, महाप्राण, स्पर्श संघर्षी	झंकारम (झंकार)
m (म)	द्विओष्ठीय नासिक,	मन्नू (मिट्टी)
n (न)	वत्स्र्य, नासिक	नेनू (मैं).
ṇ (ण)	मूर्धन्य, नासिक	वीणा (वीणा)
l (ल)	घोष, वत्स्र्य, पार्श्विक	लाभम् (लाभ)
ḷ (ळ)	घोष, मूर्धन्य पार्श्विक	ताळम् (ताल)
ṭ (ट)	अघोष, अल्पप्राण, मूर्धन्य	टोपी (टोपी)
ṭʰ (ठ)	अघोष, महाप्राण, मूर्धन्य	पाठम् (पाठ)
ḍ (ड)	घोष, अल्पप्राण, मूर्धन्य	डब्बू (पैसा)
ḍʰ (ढ)	घोष, महाप्राण, मूर्धन्य	गूढ़ाचारी (जासूस)
w (व)	घोष, द्विओष्ठय्, संघर्षहीन अर्धस्वर	वेलू (उंगली)
y (य)	घोष, वत्स्र्य-तालव्य संघर्षहीन, अर्धस्वर,	यात्रा (यात्रा)

नोट: प्रमुख उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न अगले पृष्ठो मे दिये गये है ।

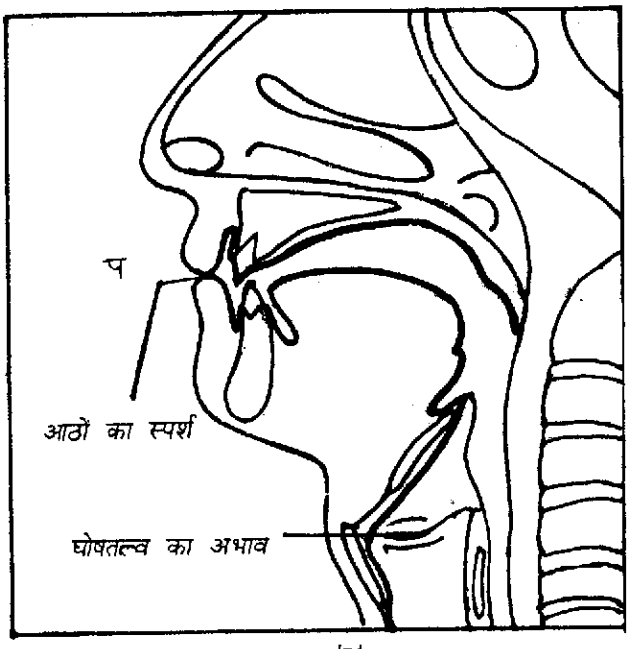

/p/

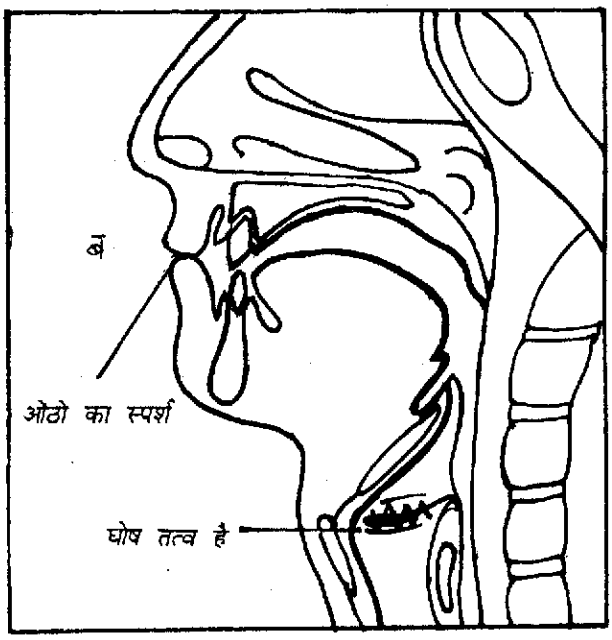

चित्र 3.12 द्विओष्ठ्य व्यञ्जन (प) एवं (ब) का उच्चारण स्थान

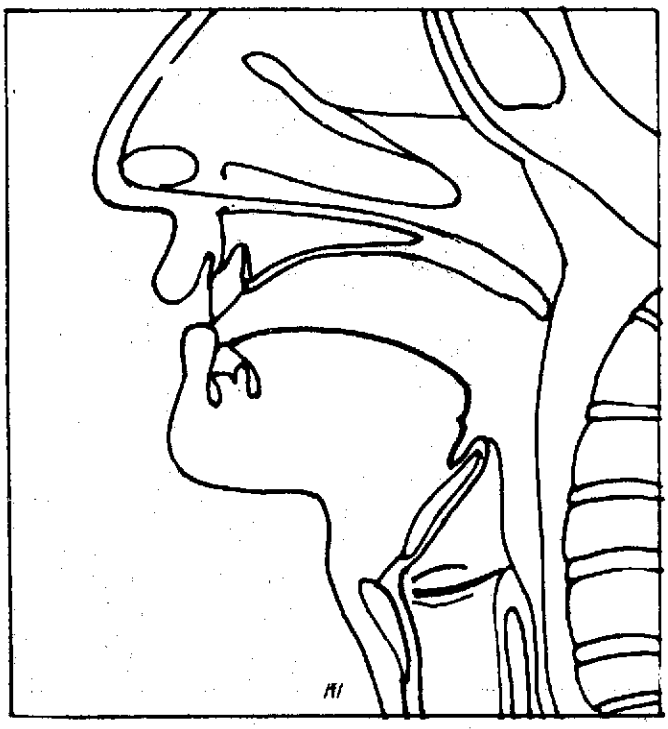

चित्र 3.13 दंत्योष्ठ्य व्यन्जन /f/ (फ) उच्चारण स्थान

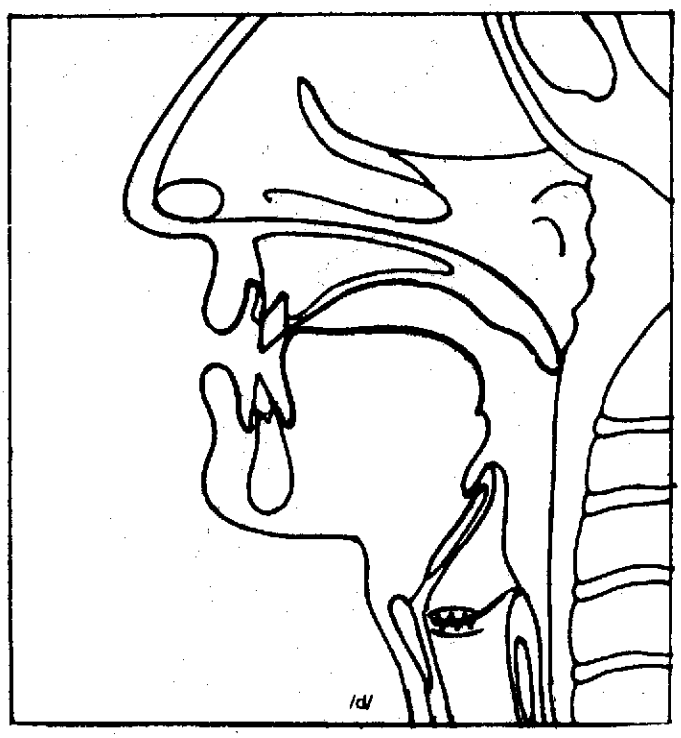

चित्र 3.14 दंत्य व्यन्जन /d/ (द) का उच्चारण स्थान

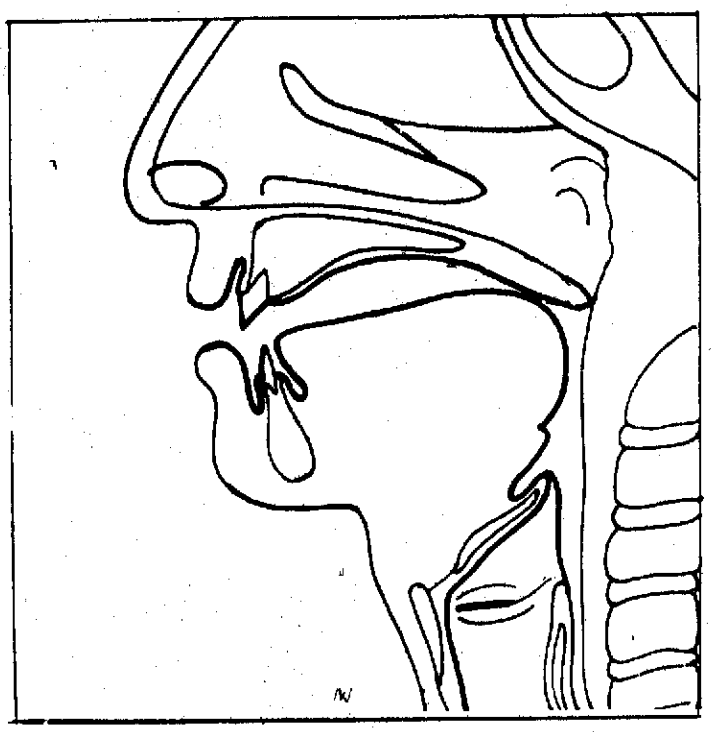

चित्र 3.16 कंठ्य व्यञ्जनों का उच्चारण स्थान

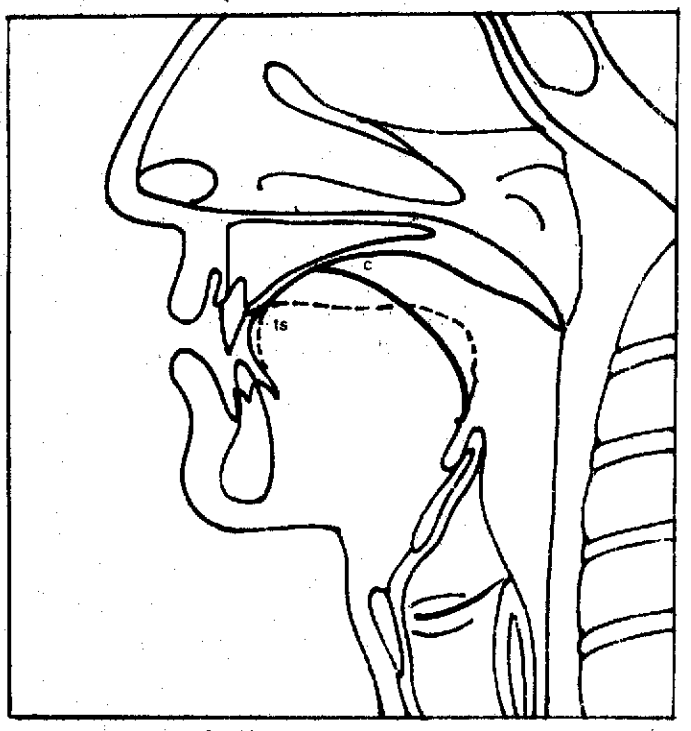

चित्र 3.15 वर्त्स्य और पश्चवर्त्स्य व्यञ्जनों का उच्चारण स्थान

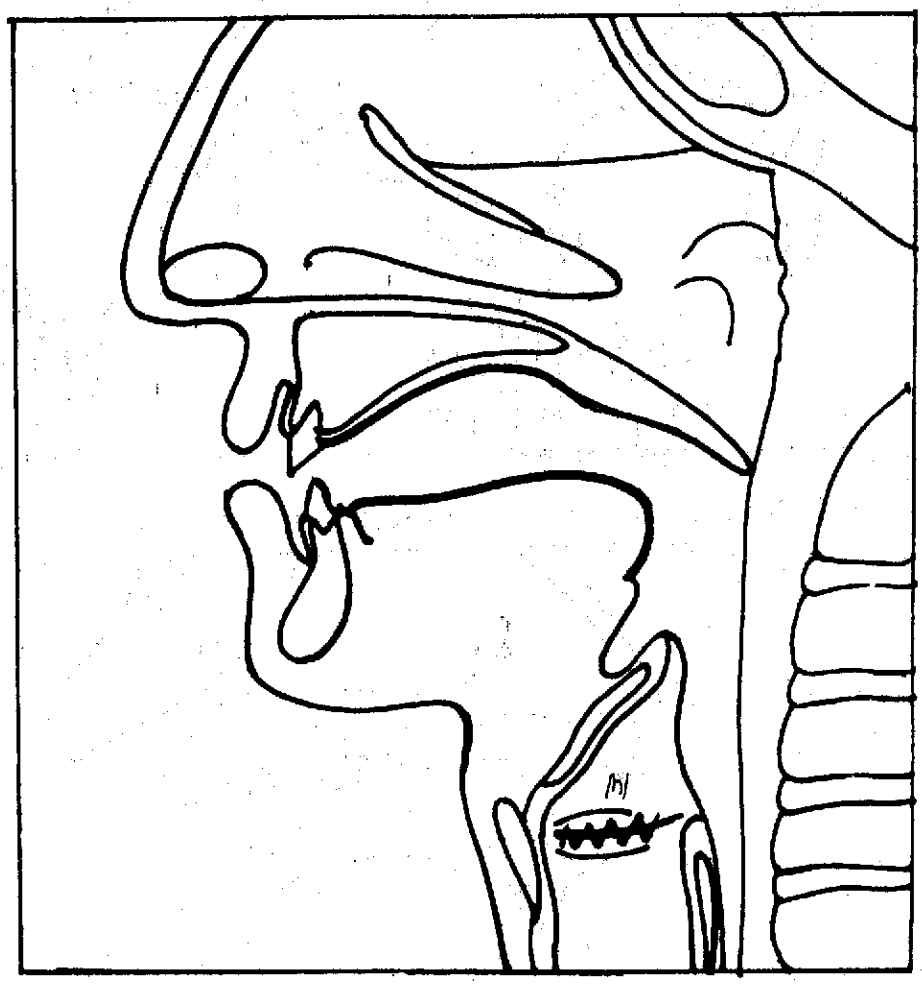

चित्र 3.17 स्वर यंत्र मुखि /h/(ह) (ग्लॉटल) व्यञ्जनं का उच्चारण

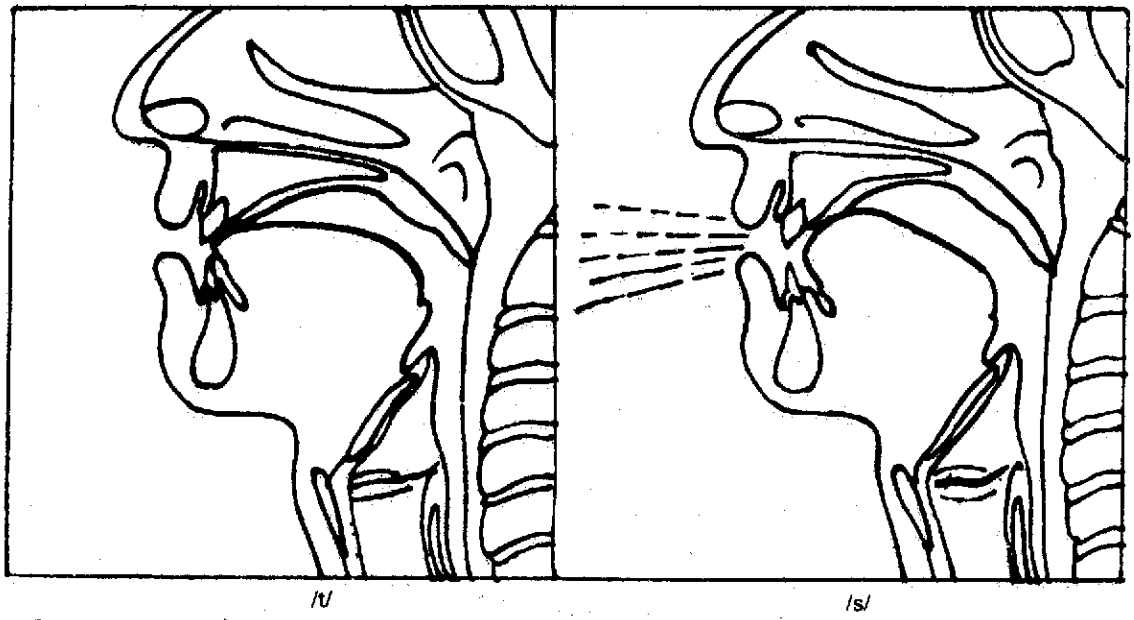

चित्र 3.18: स्पर्श /t/ (त) एवं संघर्षी /s/ (स) व्यञ्जनों का उच्चारण प्रयत्न

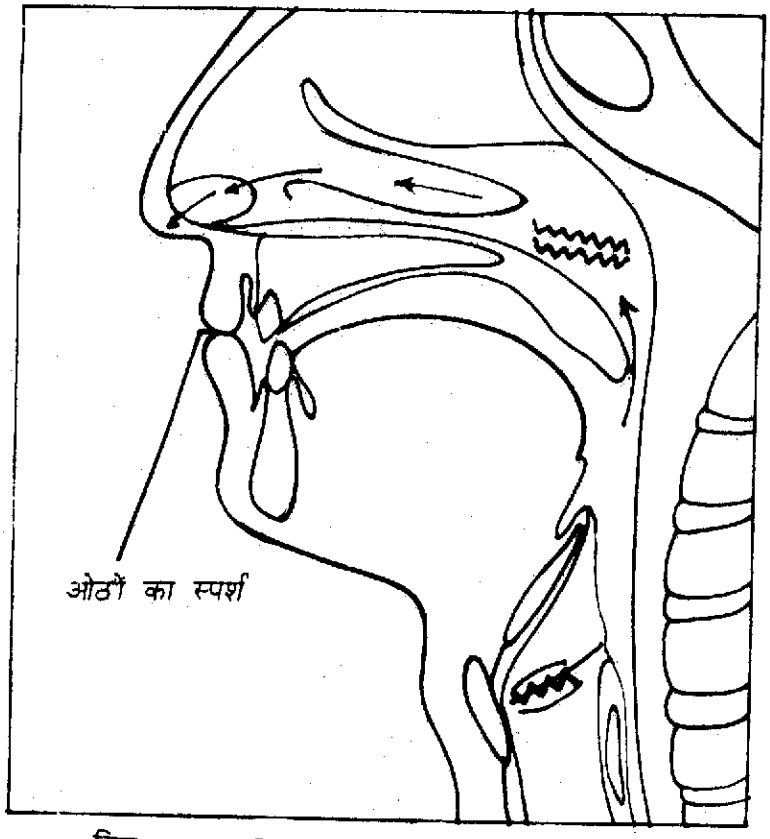

चित्र 3.19 नासिक /m/ (म) का उच्चारण प्रयत्न

चित्र 3.20 मूर्धन्य व्यञ्जनों का उच्चारण प्रयत्न

हिन्दी की स्वर ध्वनियां (Vowel sounds in Hindi)

स्वर (Vowel)	परिभाषा (Description)	उदाहरण (Example)	
अ/a/	मध्य विवृत अवृत्ताकार ह्रस्व ध्वनि mid low unrounded short sound	अखबार सरल	newspaper simple
आ/a:/	मध्य विवृत अवृत्ताकार दीर्घ ध्वनि mid low unrounded long sound	आदमी आग	man fire
इ/i/	अग्र संवृत्त अवृत्ताकार ह्रस्व ध्वनि front high unrounded short sound	इमली इस	tamarind this
ई/i:/	अग्र संवृत्त अवृत्ताकार दीर्घ ध्वनि front high unrounded long sound	ईश्वर अमीर	god rich
उ/u/	पश्च संवृत वृत्ताकार ह्रस्व ध्वनि back high rounded short sound	उड़ना मधुर	to fly sweet
ऊ/u:/	पश्च संवृत वृत्ताकार दीर्घ ध्वनि back high rounded long sound	ऊपर भूलना	up/on to forget
ए/e:/	अग्र अर्ध संवृत अवृत्ताकार दीर्घ ध्वनि front half-high unrounded long sound	एक केला	one banana
ऐ/ei:/	अग्र अर्ध विवृत अवृत्ताकार संयुक्त ध्वनि front half-low unrounded dipthong	ऐसा ऐनक	like this spectacle
ओ/o:/	पश्च अर्ध संवृत वृत्ताकार दीर्घ ध्वनि back half-high rounded long sound	ओखली ओर	grinder direction
औ/au/	पश्च अर्ध–विवृत वृत्ताकार संयुक्त ध्वनि back half-low rounded dipthong	औरत औषध	woman medicine

शब्दावली / (GLOSSARY)

1.	जिह्वा के भाग / Place of the tongue	:	जिह्वाग्र	Front of the tongue
			जिह्वा मध्य	Mid of the tongue
			जिह्वा पश्च	Back of the tongue
2.	जिह्वा की ऊंचाई / Height of the tongue	:	संवृत	High
			अर्ध–संवृत	Half - high
			अर्ध–विवृत	Half - Low
			विवृत	Low
2.	ओठों की आकृति / Position of the lips	:	वृत्ताकार	Rounded
			अवृत्ताकार	Unrounded

हिन्दी व्यंजन (Consonants of Hindi)

व्यंजन (Consonant)	परिभाषा (Description)	उदाहरण (Example)			
क/k/	अघोष अल्प प्राण कोमल तालव्य स्पर्श Voiceless unaspirated veloric stop	काम work	आकार shape	एक one	केला banana
ख/kh/	अघोष महाप्राण कोमल तालव्य स्पर्श Voiceless aspirated veloric stop	खाना to eat	खीर sweet	अनोखा typical	भूख hunger
ग/g/	घोष अल्प प्राण कोमल तालव्य स्पर्श Voiced unaspirated veloric stop	गुलाब rose	राग raag	भूगोल geography	
घ/gh/	घोष महाप्राण कोमल तालव्य स्पर्श Voiced aspirated veloric stop	घर house	घोड़ा horse	बाघ lion	
ङ/ṅ/	घोष अल्प प्राण कोमल तालव्य नासिक व्यंजन Voiced unaspirated veloric nasal stop	पंकज lotus	कंगन bangle		
च/c/	अघोष अल्प प्राण तालव्य स्पर्श संघर्ष Voiceless unaspirated palatal affricate	चावल rice	चांद moon	चलना to walk	
छ/ch/	अघोष महाप्राण तालव्य स्पर्श संघर्ष Voiceless aspirated palatal affricate	छत्तरी umbrella	छत terrace		
ज/j/	घोष अल्पप्राण तालव्य स्पर्ष संघर्ष Voiced unaspirated palatal affricate	जल water	जाल net	जोर force	
झ/jh/	घोष महाप्राण तालव्य स्पर्श संघर्ष Voiced aspirated palatal affricate	झलक flash	झूला cradle		
ञ/ñ/	घोष अल्प प्राण तालव्य नासिक व्यंजन Voiced unaspirated palatal nasal consonant	चंचल active			
ट/ṭ/	अघोष अल्प प्राण मूर्धन्य स्पर्श Voiceless unaspirated retroflex stop	टमाटर tomato	मोटर motor	सिटी city	
ठ/ṭh/	अघोष महाप्राण मूर्धन्य स्पर्श Voiceless aspirated retroflex stop	ठमठम thamtham	ठोकर kick	पाठ lesson	
ड/ḍ/	घोष अल्प प्राण मूर्धन्य स्पर्श Voiced unaspirated retrolfex stop	डमरू damroo	डर fear		

व्यंजन (Consonant)	परिभाषा (Description)	उदाहरण (Example)		
ढ़/ḍh/	घोष महाप्राण मूर्धन्य स्पर्श Voiced aspirated retroflex stop	ढीला loose	ढाका dhaka	
ण/ṇ/	घोष अल्प प्राण मूर्धन्य नासिक व्यंजन Voiced unaspirated retroflex nasal	वर्णमाला alphabets	संपूर्ण full	
त/t/	अघोष अल्प प्राण दंत्य स्पर्श Voiceless unaspirated dental stop	तन body	लता creeper	तमाम all
थ/th/	अघोष महाप्राण दंत्य स्पर्श Voiceless aspirated dental stop	थकना tired	पथिक traveller	
द/d/	घोष अल्प प्राण दंत्य स्पर्श Voiced unaspirated dental stop	दरिया ocean	आदमी man	
ध/dh/	घोष महाप्राण दंत्य स्पर्श Voiced aspirated dental stop	दूध milk	धरती earth	
न/n/	घोष अल्प प्राण दंत्य नासिक व्यंजन Voiced unaspirated dental nasal consonant	तल tap	पनीर cheese	
प/p/	अघोष अल्प प्राण द्रव्योष्ठ्य स्पर्श Voiceless unaspirated bilabial stop	पापा father	पंछी birds	कंपन shiver
फ/ph/	अघोष महाप्राण द्रव्योष्ठ्य स्पर्श Voiceless aspirated bilabial stop	फल fruit	फूल flower	सफल success
ब/b/	घोष अल्पप्राण द्रव्योष्ठ्य स्पर्श Voiced unaspirated bilabial stop	बाबा father	कबूतर dove	
भ/bh/	घोष महाप्राण द्रव्योष्ठ्य स्पर्श Voiced aspirated bilabial stop	भीतर inside	भालू bear	भात rice
म/m/	घोष अल्पप्राण द्रव्योष्ठ्य नासिक व्यंजन Voiced unaspirated bilabial dental consonant	मां mother	ममता love	
य/y/	घोष अल्पप्राण तालव्य संघर्ष हीन व्यंजन/अर्ध स्वर Voiced unaspirated palatal glide consonant/semi vowel	यत्न attempt	दया kindness	चाय tea
र/r/	घोष अल्पप्राण वर्त्स लुंठित Voiced unaspirated alveolar trill	रवि ravi	कमर waist	
ल/l/	घोष अल्पप्राण वर्त्स पार्श्व Voiced unaspirated alveolar lateral	लाल red	लड्डू laddu	

व्यंजन (Consonant)	परिभाषा (Description)	उदाहरण (Example)		
ठ/v/	घोष अल्प प्राण दन्योष्ठ्य संघर्षहीन अर्ध स्वर Voiced unaspirated labiodental africative or semi-vowel	वंदन prayer	सावन savan	
श/S/	अघोष तालव्य संघर्ष Voiceless palatal fricative	शंकर shanker	यश success	कैलाश kailash
ष/S/	अघोष मूर्धन्य संघर्ष Voiceless retroflex fricative	संघर्ष tussel	शीर्षक title	
स/s/	अघोष वर्त्स संघर्ष Voiceless alveolar fricative	सरिता sarita	समूह group	
ह/h/	घोष स्वर यंत्र मुखी संघर्ष Voiced glottal fricative	हवा air	बहन sister	
ड़/d/r/	घोष अल्पप्राण मूर्धन्य उत्क्षिप्त Voiced unaspirated retroflex tap	लड़की girl	पेड़ tree	
ढ़/dh/	घोष महाप्राण मूर्धन्य उत्क्षिप्त Voiced aspirated retroflex tap	पढ़ाई study	ढूंढ़ना to search	
ख़/kh/x/	अघोष महाप्राण कोमलतालव्य संघर्ष Voiced aspirated veloric fricative	ख़बर news	अख़बार newspaper	
ग़/g/	घोष अल्पप्राण कोमल तालव्य संघर्ष Voiced unaspirated veloric fricative	ग़म sad		
ज़/z/	घोष अल्पप्राण वर्त्स तालव्य संघर्ष Voiced unaspirated alveolar fricative	ज़माना period		
फ़/f/	अघोष महाप्राण दंत्योष्ठ्य संघर्ष Voiced aspirated labiodental fricative	फ़नकार artist	कफ़न coffin	

शब्दावली / (GLOSSARY)

घोष	:	Voiced
अघोष	:	Voiceless
अल्प प्राण	:	Unaspirated
महा प्राण	:	Aspirated
स्पर्श	:	Stop
नासिक	:	Nasal
पार्श्व	:	Lateral
लुंठित	:	Trill
उत्क्षिप्त	:	Tap
संघर्ष	:	Fricative
स्पर्श संघर्ष	:	Affricate
अर्ध स्वर	:	Semi Vowel
द्रव्योष्ठ्य	:	Bilabial
द्रंत्योष्ठ्य	:	Labiodental
दंत्य	:	Dental
वर्त्स	:	Alveolar
मूर्धन्य	:	Retroflex
तालव्य	:	Palatal
कंठ्य	:	velar

परिशिष्ट 3.3 और 3.4, श्रीमति गायत्री, लेक्चरर इन अप्लैड लिंग्विस्टिक्स, सेन्ट्रल इन्स्टिट्यूट आफ हिन्दी, हैद्राबाद, के सौजन्य से

स्व परीक्षा–3

1. निम्नलिखित को सही/गलत बताइये

1. कंठ में स्थित वाक् तंतु ही वाणी उत्पादन (वाइस प्रोडक्शन) के लिये उत्तरदायी है सही / गलत

2. स्वरों के उच्चारण में मुख बंद रहता है । सही / गलत

3. सभी व्यंञ्जन घोष होते हैं । सही / गलत

4. स्वर तथा व्यञ्जन के अतिरिक्त कुछअन्य ध्वनियाँ भी होती है जैसे अर्ध स्वर, संयुक्त स्वर एवं मिश्रित स्वर सही / गलत

5. बच्चे एक वर्ष की आयु तक सभी स्वर ठीक प्रकार से बोलना सीख लेते हैं । सही/गलत

6. उच्चारण के समय कुछ आसपास की ध्वनियों के प्रभाव को 'सह उच्चारण (को आर्टिकुलेशन) कहते हैं । सही / गलत

2. सही शब्दों एवं वाक्यांशों द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1 ..... व्यवसथा ध्वनि उत्पादन में हवा उपलब्ध कराता हैं ।

2. स्वरों को परिभाषित करने के लिये ..... की स्थिति और ..... का आकार आवश्यक है ।

3. ..... ध्वनियाँ उच्चारित करते समय वायु का मुःख विवर में पूर्णतः अवरोध होता है और नासिका विवर द्वारा तेजी से बाहर निकल आती है ।

4. द्वि ओष्ठयीय घोष महाप्राण स्पर्श ध्वनि के उदारहण हैं ..... ।

5. मूर्धन्य ध्वनियाँ कुछ देर से सीखी जाती हैं यानि कि,..... वर्ष के बाद ।

3. सही उत्तर का चयन कीजिए

1. ध्वनि उच्चारण में सम्मिलित सभी व्यवस्थाओं का नियंत्रण करती हैं ।

(क) उच्चारण व्यवस्था (ख) श्वसन व्यवस्था
(ग) स्वन व्यवस्था (घ) मस्तिक
(ङ) उपरोक्त एक भी नहीं

2. स्वर उच्चारण में उपयुक्त जिह्वा की स्थिति का वर्णन करने के लिये शब्दावली है

(क) अग्र एवं पश्च
(ख) संवृत एवं विवृत
(ग) मध्य
(घ) उपरोक्त सभी
(ङ) उरोक्त एक भी नहीं

3. घोष स्वरयंत्रमुखी स्पर्श ध्वनि के उदाहरण है ।

/k/ (क)
/j/ (ख)
/g/ (ग)
/h/ (घ)
(ङ) उपरोक्त एक भी नहीं

4. व्यञ्जनों में मुख्यत यह पहले सीखे जाते है ।

(क) दन्तोष्ठ्य
(ख) वर्त्स्य
(ग) स्वरयंत्रमुखी
(घ) द्वि - औष्ठयीय
(ङ) उपरोक्त एक भी नही ।

5. संयुक्त स्वर है :

(क) व्यञ्जनों का संयोजन
(ख) स्वरों का संयोजन
(ग) अक्षरों (सिलेवल) का संयोजन
(घ) स्वरों तथा व्यञ्जनों का संयोजन
(ङ) उपरोक्त एक भी नही ।

4. निम्न को जोडिए

1. व्यञ्जनों के उच्चारण स्थान के लिये प्रयुक्त शब्दावली । (क) /w/ (व)
2. व्यञ्जनो का उच्चारण प्रयत्न समझाने के लिये आवश्यक शब्दावली (ख) /ai/ (ऐ)
3. अर्ध स्वर के उदाहरण (ग) स्पर्श संघर्षी, अनुनासिक मूर्धन्य आदि
4. संयुक्त स्वर के उदाहरण (घ) द्विओष्ठयीय, दन्तोष्ठीय, वर्त्स्य आदि
5. उच्चारण व्यवस्था के भाग (ङ) /o/ (ओ)
6. संवहन व्यवस्था के भाग (च) दात, ओंठ, जिह्वा
7. स्वर, जिसमें ओंठ वृत्ता कार होते है । (घ) मुख, नासिका, कण्ठ आदि

स्वः परीक्षा—3 की कुंजी

1.

1. सही (पाठ देखिए)
2. गलत स्वर उच्चारण में वाक् तन्तुओं के अलावा निर्बाध गति से निकलती है ।
3. गलत कुछ व्यञ्जन अघोष - होते है. उदाहरण के लिये /s/ (स) /k/ (क)
4. सही
5. गलत बच्चे सभी स्वर बोलना तीन वर्ष की आयु तक सीखते हैं ।
6. सही

2.

1. श्वास
2. जिहवा / ओंठ
3. नासिक
4. /b/ (ब)
5. पाँच

3.

(घ) मस्तिष्क 2. (घ) उपरोक्त सभी 3. /g/ (ग) 4. (घ), द्विओष्ठीय
5. (ख0 स्वरों का संयोजन

4. 1. घ, 2. ग, 3. क, 4. ख, 5. च, 6. छ, 7. ङ

अध्याय–4

सामान्य बच्चों में वाक् तथा भाषा अधिगम या विकास

मनुष्य के जीवन में भाषा अधिगम/विकास एक चित्ताकर्षक पहलू है । जब कोई बच्चा पहली बार बोलता है तो वह भाषा के जादू को समझ लेता है और फिर जीवन भर इस जादूई पहलू के बारे में सीखता रहता है । यह जानना आवश्यक है कि, वाक् तथा भाषा का एक सामान्य बालक में किस प्रकार विकास/अधिगम होता है । क्यों कि, इससे मंद बुद्धि बच्चों की छोटी उम्र से शुरू होने वाली भाषा संबंधी कठिनाईयों को सुधारने में सहायता होगी । सामान्य बालक में भाषायी विकास पर भारतीय भाषाओं पर उपलब्ध जानकारी बहुत कम तथा सीमित है । इसलिये अंग्रेजी बोलने वाले बच्चों पर किये गये अध्ययनों पर आधारित जानकारी का ही उपयोग किया गया है । भारतीय भाषाओं के कुछ उदाहरण भी दिये गये है । इस जानकारी के द्वारा हमें मंद–बुद्ध बच्चों की भाषा एवं वाक् के निर्धारण तथा अंतराक्षेपण में सहायता मिलेगी ।

यह किसी को भी ज्ञात नही कि पहला शब्द व्यक्ति द्वारा कब और क्यों बोला गया

उद्देश्य : इस अध्याय में :

1. वाक् एवं भाषा विकास तथा संप्रेषण के लिये आवश्यक पूर्वा काक्षाओं का वर्णन किया गया है ।
2. भाषा के विकास में वाक् पूर्व विकास में की गयी क्रियाओं की आवश्यकताओं का वर्णन है ।
3. भाषा विकास की एक महत्वपूर्ण अवस्था प्रथम शब्द एवं अर्थ उद्देश का विवरण है ।
4. भाषा विकास में समय एवं अनुभव की भूमिका पर जानकारी दी हैं ।

5. बच्चों का शब्दों से वाक्यों तक के विकास का वर्णन है ।

6. भाषा के अर्थ क्रियात्मक (प्रॅग्मॅटिकस्) मात्र का संक्षेप में उल्लेख है ।

भाषा तथा संप्रेषण के विकास के लिये पूर्वाकांक्षायें

संप्रेषण के लिये अर्थात् भाषा को सीखने एवं उपयोग करने के लिये किसी भी व्यक्ति को आदर्श रूप से निम्न योग्यताओं की आवश्यकता होती है । चित्र 4.1 देखिए । ये पूर्वाकाक्षायें सामान्य एवं मंदबुद्धि दोनों तरह के बच्चों के लिये आवश्यक है ।

मौखिक भाषा (वाक्) के विकास के लिये श्रवण एक प्रमुख माध्यम है

1. **संवेदनात्मक योग्यतायें** : मौखिक या लिखित भाषा को आसानी से सीखने के लिये पर्याप्त दृश्य तथा श्रवण क्षमता आवश्यक है । जिन लोगों में श्रवण दोष होता है वे दूसरों को बहुत कम सुन पाते हैं । इसके अलावा अपने को भी नही सुन पाते । इससे भाषा अधिगम/विकास में और बोलने में कठिनाई होती है ।

इसी प्रकार लिखित और संकेत (इशारों) भाषा सीखने के लिये दृष्टि का पर्याप्त होना आवश्यक है । देखने और सुनने के अलावा स्पर्श, गति, और दिशा आदि संवेदनायें भी भाषा ग्रहण करने के लिये आवश्यक होती हैं ।

2. **चालन (मोटर) योग्यताएँ** : चालन योग्यताओं में वाक् ध्वनियों को उपलब्ध करने की योग्यता से लेकर संप्रेषण के लिये प्रयोग किये गये हाथ के इशारे करने की योग्यता तक सभी शामिल हैं । वाक् एक ऐसा चालन जटिल कार्य है जिसके द्वारा मस्तिष्क अपने विचार एवं भावनाओं को प्रकट करता है । भाषा की अन्य तरह की अभिव्यक्तियों जैसे कि, लिखना, संकेत करना, मुखाभिनय हाव-भाव प्रकट करना आदि प्रेरक कार्य हैं यदि चालन योग्यता ठीक नहीं है या अपर्याप्त है तो मौखिक एवं अमौखिक दोनों प्रकार के माध्यम प्रभावित होते हैं । चालन योग्यता जैसे पैदल चलना बच्चे को इस लायक बनाती है कि, वह अपने वातावरण में भौतिक रूप से सभी

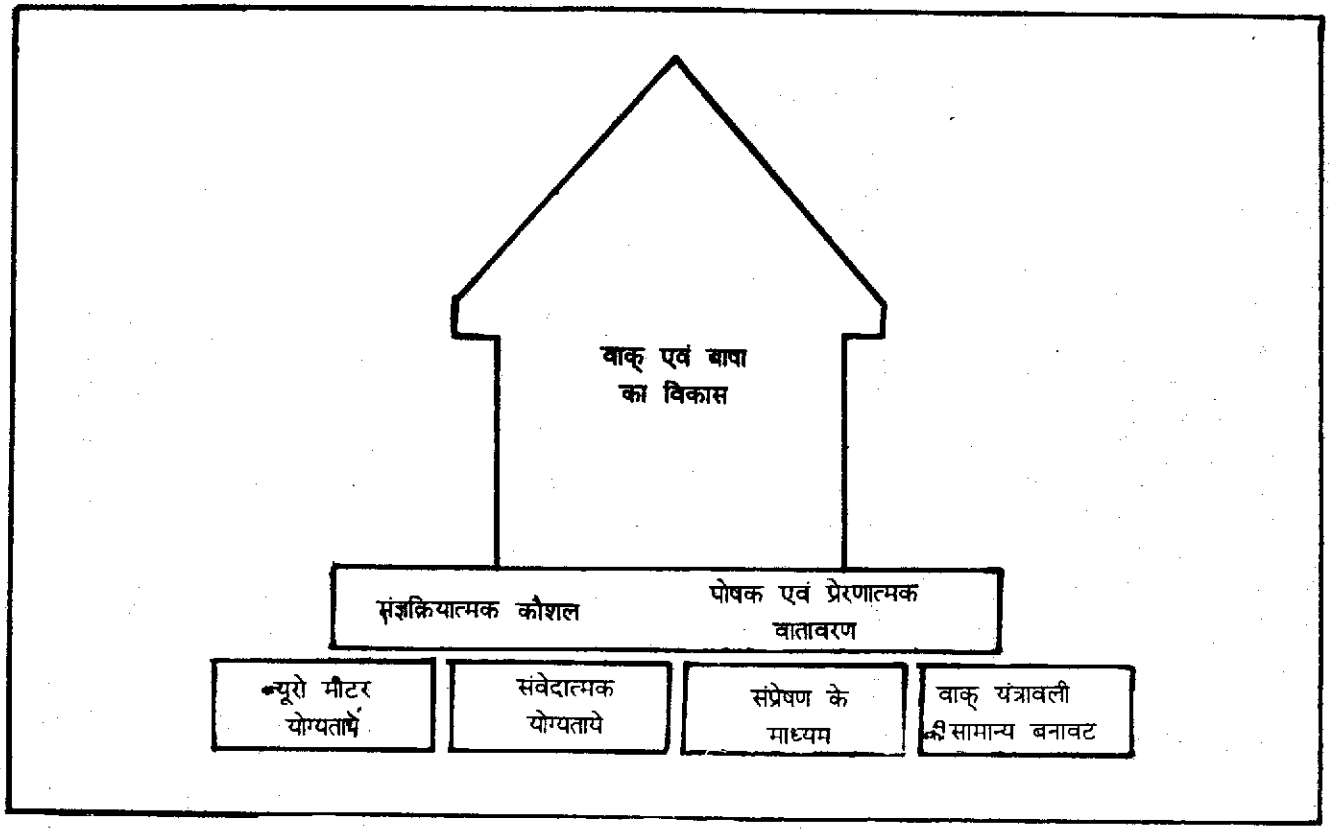

चित्र 4.1 - पूर्वाकांक्षाओं का चित्रांकन

वस्तुओं के बारे में जान सकें । वातावरण का यह आवश्यक अनुभव उसके भाषा सीखने का आधार बनता है ।

वाक् एक सूक्ष्म संयोजक जटिल और ऐच्छिक मोटर कार्य है

3. **वाक्र यंत्रावली** : बोलने के लिये वाक् यंत्रावली का सही ढंग से कार्य करना आवश्यक है । यदि यंत्रावली के अंग जैसे ओंठ, जिहवा, गला आदि प्रभावित हैं तो इनकी गति भी प्रभावित होती है जिससे की ध्वनि उत्पादन अनुचित होता है । इसके परिणाम स्वरूप, वाक् और भाषा का विकास दे से होता है इसके अतिरिक्त खिलाने में नासिकता (नेजॅलिटी0 और लार टपकने जैसी कठिनाईयां भी हो सकती है । कठिनाइयों के बावजूद भी कई बार हम साफ बोल सकते हैं क्यों कि, हमारी वाक् यन्त्रावली में क्षतिपूरक (कॅम्पेनसेटरी) गुण होते है ।

संज्ञाक्रियात्मक कुशलताओं के बिना बच्चे को आगत सूचना शोर जैसी लगती है

4. **क्रियासंज्ञात्मक (प्रोसैसिंग) योग्यता**: ऐसा भी हो सकता है कि, कोई व्यक्ति देख सकता है, सुन सकता है, आवाज भी निकाल सकता है मगर फिर भी संप्रेषण करने में असमर्थ होता है । संप्रेषण के लिये भाषा का प्रयोग करना मस्तिष्क द्वारा किया गया एक उच्चकोटी का कार्य है । किसी भी प्रकार के ऐछिक चिन्हों का प्रयोग करने के लिये संवेगात्मक आगत (सेनसॅरी-इनपुट) करके उसका प्रयोग करने की योग्यता का होना आवश्यक है । संवेगात्मक आगत का अर्थ समझना व उसका प्रयोग करने के लिये व्यक्ति में कई प्रकार की क्रियासंज्ञात्मक (प्रोसेसिंग) योग्यतायें होनी चाहिये । संवेदात्मक आगत ग्रहण करने के लिए एक व्यक्ति में निम्नलिखित निपुणता होनी आवश्यक है

क) प्रेरण पर ध्यान देना (आटेन्ड टु स्टिमुलाई) (जो सुनेगये देखे गये)

ख) सुने गये संकेतों का अर्थ समझना (शब्दों के साथ जोड़ना)

(ग) सुना हुआ और देखा गया संकेत स्मृति में रखना और समय पर उसे याद करना ।

(घ) अपनी भाषा की विभिन्न ध्वनियों और संकेतो की पहचानना।

(ङ) तर्क (लॅजिक) व योजना (रीज़निंग) शक्ति से किसी निष्कर्ष व समाधान पर पहुँचना ।

(च) अपने विचार एवं धारणाओं को संदर्भानुकूल व्यवहार में लाना (जेनेरलाइज) ।

ठीक उसी प्रकार कुछ भी स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ता के लिये एक व्यक्ति को इस योग्य होना चाहिए कि वह –

(क) मस्तिष्क में वाक् ध्वनियों का चयन करने और योजना बनाने में समर्थ हों ।

(ख) मस्तिष्क में ही बोलने के लिये ध्वनि समूहों का चयन करने की क्षमता रखें ।

(ग) शब्द उत्पन्न कर सकें ।

(घ) उन शब्दों को क्रम बद्ध करके वाक्य बनाने की क्षमता रखे ।

उपर्युक्त सामान्य क्रियासंज्ञात्मक (प्रोसेसिंग) कौशता मंद बुद्ध बच्चों में बहुत ही कम पाये जाते है ।

5. प्रेरणात्मक वातावरण : भाषा, एक सामाजिक वातावरण के संदर्भ में सीखी जाती है किसी शून्य में नहीं । कम से कम तीन वातावरण संबंधी पहलु है जो भाषा अधिगम/विकास में सहायक होते है ।

भाषा संप्रेषण के मुख्य स्त्रोत–वातावरण और उसमें रहने वाले लोग है ।

क) सबसे पहला और मुख्य पहलू है अभिरक्षक/पोषक के साथ भावनात्मक संबंध जो माता–पिता बच्चे के संप्रेषण प्रयत्न पर पुरस्कार देते है । बच्चा परस्परक्रिया का आनंद लेते हुए लगातार भाषा सुनता और प्रयोग करता है व्यक्ति को यह मालूम होना चाहिए कि, कुछ बोल के या कर के वह दूसरे के व्यवहार में विशेष प्रकार का परिवर्तन ला सकता है । व्यक्ति को कारण और प्रभाव का ज्ञान रखना चाहिए । उच्च स्तर पर व्यक्ति को अभिरक्षक से आरम्भ करके दूसरे लोगो के साथ बातचीत करने का ढंग सीखना चाहिये । बच्चे को यह समझ लेना चाहिये कि, बात चीत में अपनी बारी कब लेनी चाहिए और श्रोता का ज्ञान समझना आदि । जो एक बातचीत का नियम है । भाषा के सही प्रयोग पर अभिरक्षक प्रोत्साहन देते है जिसके परिणाम स्वरूप बच्चा भाषा सीखता है ।

(ख) **प्रेरित वातावरण का दूसरा पहलू** : वह व्यक्ति या मॉडल है जो बोलचाल में साधारण, सही एवं पूर्ण स्वरूपी भाषा अभिरचना का प्रयोग करता है । बच्चा वाक् ध्वनियों, शब्द, और स्वर-विन्यास

(इंटोनेशन) बोलते हुये बड़ो का अनुकरण करने का प्रयास करता है । बच्चो के साथ बोलते समय बड़े अक्सर अपनी भाषा को सरल बना लेते हैं जैसे सीधे– साधे वाक्यों का प्रयोग करना, धीरे–धीरे बोलना जिससे बच्चे भाषा को आसानी से समझ सकें और सीख सकें ।

एक प्रभावकारी मॉडल बच्चे के लिये, सरल किंतु परिष्कृत भाषा–प्रकार को प्रस्तुत करता है ।

(ग) प्रेरित वातावरण का तीसरा पहलू है बच्चे को संप्रेषण करने का या बताने का मौका देना विषय (समथिंग टू से) पाने में सहायता करना । किसी भी वातावरण में संप्रेषण के लिये बच्चे को अपनी अभिरुचि अनुसार आवश्यकता महसूस होनी चाहिये । ये हैं, वस्तुओं, घटनाओं, लोगों और उनके संबंधों के बारे में अपना विचार व्यक्त (कमेंट) करना अर्थात् संसार के सभी पहलूओं को समझ कर ज्ञान प्राप्त करना । ज्ञान की प्राप्ती से बच्चे को परस्पर क्रिया का मौका मिलता है । यहाँ बच्चे को संप्रेषण करने के लिये एक कारण का होना आवश्यक है । यदि उसके वातावरण में ऐसा कुछ नहीं है जो उसे चाहिये या वह परस्पर क्रिया करने में आनंद महसूस नहीं करता तो उसके संप्रेषण का कोई कारण नहीं है । यदि बच्चे को संप्रषण करने का अवसर प्रदान नहीं किया जाएगा तो निः संदेह वह भाषा का प्रयोग नहीं करेगा । हमें बच्चे को प्रोत्साहित करना है ताकि, वह अपने वातावरण में हो रही घटनाओं में रूचि लें और संप्रेषण करने की आवश्यकता महसूस करें ऐसी परस्पर क्रिया के दौरान ही भाषा प्राप्त की जाती है

6. **संप्रेषण के माध्यम (मीन्स)** : बच्चे को अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं और भावनाओं आदि को बताने का एक ढंग होना चाहिए । यह बोलकर हाथ के इशारे से या विशेष प्रकार के संकेत द्वारा हो सकता है । किसी भी माध्यम में बच्चे में उपर्युक्त क्रियासंज्ञात्मक (प्रोसेसिंग) योग्यताएँ होनी चाहिए ।

यदि बच्चे में संप्रेषण का कोई माध्यम नही है तब केवल ज्ञान का होना संप्रेषण के लिये निरर्थक है ।

जैसा कि, पूर्वाकांक्षओं के विवेचन से ज्ञात होता है कि, भाषा सीखने की प्रक्रिया काफी लम्बी एवं जटिल है । बच्चे को भाषा को समझने के लिए और उसे बातचीत में प्रयोग करने के लिए बहुत समय और अनुभव की आवश्यकता होती है । इन सभी आवश्यक बातों में से

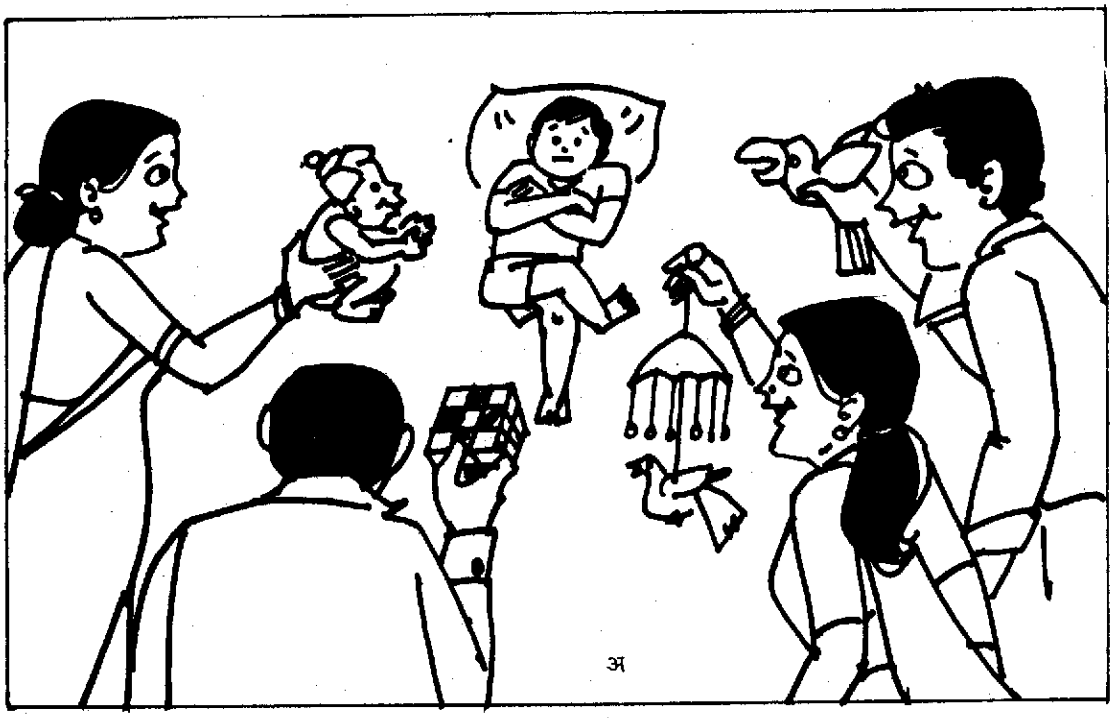

चित्र 4.2 'संप्रेषण का अवसर

किसी एक में भी अभाव अथवा त्रुटि हों तो भाषा सीखने अथवा बोलने को प्रभावित करेगी । मंदबुद्ध बच्चों में क्रियासंज्ञात्मक (प्रोसेसिंग) योग्यताऐं प्रायः प्रभावित होती हैं । और प्रेरक वातावरण का भी आभाव रहता है । भाषा के विकास का वर्णन अगले भाग में किया गया है ।

भाषा का विकास

भाषा का विकास जीवन में बहुत जल्दी शुरु हो जाता है । संभवतः जन्म से आरंभ होकर विभिन्न अवस्थाओं जैसे रोना, तुतलाना, आदि प्रक्रियाओं से प्रारंभ होकर अंत में पूर्ण रूप से भाषा का विकास होता है ।

सामान्य बच्चों को सचेत शिक्षण के बिना भाषा प्राप्त होती है ।

भाषा का विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बच्चों को सचेत रूप से शिक्षण नहीं दिया जाता । विकास गति की दर सभी बच्चों के लिए भिन्न-भिन्न हो सकती है । भाषा का विकास प्रारम्भिक कक्षाओं की उम्र में लगातार होता रहता है । भाषा के कुछ पहलू जैसे शब्दावली का विकास जीवन भर होता रहता है । भाषा का विकास क्रमबद्ध एवं श्रेणीबद्ध है । एक मूल क्रम है जिसमें प्रारंभिक चरणों के विकास के पश्चात् ही अनुगामी चरणों का विकास होता है । ये चरण एक दूसरे से आच्छादित हो सकते हैं । इन विकास की अवस्थाओं में विशेष भाग रिहर्सल एवं सन्निकटन के गुण वाला होता है । फलतः मान्य प्रमाणों से यदि बच्चा कहीं गलती भी करता है तो वह सामान्य है । कभी-कभी ऐसा भी लगता है कि, बच्चा विकास में पिछड रहा है अर्थात् बच्चा भाषा रचना में गलतियाँ कर रहा है, जिसमें पहले उसे दक्षता हासिल करनी चाहिये थी । अगले पन्नों में बोलने और भाषा सीखने की महत्वपूर्ण अवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है जैसा कि, निम्नलिखित है,

वयस्कों के स्तर से तुलना करने पर बच्चे में देखी गई त्रुटियों को सामान्य कहा जा सकता है ।

- पूर्व वाक् - ध्वनियाँ
- प्रथम शब्द (फर्स्ट वर्ड)
- शब्द संयोजन (कम्बाईनिंग वर्ड)

पूर्व - वाक् ध्वनियाँ (प्री स्पीच वोकलाइजेशन) (0-18 मास)

बच्चे की प्रथम शब्द बोलने की आवश्यकता से पहले के सभी उच्चारणों को वाक् पूर्व वाक् ध्वनि कहा जाता है पूर्व-वाक् ध्वनि

विकास की अवधि के दौरान बच्चा अपनी सही वाक् का आधार बना लेता है । पूर्व वाक् ध्वनि (प्री स्पीच) में निम्न सम्मिलित हैं

(1) प्रतिक्रियात्मक उच्चारण (रिफ्लैक्सिव अटरेन्सस)
(2) तुतलाना (बैबलिंग)
(3) स्वर विन्यास (इन्फ्लैक्शन) का प्रयोग

प्रतिक्रियात्मक उच्चारण (रिफ्लैक्सिव अटरेन्सस) (0–3 मास)

जीवन के पहले तीन महीनों में बच्चे की ध्वनि विविधता बहुत सीमित होती है । एक युवा शिशु में दो मुख्य प्रकार की प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति होती है ।

(अ) रोने की ध्वनियाँ
(ब) आराम सूचक ध्वनियाँ

(1) **रोने की ध्वनियाँ**: रूदन छोटी उम्र के बच्चों में सामान्यत : असुविधा (डिसकम्फर्ट) का प्रकटन होता है और यह संप्रेषण करने का पहला तरीका है । शुरू में शायद हम भूख से रोने और दर्द से रोने के अंतर को न पहचान सकें । यदि थोड़ा ध्यान से अध्ययन करें तो हम रोने में 'अ', 'इ' और 'ऐ' जैसे आवाजों को पहचान सकेंगे । लेकिन ये सभी आवाजें अनुनासिक होती है । कुछ 'ग' और 'क' जैसी आवाजें भी पहचानी जा सकती हैं । लेकिन ये सभी ध्वनियाँ प्रतिक्रियात्मक (रिफ्लैक्सिव) होती हैं । बाद में धीर–धीरे यह ज्ञात होगा कि, रोते समय उच्छवास का समय निश्वास से लंबा होता है । जैसा कि, वाक्–उत्पत्ति में है । इसके अलावा बच्चा भोजन (फीडिंग) करते हुए अन्य प्रतिक्रियात्मक (रिफ्लैक्सिव) आवाजें भी निकालता है जैसे कि, डकार लेना, निगलना, गरारे करना आदि। जिनके कुछ गुण व्यंजन ध्वनियों के गुण से मिलते–जुलते हैं ।

रोना संप्रेषण का पहले माध्यमों से एक है ।

जब बच्चा दो महीने का हो जाता है तब माता–पिता उसके भूख, दर्द, या दुःख से रोने को अलग–अलग पहचान सकते हैं । इस रूदन के माध्यम से बच्चा विभिन्न मांस पेशियों के सामंजन्य का

अभ्यास करता है और कण्ठ, मुख और कान के बीच आवश्यक पुनर्निवेश (फीडबैक) स्थापित करता है ।

भाषा विकास के पहले स्तरों में अधिकतर प्रतिक्रियात्मक मौखिक उच्चारण स्तर होते हैं ।

(ब) आराम सूचक ध्वनियाँ : इनकी व्याख्या शब्दों में करना बहुत कठिन है । इन्हें कूजन करना (कूईंग साऊंड) भी कहा जाता है। ये खाना खाने के तुरंत बाद या गीला कपड़ा बदलने के बाद या फिर किसी भी प्रकार के दर्द से आराम मिलने के बाद यानि कि, आरामदायक स्थितियों में निकलती हैं ।

यदि कूजन ध्वनियाँ (कूईंग साऊँड) ध्यान पूर्वक सुनी जाएँ तो ज्ञात होगा कि, (1) अधिकतर अग्र स्वर (ई), (ए) और पश्च कंठ व्यंजन (क) (ग) ही सुने जाते हैं । ये ध्वनियाँ अनुनासिक नहीं होती है जैसे कि, रोते समय होती हैं ।

(2) ऐसा लगता है कि, बच्चा अपनी ध्वनि उत्पत्ति (वायसिंग) पर नियंत्रण पाने की कोशिश कर रहा है जैसा कि, वह अपनी तकलीफ और खुशी को आवाज द्वारा अभिव्यक्त करता है ।

फिर भी बच्चे की वाक् पथ नालिका द्वारा बार-बात निकली गई प्रतिक्रियात्मक ध्वनियाँ जैसे डकार लेना, गरारे करना आदि पर कोई नियंत्रण नहीं होता ।

इस अवस्था में बच्चा सामाजिक जागरूकता के पहले चिह्न दिखाता है जिससे यह बात ज्ञात होती है कि, वह बड़ों की गतिविधियों को आंखों से देखता है और मुस्कुराता है । बच्चा बड़ों के चेहरे के हाव-भाव का अनुकरण भी कर सकता है ।

इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, बच्चा वाक् उत्पादन व वाणी के उत्पादन के लिए सांस लेने की मूल योग्यता का अभ्यास करता है ।

II) तुतलाना (3-8 मास तक)

तुतलाना एक महत्वपूर्ण क्रिया है जो सभी मानव शिशुओं में पाई जाती है

प्रतिक्रियात्मक ध्वनि के बाद तुतलाने की अवस्था आती है । यह सभी भाषई वातावरणों में एक सामान्य तथ्य है । बच्चे के एक ही सांस में एक या अनेक ध्वनियों (सिलेबल्स) को एक श्रृंखला में

बोलने को तुतलाना कहते हैं । एक उदाहरण के लिए– ध्वनि /ka/ (का) में स्वर तथा व्यंजन का सामंजस्य है । ऐसा लगता है कि, बच्चा अपनी जीभ, गला और ओठों से खेल रहा है । जैसे वह अपनी हाथ और पैर की अंगुलियों के साथ खेल रहा था । वह अलग–अलग ढंग से अनेक प्रकार की आवाजें निकालता है विशेष रूप से खाना खाने के बाद या फिर गीला कपड़ा बदलने के बाद । अधिकतर ध्वनियाँ तब होती हैं जब बच्चा अकेला होता है । ये ध्वनियाँ का, का, का....., दा, दा, दा,.....जैसी होती है।

पांचवे या छठे महीने में बच्चा दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए नकार के लिए या कुछ मांगने के लिए तुतलाता है । इससे पहले बच्चा इन्हीं जरूरतों को देखकर या हाथ से दिखाकर पूरा करता था । बच्चा इन ध्वनियों से अपने आप को अच्छी तरह समझाने के लिए और दूसरों के व्यवहार को परिवर्तित करने के लिए प्रयोग करता है । आरम्भिक अवस्थाओं में तुतलाने की श्रृंखला में एक ही व्यंजन का बार–बार प्रयोग होता है । और कई हफ्तों तक इसी का अभ्यास चलता रहता है । पर सामान्यतः बच्चा कुछ ही दिनों में नए व्यंजन बोलने लगता है और अपनी पिछली उपलब्धियों का कभी –कभी अभ्यास कर लेता है । धीरे–धीरे इस तुतलाने की श्रृंखला में व्यंजन बदलते जाते हैं और नए–नए व्यंजन आते जाते हैं । तुतलाने में अधिकतर स्वर मुख के अग्र भाग से //i (ई) या मध्य भाग से /a/ (अ) और व्यंजन जैसे /t/ (त), /d/ (द), /n/ (न), /L/ (ल) आदि का संयोजन सुनाई देता है उदाहरण के लिए /ता, दा, बा, ली, ता, दा, बा, ली.....आदि ।

पांच या छः महिने की आयु में शिशु अपने विचार व्यक्त करने के लिये तुतलाने जैसे उच्चारण करते हैं, जो पहले देखने या इंगित करने से होते थे ।

iii) तुतलाने में स्वर विन्यास (इन्टोनेशन) को जोड़नाः आठ से दस महीने के बीच जिस तुतलाने में अनेक प्रकार की आवाजें आती थी, उसी में प्रश्न एवं आश्चर्य के भाव भी सुनाई पड़ते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि, अब तुतलाहट में स्वर विन्यास संबंधी गुण भी जुड़ जाता है । अक्सर इन ध्वनियों का कोई अर्थ नहीं होता । हालांकि, इन्हे सुनने में आनंद मिलता है । माता–पिता को लगता है जैसे उनका

बच्चा किसी विदेशी भाषा का प्रयोग कर रहा है । कुछ बच्चों में यह टूटी-फूटी (जॉरगन) वाक् काफी लम्बे समय के लिए होती है जबकि, कुछ जल्दी ही प्रथम पद बोलने लगते हैं ।

अधिकांश बच्चे इन अवस्थाओं से एक क्रम से गुजरते हैं । एक अवस्था की क्रियाएँ दूसरी अवस्था के गुण आने पर एकदम ही बंद नहीं हो जाती । बल्कि, एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने की क्रिया बहुत ही सुगम और धीरे-धीरे होती है । इस प्रकार के वाक् व्यायाम से बच्चे धीरे-धीरे अर्थपूर्ण भाषा के लिए आवश्यक सामंजस्य पर अधिकार प्राप्त कर लेते हैं । यह ध्यान रखता आवश्यक है कि, इस स्थिति से प्रथम शब्द बोलने की स्थिति तक का बदलाव अचानक नहीं होता । एक से डेढ़ वर्ष की आयु तक बच्चा एक सक्रिय श्रोता एवं अन्वेषक होता है । बच्चा रोज की दिनचर्या में अपने माता-पिता और अन्य लोगों से सुनता है । वह अपने माता-पिता के उद्दीपन की प्रतिक्रिया चुनकर दिखाता है । बच्चे का अनुकरण उसके माता-पिता की बोली से मिलना शुरु हो जाता है । सामाजिक प्रोत्साहन, इनाम, जैसे कि, माता-पिता की मुस्कान उनके हाव-भाव या कुछ बोले गये शब्द, उसके वाक् व्यवहार की आवृति को बढ़ा देते हैं ।

पुरस्कार जैसे अभिभावकों की मुस्कान, इशारा, या वाक् बच्चे की उच्चारण ध्वनियों की आवृति को बढ़ाता है ।

प्रथम शब्द

एक से डेढ़ वर्ष की आयु तक अधिकांश बच्चे सर्वप्रथम शब्द बोलने लगते हैं । टूटे-फूटे वाक्य से प्रथम शब्द तक के बदलाव स्वरूपी शब्दों (आईडियोमार्फस) से पहचाने जाते हैं ।

स्वरूपी शब्द (आईडियोमार्फस्)

बड़ो की तरह शब्द बोलने से पहले बच्चा विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और क्रियाओं के लिए स्वनिर्मित ध्वनि एवं शब्दों का प्रयोग करता है । वह स्वयं अपने ही शब्द बनाता है । बच्चे के ये स्वनिर्मित शब्द (आईडियोमार्फस्) स्वरूपी शब्द कहलाते हैं । इन स्वरूपी शब्द (आईडियोमार्फस्) की उत्पत्ति बच्चे के रोज की जिन्दगी में भिन्न-भिन्न प्रकार के संदर्भों से होती है । कुछ सामान्य स्त्रोतों की सूची निम्नलिखित है ।

तालिका–1 स्वरूपी शब्द (आईडियोमार्फस्) के सामान्य स्त्रोत

इन स्त्रोतों के दौरान	उदाहरण
अंगुली से दिखाना	/आ ... /वह वस्तु चाहिए
भारी वस्तुएँ उठाते समय जोर लगाना	/उमम ..... म/ जैसे कि, कोई भी व्यक्ति बोझ उठाते हुए जोर लगता है
परिसर के आवाजों का अनुकरण करना	/भौ .... भौं/ कुत्ते का भौकना /म्याऊँ ..... /बिल्ली का म्याऊँ कहना
स्वयं अपना अनुकरण करना	/ढब ..... / उपर से गिरते हुए शब्द
शरीर के अंगों से हिलाकर बताना	ओंठ घुमाकर हवा अंदर खींचते हुए साथ ही भौओं को उठाकर "बहुत" (इतनी)? व्यक्त करना।
बड़ों की बात का अनुकरण करना	/छि..... छिः/ (मुझे अच्छा नहीं लगता)

कुछ स्वरूपी शब्द (आईडियोमॉर्फस्) टूटी फूटी ध्वनि के ही संक्षिप्त भाग होते हैं। बच्चा यह उच्चारण (अटरेनसिस्) वस्तुओं और घटनाओं के विवरण के लिए करता है। उदाहरण के लिए-माचिस की तिल्ली बुझाने के लिए, चिमनी या चोट लगने पर 'उफ्फ'... का प्रयोग करता है। बच्चा एक ही स्वरूपी शब्द (आईडियोमॉर्फस्) में विभन्न स्वर-विन्यास लगाकर अलग-अलग परिस्थितियों में अलगअलग अर्थ के लिए प्रयोग करता है। बच्चा तब तक स्वरूपी शब्द (आईडियोमॉर्फस्) का प्रयोग करता रहेगा जब तक उसे यह नहीं मालूम होता है कि, वह वयस्कों जैसे शब्दों का प्रयोग भी कर सकता है।

एक ही स्वरूपी शब्द का विभिन्न स्वर-विन्यास विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न अर्थ देता है।

स्वरूपी शब्द (आडियोमॉर्फस्) से प्रथम शब्द तकः समय के साथ-साथ बच्चा स्वरूपी शब्दों से बड़ों के उतर के शब्द बोलने लगता है जो निम्नलिखित विभिन्न तरीकों से होता है।

(i) बच्चा स्वरूपी शब्द पर बड़ों जैसे स्वरविन्यास का प्रयोग करते हुये धीरी-धीरे बड़ो के ढंग से शब्द बोलने लगता है।

(ii) स्वरूपी शब्दों (आईडियोमार्फस्) को अन्य मान्य शब्दों के साथ जोड़ कर संयुक्त शब्द बना लेता है ।

उदाहरण के लिए-यदि वह "बुर्रररर...." का प्रयोग 'बस' के लिए करता है उसके साथ "मैन" (आदमी) लगाकर ड्राईवर के लिए "बरर.. मैन" बना लेता है ।

(iii) स्वरूपी शब्द के साथ उसी शब्द का मान्य रूप मिलता है। वह इसी संयोजन का प्रयोग करता है और फिर धीरे-धीरे स्वरूपी शब्द को छोड़कर केवल शब्दों के मान्य रूप का ही प्रयोग करने लगता है ।

उदाहरण के लिये-"छुक-छुक रेल" में धीरे-धीरे 'छुक-छुक' रूप छूट जाता है और सिर्फ "रेल" ही रहता है .

(iV) जब कोई वयस्क बच्चे से प्रश्न पूछता है तब वह स्वरूपी शब्दों के रूप में उत्तर देता है । उदाहरम के लिए -
वयस्क : तुमने सड़क पर क्या देखा ?
बच्चा : अम्बा .....
वयस्क : हाँ यह गाय है ।

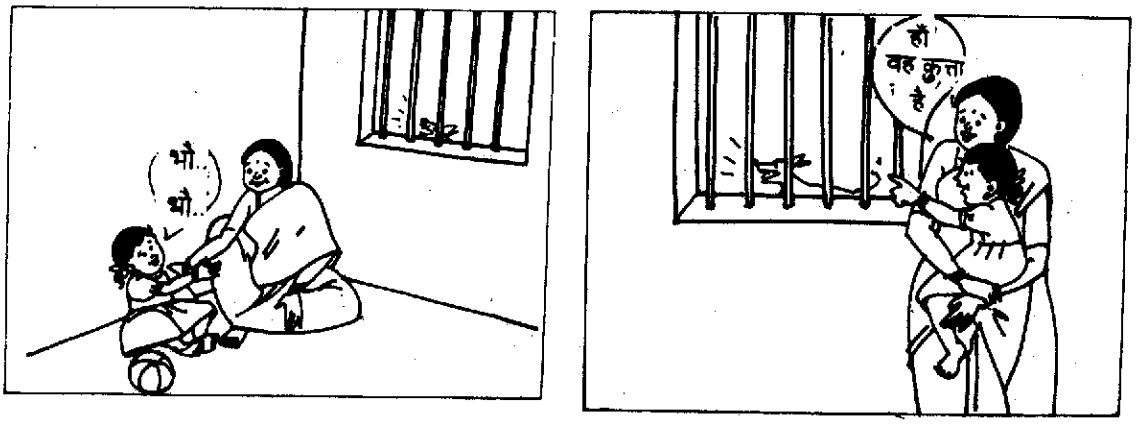

चित्र 4.3 बच्चे से शब्द निर्माण

(v) संकेत परिवर्तनः किसी व्यक्ति के साथ (अधिकतर माँ) बच्चा स्वरूपी शब्द का प्रयोग करता है जबकि, बाकी लोगों के साथ मान्यरूप का ही प्रयोग करता है और फिर धीरे–धीरे सभी के साथ केवल मान्य रूप का ही प्रयोग करने लगता है ।

इनमें से किसी एक से या फिर पांचों प्रकार के ढंग के संयोजन से बच्चा स्वरूपी शब्द छोड़कर अपने प्रथम शब्द बोलने लगता है । ये प्रथम शब्द पद बच्चे के वातावरण में आरम्भिक अनुभव को ही अभिव्यक्ति करते हैं । यानि कि, प्रथम शब्द प्रयोग करके बच्चा अपना विचार या अपनी इच्छा प्रकट करता है जो कि, वह पहले सीख चुका है ।

बच्चा अपने पहले शब्दों में मुख्यतः अपने दैनिक अनुभवों में प्रयोग की गई वस्तुयें, घटनायें या व्यक्तियों को अभिव्यक्त करता है ।

प्रथम शब्द किस प्रकार सुनाई पड़ते हैं :

प्रथम शब्द मान्य शब्द जैसे नहीं होते । वे अधिकतर एक ही ध्वनि (सिलेबल) के होते हैं जो दोहराये जाते हैं । उदाहरण के लिए– दादा, पापा, मामा/बच्चा वही शब्द कई प्रकार के स्वर विन्यास के साथ बोलता है जिससे वह परिस्थिति के अनुसार, प्रश्न, आग्रह या मांग के भाव दिखाता है । बच्चा एक ही शब्द को वयस्क की भांति प्रयोग करता है । अक्सर उच्चारण के साथ वह अनुकूल इशारे भी करता है । बच्चे के प्रतिदिन के अनुभवों में महत्वपूर्ण वस्तुएँ, घटनाएँ और व्यक्ति ही उसके प्रथम शब्द होते हैं । बच्चों का प्रथम शब्द के लिए लक्ष्य अक्सर वे व्यक्ति या वस्तुएँ होती हैं – जो चलते हैं (जैसेः मोटर गाड़ियाँ, व्यक्ति) जिनको हिलाया जा सकता है, (जैसे खिलौने) या जिन पर बच्चा का सीधा नियंत्रण होता है। (उदाहरण के लिए निकर, कमीज से पहले सीखी जाती है ।). प्रथम शब्द, मान्य शब्दो का सरलीकृत रूप होता है इसलिए वे सुनने में मान्य शब्दों जैसे नहीं लगते । जैसे–जैसे बच्चे का अनुभव बढता है और उसकी पेशियों और तंत्रिकाओं में तालमेल स्थापित होता है वह वयस्क के शब्द रूप के ज्यादा निकट होता जाता है । कुछ संशोधकों का दावा है कि, उन्होंने बच्चे के प्रथम शब्द बोलने में कुछ नियमितता देखी है । इन्हें प्राकृतिक स्वनिमिक प्रक्रियाएँ (नैचुरल फोनोलोजिकल प्रौसेसिंग) कहा जाता है । सबसे साधारण ढंग जिनके द्वारा बच्चे प्रथम शब्द का उच्चारण करते हैं, वे हैं :

(i) शब्दों में कुछ ध्वनियों का स्थानान्तरण करना

उदाहरण :

रेल : *(लेल)*

बुक : *(बुत)*

अंकल: *(अन्तल)*

शू : *(छू)*

फोन : *(पोन)*

बोतल : *(बोतिल)*

आटो : *(ओतो)*

बस : *(बत्त)*

(ii) शब्दों में मिश्रित ध्वनियों को सरल करते हुए कुछ ध्वनियों को छोड़ देना इससे शब्द सरल रूप से बोले जा सकते हैं ।

उदाहरण : स्कूल : *कूल*

स्पून : *पून*

ट्रेन : *टेन*

ड्रैस : *डैस*

ब्लू : *बू*

पहले शब्द वयस्कों के शब्दों का सरल रूप है।

(iii) हल्की ध्वनि को छोड़ देना – इसमें हलके या जो ध्वनि जोर देकर नहीं बोली जाती (अनस्ट्रेसड्) उसको छोड़ दिया जाता है ।

उदाहरणः : सपोस : *पोस*

बाईसाइकिल : *बाईकल*

(iv) अंतिम व्यंजन को छोड़ देना : बच्चे शब्द के अंत में लगने वाले व्यंजनों को छोड़ देते हैं ।

उदाहरम : पेन : पे

बुक : बू

फैन : फै

प्लेन : पे

इस प्रकार की 'त्रुटियाँ' इसलिए होती हैं क्योंकि, उच्चारण की कुशलता में निपूणता धिरे-धिरे आजाती है । और वाक् शब्दों का भी धीरे-धीरे विकास होता है (अध्याय-3 में देखिए) ऐसा संभव है कि, बच्चा इन उच्चारणों का प्रयोग अस्थिर रूप से करे और यह भी संभव है कि, एक ही समय में उपर्युक्त प्रक्रियाओं में से एक से अधिक सक्रिय हैं । उपरोक्त उदाहरण अंग्रेजी के हैं ।

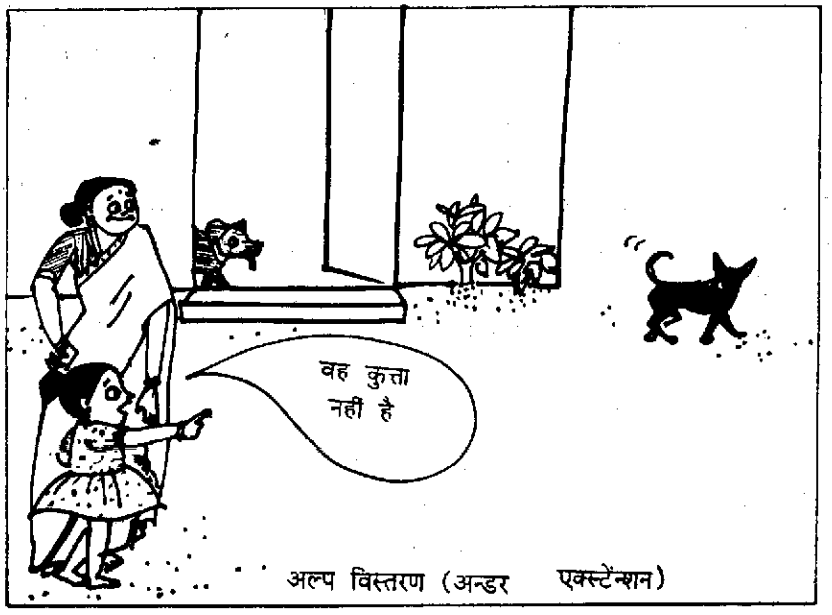

चित्र 4.4 अधिक एवं अल्प विस्तरण के उदाहरण

बच्चे जिन शब्दों का प्रयोग करते है उनका क्या अर्थ है –

बच्चे जिन अर्थों के उद्देश्य से शब्दों या इशारों का प्रयोग करते है उन्हें अर्थ संबंधी उद्देश्य (सीमोन्टिक इन्टैन्शन) कहा जाता है । ऐसा मान लिया जा सकता है कि, बच्चे मान्य अर्थों (अडल्ट मिनिंग) के साथ नहीं शुरू करते । उन्हें मान्य अर्थों के विकास के लिए कार्य करना पड़ता है । जो उनके शब्दों के सुने हुए अनुभव पर और विभिन्न परिस्थितियों में शब्दों के प्रयोग पर निर्भर होता है । पदों के अर्थों के विकास के दौरान बच्चे सामान्यत जिन नीतियों का प्रयोग करते हैं वे हैं अधिक विस्तरण और अल्प विस्तरण (ओवर एक्सटेन्शन् ऑर अंडर एक्सटेन्शन्) । बच्चा एक पद का प्रयोग केवल एक ही वस्तु के लिए करता है, वस्तुओं के वर्ग के लिए नहीं । उदाहरण के लिए – 'डौगी' का अर्थ केवल अपना "पालतु कुत्ता" है न कि, दूसरे कुत्ते । या 'चाकि' का प्रयोग वह केवल अपनी पसंद की चॉकलेट के लिए करता हैं दूसरी चॉकलेट के लिए नहीं । इसी को अल्पविस्तरण (अन्डर एक्सटेन्शन) कहा जाता है । ठीक इसी प्रकार बच्चा किसी पद का प्रयोग ऐसा करता है जिससे मान्य अर्थ से अधिक अर्थों में निकले उदाहरण के लिए चाँद बताने के लिए गेंद पद का प्रयोग करना । इसे अधिक विस्तरण (ओवर एक्सटेन्शन) कहा जाता है । पदों के बार–बार प्रयोग करने से और उन पर बड़ों द्वारा होने वाली प्रतिक्रिया के कारण बच्चा धीरे–धीरे मान्य अर्थ सीख लेता है ।

शब्दों के वयस्क जैसे अर्थ समझने में बच्चों को अपने अनुभवों के समय कार्य करना पड़ता है ।

मान्य अर्थों के सीखने के पश्चात् 12 से 18 महीने की आयु में सामान्यतः बच्चों द्वारा अभिव्यक्त किए गए उद्देश्य निम्नलिखित होते हैं ।

1. **अस्तित्व (एग्ज़िस्टैन्स)** : बच्चा किसी वस्तु अथावा घटना के अस्तित्व को पहचानता है । वह इसकी अभिव्यक्ति, दृष्टि से, इशारे से, आवाज करके, संकेतों से, या शब्दों से करता है । उदाहरण के लिए – मां को देखकर बच्चा बोलता है "मा मा" । दूध को देखकर वह बोलता है दू–दू, आदि ।

2. **अदृश्य (डिसएप्पीयरेन्स)** : किसी व्यक्ति या वस्तु के अदृश्य हो जाने से बच्चा दृष्टि से, इशारों या शब्दों का प्रयोग करके अपना अभिप्राय प्रकट करता है । उदाहरण के लिए- दूध खत्म होने पर /ऑलगॉन/ (सारा खतम) बोलता है और पिता के दफ्तर जाने पर /गॉन/ (गया) बोलता है ।

एक अर्थ उद्देश्य को अभिव्यक्त करने के लिये दृष्टि, इशारा, उच्चारण संकेत या शब्दों का प्रयोग कर सकते है ।

3. **पुनरावृति (रिकरैन्स)** : बच्चा किसी बी वस्तु के अदृश्य होने और पुनः प्रकट होने को व्यक्त करता है । बच्चा किसी क्रिया को बार–बार करने का आग्रह करता है । उदाहरण के लिए-जब बच्चा यह चाहता है कि, पिता बार–बार गेंद फेंके तो इसे जारी रखने के लिए वह "मोर मोर" (और–और) कहता है ।

4. **अविद्यमान (नॉनएग्जिस्टैन्स्)** : किसी भी वस्तु के अविद्यमान होने पर जहाँ उसके विद्यमान होने की आशा होती है, बच्चा दृष्टि द्वारा इशारों से आवाज से संकेत या शब्द द्वारा, जैसै कि "नो" (नही), या वस्तु के नाम से उसके अविद्यमान होने को प्रकट करते हैं । उधाहरण के लिए-बच्चा डिब्बे को खोलकर देखता है कि, उसमें चॉकलेट नहीं है, तो बोलता है "चाकी नहीं" ।

5. **स्थान (लोकेशन)** : बच्चा किसी व्यक्ति वस्तु या घटना के स्थान के बारे में अथवा किसी वस्तु को विशेष स्थान पर रखने के लिए आग्रह से, दृष्टि द्वारा, इशारे से, आवाज से संकेत या शब्द द्वारा जैसे कि, देअर (वहाँ), ऑन (ऊपर) टेबल (मेज) आदि द्वारा अपना मत प्रकट करता है । उदाहरण के लिए-जब बच्चा अपनी खिलौने की कार को ढूँढते–ढूँढते पा लेता है तब कहता है "आदिगो" (वो) साथ–साथ हाथ से कार को दिखाता है और वयस्क को विजयी भाव से देखता है ।

6. **स्वामित्व (पोज़ैशन)** : बच्चा किसी व्यक्ति या वस्तु और अपने आप के संबंधों पर राय प्रकट करता है । उदाहरण के लिए-जब वह दूसरे बच्चे के साथ खेलता है वह अचानक खिलौने वाली गाड़ी उठाकर कहता है 'मेरा' । जब कोई वयस्क कहता है "मैं तुम्हारे मम्मी को ले जाऊँगा" वह कहता है "मेरा" ।

7. **इन्कार (रिजैक्शन)** : बच्चा यह बताता है कि, उसे कोई वस्तु व्यक्ति या घटना नहीं चाहिए । वह किसी क्रिया को रोकना चाहता है दृष्टि द्वारा, इशारों से, ध्वनियों से, चिन्हों या शब्दों का प्रयोग करके जैसे कि, 'नही', 'रूको', "बाई–बाई" । बच्चा बड़ों का हाथ झटक देता है ।

8. **अस्वीकार (डिनाईल)** : बच्चा किसी प्रस्ताव को नामंजूर करता है दृष्टि द्वारा, इशारों द्वारा, आवाज द्वारा या संकेतो तथा शब्दों द्वारा ।

जैसे कि, "नहीं" । उदाहरण के लिए – बच्चा वयस्क से आँख बचाकर चॉकलेट ले लेता है बाद में जब व्यस्क उस पर आरोप लगाता है तो वह सिर हिलाकर "नही" कहकर अस्वीकार कर देता है ।

9. **कर्त्ता (एजेन्ट)** : बच्चा एक व्यक्ति या वस्तु, जो कार्य कर रहा है उसके बारे में संप्रेषण का प्रयत्न करता है । वह यह दृष्टि, इशारे, शब्द या फिर आवाज द्वारा करता है । उदाहरण के लिये – जब वह माँ को यह बताना चाहता है कि, भाई ने दूध गिरा दिया है तब वह चिल्ला कर माँ को बुलाता है और जब माँ आती है तो वह गिरे हुए दूध की ओर इशारा करके "भाई" बोलता है ।

10 **कर्म (औबजैक्ट)** : वह वस्तु या ध्वनि जो किसी क्रिया से प्रभावित होती है । बच्चा सिको दृष्टि, इशारों, आवाज, संकेत या शब्द द्वारा बता सकता है । उदाहरम के लिये-जब उसे दाँत साफ करने का ब्रश दिखाया जाता है तब वह "दाँत" की ओर संकेत करके "दाँत" बोलता है ।

11. **क्रिया (एक्शन)** : बच्चा कोई भी दर्शनीय क्रिया अथवा किसी स्थिति के बदलाव को व्यक्त करता है । उदाहरण के लिये – बच्चा चिल्ला कर माँ को बुलाता है और कहता है "खाया" जब उसका भाई चॉकलेट खा लेता है ।

12. **गुण धर्म (एट्रीब्यूशन)** : बच्चा किसी वस्तु या व्यक्ति के गुणों को व्यक्त करता है, – दृष्टि, इशारों, शब्द आदि के द्वारा। उदाहरण के लिये– बच्चा जब गर्म काफी के गिलास को छूता है तो "हा" करके हाथ हटा लेता है जिससे जाहिर होता है कि, यह गर्म है । जब बच्चा किसी गंदे कुत्ते को देखता है तो बोलता है "छि : छि", जिससे वह बताता है कि, यह गंदा है इसे नहाना चाहिये ।

बच्चे द्वारा अंत में सीखे गये अर्थ उद्देश्य हैं – गुण धर्म बताना, और एक कार्य का विवरण देना ।

जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है शब्दों की संख्या जीवनभर बढ़ती जाती है । डेढ़ वर्ष की आयु तक बच्चा लगभग 50 पद सीख लेता है । इस स्थिति में बच्चा शब्दों को जोड़ना सीखता है ।

संयुक्त शब्द / शब्द संयोजन :

पद-क्रम का विकास :

व्याकरणिक विकास के पहले चरण प्रारम्भिक स्थिति में व्याकरण जैसे लगते नहीं क्योंकि, इसमें सिर्फ एक-एक शब्द का प्रयोग होता है उदाहरण के लिये – "माः मा", "बाई-बाई" । इस स्थिति में प्रयोग किये गये शब्दों का अर्थ उद्देश्य नाम करण होता है और वे संज्ञा बन जाते है । कुछ अन्य पद क्रिया के बारे में बताते है इनमे से अधिकांश क्रिया पद बन जाते है । कुछ और वर्गों के पद भी मिलते है जैसे विशेषण और क्रिया विशेषण ।

प्रथम शब्द संयोजन तार जैसे होते है ।

कई प्रकार से ये प्रारम्भिक उच्चारण वाक्य का कार्य करते है । उदाहरण के लिये- बच्चा "माँ" शब्द का प्रयोग तीन-चार प्रकार से कर सकता है । किसी स्त्री को अपने समीप आते देख प्रश्नात्मक धुन में "माँ" के प्रयोग का अर्थ होगा 'तु कहाँ गयी थी' ? वही बच्चा यदि बाँहे खोल कर मांगने की धुन में 'माँ' बोलता है तो इसका अर्थ है "मुझे गोद में उठा लो" । इस स्थिति में इन उच्चारणों का कोई विशिष्ट व्याकरणिक रूप नहीं होता बल्कि, स्वर विन्यास का बदलाव और इशारों से ही वाक्य जैसा रूप देता है । इसके तुरंत बाद बच्चे शब्दों को जोड़ना सीखते हैं । पहले शब्द जोड़ो को अधिकांश भाग द्वि-पदीय होते है ।

विकास के पहले स्तर में एक-एक शब्द भी वाक्य का काम करता है ।

दो पदों वाले वाक्य / द्विपदीय वाक्य :

डेढ़ वर्ष की आयु में, बच्चे दो या अधिक पदों को जोड़ लेते है । यह अचानक ही नहीं हो जाता है । आम तौर से उसमें अंर्तकालीन (ट्रांसेशनल् पीरीयड्) समय होता है जिसमें दो पदों को साथ लाया जाता है लेकिन उनका उच्चारण एक साथ और लयबद्ध नहीं होता है, जैसा "डैडी गॉन" (पापा गया) में होता है । ऐसे पदों के लंबे जोड़ने को काफी समय तक सुन सकते है । लेकिन जल्द ही दो पदो वाले वाक्य अधिक विश्वास के साथ और ज्यादा से ज्यादा प्रयुक्त होते है । दो पदों के संयोजक के आरम्भ में बच्चे वस्तुओं

शब्दो का संयोजन लगभग 18 महिने की आयु में होता है ।

के बारे में बहुत बात करते हैं । वे उनकी ओर दिखाकर उनका नाम लेते हैं (डेमौन्स्टैटिव) और वे बताते हैं कि, वे वस्तु ये कहाँ हैं? (स्थान) (लोकेशन्), वे कैसी है गुण-धर्म (एट्रीब्यूटिव्), वे किसकी हैं? (स्वामित्व/पैसेशन) और उनके साथ ऐसा कौन कर रहा हैं? (कर्ता-कर्म/एजेन्ट-औब्जैक्ट) । वे लोगों द्वारा की गई क्रियाओं के बारे में बात करते हैं । (कर्ता-क्रिया) (एजेन्ट-औब्जैक्ट) । वे लोगों द्वारा की गई क्रियाओं के बारे में भी बात करते हैं । (कर्त्ता-क्रिया/एजेन्ट-एक्शन) वस्तुओं पर की गई क्रियायें (क्रिया-कर्म) एक्शन-औब्जेक्ट) और विशेष स्थानों की जानकारी रखते हैं । क्रिया स्थान । (एक्शन- लोकेशन) । इस अवस्था में वस्तुओं, व्यक्ति क्रियायें और इनके आपसी संबंध बच्चे को हमेशा तन्मय रखते है जो दर असल बच्चे के पिछले अनुभव ही होते है । बच्चो की भाषा में आम तौर से प्रयोग होने, वाले कुछ शब्द संयोजन, उनके सीमित अर्थो व अर्थ-क्रिया संबंधों कुछ (सीमेन्टिक रिलेशन) उदाहरण के साथ नीचे दिये जा रहे है ।

सामान्य दो पद अर्थ क्रिया संबंध*

अर्थ-क्रिया संबंध	उदाहरण के उच्चारण
कर्ता + क्रिया	मम्मी कम (माँ आ जा)
कर्म + क्रिया	ड्रिंक मिल्क (दूध पिओ)
कर्ता + कर्म	मम्मी शू (माँ जूता)
स्थान + क्रिया	सीट चेअर (कुर्सी - बैठ)
स्वामी + स्वामित्व	
गुण + कर्म	क्रायन बीग (बड़ी पेन्सिल)
प्रदर्शन + वस्तु	दॅट मनी (वो पैसा)

जैसा कि, देखा जा सकता है कि, अर्थ क्रिया के संबंध स्वाभाविक रूप से तार की तरह होते है । फिर भी, यही तार जैसे उच्चारण धीरे-धीरे व्याकरणिक हो जाते हैं ।

*स्त्रोत (एच.टी. फ्लैसबर्ग, जे.बी. ग्लीसन के संपादक में दी डेवल्पमेन्ट ऑप लैंगनेज - मेरिल -(1989)

वाक्य रचना का विकास :

लगभग दो वर्षो की आयु में अधिकांश बच्चे तीन चार शब्द के वाक्यों की रचना करते हैं और वे इन शब्दों को भिन्न-भिन्न प्रकार से जोड़ कर विभिन्न प्रकार के व्याकरणिक रचनाओं को बनाते हैं। इस अवस्था के उदाहरण वाक्यों में "डैडीगीव बिस्कीट" (पापा बिस्कूट दे दो) के प्रकार के वाक्य होते हैं । उनमें कथनों के साथ-साथ प्रश्न और निर्देश भी दिये जाते हैं ।

प्रारंभ में वाक्य बनाने के लिये दो-दो शब्द संयोजनों को जोडते हैं ।

दो शब्दों के वाक्यांश के वाक्य बनाने में बच्चे कुछ पद्धतियों का उपयोग करते हैं । एक ढंग में दो शब्दीय वाक्यांशों को जोड़कर सामान्य शब्द छोड़ देते हैं । उदाहरण के लिये
कर्त्ता-क्रिया + कर्म - क्रिया = कर्ता-कर्म-क्रिया
जॉन ड्रिंक + ड्रिंक मिल्क = जॉन ड्रिंक मिल्क।(जॉन पियो+दूध पियों = जॉन दूद पियो)

यहाँ दो वाक्यांयों को जोड़ा गया और सामान्य छेड़ दिया गया है । एक दूसरे प्रकार के ढंग में वाक्यांश की संज्ञा में कुछ और जानकारी दे कर बढ़ा लिया जाता है ।

उदाहरण : "दॅट फ्लॉवर" (वो फूल) के स्थान पर - "दैट यल्लो फ्लॉवर"(वो पीला फूल); "गीव शर्ट" (शर्ट दो) के स्थान "गीव रेडशर्ट" (लाल शर्ट दो) या "गीव माय शर्ट" (मेरा शर्ट दो) ।

संज्ञा को बढ़ाने के जैसे ही क्रिया शब्द को भी और जानकारी लगाकर बढ़ाया जा सकता है ।

उदाहरण के लिये :

(1) "मम्मी गो (मम्मी जाओ) के स्थान पर "मम्मी गो होम" (मम्मी घर जाओं)

(2) "गो होम क्विकली" (जल्दी घर जाओं)

(3) "गीव मिल्क" (दूध-दे दो) "गीव सम मिल्क" (थोड़ा दूध दो)

साधारणतः संज्ञा एवं क्रिया शब्द में विशेषण और क्रिया + विशेषण लगा कर बढ़ाया जा सकता है

रूपांतरण (ट्रान्सफार्मेशन) :

जैसे ही बच्चे को छोटे-छोटे वाक्यों में स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है बच्चा कुछ और परिवर्तन करने के लिये तैयार हो जाता है ।

2 ½ या 3 वर्ष के बीच में बच्चे नकारात्मक और प्रश्नार्थक रूपोंका प्रयोग सीखते है ।

इस अवस्था में मूल वाक्यों को बदल कर उनसे प्रशनात्मक रूप एवं नकारात्मक वाक्यों का निर्माण किया जाता है ।

नकारात्मक (नेगेशन) :

बच्चे वाक्य के प्रारंभ में या अन्त में (नो/नहीं) लगाते हैं -
उदाहरण - "नो सिट देयर" - (उधर मत बैठो)
"गीवमिल्क नो" (नहीं दूध दो)
बाद में धीरे-धीरे (नो और नॉट शब्द) (नहीं) वाक्य के बीच में शामिल कर लिया जाता है ।
उदाहरण - "ही नो लाइकयू" (तुम उसे अच्छे नहीं लगते ।) "दॅट नॉट रेड, दॅटब्ल्यू" (वो लाल नहीं को नीला")
अंत में "डोन्ट" (मत) और "कान्ट" (नही हो सकता) सीखे जाते हैं ।

नकारात्मक और प्रश्नार्थक वाक्य सामान्य वाक्य का रूपांतरण है ।

प्रश्नार्थक रूप- प्रश्न पूछने के दो रूप होते हैं । वे जिनका उत्तर यस/नो (हाँ/नहीं) में दिया जा सकता है और दूसरे डब्ल्यू.एच. रूप के प्रश्न होते हैं ।

यस । नो (हाँ / नहीं) उत्तर वाले प्रश्न - यस/नो (हाँ/नहीं) वाले प्रश्नों को बनाने के लिये क्रिया शब्द को वाक्य के आरम्भ में लगा देते है ।

उदाहरणः "सीता कॅन रन" (सीता दौड़ सकती है) "कॅन सीता रन"? (क्या सीता दौड़ सकती है?) "ही वॉज प्लेईंग"। वह खेल रहा था। "वॉज ही प्लेईंग" (क्या वह खेल रहा था ?)"

डब्ल्यू एच. प्रश्नः डब्ल्यू.एच. प्रश्न बनाने में एक वाक्य में कई प्रकार की विशेष जानकारी के लिये निवेदन किया जाता है ।

उदाहरणः "सीता विल रन"।(कर्ता)– (सीता दौड़ेगी)
"हू विल रन"? (कौन दौड़ेगा)
"आई विल सी सीता" (कर्म)–(मैं सीता को देखूँगी) "हूम विल आई सी" (मैं किसको देखूँगी?)
"आई एम रनिंग" (प्रेडिकेट)– (मैं दौड़ रही हूँ) विधेयक "वॉट आर यू डूईंग" (तुम क्या कर रही हो ?)
"द बिग बॉय रॅन" (निर्णायक टिडर्मिनंट)– (बड़ा लड़का दौड़) "विच बॉय रॅन" (कौन सा लड़का दौड़ा?)
"ही वैन्ट होम"– (वह घर गया (स्थानवाची/लोकेटिव) "वेयर डिड शी गो? (वह कहाँ गयी?)
"शी कॅन गो नाऊ" (टाईम)– (वह अब जा सकती है–काल) "वैन कॅन शी गो" (वह कब जा सकती है)
"राम विल ट्रैवल बाई कार" (रीति मैनर)– (राम कार से जाएगा) "हाऊ विल राम गो" (राम कैसे जाएगा?)

इस अवस्था में बच्चा दो या अधिक साधारण वाक्यों को जोड़ कर सम्मिश्रित वाक्य बनाता है । आरम्भ में वाक्यों के बीच एन्ड (और) शब्द का प्रयोग किया जाता है । धीरे–धीरे अन्य शब्द जैसे "लेटर" (बाद में) "बिकॉज" (क्योंकि) सो (इसलिए) वेन (कब) आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है । जटिल वाक्यों के प्रयोग की क्षमता का विकास 5 वर्ष से भी अधिक आयु से होता रहता है । जब बच्चा दो–तीन शब्दों की अवस्था से अगली अवस्था में जाता है तो शब्दों के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए रूपिम वर्ग के शब्दों का प्रयोग करता है ।

व्याकरण रूपिम (ग्रॉमैटिकल मॉरफीमस्)

व्याकरणिय रूपिम वे अर्थ नियम (माडयूलेटरर्स) जो वाक्यों में शब्दों का अर्थ प्रदान करते है तथा रचनाओं को व्याप्ती देते हैं । जब ये व्याकरणिक रूपिम संज्ञा तथा क्रिया जैसे शब्दों के साथ लग जाते है तो वे उनका व्याकरणिक वर्ग बदल कर अर्थ भी बदल देते हैं । व्याकरणिक रूपिम एक निश्चित क्रम में उभरते हैं । इनमें से कुछ शब्दांत के भाग जैसे 'इंग' (रहा है) और बहुवचन/एस/

बहुवचनों का प्रयोग करने के लिये कई बार सामान्य वाक्य अभिव्यक्ति में होना आवश्यक है ।

"यॉ" 18 मास की आयु में ही सीख लिया जाता है लेकिन इसे सही प्रयोग करने में कई महीने लग जाते हैं । अन्य शब्दांत अगले दो वर्षों में विभिन्न अंतरालों पर इसी क्रम में विकसित होते हैं । बहुत से अनियमित विभिन्न प्रधान शैलीयों का सही-सही प्रयोग 8:9 वर्षों तक भी नहीं हो पात (जैसे तुलनात्मक) (अति बुरा) अंग्रेजी के कुछ व्याकरणिक रूपिम के कुछ उदाहरण नीचे दिखाए गए हैं (विकास के क्रम से)

व्याकरणीय रूपिम बिना अधिक विवरणों के शब्दों को सही अर्थ प्रदान करते हैं

तालिका-3 व्याकरणिय रूपिम विकासिय क्रम से •

प्रैसेन्ट प्रोग्रेसिव (वर्तमान उत्तरोत्तर)	*ईंग (रहा है)*
प्रैपोजीशन (कारक, विभक्ति)	*इन (में)*
प्रैपोजीशन (कारक, विभक्ति)	*ऑन (ऊपर)*
रैगुलर प्लूरल (नियमित बहुवचन)	*एस, इएस, ज़ेड (यॉ)*
पास्ट इरैगुलर (भूत अनियमित)	*रॅन, केम (दौड़ा, आया)*
पोजेंसिव (संबंध वाचक)	*एस, जेड़ (का, की को)*
आर्टिकलस् (उपपद)	*ए दी*
पास्ट रेग्युलर (भूत नियमित)	*एड, (था, थी)*
थर्ड पर्सन रैगुलर (अन्य पुरुष नियमित)	एस, ज़ (उसका, उनका)
थर्ड पर्सन इरैगुलर (अन्य पुरुष अनियमित)	इस गोज (करता है जाता है ।)

नोटः भारतीय भाषाओं में कुछ व्याकरणिक रूपिम के उदाहरण वर्तमान उत्तरोत्तर, रहा हूँ (हिन्दी); उ: उन्नानु (तेलुगु) (प्रथम पुरुष एक वचन पुलिंग) बहुवचन बनाने के लिए: इयां; – कें (हिंदी) –लु (तेलगु) वगैरह । यह ध्यान दीजिए कि, भारतीय भाषाओं में विकास की जानकारी प्राप्त नहीं है ।

• ब्राउन (1973) पर आधारित, वैन राईपर, सी. और एमरिक, एल. (1990) "स्पीच करेकशन- एन इन्ट्रोडक्शन टू स्पीच पैथोलोजी अँड आडियॉलॉजी" प्रैन्टिस हॉल, एन.जे. से उद्धृत ।

अभिव्यक्त विकास पर टिप्पणी-

निम्नलिखित अभिव्यक्ति विकास के सारांश है, जो निर्धारण और अंतराक्षेपण क्रियाओं को ध्यान में रखते हुये किये गये हैं । इस विकास को पूर्व–आशय स्तर से आशय स्तर और असांकेतिक से सांकेतिक अभिव्यक्ति जैसे बताया गया है । यह ध्यान रखना आवश्यक है कि, सभी बच्चों का विकास इसी क्रय से होता है । इस विषय को अंतराक्षेपण के समय ध्यान में रखना चाहिये ।

सारणी—IV
अभिव्यक्ति के स्तर

	स्तर	मौखिक	गामक – सांकेतिक
1.	पूर्व आशय व्यवहार	रोना, गरोर करना, स्नेहपूर्ण वार्तालाप करना (कूईंग)	सर की हलचल चेहरे के हावभाव
2.	आशय व्यवहार	बतंगड, धबराहंट	पहुँचन, ढकेलना आदि
3.	अरुढ़िगत पूर्व सांकेतिक संप्रेषण	हसना का विन्यास ध्वनियाँ	आंखें मिलाना और उपरोक्त व्यवहार
4.	रूढ़िगत पूर्व सांकेतिक संप्रेषण	ध्वनि नमूना का स्वरविन्यास साथ देना	बारीसे नजर मिलाना, वस्तुओंका स्पर्श करना हाथ से इंगित करना, गले लगाना आदि.
5.	मूर्त, साकार, ठोस सांकेतिक संप्रेषण	वस्तुओं की ध्वनियों का अनुकरण करना (सरुपी शब्द)	इशारे जैसे, मेरा, आओं, आदी
6.	अमूर्त सैध्दांतिक संकेत संप्रेषण	बोले गये प्रथम शब्द	प्रथम सांकेतिक इशारे
7.	औपचारिक सांकेतिक संप्रेषण	दो या दो से अधिक बोले गये शब्दों का संयोजन	दो या अधिक इशारों का संयोजन

• गोयट्स एल., गेस डी., और कॅम्बेल, के.एस., "इनोवेटिव प्रोग्रॅमस् डिजाईन फॉर इंडिविजुअल्स् वीत डुयल सेंसरी इंपेअरमेंट्स" (1989), ब्रूक्स पब्लिशिंग कंपनी, बॉल्टीमोट, मेरी लैंड ।

बाद की वाक्य-रचना (लेटर सिन्टेक्स)

जब तक बच्चा बाल-विहार (किन्डरगार्टन) के लिए तैयार होता है वह लगभग एक वयस्क जैसा व्याकरण सीख लेता है । केवल कुछ अधिशोधन (डिफाइनमेंट) सीखने की आवश्यकता रहती है । ये दस से बारह वर्ष तक की आयु में सीखे जाते हैं । इनमें से कुछ हैं-

12 वर्ष की आयु तक बच्चे वयस्क जैसा व्याकरण सीखत है

-कर्म वाच्य (पैसिव वॉईस) को समझना और उसे अभिव्यक्त करना- कर्मवाच्य को समझना 12 वर्ष की आयु में आ जाता है । यदि एक वाक्य दिया जाए "गाय को घोडे द्वारा लात मारी गयी" पांच छः वर्ष के बच्चे शायद इसे यूँ समझेंगें "गाय ने घोड़े को लात मारी"

- सामान्य नियमों के अपवाद के लगभग 11 वर्ष की आयु में बच्चा यह सीखता है अंग्रेजी में गूस (बतख) एकवचन है, बहुवचन रूप है गीज् है ।

- जटिल रूपान्तरण एक वाक्य को भिन्न-भिन्न से बदलने में बच्चों को विशेष रूप के संस्करण की आवश्यकता होती है । उदाहरण के लिए-"फुटबाल खेलना बहुत अच्छा है । इसे फिर से इस प्रकार कह सकते हैं "फुटबाल खेलने के लिए बहुत अच्छा खेल है ।" या "फुटबाल का खेल अच्छा है ।" इस प्रकार के रूपांतरण प्रशिक्षण द्वारा (स्कूल में) सीखे जा सकते हैं ।

अर्थ-विज्ञान (सिमॅन्टिक) का विकास

अभी तक हम वाक्य-रचना के विकास पर विचार कर रहे थे । वाक्य रचना का विकास, अर्थ विज्ञान के साथ साथ होता है । फिर भी यह अभी तक स्पष्ट नहीं है कि, बच्चे इतनी बड़ी शब्दावली जो वे सुनते हैं और प्रयोग करते हैं, किस प्रकार सीख लेते हैं ।

जब से बच्चा प्रथम शब्द बोलता है शब्दावली का विकास बड़ी तीव्रता से आरम्भ हो जाता है । शब्दावली का विकास दूसरे वर्ष के आखिरी छः महीनों में बहुत जल्दी होता है । क्योंकि, बच्चे

की गतिशीलता (मोबिलिटी) बढ़ती जाती है । और उसे व्यक्तियों, वस्तुओं और घटनाओं की लगतार बढती हुई जानकारी और अनुभव होते रहते हैं ।

शब्दावली के विकास में सीखे हुए शब्दों के अर्थ बढ़ाये जाते है जो कि, अल्प–विस्तरण (अन्डर एक्सटेंशन) और अधिक विस्तरण (ओवर एक्सटेंशन) की नीतियाँ अपनाकर सीखें जाते हैं । उदाहरण के लिये– बच्चा "कुता" (डॉग) शब्द का प्रयोग सभी चार पैर वाले पूँछ वाले पशुओं के लिये करता है जैसे बिल्ली, गाय, छोड़ा आदि। बच्चे शब्दों का सीमित प्रयोग करके अल्प विस्तरण करते हैं । उदाहरण के लिए–बच्चा अपने पाले हुये कुत्ते को ही कुत्ता बोलता है । उसके विचार में दूसरे कुत्ते कुत्ते ही हैं । धीरे–धीरे बच्चा दूसरे गुणों को पहचानने लगता है और फिर क्या–कों की भाँति ही प्रयोग करने लगता है ।

1 ½ और 2 वर्ष के बीच में बच्चे की शब्दावली अधिक बहने का कारण है अपना अधिक अनुभव

बच्चे न केवल वस्तुओं और पशुओं के नाम के अर्थ को ही समझते है बल्कि, वे उनके बीच के सबंधों को भी पहचान कर व्यक्त करता सीख लेते हैं ।

तालिका–5

आयु मास में	शब्दों को संख्या
8	0
10	1
12	3
15	19
18	21
21	118
24	272
30	446
36	896
48	1540
60	2971

स्रोता स्नो सी. डब्ल्यू. 1989 इन्फैन्ट डेवेलपमैन्ट प्रेन्टिस हॉल, एनजे और बैन राईपर, सी. और एमरिक एल 1990 स्पीच करेक्शन, एन इन्ट्रोडक्शन टु स्पीच पैथोलोजी एंड आडिआलोजी, प्रेन्टिस हॉल, एन.जे ।

कुछ और अनुभव और परिपक्वता के साथ बच्चा धीरे-धीरे वाक्यांशों को छोड़कर अधिक कठिन वाक्यों का अर्थों के साथ प्रयोग करने लगता है । अर्थ-विज्ञान की वृद्धि में जो मुख्य विकास होता है वह है बढ़ती हुई शब्दावली का । उसके साथ साथ सीखे हुए शब्दों की संख्या भी-बढती जाती है ।

ऐसा जान पड़ता है कि, बच्चे नये शब्दों के अर्थ एक कम से सीखते हैं । बच्चे-

१. किसी वस्तु, घटना अथवा क्रिया से संबंधित शब्द सीखते हैं।

२. वे विशेषण और क्रिया विशेषण सीखते हैं ।

३. वे शब्द सीखते है जो किसी स्थान अथवा समय को बताते हैं ।

४. अन्त में वे संबंध-बोधक शब्दों पर ध्यान देते हैं ।

जैसे कि "हर, देयर" (उसका/उनका)

अर्थ क्रिया विज्ञान (प्रॅग्मॅटिक विकास)- भाषा के विकास में बच्चे को ध्वनि व्याकरण और शब्दावली कही और अधिक सीखना होता है । उन्हें ये ढंग अपनी प्रतिदित की बढ़ती हुई सामाजिक स्थितियों में सही प्रकार से प्रयोग करना भी आना चाहिये । प्रयोग करने वाले की दृष्टि से भाषा को देखने को अर्थ किया विज्ञान (प्रैगमैटिक) कहा जाता है, विशेष रूप से सामाजिक परिस्थितियों में भाषा प्रयोग करते समय वे जो निर्णय लेते हैं और वे कठिनाईयों का सामना करते हैं । इस विकास की निश्चित अवस्थाओं के बारे में बात करना संभव नहीं है लेकिन इसकी आरम्भिक आयु, जिसमें शुरू होती है, के बारे में स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है । अर्थ क्रियाविज्ञान (प्रॉगमटिक्स्) के कई पहलू हैं ।

बच्चों में व्याकरण और अर्थ का ज्ञान होना काफी नही है किन्तु भाषा प्रयोग सीखना आवश्यक है

(1) अभिप्राय (उद्देश्य) व्यक्त करनाः हम किस उद्देश्य से बात करते हैं ।

(2) बातचीत आरम्भ करना, उसे जारी रखना और फिर समाप्त करना

(3) श्रोता की जानकारी–श्रोता को कैसे जानना है कि, वह किस प्रकार का श्रोता है? और वह क्या जानता है, किसी भी विषय पर हमारी वाक् इन प्रश्नों के उत्तरों पर निर्भर करती है ।

(4) परिस्थिति की भूमिका की पहचान–जैसे कि, किस समय बधाई देना शोकसंदेश देना वगैरे–वगैरे । अर्थ क्रिया विज्ञान (प्रॅग्मॅटिक्स) के विकास का व्याख्यान निम्न चरणों में किया जा सकता है ।*

1. २ से 10 महीना के बीच बच्चा दृष्टि संपर्क स्थापित करता है । व्यवहार को नियंत्रित करने के लिये एक दूसरे के साथ दृष्टि के विनिमय का उपयोग करता है । बच्चा और वस्तु दोनों मिलाकर प्रतिदिन संयुक्त क्रिया–कलाप करते हैं । बच्चा अपनी आवश्यकताओं को वस्तु की ओर इशारा करके और साथ ही साथ कुछ ध्वनि उच्चारण करके व्यक्त करता है।

भाषा प्रयोग का विकास 2 महीने की आयु से ही प्रारंभ होता है ।

2. जब बच्चा १० से १८ मास की आयु का होता है तब वह वस्तु देते समय वस्तु दिखाते समय कुछ इशारों का प्रयोग करता है ताकि, अभिरक्षक का ध्यान उस वस्तु की ओर आकर्षित हो जो उसे चाहिए । वयस्क के साथ खेलते समय कुछ बदलाव करने के लिये वे सांकेतिक बारी लेने के प्रयोग करते हैं । अर्थ–सबंधी उद्देश्य (सीमेन्टिक इन्टेशन) का विकास होता है ।

3. इस चरण में प्रारम्भिक बातचीत दिखाई पड़ती है । बच्चा प्रश्नों का उत्तर देता है और भावनाएँ व्यक्त करता है । फिर वह सर्वनाम का प्रयोग करता है । कई बार बच्चा विषय

भाषा प्रयोग का विकास 2 महीने की आयु से ही प्रारंभ होता है ।

* स्त्रोत–केरो लिंच वूलफोक–एन इन्ट्रोप्रेटिव अप्रोच टू डिसआइरस् इन चिल्ड्रन–ग्रून स्ट्रैटन, न्यूयार्क (1982)

बदलने में सफल हो जाता है । ये सब १८ से ३० मास की आयु में दिखाई पड़ते हैं ।

4. आरम्भ में ये बात-चीत बहुत गलत और बिखरी-बिखरी होती है जिसमें अधिकांश कार्य माता-पिता को करना पड़ता है । ठीक उसी प्रकार बच्चे की बातें किसी श्रोता के लिए संबोधित नहीं होती ।

5. तीन से चार वर्ष की आयु में वे कोई भी वार्तालाप आरम्भ करने के योग्य हो जाते हैं । श्रोता का ध्यान आकर्षित करने के लिए व बनाए रखने के लिये कई ढंग भी अपनाते हैं। कई और प्रकार की कुशलताएँ शोधित होती है जैसे बारी लेना (टर्न-टेकिंग) या बदल देना । वे बड़े सही ढंग से जबाब देने लगते हैं । माँग करने पर सही स्पष्टीकरण देकर बच्चा किसी छोटे बच्चे से बात करते समय अपने बोलने का तरीका बदल लेता है ।

6. चार से पाँच वर्ष के बीच बच्चा व्याकरण और भाषा पर अपना मत प्रकट करता है । बच्चा समानार्थक और विपरीतार्थक शब्द में बोलने लगता है । बच्चे में उन सामाजिक तत्वों (फैक्टर) के प्रति जागरूकता का मुख्य विकास होता है जो एक सफल बात-चीत को नियंत्रित करते हैं, जैसे कि, संबोधन करने के तरीकों का सही प्रयोग, शिष्टता (नम्रता) के चिह्न और प्रार्थना मांग को अप्रत्यक्ष रूप से कहना । वे बात चीत को मांग करने वाली परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगा लेते हैं, और फिर बातचीत को सुधारने के लिये कार्य कर सकते हैं जैसे कि, जो स्पष्ट नहीं है उसे दोबारा कह कर ।

5 वर्ष में बच्चे सामाजिक तत्वों से जागरूक हो जाते हैं जो सफल बातचीत से प्रभावित होता है ।

7. पाँच वर्ष के पश्चात् बच्चा भाषा का प्रयोग कलात्मक ढंग से करने लगता है (कविता, वर्णन आदि) वे अपनी बातचीत को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई युक्तियों का प्रयोग करते हैं । वे एक-दूसरे को चुटकुले सुनाते हैं, पहेलियों पूछते हैं, एक दूसरे को गाली देते हैं और अपनी टोली का अस्तित्व बनाए रखते हुए भाषा के खेल खेलते हैं । इन योग्यताओं में से सबसे विलक्षण है पीठ पीछे बात करने की योग्यता । ये

भाषा का प्रयोग लगातार 14 वर्ष तक होता रहता है ।

नौ वर्ष की आयु तक अधिक सुसंस्कृत हो जाता है । बच्चे ये सब ढंग अधिकतर अपने सामाजिक अनुभव से सीखते हैं। अर्थ विज्ञान (प्रैमैटिक्स) का विकास 14 वर्ष की आयु तक होता है (किशोरावस्था) ।

शिशुओं से बातचीत पर एक टिप्पणीः पैदा होने के तुरंत बाद से शिशु और अभिरक्षक एक आपसी संवाद प्रदान को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं । बच्चा इस आदान-प्रदान का स्तर निर्धारित करता है क्योंकि, उसकी क्षमतायें सीमित होती है । माँ अपनी बातचीत में और क्रियाओं में बदलाव कर के इस आदान-प्रदान को नियंत्रित करती है जो कि, बच्चे की क्षमताओं के अनुरूप हो और उसके क्रिया-कलाप के स्तर को बनाए रखे । सामान्यतः यह आदान-प्रदान आमने-सामने ही होता है ।

वयस्क और बच्चे की बोली और भाषा समान्यतः बातचीत से एक क्रम बद्ध ढंग से बदलती जाती है । इस रूपांतरित बोली और भाषा को "बेबी-टॉक मदरीस" कहते हैं । बेबी टॉक (माँ द्वारा बच्चे से की गई भाषा) वाक्य की लंबाई कम और शब्द सरल होते है । माता में अपनी बात को बार-बार दोहराती हैं और विवरण देती है शायद यह सोचकर कि, बच्चा उनकी बात समझ सकें । विषय केवल वर्तमान स्थिति तक ही सीमित रहते हैं । इसके अलावा, चेहरे के भावों और इशारों का प्रयोग अधिक किया जाता है । बहुत सी मातायें अपने शिशुओं से अनेक प्रश्नों का और अभिवादनों का प्रयोग करती है । कुछ समय रूक कर जो कि, एक प्रतिक्रिया (उत्तर) समझा जाता है, माँ फिर जवाब देने लगती है ।

वयस्क व्यक्ति बच्चों से बोलते समय नियमित रूप से अपना वाक् बदलते हैं

भाषा के विकास में कुछ अभिकल्पित व्यवहार विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करते हैं । वे हैं - संयुक्त निर्देश, संयुक्त क्रियायें, खेल और स्थिति परक व्यवहार । संयुक्त निर्देश यह सूचित करता है कि, दो या अधिक व्यक्तियों का एक ही चीज पर ध्यान केन्द्रित है। इसी संदर्भ में अस्तित्व बताने में बच्चे का इशारों और मौखिक संकेतों का विकास होता है । संयुक्त क्रियाओं में भाग लेने से जिसमें माता भी बच्चे के साथ शामिल होती है "विधिनुसार नकल" (रिचुअल इमिटेशन) और विभिन्न स्थितियों में सुरागों का प्रयोग करना एक

महत्वपूर्ण पहलू है । इन सब के माध्यम से बच्चा भाषा के प्रयोग के नियम सीखता है । शिशु और देखभाल करनेवाले के परस्पर संबंधों को उचित महत्व देना चाहिए क्योंकि, यही भाषायी विकास के आधार होते हैं ।

अभिरक्षकों के साथ के क्रियाकलाप भाषा विकास का एक मुख्य आधार है।

सामान्य बच्चे में भाषायी विकास के विभिन्न पहलुओं को समझ कर हमें मंदबुद्धि बच्चों में विभिन्न स्थितियों में होने वाली कठिनाईयों का विश्लेषण करने में मदत मिलती है । अगला अध्याय मंदबुद्धि बच्चों में होने वाली भाषा और बातचीत संबंधी कठिनाईयों पर केन्द्रित है।

सारांश

यह अध्याय संप्रेषण के लिये मुख्य पूर्वाकांक्षाओं के महत्व का वर्णन करता है, जो कि, वाक्, भाषा व संप्रेषण सीखने के लिये महत्वपूर्ण है । इसके साथ-साथ समय और अनुभव की भूमिका का भी वर्णन करता है । इसके अतिरिक्त वाक्-पूर्वकाल (प्री-स्पीच पीरीयड) में होने वाली विभिन्न क्रियाओं का भी उल्लेख है जो कि, संप्रेषण के लिये प्रासंगिक है । ठीक इसी प्रकार बच्चे का प्रथम शब्द तक के विकास और फिर जटिल वाक्यों के प्रयोग का भी वर्णन किया गया है । बदलते हुए समय की गति के साथ समकालीन सिद्धान्तों पर आधारित अर्थ क्रिया विज्ञान विकास का एवं वयस्क-बच्चे की परस्पर क्रियाओं जैसे पहलुओं का भी अन्त में जिक्र किया गया है । पाठक को यह ध्यान रखना है कि, भाषा के इन सभी मार्गों का अलग-अलग वर्णन किया गया है ताकि, वे ज्यादा अच्छी तरह समझ सकें । वास्तविक जीवन में इसका विकास सम्मिलित होता है । संक्षेप में, भाषा का विकास होना एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें यह जानकारी सीखी जाती है कि, क्या कहना है (विषय वस्तु) कैसे कहना है (रूप) "कब", "कहाँ" और "किससे" कहना है (प्रयोग) ।

स्व-परीक्षा 4

I. बताईये निम्नलिखित कथन सही है या गलत।

1. भाषा विकास, माता-पिता द्वारा दिया गया एक सचेत शिक्षण है । सही/गलत
2. पूर्व वाक् (प्री-स्पीच) की क्रियायें बाद की वाक् और भाषा विकास में कोई भूमिका नहीं निभाती । सही/गलत
3. वाक्य-विन्यास (सिन्टैक्स) का विकास, अर्थ-विज्ञान (सिमैन्टिक) के विकास के साथ सामंजस्य करता है । सही/गलत
4. बच्चे लगभग तीन वर्ष की आयु में 10 दो शब्दों को क्रमबद्ध ढंग से जोड़ लेते हैं । सही/गलत
5. तीन वर्ष की आयु तक बच्चो की शब्दावली 75 शब्द तक हो जाती है । सही/गलत
6. बच्चे जो नए शब्द प्रयोग करते है. उनका अर्थ भी साथ ही ले आते हैं । सही/गलत
7. भाषा के अर्थ क्रियाविज्ञान (प्रॅग्मैटिकस्) का विकास 14 वर्ष तक की आयु तक हो सकता है । सही/गलत

II. सही शब्दों अथवा वाक्यांशो का प्रयोग करके रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. बच्चा प्रथम शब्द_____से_____ मास की आयु में बोलता है ।
2. बच्चे वयस्क के शब्दों को सरल और सन्निकट करने के लिए_____ प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं ।
3. एक व्यक्ति बच्चे का खिलौना ले लेता है । फिर बच्चा उसे छिनकर कहता है "मेरा" । इसमें व्यक्त अर्थ-उद्देश्य (सीमैन्टिक इन्टेन्शन) अभिप्राय _____ है ।
4. नकारात्मक रूप सीखते हुए नो (ना) और नॉट (नहीं) के बाद_____ और _____ के रूप सीखे जाते हैं ।
5. जटिल वाक्यों के प्रयोग का विकास_____ वर्ष तक होता रहता है ।
6. दो वर्ष की आयु तक के बच्चों की शब्दावली लगभग_____ शब्दों की हो जाती है।

7. प्रारम्भिक (रूडिमैन्टरी) बात-चीत की निपुणता_____ और_____मास के बच्चों में देखी जाती है ।

8. बच्चों से बात करते हुए वयस्क अपने वाक् को_____करके बदलते हैं ।

III. सही उत्तर का चयन कीजिए :

1. मंदबुद्धि बच्चों में निम्न पूर्वाकांक्षायें मुख्यतः प्रभावित होती है ।

(क) वाक् यंत्रावली (स्पीच प्रोडक्शन मैकनिज्म्)
(ख) बातचीत के माध्यम
(ग) क्रिया संज्ञात्मक योग्यता (प्रोसेसिंग स्किल्स्)
(घ) संवेदनात्मक (सेन्सरी) योग्यताएँ
(ड़) उपर्युक्त सभी

2. निम्नलिखित सभी स्वरूपी शब्दों (आईडियोमॉर्फ) के स्रोत है सिवाय -

(क) खींच तान करना (स्ट्रेनिंग)
(ख) बड़ों की बोली की नकल करना
(ग) अपनी नकल करना (सैल्फ इमिटेशन)
(घ) संकेत बदलना (कोड स्विचिंग)
(ड़) इनमें से कोई नहीं ।

3. (आईडियोमार्फ) स्वरूपी शब्द से प्रथम शब्द का बदलाव निम्न प्रकार से होता है ।

(क) संकेत (कोड) बदलना
(ख) (आईडियोमार्फ स्वरूपी शब्दों के साथ बड़ों की तरह स्वर विन्यास लगाना ।
(ग) (आईडियोमोर्फिक) स्वरूपी शब्दों में जवाब देना
(घ) आईडियोमोर्फ (स्वरूपी) शब्दों को मान्य के साथ जोड़ कर संयोजित शब्द बनाना (कम्पाऊंड वर्ड्स)
(ड़) उपर्युक्त सभी

4. द्वि शब्दीय वाक्यांशों के वाक्य बनाते हुए बच्चे निम्न प्रकार की विधायें प्रयोग करते हैं सिवाय

(क) सम्बंधों को अधिक जोड़ने के लिए समान शब्दों को जोड़ देना
(ख) संज्ञा शब्दों को विस्तृत करना
(ग) क्रिया शब्दों को विस्तृत करना
(घ) विशेषण और क्रियाविशेषण को निकाल देना ।

5. शब्दावली के अर्थ सीखने के लिए बच्चों द्वारा दो युक्तियाँ प्रयोग की जाती हैं ।

(क) बांयी ओर का विस्तरण और दायीं ओर का विस्तरण

(ख) समतल (हौरिज़ौन्टल) विस्तरण और उर्ध्व (वर्टिकल) विस्तरण
(ग) सीमैन्टिक विस्तरण सिन्टैक्टिक विस्तरण
(घ) अल्प आदान प्रदान और अधिक विस्तरण
(ङ) अल्प विस्तरण और अधिक विस्तरण
(च) इनमें से कोई नहीं

6. (प्रैग्मैटिक) विकास की इस अवधि में वयस्क के साथ खेलते हुए अर्थ-उद्देश्य अभिप्राय और अमौखिक कार्य में बारी लेने का विकास होता है ।

(क) 10-12 मास (ख) 2 से 3वर्ष (ग) 20 से 26 मास
(घ) 10-16 मास (ङ.) 18 से 24 मास (च) इनमें से कोई नहीं

IV. निम्न की जोड़ियां बनाइये :

1. सिन्टैक्स का विकास

i)	कुछ अर्थ-क्रिया संबंध	(क) अस्तित्व, अदृश्य होना, फिर प्रकट होना आदि
ii)	कुछ व्याकरणिक रूपिम (उपसंहार)	(ख) कर्ता+क्रिया, क्रिया+कर्म कर्ता+कर्म
iii)	प्रारम्भिक अर्थ उद्देश्य	(ग) स्वामित्व, वर्तमान प्रगतिशील, कारक/विभक्ति

2. शब्दावली का विकास

i)	दो वर्ष	(क) 22 शब्द
ii)	तीन वर्ष	(ख) 1540 शब्द
iii)	चार वर्ष	(ग) 272 शब्द
iv)	डेढ़ वर्ष	(घ) 896 शब्द

3. अर्थ क्रिया विज्ञान का विकास

i)	5 वर्ष से अधिक	(क) संबोधन और विनम्रता के चिन्हों का संही प्रयोग और अप्रत्यक्ष रूप से निवेदन करना ।
ii)	4 और 5 वर्ष के बीच	(ख) चुटकुले सुनाता है, पहेलियाँ पूछकर एक-दूसरे का परिहास करते हुए भाषायी खेल खेलते है ।
iii)	2 से 10 मास के बीच	(ग) बच्चा आंख मिलाना, संयुक्त क्रियाकलाप में भाग लेना, इशारों और ध्वनि के साथ दिखाना।

स्व-परीक्षा-4 की कुंजी

1. (1) गलत
   (2) गलत
   (3) सही
   (4) गलत
   (5) गलत
   (6) गलत
   (7) सही

2. (1) 12, 18
   (2) प्राकृतिक स्वनिमिक (नैचुरल फोनोलोजीकल)
   (3) स्वामित्व (पोजेशन)
   (4) डोंट (नहीं करूँगा) और कान्ट (नहीं कर सकता)
   (5) पाँच
   (6) 272
   (7) 18 और 30
   (8) छोटा, साधारण

3. (1) (ग) क्रिया संज्ञात्मक योग्यताएँ (प्रोसैसिंग स्किल्स्)
   (2) (घ) संकेत बदलना (कोड स्विचिंग)
   (3) (ड.) उपर्युक्त सभी
   (4) (घ)
   (5) (ड़.)
   (6) (घ)

4. 1. (i) – ख; (ii) – ग; (iii) – क;
   2. (i) – ग; (ii) – घ; (iii) – ख (iv) – क
   3. i) – ख; (ii) – क; (iii) – ग;

अध्याय - 5

मन्दबुद्धि बच्चों में संप्रेषण और भाषायी समस्याएँ

भाषा संप्रेषण एक कठिन प्रक्रिया है । क्या कहना है (विषयवस्तु), कैसे कहना है (रूप) और कब और कहाँ कहना है (प्रयोग) इन सब का सम्मिश्रण सीख लेना कोई सरल कार्य नहीं । मंदबुद्धि बच्चों में वाक्, भाषा और संप्रेषण सम्बन्धी अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ देखने को मिलती हैं । कुछ बच्चे संप्रेषण के मूल उद्देश जैसे भोजन अथवा पानी माँगना जैसी क्रियाओं को करने की क्षमता भी नहीं रखते। इस अध्याय में मंदबुद्धि बच्चों में पायी जाने वाली संप्रेषण संबंधी कठिनाईयों और उनके संभावित कारणों का वर्णन करने का प्रयास किया गया है ।

कठिनाईयाँ दिखाने वाले बच्चों में मानसिक मंद बच्चों का भी एक प्रमुख समूह है ।

उद्देश्य :

1. मंदबुद्धि बच्चों में संप्रेषण संबंधी कठिनाईयों के कारण पहचानना
2. वाक् तथा भाषा सम्बन्धी कठिनाईयों के प्रकार एवं उनकी व्याप्ति का विश्लेषण करना ।

सामान्य वाक् एवं भाषा :

वाक् अथवा भाषा सामान्य मानी जाती है जब वह एक ही वातावरण, संस्कृति, आयु, लिंग, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक स्तर के अधिकांश लोगों की भाषा की तरह महसूस हो ।

अधिकांश बच्चे वाक् और भाषा सामान्य रूप से सीख लेते हैं, लेकिन कुछ इन से भिन्न रह जाते हैं । इस कोटि में मन्दबुद्धि बच्चे लिए जाते हैं ।

असामान्य (एबनॉर्मल) वाक् एवं भाषा :

भाषा और वाक् असामान्य तब मानी जाती है जब वह अन्य लोगों की भाषा और वाक् से इतनी भिन्न हो कि वह ध्यानाकर्षित करे और/या बातचीत में बाधा उत्पन्न करे । यानि उनकी भाषा और बोली दोषपूर्ण समझी जाती है यदि उसे समझने में कठिनाई होती है ।

वाक् व भाषा दोष को 4 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, भाषा, उच्चारण, वाणी और वाक् पटुता

किसी की भी वाक् एवं भाषा में निम्न प्रकार के दोष पाये जाने पर वह वाक् एवं भाषा दोषपूर्ण या असामान्य मानी जाती है :

1. **भाषा संबंधी दोष** : इसमें व्यक्ति को मौखिक संकेत, शब्द/अमौखिक चिन्हों को समझने में और व्यक्त करने में कठिनाई होती है ।

2. **उच्चारण (आर्टिकुलेशन) दोषः** व्यक्ति को उच्चारण करने में यानि वाक् ध्वनियाँ उत्पन्न करने में कठिनाई होती है ।

3. **वाणी (वॉइस्) दोषः** व्यक्ति की वाणी या ध्वनि के तारत्व (पिच), उच्चता (लाउडनेस) अथवा गुण (क्वालिटी) में असामान्यता होती है ।

4. **वाक्पटुता (फ्लूएन्सी) के दोष** : व्यक्ति को सुगम वाक् प्रवाह में कठिनाई होती है ।

मन्दबुद्धि बच्चों में वाक् एवं भाषा संबंधी कठिनाईयों का स्वरूपः

मानसिक मंद बच्चों में सभी प्रकार के वाक् व भाषा की अव्यवस्थितता दिखाई देती है।

मन्दबुद्धि बच्चों में वाक् एवं भाषा का कोई विशेष स्वरूप नहीं होता है । मन्दबुद्धि बच्चे अनेक प्रकार की वाक् एवं भाषा संबंधी कठिनाईयों का सामना करते हैं और ये कठिनाईयाँ स्वाभाविक रूप से बिल्कुल वैयक्तिक (इंडिविजुलिस्टिक) होती है । इसका अर्थ यह है कि, कोई भी दो बच्चों में दोष एक जैसे नहीं होते हैं । इसमें इतनी अधिक भिन्नता होती है कि, एक बच्चा बिलल्कुल नहीं बोल सकता और दूसरों की बात भी बहुत कम समझ सकता है जबकि, दूसरा बच्चा प्रतिदिन की बातों को बहुत अच्छी तरह समझ लेता है और अपने आप को व्यक्त करने के लिए बोल भी सकता है मगर उसका बोलना अस्पष्ट होता है ।

सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि, मन्दबुद्धि बच्चों में वाक् तथा भाषा का विकास, सामान्य विकसित बच्चों की तुलना में, देर से होता है । इसका अर्थ है कि, मन्दबुद्धि बच्चों में वाक् तथा भाषा की योग्यताओं का विकास उसी क्रम से होता है जैसा कि, सामान्य बच्चों में, और विकास के मूल तत्व (फैक्टर्स) भी एक जैसे हैं । लेकिन इनमें इन योग्यताओं का विकास धीमी गति से होता है और इसके विकास की उच्चतम सीमा भी सामान्य बच्चों की तुलना में कम ही रहती है । उपलब्ध प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि, मन्दबुद्धि बच्चे संभवतः भाषा की रचना में, विशेष रूप से वाक्य की लंबाई, वाक्य रचना (सिन्टैक्स) और वाक्य की जटिलता में विशेष कठिनाई या विलंब दिखाते हैं ।

सामान्यतः मानसिक मंद बच्चे वाक् व भाषा विकास में देरी बताते हैं ।

प्राबल्य या व्यापकता (प्रैवलेन्स) :

भाषा दोष की आवृत्ति बुद्धिलब्धि (आई.क्यू.) 20 के नीचे लगभग शत प्रतिशत है, 20–50 आई.क्यू. में 90% और कम विलंबित (रिटार्डेड) वर्ग में 45% होती है ।* भारतीय जनसंख्या पर किए गए अध्ययन बहुत कम हैं और उनके परिणाम एक संभ्रमित चित्र देते हैं । रा.मा.वि.सं. में 300 मन्दबुद्धि बच्चों पर किए गए विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि, 81.24% में वाक् एवं भाषा दोष थे । यह नोट किया गया कि, 30% में वाक् बिल्कुल नहीं थी और लगभग 60.67% कुछ ही पदों का प्रयोग करते थे ।** सभी बच्चो में वाक् तथा भाषा का विकास विलंब से हुआ । उच्चारण के दोष 52% में, वाणी के दोष लगभग 39.33% में देखे गए और 13% में वाक् पटुता दोष थे ।

80% से अधिक मानसिक मंद बच्चे संप्रेषण समस्यायें बताते हैं ।

भाषा विकास में विलंब के कारण

मन्दबुद्धि बच्चों को ज्ञानात्मक (कोग्नीटिव) पहलुओं में कठिनाईयाँ होती हैं जैसे कि, अवधान बनाए रखना, आगत (इन्पुट) विषयों के अर्थ समझना, चिन्हों (सिम्बल्स्) को स्मरण करना, संदेश

---

* कैरो ऊलफोक और लिंच (1982) ** सुब्बाराव और श्रीनिवास (1989)

के अर्थ को समझना, वाक् ध्वनि उत्पन्न करने के लिए कार्यक्रम बनाना और फिर शब्द और वाक्य बनाने के लिए निगत को क्रमबद्ध करना । जैसे कि, भाषा का विकास ज्ञानात्मक विकास पर बहुत निर्भर करता है और थोड़ा भी विलंब अथवा दोष भाषा के विकास में बाधा उत्पन्न करता है ।

वाक् व भाषा का देर से विकास होना मानसिक मंद बच्चों में देखा जाता है, इसका मुख्य कारण है प्रोसेसिंग कुशलताओं में कमी और कम उत्तेजित वातावरण

वाक् एवं भाषा के लिए प्रपथ प्रेरित वातावरण (स्टिमुलेटिंग एन्वायरन्मैन्ट) का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । विशेष रूप से भाषा का वह आगत अधिगम, आदर्श (मोडेल) अथवा देखभाल करने वाले पर निर्भर होता है । बच्चे और देख भाल करने वाले के परस्पर सम्बन्ध (क्रियाएँ) वाक् तथा भाषा के विकास पर बहुत प्रभाव डालते हैं । आधुनिक अनुसंधान से ज्ञात होता है कि, मन्दबुद्धि बच्चे और माता का या बच्चे और देखभाल करने वाले के परस्पर संबंध एक सामान्य बच्चे और अभिरक्षक के परस्पर संबंधों से अनेक प्रकार से भिन्न होते हैं । जब किसी कम उत्तर देने वाले बच्चे का सामना करना पड़ता है तो देखभाल करने वाला भी उससे कम बातचीत करता है और जब वे बोलते हैं तो उन्हें कम से कम जानकारी दी जाती है । एक अच्छा, उत्तेजक वातावरण बच्चे को अच्छा और जल्दी सीखने में सहायक होता है । परन्तु, मन्दबुद्धि बच्चों के मामले में, आमतौर से वातावरण, भाषा सीखने के लिए सहायक नहीं होता है । मन्दबुद्धि बच्चों को अपने वातावरण में संप्रेषण करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं होते ।

पूर्व अपेक्षाओं का अध्ययन सामान्य भाषा के विकास, के कारणों का संकेत देता है ।

मन्दबुद्धि बच्चों में प्रायः देखी गई समस्याएँ जैसे कान के रोग (कान बहना), श्वास नली के ऊपरी हिस्से के रोग, वाक् यन्त्रावली की असामान्यताएँ आदि भी वाक् तथा भाषा के विकास को मन्द और विलम्ब कर देते हैं ।

मन्दबुद्धि बच्चों में वाक् तथा भाषा संबंधी कठिनाईयों के कुछ महत्वपूर्ण पक्ष नीचे दिए गए हैं । इन समस्याओं का वर्गीकरण भाषा, उच्चारण, वाक्-पटुता और वाणी या आवाज आदि शीर्षकों पर किया गया है ।

भाषा समस्याओं :

समझने व व्यक्त करने दोनों ही प्रकार के पहलुओं में भाषा का विलंब देखा जा सकता है । दोनों क्षेत्रों की समस्याओं की गंभीरता में अन्तर हो सकता है । समस्याओं का दायरा (रेंज) बहुत बड़ा है आरै इसमें अत्यधिक (एक्सट्रीम) समस्याएँ भी सम्मिलित हैं । ये जान लेना उचित होगा कि, किन्हीं दो बच्चों की समस्यायें बिल्कुल एक जैसी नहीं होती । कुछ आम समस्याएं निम्नलिखित हैं :

व्यक्त करने में कठिनाईयाँ :

1. लगभग 40% मन्दबुद्धि बच्चे अमौखिक (नान वर्बल) हैं यानि कि, वे वाक् का प्रयोग नहीं करते । इनमें से कुछ मूल संप्रेषण भी नहीं जानते जैसे कि, भूख लगने पर रो कर, हो–हल्ला मचा कर, दूसरों को खींच कर या संकेत कर के, सूचित करना। कुछ, भोजन के लिए, शौचालय के लिए और अन्य मूल आवश्यकताओं के लिए अक्सर मूल इशारों का प्रयोग करना सीख लेते हैं । यहाँ मुख्य समस्या, पूर्ण स्वनप्रक्रिया प्रणाली (वायबल फोनोलोजिकल सिस्टम) का सही विकास न होना, हो सकती है ।

कम से कम 40% मानसिक मंद बच्चों में वाक् नही होता। यह अभिव्यक्ति की समस्या अधिक तर ध्यान आकर्षित करती है ।

2. जैसा कि, बताया गया है कि, मन्दबुद्धि बच्चों में बोलने की क्षमता बहुत सीमित होती है । इनमें से कई व्यक्त करने के लिए अमौखिक या सांकेतिक (नान बर्बल) माध्यमों का सहारा लेते हैं । सबसे अधिक अपनाया गया ढंग है – हाव–भाव या इशारों का प्रयोग करना । इन प्रयोग किए गए इशारों की संख्या और प्रकार सीमित होते हैं ।

3. अधिकतर मन्दबुद्धि बच्चों की प्रतिक्रिया एक शब्द (पद) में ही अभिव्यक्त हो जाता है । सामान्यतः वे पदों का संयोजन करके वाक्य बनाने में असफल हो जाते हैं । जब वाक्यों का प्रयोग करते हैं तो उनके वाक्य तार (टेलिग्राफिक) द्वारा भेजे गए संदेश से मिलते–जुलते हैं । ये समस्याएँ भाषा के वाक्य–विन्यास (सिन्टैक्स) भाग की होती है ।

4 इनमें से कुछ प्रश्न का उत्तर देने के बजाय प्रश्न ही दोहराते हैं । उदाहरण के लिए वयस्क;- *"तुम्हारा नाम क्या है ?"*

बच्चा - "तुम्हारा नाम क्या है ? "

इसे शब्दानुकरण (इकोलेलिया) कहते हैं जो कि, मन्दबुद्धि बच्चों में कोई असामान्य (अनकॉमन) नहीं है । कुछ मन्दबुद्धि बच्चे विशिष्ट/अधिक रूप से बातें करते हैं जो कि, उनके माता-पिता एक समस्या की तरह महसूस करते हैं । यहाँ मुख्य समस्या अर्थ को समझने की होती है (अर्थ-विज्ञान (सिमेंटिक) कठिनाईयाँ)

5. उन्हें नकारात्मक और जटिल वाक्यों वाले प्रश्न पूछने में कठिनाई होती है । वे घटनाओं या क्रियाओं का वर्णन करने में, जानकारी के लिए पूछने में, अपनी आवश्यकताओं को बताने में, स्पष्टीकरण के लिए कहने में, झूठ बोलने में और चुटकुले सुनाने में असफल हो जाते हैं ।

6. यह जानने के बावजूद कि, उन्हें क्या कहना है, एक मन्दबुद्धि बच्चे को बातचीत में भाग लेने में कठिनाई होती है । बातचीत करते समय उसे सही रूख (मोड़) देने में कठिनाई होती है। मन्दबुद्धि बच्चों को बातचीत आरंभ करने में, जारी रखने में, और समाप्त करने में कठिनाई होती है । मन्दबुद्धि बच्चे प्रायः बिगडती हुई बातचीत (ब्रेक डाऊनस् इन कानवर्सेशन्) को सुधार नहीं सकते । ये सब समस्याएँ भाषा के व्यावहारिक या प्रयोग (प्रेग्मैटिक) पक्ष से संबंधित हैं ।

क्या बोलना है यह जानते हुये भी कई मानसिक मंद बच्चे दूसरों के साथ बातचीत में भाग लेने में कठिन समस्या दिखाते है ।.

समझने की समस्याएँ

7. मन्दबुद्धि बच्चों में, वातावरण में उपस्थित वस्तुओं, व्यक्तियों और क्रियाओं से संबंधित जानकारी बहुत सीमित होती है । इसी कारण उन्हें दूसरों की बात समझने में कठिनाई होती है जो प्रतिदिन के निर्देशों और क्रियाओं से भिन्न होती है ।

8. मंदबुद्धि बच्चों में संग्रहण की गई शब्दावली (रिसेप्टिव वोक्याबलरी) बहुत सीमित होती है । वह मुख्यतः खाद्य पदार्थों तक ही सीमित रहती है । वे शब्दावली के कुछ प्रकार (अवस्थाएँ) नहीं समझ सकते जैसे कि, संज्ञा परिवर्तक और क्रिया परिवर्तक । ऐसा देखा गया है कि, इन्हें प्रश्नात्मक रूप को समझने में व निर्देशों का पालन करने में भी कठिनाई होती है ।

9. मन्दबुद्धि बच्चे साधारणतः वे शब्द समझ लेते है जो ठोस (कोंक्रीट) है और किसी वस्तु के रूप में दिखाए जा सकते हैं । अमूर्त अथवा काल्पनिक (अबस्ट्रेक्ट) शब्दावली जो, गहराई (अंतरिक्ष), प्रेम और स्नेह जैसे विषयों के लिए प्रयुक्त होती है, उसे समझने में असफल रहते हैं ।

10. मन्दबुद्धि बच्चों को अप्रत्यक्ष प्रश्न, अस्पष्ट कथन (स्टेट्मेंट्स) कूट प्रश्न, पहेलियाँ, चुटकुले और हंसी-मज़ाक आदि को समझने में कठिनाई होती है ।

11. जब मन्दबुद्धि बच्चे किसी निर्देश या कथन का अनुसरण करते हैं तब वे केवल कुछ मूल शब्द ही समझते हैं सारी बात नहीं । मन्दबुद्धि बच्चों के लिए बहुपदी (मल्टीस्टेप) निर्देशों और आदेशों का पालन करना बहुत कठिना होता है ।

अधिकतर समय मंद बुद्धि बच्चों में संग्रहण शक्ति अधिक है यह निर्धारित करते है क्योंकि, वक्ता दैनिक आदेशों का पालन करते है, ऐसे निर्धारण गलत है ।

स्पष्ट उच्चारण (आर्टिकुलेशन) की समस्याएँ

भाषा के स्वनप्रक्रिया (फोनोलोजी) या वाक्-ध्वनि उत्पादन में दो प्रकार की कठिनाईयाँ आती हैं । कभी-कभी स्वनिम (फोनीम) असंगत (इनकन्सिस्टेंट) रूप से बोले जाते हैं जैसे कि, स्वनिम कुछ शब्दों में ठीक से बोले जाते हैं लेकिन सभी शब्दों में नहीं । बहुत बार स्वनिम बिल्कुल भी नहीं सीखे जाते । उच्चारण संबंधी कुछ सामान्य कठिनाईयाँ निम्नलिखित हैं :

12. कुछ मन्दबुद्धि बच्चे वाक्यों और वाक्यांशों में बात करते हैं मगर वे अस्पष्ट होते हैं । विशेष रूप से जो बच्चे को ज्यादा नहीं जानते उन लोगों को बच्चे की बोली समझने में बहुत कठिनाई होती है ।

13. अस्पष्टता में विकारयुक्त (डिफेक्टिव) उच्चारण का मुख्य योगदान होता है । बहुत बार अलग से किया गया ध्वनि-उत्पादन विकारयुक्त नहीं होता लेकिन जब शब्दों और वाक्यों में बोला जाता है (कोआर्टिकुलेशन) या प्रवाह में बोलते समय इसकी स्पष्टता कम हो जाती है ।

14. मन्दबुद्धि बच्चों में कुछ विशिष्ट प्रकार के गलत उच्चारण होते हैं । वे हैं – लक्ष्य स्वनिमों में विकार (डिस्टोटयुन), व्यंजन–समूहों का सरलीकरण करना, उदाहरण "ट्री" (पहेड) के लिए 'टी,' आखिरी व्यंजन छोड़ देना जैसे 'बुक' के लिए 'बु', एक स्वनिम के स्थान पर दूसरे स्वनिम का प्रयोग करना जैसे 'रेल' के लिए 'लेल' । ये कठिनाईयाँ उन कठिनाईयों से मिलती–जुलती हैं जो एक सामान्य बालक को प्रथम–शब्द के दौरान शब्द सीखने में होती है।

15. स्वनिम का गलत उत्पादन, हमेशा ही स्पष्टता की कठिनाईयों का कारण नहीं है । यदि व्यक्ति शब्दों पर और वाक्यो में शब्दों पर सही जोर नहीं डालता तब भी स्पष्टता को ही नुकसान पहुंचेगा। जोर लगाना और स्वरों का उतार–चढ़ाव (स्ट्रेस एण्ड इन्टोनेशन) जो कि, ऊपरी–खंडीय गुणों (सुप्रा सेगमेंटल फीचर्स) के नाम से जाने जाते हैं; सुखद बोली के लिए मुख्य सहारा है । बहुत से मंदबुद्धि बच्चे इन ऊपरी–खंडीय गुणों का प्रयोग करने में कठिनाई महसूस करते हैं ।

अधिकांश उच्चारण दोष वाक् असस्पष्टता का कारण समझते हैं, लेकिन अति खंडात्मक कारण भी प्रमुख हो सकते है।

आवाज़ या वाणी की समस्याएँ :

16. आवाज़ या वाणी की समस्याएँ वाक् अस्पष्टता को और भी बढ़ा देती हैं । आवाज़ की सामान्य समस्या है कमज़ोर आवाज़ जो कि, इतनी ऊँची नहीं कि, स्पष्ट रूप से सुनाई पड़े । बहुत से डाऊन–सिन्ड्रोम के बच्चों की आवाज़ कर्कश होती है । गलत उच्चारण इन सभी बातों के साथ मिलकर बोली की सुबोधता या स्पष्टता पर बहुत प्रभाव डालता है । आवाज के तारत्व का टूटना (पिच ब्रेक्स) और नीरस (मोनोटोनस्) आवाज़, बोली की स्पष्टता में बाधा उत्पन्न करती है ।

ध्वनि समस्या वाक् समपष्टता की समस्या को मन्द सकते देती है ।

वाक्पटुता (फ्लूएन्सी) की समस्याएँ :

17. विकारयुक्त वाक् पटुता या छंद–गति (रिदम्) से बोली का स्पष्टता पर बुरा प्रभाव पड़ता है । इनकी बोली में हिचकिचाहट (हेसिटेशन) रूकावट (पॉसस) और दोहराना (रिपिटेशन) आदि होता

है । जिसके फलस्वरूप, वाक्-पटुता प्रभावित होती है और कुल मिल कर वाक् की स्पष्टता प्रभावित होती है । मंदबुद्धि बच्चे वाक्पटुता प्रवाह संबंधी समस्याओं के प्रति जागरूक नहीं होते और वक्ताओं की तरह प्रतिक्रिया नहीं करते ।

अन्य समस्याएँ :

मानसिक मंद बच्चे कान में संक्रमण, बहरापन, कम सुनाई देने जैसी समस्या दिकाते है।

18. लगभग 40% मंदबुद्धि बच्चों में श्रवण समस्याएँ हैं । संचालकीय (कंडक्टिव) श्रवण दोष कोई असामान्य नहीं है; विशेष रूप से डाऊन-सिन्ड्रोम बच्चों में जिन्हें ऊपरी श्वसन नलिका (अप्पर रेस्पिरेटरी ट्रेक्ट) के रोग बार-बार होते हैं । कुछ मंदबुद्ध बच्चों में संवेदात्मक श्रवण दोष (सेन्सरी न्यूरल लॉस) भी पाया जाता है । विलंबन (रिटार्डेशन) के साथ श्रवण दोष वाक् एवं भाषा सीखने के कार्य को और भी कठिन बना देता है ।

19. कुछ मंदबुद्धि बच्चे ठीक सुन सकते हैं लेकिन वे अच्छे श्रोता नहीं होते, इसका मतलब उनके सुनने में दोष (लिसनिंग डिफेक्ट) होता है । उन्हें यह पता लगाने में कठिनाई हो सकती है कि, ध्वनि कहाँ से आ रही है, अलग अलग ध्वनियों को पहचानने में कठिनाई होती है, सुनी हुई ध्वनियों और शब्दों को अर्थ के साथ जोड़ने में कठिनाई होती है, आदि ।

20. मंदबुद्धि बच्चे लिखने पढ़ने में भी कमजोर होते हैं । ये समस्याएँ भाषा के विकास पर पूरी तरह निर्भर करती हैं ।

ऊपर के भागों में, मंदबुद्धि बच्चों में संप्रेषण संबंधी कठिनाईयों पर प्रकाश डाला गया है । ये पहलू और भी स्पष्ट हो जायेंगे जब हम इनके मूल्यांकन के पहलू का उदाहरण के साथ विस्तृत रूप से प्रस्तुत करेंगे ।

• • •

सारांश

वाक् एवं भाषा असामान्य होती है जब वह अधिकांश लोगों की भाषा से भिन्न होती है, वह ध्यानाकर्षित करती है और संप्रेषण में बाधा उत्पन्न करती है । मंदबुद्धि बच्चे मौखिक और अमौखिक संदेशों को समझने और व्यक्त करने में कठिनाई महसूस करते हैं । इनके अलावा उन्हें बातचीत में सही बारी लेने में भी कठिनाई होती है ।

इन समस्याओं के कारण, अपर्याप्त प्रोसेसिंग योग्यताएँ, कमज़ोर वाक् तथा भाषा के नमूने (मॉडल) और उत्तेजना-रहित वातावरण हो सकते है । कमज़ोर श्रवण,दृष्टि एवं मांसपेशियों की योग्यताएँ मंदबुद्धि बच्चों में वाक् एवं भाषा को और भी विलंब से कर देते है ।

स्व-परीक्षा -5

1. 'सही' या 'गलत' बताईए:

1. वाक् और भाषा सामान्य (सही) मानी जाती है जब वह वहाँ के अधिकतर लोगों के वाक्और भाषा के समान होती है। सही/गलत

2. वाक् एवं भाषा असामान्य मानी जाती है जब वाक् समझने में कठिनाई होती है । सही/गलत

3. एक अच्छा प्रेरित वातावरण बच्चें के बेहतर वाक् एवं भाषा के विकास में सहायक होता है । सही/गलत

4. सभी मंदबुद्धि बच्चों में श्रवण समस्याएँ होती हैं । सही/गलत

5. मंदबुद्धि बच्चों को वाक्पटुता की गति में कोई कठिनाई नहीं होती। सही/गलत

6. लगभग 40% मंदबुद्धि बच्चे बोल नहीं सकते । सही/गलत

7 मंदबुद्धि बच्चों में सामान्यतः वाक् एवं भाषा का विकास विलब से होता है । सही/गलत

8. मंदबुद्धि बच्चे लिखने व पढ़ने की योग्यताओं में अच्छे होते है । सही/गलत

9. जब हम यह कहते हैं कि, किसी व्यक्ति को भाषा-ग्रहण करने में कठिनाई होती है तो इसका अर्थ है कि, उसे वाक् ध्वनि उत्पन्न करने में कठिनाई होती है । सही/गलत

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो ।

10. मंदबुद्धि बच्चों में वाक् एवं भाषा का विकास.....

11. बहुत से मंद बुद्धि बच्चे श्रवण समस्याओं को नहीं बताते लेकिन वे..... होते हैं ।

12. अस्पष्ट बोली और भाषा में दोषपूर्ण.....का योगदान होता है ।

13. शब्दों को संयोजित करने की कम योग्यता एक ऐसी समस्या है जिसका वर्गीकरण भाषा के..... भाग की समस्याओं में किया जा सकता है ।

14. लगभग.....% मंदबुद्धि बच्चों में श्रवण विकार होते है ।

15. मंदबुद्धि बच्चों में आम तौर से होने वाले वाणी की समस्याओं में से एक है.....

16. मंदबुद्धि बच्चे बोलते समय कभी-कभी हिचकिचाते हैं, ठहरते हैं या शब्दों को दोहराते हैं जिससे बोलने के.....में कठिनाई होती है ।

3. बहुचयन प्रश्न

17. निम्न में से कौन सा कथन सही है:
    (अ) केवल कुछ ही मंदबुद्धि बच्चों में संप्रेषण की कठिनाई होती है ।
    (ब) 80-85% मंदबुद्धि बच्चों में संप्रेषण की कठिनाई होती है ।
    (ग) मंदबुद्धि बच्चों में संप्रेषण की कठिनाई नहीं होती ।
    (द) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं ।

18. मंदबुद्धि बच्चों में वाक् एवं भाषा संबंधी कठिनाई के कारण हैं:
    (अ) निष्कर्ष निकालने की कम योग्यता
    (ब) बच्चे का भाषा आगत कम
    (स) संप्रेषण करने के लिए अवसरों की कमी
    (द) उपर्युक्त सभी

19. शब्दानुकरण (इकोलेलिया) है-
    (अ) बच्चे द्वारा सुने गए वाक्यों और वाक्यांशों को दोहराना
    (ब) एक प्रकार की सांकेतिक संप्रेषण
    (स) श्रवण विकार
    (द) अप्रत्यक्ष प्रश्नों को समझने में कठिनाई

20. मंदबुद्धि बच्चों में कठिनाईयाँ होती हैं:
    (अ) प्रश्न पूछने में
    (ब) संकल्पनाओं के निष्कर्ष को समझना
    (स) उपर्युक्त में से कोई नहीं
    (द) उपर्युक्त दोनों

• • •

स्व-परीक्षा - 5 की कुंजी

1.

1. सही
2. सही
3. सही
4. गलत
5. गलत
6. सही
7. सही
8. गलत
9. गलत

2.

10. विलंब से होता है
11. श्रोता
12. उच्चारण
13. वाक्य - विन्यास
14. 40%
15. कमज़ोर आवाज़
16. गति/पटुता

3.

17. ब
18. द
19. अ
20. द

अध्याय–6

मानसिक मंद बच्चों में वाक् व भाषा कठिनाईयों का निर्धारण

मानसिक मंद बच्चो को संप्रेषण कठिनाईयों में अंतराक्षेपण के लिये निर्धारण एक महत्वपूर्ण पहलू है । प्रतिदिन का निर्धारण विभिन्न रीतियों से किया जाता है । रेंज और व्यक्ति की आवश्यकताओं के आधार पर उसका ढंग तथा श्रेणी बदलती रहती है । अंतराक्षेपण कार्यक्रम की आवश्यकता के लिये, निर्धारण का आंकडा विस्तृत होना चाहिये तथा विवरण में विशिष्ट होना चाहिये । निर्धारण के स्वरूप के लिये कोई निश्चित नियम नही है । इस अध्याय में ऐसी एक पद्धति का विवरण दिया गया है जो जटिल पर विवरणात्मक है । यह व्यावहारिक रूप से क्लिनिक में और स्कूल में उपयोगी है, यदि पर्याप्त समय दिया जाये ।

*आवश्यकतायें **निर्धारण** के क्रम व ढंग को निश्चित करते है ।*

उद्देश्य

यह अध्याय निम्नलिखित विषयों को जानने के लिये सहायक सिद्ध होगा ।

1. वाक् और भाषा निर्धारण की परिभाषा व उद्देश्य
2. निर्धारण के क्षेत्र व उसकी सीमायें निश्चित करना ।
3. वाक् व भाषा का निर्धारण करना और उसको उचित फॉरमॅट में रेकॉर्ड करना ।
4. भाषा अंतराक्षेपण कार्यक्रम तैयार करने में निर्धारण आंकडों का प्रयोग करना ।

निर्धारण का स्वरूप

निर्धारण एक जटिल कार्यक्रम है, जो एक व्यावसायिक को करना पडता है । इसकी जटिलता के निम्नलिखित कारण हैं ।

1. एक मानसिक मंद व्यक्ति में अनेक कारक (फैक्टर्स) हैं, जो भाषा के धीमें विकास या विचलन (डिवियेशन) के कारण हैं।

2. निर्धारण के लिये आनेवाले व्यक्तियों के वर्ग एक जैसे नही हैं । उनकी संप्रेषण कठिनाईयाँ भी विस्तृत हैं, जैसे सांकेतिक स्तर से लेकर वाक्यों के स्तर तक ।

3. भाषा का स्वरूप ही जटिल है । भाषा, रूप (फॉम), विषयवस्तु, (मिनिंग/कॉन्टेन्ट) और उसके उपयोग (यूज) इन तीनों का अंतः संबंध है ।

4. अन्य विषय जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाषा से संबंधित हैं जैसे खेल व्यवहार, पोसेसिंग स्कील्स, सामाजिक व्यवहार आदि का भी निर्धारण करना आवश्यक है ।

5. भाषाओं की संख्या व भिन्नता तथा भारतीय भाषाओं के विकास संबंधी आंकडों का अभाव, निर्धारण के कार्य को और भी जटिल बनाते हैं ।

उनकी जटिलता के बावजूद निर्धारण अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम है क्योंकि, उनसे कई सूचनायें मिलती हैं जैसे-अ) बच्चे की संप्रेषण कठिनाईयों के लिये सहायता आवश्यक है या नही,यदि है तो किससीमा तक?

(आ) संप्रेषण के विभिन्न क्षेत्रों में संबंधित शक्ति (स्ट्रेन्थ) या कमजोरी की सूचना । इस विषय को जानने पर अंतराक्षेपण की योजना बनाने में सहायता मिलती है ।

(इ) अंतराक्षेपण के परिणाम का पुर्वानुमान लगाने में ।

भाषा व संप्रेषण का निर्धारण एक लगातार प्रक्रिया है और अंतराक्षेपण के कार्यक्रम में भी विस्तार पाता है । भाषा और संप्रेषण के निर्धारण में अति महत्वपूर्ण कारक है निर्धारक । उस व्यक्ति को

भाषा व संप्रेषण के विभिन्न विषयों की पर्याप्त सूचना होनी चाहिये। उपर्युक्त चर्चा को ध्यान में रखते हुये वाक् व भाषा निर्धारण की परिभाषा निम्नलिखित रूप में की जाती है

निर्धारण पद्धति की पटुता उस व्यक्ति पर निर्धारित है जो निर्धारण कर रहा हो ।

एक बच्चे की संप्रेषण कुशलताओं, योग्यताओं और सीमाओं का मापन व मूल्यांकन के लिये यह एक सुव्यवस्थित कार्यक्रम है । इसमें बच्चे की संप्रेषण संबंधी योग्यताओं के बारे में सूचना एकत्र करना, रेकॉर्ड करना और व्याख्या करना आदि होता है । दूसरे शब्दों में-निर्धारण में बच्चे की वाक् व भाषा का विवरण देना, होता है जो समस्या को पहचानने व अंतराक्षेपण की योजना बनाने में सहायक होता है।

इस विषय पर ध्यान देना अति आवश्यक है कि, हम एक व्यक्ति के साथ काम कर रहे हैं जिसको संप्रेषण की समस्यायें हैं और केवल संप्रेषण समस्या से नहीं ।

हम व्यक्तियों के साथ काम कर रहे है जिनको समस्यायें है ।

सूचना प्राप्त करने के स्त्रोत

बच्चे व बच्चों के संप्रेषण समस्याओं के बारे में सूचना प्रदान करने वाले स्त्रोत हैं – लोग, क्रियाकलाप तथा परिस्थितियाँ । ये स्त्रोत कुएँ की तरह हैं, जहाँ से कोई भी निर्धारण के लिये बच्चे के बारे में सूचना निकाल सकता है । सामान्य स्त्रोत हैं –

1. अभिभावकों से साक्षात्कार । (इंटरव्यू)
2. खेल व अन्य संदर्भों में अभिभावक–बच्चा, बच्चे व बच्चे की अंतः क्रिया (इंटरैक्शन) का अवलोकन ।
3. बच्चे से सीधे अंतः क्रिया ।
4. औपचारिक व अनौपचारिक परीक्षणों का प्रबंध करना ।
5. अन्य व्यावसायिकों द्वारा सूचना ।

सूचना देने के लिये अभिभावक सही व्यक्ति होते हैं । जिनके पास बच्चे के बारे में जानकारी है. । यदि व्यावसायिक कुशल इंटरव्यू

निभाते है तब अधिक भाग मे गुणवत्ता (क्वालिटी) निर्धारण सूचना मिलती है । परिवार के अन्य व्यक्तियों को भी सम्मिलित करने का प्रयास करना चाहिये । बच्चे और अन्य प्रमुख व्यक्तियों से अंतः क्रिया का अवलोकन करने के लिये खेल एक अच्छा माध्यम है। यह सोचना गलत नहीं होगा कि, बच्चे और बच्चे के बीच में अंतः क्रिया का अवलोकन अत्यधिक मात्रा में सूचना प्रदान करती है । यह अवलोकन स्वाभाविक (नैचुरल) परिस्थितियों में करना उचित होगा । हमारे संदर्भ में औपचारिक परीक्षण उपलब्ध नहीं है, इसलिये शिक्षक अनौपचारिक अवलोकन से निर्धारण करते है, जिससे शिक्षकों का कार्य बढ़ जाता है । उचित व पर्याप्त सूचना पाने के लिये निर्धारण पद्धतियों को मिलाकर प्रयोग करना पड़ता हो, जब विवरणात्मक या विशिष्ट सूचना प्राप्त करना है । तब व्यावसायिक जैसे वाक् चिकित्सक (स्वीच पैथोलॉजिस्ट) से परामर्श करना चाहिये।

कुशलतापूर्वक अभिभावकों का इंटरव्यू और खेलते समय बच्चे का अवलोकन निर्धारण की अधिकांश सूचना देती है।

भाषा व संप्रेषण के निर्धारण के लिये कोई सर्वोद्देशीय प्रक्रिया नहीं है । यह इसलिये है कि, मानसिक मंदबच्चों में भिन्नतायें बहुत होती है, जैसे उम्र, वातावरण, कारण, मानसिक योग्यतायें, सीखने की गति, समस्याओं का स्वरूप आदि । इस भिन्नता के कारण कोई विशिष्ट पद्धति (पैटर्न) नहीं देखी जा सकती, और दो बच्चों में एक ही तरह की समस्या नहीं देखी जाती ।

इन कारणों के लिये निर्धारण हमेशा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है । व्यक्तिगत निर्धारण में कुछ सामान्य विषयों का विवरण अनुवर्ती विभागों में दिया गया है ।

निर्धारण का समयानुपात (टाईमिंग)

निर्धारण सामान्यतः अंतराक्षेपण के प्रारंभ से पूर्व ही किया जाता है। अंतराक्षेपण कार्यक्रम सामान्यतः उचित लक्ष्य और क्रियाकलापों के चुनने से होता है, जिससे भाषा सीखने में मदत मिलती है । पर निर्धारण एक लगातार प्रक्रिया है, जो अंतराक्षेपण की अवधि में भी चालु रहती है । अंतराक्षेपण के अंत में पुनःमुल्यांकन (रीव्यालुयेशन) किया जाता है । ऐसी स्थिति में प्रगति का मूल्यांकन, नये लक्ष्यों

निर्धारण और अतराक्षेपण दोनो साथ साथ चलते है ।

की स्थापना, व पद्धतियों मे आवश्यक परिवर्तन आदि किये जाते हैं । ध्यान देने का एक और प्रमुख विषय है – निर्धारण शीघ्रातिशीघ्र करना चाहिये, जिससे शीघ्र अंतराक्षेपण (अर्ली इंटरवेंशन) और अधिक प्रगति हो सकती है ।

निर्धारण का उद्देश्य–

निर्धारण के मूल कारण है –

1. ऐसे बच्चों को पहचानना, जिनमें भाषा समस्यायें हैं ।
2. एक कार्य की आधार–रेखा (बेस लाईन) स्थापित करना ।
3. प्रगति का मूल्यांकन करना ।

1. भाषा व संप्रेषण की समस्यावाले बच्चों को पहचानना

यहाँ पहचानना ही मुख्य उद्देश्य नही है, इन समस्याओं को अंतराक्षेपण की समस्या है या नही यह भी जानना है । भाषा व संप्रेषण समस्याओं को पहचानने के लिये हमें बच्चों की स्क्रीनिंग करनी चाहिये । स्क्रीनिंग में कम विषयों पर निर्धारण करना चाहिये । ये विषय भाषा व संप्रेषण के विकास से संबंधित हैं । इसकी आसानी से प्रबंध तथा गणना की जा सकती है । लैंगवेज असेसमेंटटूल (एल.ए.टी) जो एन.आई. एम.एच में निर्मित किया गया है । इसका स्क्रिनिंग के लिये उपयोग किया जा सकता है ।

स्क्रीनिंग का मुख्य उद्देश्य है भाषायी और संप्रेषण समस्याओं को पहचानना ।

लैंगवेज असेसमेंट टूल (एल.ए.टी)'

एल.ए.टी. को एन.आई.एम.एच. सिंकद्राबाद में एक राष्ट्रीय स्तरीय सभा में निर्मित किया गया । जिसमें विभिन्न विभागों जैसे–वाक्विज्ञान (स्पीच पैथॉलॉजी) भाषा विज्ञान (लिंग्विस्टिक्स्) चिकित्सिय मनोविज्ञान, तथा विशेष शिक्षण के विशेषज्ञों ने भाग लिया । विशेषज्ञो की समिति ने भाषा विकास के क्रम से विभिन्न विषयों को संग्राहक (रिसेप्टिव) और अभिव्यक्त्यात्मक (एक्सप्रेसिव) उपमापनों पर चुना । विषय (आइटम्स) को विभिन्न आयु स्तर पर विभक्त किया गया है, जैसे

एक महिने के अंतराल से 12 महिने तक; 2 महिने के अंतराल से 26 महिने तक; 3 महिने के अंतराल से 36 महिने तक; और 3 साल से उपर । कुल 48 विषय संग्राहक उपमानों पर और 47 विषय अभिव्यक्त्यात्मक उपमानों को क्षेत्र परिक्षण के बाद अंतिम रूप से चुना गया । क्षेत्र परीक्षण 30 सामान्य तथा 30 मानसिक मंद बच्चों के समूह के साथ किया गया ।

एल.ए.टी. से हमें संग्रहण और अंतराक्षेपण दोनों स्तरों में भाषा-विकास की सूचना मिलती है ।

एल.ए.टी. में सूचना प्राप्त करने के लिये अभिभावकों से इंटरव्यू तथा प्रत्यक्ष अवलोकन उस समय करना चाहिये जब बच्चा वस्तुओं व खिलोनों से खेलता है । कुछ विशेष विषयों की सूचना प्राप्त करने के लिये चित्रों का प्रबंध किया गया है । परंतु चित्रोंका उपयोग मानसिक मंद विशेषतः छोटे उम्र के बच्चों के साथ सावधानीपूर्वक करना चाहिये। उपस्थिति या अनुपस्थिति अनिश्चित है । इन तीनों वर्गों का प्रयोग करते हुये एल.आई.टी. के विषयों का निर्धारण करना चाहिये । आवश्यकता पडने पर विवरण दे सकते हैं । अंतराक्षेपण में स्कोरींग महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाती है । विस्तृत विवरण अंतराक्षेपण में सहायक होता है । एल.ए.टी. से संग्राहक और अभिव्यक्त्यात्मक उपमापनों के किस लगभग स्तरपर बच्चे कार्य कर रहे हैं, ये पता चलता है । इस सूचना से हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि, यदि बच्चा विकास में देरी दिखा रहा है और लगभग किस उम्र में क्रिया (फंक्शनिंग) कर रहा है । यह भविष्य में विवरणात्मक परीक्षण में मार्गदर्शन देती है । एल.ए.टी. को परिशिष्ट 6.1 में दिया गया है।

2. क्रिया के आधार-रेखा (बेस लाइन फंक्शनिंग) की स्थापना- इसके अंतर्गत बच्चे के वाक् व भाषा समस्याओं का स्वरूप और श्रेणी का विवरण निश्चित रूप से दिया जाता है । इस प्रक्रिया का प्रमुख लाभ है उचित और स्पष्ट अंतराक्षेपण लक्ष्यों को चुनना, इस प्रक्रिया के अंतर्गत निम्नलिखित विषयों पर सूचना प्राप्त करना है।

1. वो भाषा जिस को बच्चा अधिकतर समय सुनता है (फ्रिक्वेंटली एक्सपोजड् लैंगवेज), उपस्थित मॉडल, और बच्चे के संप्रेषण समस्याओं की संक्षिप्त केस हिस्ट्री ।

2. वाक्-यंत्र (स्पीच मेक्यानिज) की रचना और क्रिया–कलाप।

3. अभिभावकों का बच्चे से वार्तालाप का स्वरूप (आगत/इन्पुट)।

4. बच्चे की क्षमता इन क्षेत्रों में; विभिन्न, भाषा की रचना (रूप ग्राम, वाक्य विन्यास) को समझना और व्यक्त करना; शब्द तथा उनके प्रयोग के आशय; प्रारंभिक वाक्य; वाक्य प्रकार और अन्य शब्द ।

5. भाषा का उपयोग करने में बच्चे की योग्यता (अर्थ क्रिया विज्ञनिक पहलू); वाक् स्पष्टता (उच्चारण); संकेत व इशारे (सांकेतिक पहलू–नॉन वर्बल), इन विषयों की क्षमता । इसका विस्तृत विवरण परिशिष्ट 6.2 पर दिया गया है और लिखित विषयोंका (आइटम्) विवरण आगे दिया गया है ।

बेस लाईन कार्य का आंकडा निर्धारित करना अंतराक्षेपण का आधार है ।

3. प्रगति का मूल्यांकन (इव्यालुयेटिंग द प्रोग्रेस)

अंतराक्षेपण के कार्यक्रम का प्रभाव एवं निपूणता के निर्धारण के लिये पूर्नमूल्यांकन किया जाता है । पुर्नमूल्यांकन से बच्चे में हुये सुधार और प्रगति को प्रभावित करने वाले कारकों की सूचना भी मिलती है । एल.ए.टी. द्वारा बच्चे में हुये परिवर्तन को दिखा सकते हैं ।

एल.एटी. का पुनः निर्धारण के लिये प्रयोग कर सकते है ।

निर्धारण योजना (असेसमेंट प्रोग्राम)

प्रारंभ में नाम, आयु, लिंग, फाइल नंबर, घर, पाठशाला और अन्य संदर्भों में प्रयुक्त भाषा और उल्लेखनीय हिस्ट्री इन सब चीजो के संक्षिप्त आंकडे एकत्र करना । यह सुचनादाताओं द्वारा इंटरव्यू से प्राप्त कर सकते हैं । परिशिष्ट 6.2 में निर्धारण का पॉरमॅट दिया गया है । जिसको निम्नलिखित विषयों की चर्चा करते समय ध्यान देना चाहिये ।

जनांकिक (डेमोग्रॉफिक) आंकडे के अतिरिक्त निर्धारण योजना को पाँच हिस्सों में बाँटा गया है । जैसे –

1. वाक् यंत्र की रचना और क्रियाकलाप
2. श्रवण जांच सूची
3. बच्चों में भाषा का आगत (इन्पूट)
4. बच्चे की विषयवस्तु या भाषा योग्यता
5. बच्चे की प्रयुक्त (युज) भाषा

1. **वाक् यंत्र की रचना और क्रियाकलापः** वाक् यंत्र के निर्धारण के लिये परीक्षक की आंखे बच्चे के खुले मुख को देखने योग्य होनी चाहिये। परीक्षण के लिये कठिन, बच्चों (डिफिकल्ट टू टेस्ट चिल्ड्रन) को उत्तेजित करने के लिये आइने का उपयोग कर सकते है । मुख्यतः ओंठ, जीभ, कडा तालू, नरम तालू की रचना तथा क्रिया देखनी चाहिये । ओंठ– ओठों को अपने संबंधित आकार सममिति (सिमिटरी) और घाव का निशान (स्कार्स) आदि का निरीक्षण करना चाहिये । यह जांच करें कि, बच्चा मुस्कुरा सकता है, जैसे होठों को आगे (प्रोट्रूजन) निकल सकता है । और जैसे होठों को पीछे (रिट्रॅक्शन) ले सकता है । बच्चे के ओंठों को छट बंद करने का भी निरीक्षण करना । प्रोट्रूजन की जाँच करने के लिये "फूंकना" या "ऊऊऊ" शब्द कहने के लिये बोलना । रिट्रॅक्शन की जांच करने के लिये "इइइ" शब्द कहना या बच्चे को दांत दिखाने कहना चाहिये।

जीभ– जीभ के आकार को मुँह के आकार से तुलना कर कर निर्धारण किया जाये । जीभ बहुत बडी या बहुत छोटी हों तो उसे असामान्य कहा जाता है । रचना में और चलन में सममिति देखनी चाहिये ; जांच करें कि, जीभ को बच्चा आगे और पीछे कर सकता है या नही । वैसे ही मुँह के आस–पास (साईड मुवमेंट) जीभ हिला सकता है या नही तथा कठिन तालू को जीभ से छू सकता है या नहीं । अगर जीभ की उठाने में कठिनाई पाई गई तो "टंग टाई" (लटकती हुई जीभ) की जांच कीजिये । जीभ के चलन की जांच करने के लिये चीनी या जॅम जैसे खाद्य पदार्थों का प्रयोग कीजिये।

कुंद किनारे वाली चम्मच और आईना भी ऐसे उपकरण भी सहायक है ।

कडातालू– आकार को देखिये जैसे सपाट (फ्लॅट) या अर्ध गोलाकार (हाइ आर्च) है। उसमें असामान्यतायें है जैसे दरार पड़ी हुई या कटी हुई तालू इसकी भी जांच कीजिये ।

नरम तालू– नरम तालू या विलम के आकार और कटी हुई तालू की जांच कीजिये । फॅरिंजल दीवार की तरह नरम तालू पीछे चल सकती है इसकी भी जांच करें । यदि रचना या क्रियाओं में किसी भी प्रकार की कठिनाई दिखाई गई तब उसे असामान्य कहकर उसका विवरण दीजिये । यदि किसी प्रकार की विशिष्ट दांतों की रचना दिखाई दें तो उसे भी नोट करें ।

श्रवण जौंच सूची– बच्चे जब शब्दों को सुनते हैं उनकी अनुक्रिया दिखाते हैं, यह अनुक्रिया उनके श्रवण व्यवस्था के कार्य का संकेत है । यह अप्रत्यक्ष या अनौपचारिक परिक्षण है । (प्रत्यक्ष श्रवण परीक्षण को क्वालिफाईड ऑडियॉलॉजिस्ट उपकरणों की सहायता से करते हैं। यह ध्वनि नियंत्रित कमरों में करते हैं)। यहाँ एक जांच पडताल सूची दी गयी है जिससे बच्चों में श्रवण दोष का अनुमान लगाया जा सकता है । इसको परिशिष्ट 6.2 के, भाग 2 में दिया गया है । अभिभावकों से इंटरव्यू द्वारा सूचना प्राप्त कर सकते हैं, बच्चों की अनुक्रियाओं को "हाँ" या "नहीं" नोट कर सकते हैं । यदि अधिकांश प्रश्नों के उत्तर "नहीं" हों तो बच्चे को व्यावसायिक सहायता की आवश्यकता होगी । विस्तृत मूल्यांकन के लिये ऑडियॉलॉजिस्ट के पास भेज सकते हैं । मानसिक मंद बच्चों में सामान्य श्रवण शक्ति होने पर भी सुनने में कठिनाईयाँ हो सकती हैं ।

3. बच्चे में भाषा-आगत (लैंगवेज इन्पूट):

परिचारक बच्चे की अंतः क्रिया (केयरटेकर चाइल्ड इंटरॅक्शन) के अवलोकन करने का मुख्य उद्देश्य है, बच्चे को कितना प्रभावशाली मॉडल मिल रहा है । इसका उद्देश्य यह भी है कि, संप्रेषण प्रारंभ करने और प्रत्युत्तर देने में बच्चे के लिये कितने संदर्भ परिचारक द्वारा बनाये जाते हैं । इन उद्देश्यों का मूल्यांकन करने के मुख्यतः दो स्त्रोत हैं, परिचारक या अभिभावकों से इंटरव्यू और परिचारक बच्चे की अंतः क्रिया का खेल जैसे संदर्भों में अवलोकन । भाषा आगत के निर्धारण में व्यक्तिपरक (सब्जेक्टिविटी) निर्णय अधिकांश है ।

निम्नलिखित विषयों का अवलोकन करना चाहिये ।

1. अभिभावकों (माँ–बाप सहोदर, दादा–दादी नाना–नानी, शिक्षक आदि) द्वारा किये गये बातचीत का परिमाण । यह सूचना प्राप्त करने के विभिन्न स्त्रोत हैं, अभिभावकों से इंटरव्यू और विभिन्न कारकों के बारे में सूचना प्राप्त करना । ये कारक हैं घर में उपस्थित व्यक्तियों की संख्या, हम उम्र मॉडल (पीयर मॉडल) और सामाजिक आर्थिक स्तर आदि । बच्चों के साथ बात करते हुये बिताया गया समय और बात करने की आवृत्ति (फ्रिक्वेंन्सी) जिसको हम अक्सर या कभी–कभी जैसे नोट कर सकते हैं ।

भाषा–आगत के निर्धारण में कितनी बातचीत हुई और उसके गुण–दोनों सम्मिलित है।

2. परिमाण के अतिरिक्त भाषा आगत के गुण (क्वालिटी) भी महत्वपूर्ण हैं । गुण का अर्थ है परिचारक द्वारा किये गये संप्रेषण का प्रकार और विभिन्नता (टाइप एंड वरायटी)। प्रकार का अर्थ है किस प्रकार के वाक्यों को (जैसे–प्रश्न आदेश, वर्णन आदि) प्रयोग किया गया और उसकी आवृत्ति (फ्रिक्वेंसी) कितनी है । क्या वयस्क अति सुधार (ओवर करेक्शन) का भी प्रयत्न करते हैं (सही उच्चारण की मांग करना) इस पर भी ध्यान देना चाहिये । यह भी ध्यान दें कि, क्या परिचारकों ने बच्चों के साथ बात करने का समय केवल कहानी सुनाते समय ही निश्चित किया है ?

4. **विषयवस्तु या भाषा योग्यता–** यह भाग भाषा के अर्थ क्रिया व वाक्य विन्यास के पहलूओं का मूल्यांकन करता है । इसमें बच्चे की संग्राहक योग्यता (कॉम्प्रिहेंशन) और अभिव्यक्ति योग्यता (एक्सप्रेशन) दोनों देखी जाती हैं । संग्राहक शब्द का अर्थ है संदेश प्राप्त करने के बाद बच्चे द्वारा प्रतिक्रिया दिखाना जैसे, देखना, इंगित करना, स्पर्शकरना, और कोई क्रिया करना आदि । अभिव्यक्ति करने का अर्थ है अपनी आवश्यकताओं और विचारों की सूचना देने की पद्धति, ये विभिन्न पद्धतियाँ है – देखना, इंगित करना (पॉईंटिंग), दिखाना, संकेत करना, और शब्द या वाक्य कहना आदि । संग्रहण और अभिव्यक्ति दोनों का निर्धारण एक मानसिक मंद बच्चे के लिए मौखिक या सांकेतिक दोनों रूपों से करना चाहिये । यह विभिन्न पद्धतियों द्वारा किया जा सकता है । जैसे अभिभावकों से इंटरव्यू, बच्चे को

विषयवस्तु निर्धारण में दो सूचनायें सम्मिलित है ए हमारी भाषा को कितना संग्रहण कर सकता है और कितना अभिव्यक्त कर सकता है ।

एक स्वाभाविक परिस्थिति में देखना, या परीक्षण के समय में ही स्वाभाविक परिस्थिति निर्माण करना । स्वाभाविक परिस्थिति में बच्चे का सहयोग मिलता है और उसकी प्रतिक्रिया भी उचित होती है । भाषा के विषयवस्तु का (सिमॅनटिक्स या अर्थ विज्ञान) का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है । शब्द- रूपग्रामिक प्रकार (मॉर्फालॉजिकल टाइप्स्), अर्थ आशय (मिनिंग इंटेंशनशन्स्) प्रारंभिक वाक्य (अर्ली सेन्टेन्सेस) वाक्यों के प्रकार (सेन्टेंस टाइप्स-सिन्टॅक्स), और शब्दांत (वर्ड एन्डीग्स्-ग्रॅमॅटिकल मॉर्फिम्स)। निम्नलिखित शीर्षकों के विस्तृत विवरण के लिये परिशिष्ट 6.2 भाग 4 देखें ।

1. **शब्द-** इसमें नामिक/संज्ञा, कार्य शब्द (ॲक्शन वर्डस्), संज्ञा परिवर्तक (नाउन मॉडिफायर) क्रिया परिवर्तक, तथा समुच्चय बोधक सम्मिलित हैं ।

अ. **नामिक/संज्ञायें-** ये संज्ञायें वस्तुओं या व्यक्तियों के नाम को बताते हैं । निर्धारण के लिये इन वर्गों को चुना गया है-परिवार के सदस्यों के नाम, जानवर, खाद्य पदार्थ, फल, कपडे, फर्नीचर, शरीर के भाग, वाहन आदि । परिशिष्ट 6.2 में सामान्यतः प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है । इस परिशिष्ट में दी गई सूची को बदलने की स्वतंत्रता परीक्षक को है । बदलाव बच्चे की आवश्यकताओं पर निर्भर है जैसे - अनुपयुक्त शब्दों को हटाना व उपयुक्त शब्दों को जोडना । बच्चे को एक वस्तु को दिखाना, स्थान बताना, या वस्तु के बारे में बात करना, इसके द्वारा हम बच्चे का नामिक संग्रहण निर्धारण कर सकते हैं । परिक्षण सामग्री, असली वस्तुयें, चित्र कार्ड या खिलौने हो सकती हैं । यह ध्यान रखना अति आवश्यक है कि, हमारे निर्धारण का लक्ष्य है, क्या बच्चे नाम को वस्तुओं या व्यक्तियों से जोड सकते हैं ? इसका पता लगाना । इसलिये निर्धारण के समय वाक् के अतिरिक्त अन्य आधार जैसे हाथ के इशारे, चेहरे का हावभाव आदि को कम से कम दिखाया जायें । वरना यह निश्चित करना कठिन होगा कि, बच्चा मौखिक आधार या सांकेतिक आधार पर संग्रहण कर रहा है ।

अभिव्यक्ति के निष्कर्ष के लिये सामान्यतः उपयोगी पद्धति हैं - वस्तुओं को दिखाकर पूछना, यह क्या है?, सभी बच्चे इस पद्धति पर उचित

शब्द भाषा के अति सामान्य संकेत हैं, उनको समझना और व्यक्त करना बाषा वि कास की नीव है ।

निर्धारण प्रक्रिया को दैनिक संप्रेषण परिस्थितियों में और खेल के समय करना उपयुक्त है ।

प्रतिक्रिया नही बतातें ऐसे बच्चों के लिये एक खेल के संदर्भ में बच्चे को मिलाकर अप्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं का नाम बच्चे के मुख से निकलवाना । यदि बच्चा वस्तुओं का नाम नहीं बताता लेकिन इशारे या संकेत द्वारा व्यक्त कर सकता है, तो ये भी नोट करना चाहिये। संग्रहण तथा अभिव्यक्ति दोनों भागों में वस्तुओं की संख्या नोट करनी चाहिये, जिन वस्तुओं को बताने में बच्चा सफल रहा।

आ. **क्रिया-शब्द (ॲक्शन वर्डस्)–** अवलोकनीय क्रियाकलापों के नाम को क्रिया शब्द कहते हैं । इन क्रिया–शब्दों के संग्रहण मूल्यांकन के लिये चित्रों को इंगित करना या दूसरों द्वारा की गई क्रिया को बताना, जैसी पद्धतियों का प्रयोग किया जा सकता है । इसके प्रत्युत्तर में संग्रहण है या नही नोट कर सकते हैं । कई बार प्रत्युत्तर में संग्रहण है या नही स्पष्टतः कहना कठिन है । ऐसी स्थिति में प्रत्युत्तर निश्चित नहीं है जैसे नोट किया जा सकता है । अभिव्यक्ति के लिये भी इसी प्रकार के प्रत्युत्तर को नोट किया जा सकता है। इस बात को पुनः जोर दिया जा सकता है कि, सांकेतिक अभिव्यक्तिकरण जैसे इशारे को भी नोट किया जाये ।

इस सेक्शन में दी गई क्रम संख्या परिशिष्ट 6.2 में दी गई क्रम संख्या से मिलती है ।

इ. **सर्वनाम–** साधारणतः सर्वनाम "व्यक्तिवाचक" संज्ञा के बदले प्रयुक्त करते हैं । एक विशेष भाषा में समुचित शब्दों के लिये संग्रहण और अभिव्यक्ति की जांच करनी चाहिये । परिशिष्ट 6.2 में साधारण 12 सर्वनामों की सूची दी गई है । सभी लिखित रूप से उपयुक्त सर्वनाम हैं वो बोलचाल में नहीं भी हो सकता।

इस समय निर्धारण में भाषायी रचना बोली गई भाषा से ही संबंधित है, लिखित से नही।

ई. **संज्ञा परिवर्तक–** साधारणतः इन्हें "विशेषण" कहते हैं जो संज्ञाओं के गुण बताते हैं । जैसे–गरम, ठंडा, छोटा–बड़ा आदि । उचित चित्रों या वस्तुओं को बच्चे द्वारा इंगित करने से हम कुछ संज्ञा परिवर्तक जैसे–मोटा, पतला, ऊँचा–ठिगना, की जांच कर सकते हैं । अगर बच्चे ने एक या दो परिस्थितियों में चित्रो या वस्तुओं को इंगित किया तब इसका यह अर्थ नही लिया जा सकता कि, बच्चा हर परिस्थिति में यह करें । संज्ञा परिवर्तक अभिव्यक्ति निर्धारण में इशारे या शारीरिक हावभाव भी नोट किये जाने चाहिये ।

उ. **क्रिया परिवर्तक–** इसमें क्रिया-विशेषण तथा विभक्ति (कारक) होते हैं, (भारतीय भाषा में विभक्तियाँ शब्द के बाद आती हैं जबकि, अंग्रेजी भाषा में विभक्तियाँ शब्दों से पहले (प्री–प्रोजीशन) आती हैं), जो क्रियाओं में परिवर्तन लाते हैं । इनमें साधारणतः प्रयुक्त शब्द हैं – में, पर, धीरे, तेज आदि । यह माना जाता है कि, क्रिया-परिवर्तकों का निर्धारण चित्रों में नहीं, बल्कि, वास्तविक परिस्थिति में किया जाता है । संग्रहण और अभिव्यक्ति दोनों का प्रत्युत्तर "है", "नहीं" या "निश्चित नहीं" जैस नोट किया जाता है ।

ऊ. **समुच्चय बोधक शब्द** – इस शब्द के उदाहरण है "और" "किंतु" "परंतु" आदि । इनसे वाक्यों का संयोजन होता है, जिससे समझने में आसानी होती है । इन शब्दों के संग्रहण निर्धारण के लिये विभिन्न परिस्थितियों में हर एक-एक शब्द की तुलना करनी चाहिये। अभिव्यक्ति निर्धारण के लिये सहज रूप से उत्पन्न परस्पर क्रियाकलापों के अवलोकन द्वारा करना चाहिये । इन निर्धारणों में टेप रेकॉर्ड बहुत उपयुक्त है । संग्रहण और अभिव्यक्ति दोनों का प्रत्युत्तर, "है", "नहीं" या "निश्चित नहीं हैं" जैसे नोट किया जाता है ।

निर्धारण के समय प्रत्युत्तर उपस्थित या अनुपस्थित निश्चित करने के लिये बच्चे के वाक् का टेप रेकॉर्ड करना उचित होगा ।

2. **अर्थ संबंधी उद्देश्य (सिमेंटिक इंटेन्शनस्)**: ये बच्चे के प्रारंभिक स्तर के भाषा-विकास में अभिव्यक्त आशय है । ये स्तर हैं पूर्व प्रारंभिक शब्द, या एक शब्द स्तर । बच्चा एक आशय के लिये अनेक शब्दों का प्रयोग कर सकता हैं या एक शब्द से अनेक उद्देश्यों को प्रकट कर सकता है । परिशिष्ट 6.2 आईटम–2 में सूचित अर्थ संबंधी विषयों का विवरण अध्याय-4 में दिया गया है । कम से कम एक संदर्भ में ये उद्देश्य विद्यमान "है", "नहीं" या" निश्चित नहीं" के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं ।

3. **प्रारंभिक वाक्य–** दो शब्दों का संयोजन प्रारंभिक वाक्य है। इस निर्धारण में ऐसे 8 संयोजन हैं । जिनकी सूची परिशिष्ट 6.2 में दी गई है । इन संयोजनों व उनके उदाहरणों की चर्चा अध्याय 4 में की गई है । निर्धारण के समय इन संयोजनों की स्थिति विद्यमान "है" "नहीं" या "निश्चित नहीं" के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं। यह नोट किया जाये कि, प्रारंभिक वाक्य में केवल अभिव्यक्ति का

निर्धारण किया जाता है । निर्धारण के समय प्रत्येक संयोजन के अनेक उदाहरण नोट किये जायें ।

4. **वाक्यों के प्रकार–** इस भाग में बच्चे के वाक्य (स्टेटमेंटस्) तथा उनके परिवर्तनों का निर्धारण किया जाता है । मुख्य परिवर्तन हैं नकारात्मक वाक्य या प्रश्नार्थक वाक्य । निर्धारण के समय विभिन्न प्रेरकों (स्टीम्युलाई) के लिये बच्चे के प्रत्युत्तर द्वारा संग्रहणें "हैं" या "नहीं" का निर्धारण करना चाहिये । मूल्यांकन के लिये कुछ निम्नलिखित उदाहरण हैं । जैसे–

घोषणा संबंधी (डिक्लेरेटिव) वाक्य । उदा– मुझे दूध चाहिये, यह गरम है ।

नकारात्मक – उदा– नही, मुझे नहीं चाहिये । वो नही, मैं नही कर सकता । आदि ।

कुछ केसों में निर्धारण प्रक्रिया को पूरा करने के लिये कई बार निर्धारित करना आवश्यक होगा ।

प्रश्नार्थक– उदा– क्या यह कलम है ? (हाँ/नही प्रकार)

तुम्हारे पिता कौन हैं ?

तुम कहाँ जा रहे हो ?

यह क्या है ?

तुम्हारी बस कौनसी है ?

तुम टी.वी. कब देखते हो ?

तुम स्कूल कैसे आते हो ?

तुमने नये कपडे क्यों पहने ?

लम्बे व पूर्ण वाक्य जैसे–"मुझे बाजार जाना था, पर बरसात हो रही थी", ऐसे वाक्य दिखाई दें, तो उन्हें भी नोट किया जाये । अभिव्यक्ति के निर्धारण में बच्चे को खेलकूद में सम्मिलित करके उनसे बातचीत करना जिसे टेप रेकॉर्ड द्वारा रेकॉर्ड करना चाहिये । ऐसे टेपरेकॉर्ड

किये गये वाक्यों को बार-बार सुन कर वाक्यों को पहचान सकते है । सभी विवरण पाने के लिये बार-बार मूल्यांकन करना आवश्यक हो सकता है ।

5. **शब्दांत या व्याकरणात्मक रूपिम-** इन्हें फैक्टर शब्द भी कहते है । इन्हें अर्थ परिवर्तकों की तरह प्रयुक्त किया जाता है, जिनसे शब्दों का विशिष्ट अर्थ बनता है । इनमें निम्नलिखित सम्मिलित है।

संख्या रूपिम- यह एक शब्द को एक वचन से बहु वचन में बदलने में सहायक होते है उदा- *S (Books), es (Mangoes), s (dogs)* अंग्रेजी में एक शब्द को बहुवचन में बदलने में शब्द के अंत में जोडे जाते हैं । कुछ अनियमित बहुवाचक शब्द भी है जैसे Man-men.विभिन्न भाषाओं में बहुवाचक रुपिम की सूची निर्धारण के पहले बनानी चाहिये । हिंदी में बहुवाचक रूपिम है "यों", "इयों", "ये" ।

व्यक्ति/पुरुष रूपिम- ये शब्द व्यक्ति के अनुसार वाक्य में क्रिया को परिवर्तित करते हैं । साधारणतः मूल्यांकित प्रारूप हैं प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष, तृतीय पुरुष। उदाहरण के लिये -

व्याकरणीक रूपिम के बिना शब्द और वाक्य व्याकरणीक और अर्थ पूर्ण नही होते ।

- आई सिंग वेल- (मैं अच्छी तरह से गाती हूँ) (प्रथम पुरुष)।
- यू सिंग वेल- (तुम अच्छी तरह से गाते हो) (द्वितीय पुरुष)
- ही सिंग्स् वेल- (वह अच्छी तरह से गाता है) (तृतीय पुरुष)

इन्हें बहुवचन के रूप में भी देख सकते हैं ।

लिंग रूपिम- वाक्यों में शब्दों का लिंग सूचित करने के लिये लिंग रूपिम की आवश्यकता है । सामान्यतः स्त्रीलिंग (शी) पुलिंग (ही) तथा नपुंसक (इट) लिंग हैं । यह ध्यान में रखें कि, अलग-अलग भाषा में विभिन्न संख्या का लिंग रूपिम प्रयुक्त है । निर्धारण करते समय एक विशिष्ट भाषा मे प्रयुक्त लिंग रूपिम की सूची बनानी चाहिये। जिससे बच्चों के भाषा प्रयोग में इन रूपिमों का प्रयोग "है" "नही" या "निश्चित नहीं" के रूप में वर्गीकृत कर सकते है । इसविषय पर महत्व देना चाहिये कि, हम बातचीत में प्रयुक्त भाषा का निर्धारण

कर रहे है लिखित भाषा का नहीं । अतः लिखित व्याकरण का सावधानीपूर्वक प्रयोग करना चाहिये ।

काल चिह्न– वाक्य में क्रिया का रूप काल पर बदलता है । सामान्यतः प्रयुक्त काल है वर्तमान काल, भूतकाल एवं भविष्य काल । उदाहरण के लिये– गो (गोईंग) (जाओ– जा रहा हूँ); – वेंट (गया); और – वील गो (जायेगा) काल चिह्न शब्द एक भाषा से दूसरी भाषा में अलग होते हैं, जिनको सावधानीपूर्वक नोट करना चाहिये ।

जिन भाषा रचनाओं का निर्धारण करना है, उसको ध्यान में लेना चाहिये और अन्य व्यक्तियों के साथ पारस्परिक वार्तालाप में उनकी स्थिति का अवलोकन करना चाहिये ।

सभी व्याकरणीक पिम पहले संग्रहण में व बाद में अभिव्यक्ति में करना चाहिये ।

5. **भाषा प्रयोग–** अभी तक बच्चे की भाषा का संग्रहण– तथा अभिव्यक्ति का निर्धारण किया गया । अब इस भाषा का प्रयोग कितनी कुशलतापूर्वक हो रहा है इसका निर्धारण करेंगें । इसमें मुख्यांश हैं अभिव्यक्ति के प्रकार (मोड ऑफ एक्सप्रेशन), वाक् ध्वनि उत्पादन (स्पीच साऊँड प्रोडक्शन) (स्वनिमविज्ञान–(फोनॉलॉजी) वाक्में स्पष्टता (इंटेलिजिब्लिटी); प्रयुक्त कुशलतायें (युसेजस्किलस्) और इशारे । इन सब की नीचे चर्चा की गई है ।

1. **अभिव्यक्ति के प्रकार –** एक मानसिक मंद बच्चा अपने ही बात की अभिव्यक्ति प्रमुख रूप से सांकेतिक या मौखिक रूपसे कर सकता है । या दोनों रूपों का प्रयोग भी कर सकता है । जब बच्चा संप्रेषण शब्द, दो शब्दों के संयोजन या वाक्यों से करता है तथा उसकी अभिव्यक्ति का प्रमुख रूप मौखिक है । उसी प्रकार जब संप्रेषण के लिये इशारे और चेहरे के हावभाव का प्रयोग होता है, तब संप्रेषण का ढंग सांकेतिक है । जब इन दोनों वर्गों का निर्धारण कठिन होगा तब अभिव्यक्ति के ढंग को "दोनों" (बोथ) बता सकते है ।

2. **वाक् ध्वनि उत्पादन–** एक भाषा की वाक्ध्वनि को दूसरों को समझने के लिये स्वीकृत रूप में (स्वनिम) उत्पन्न करनी चाहिये। एक उच्चारण सूची (आर्टीक्युलेटरी इन्वेंटरी) बनाने के लिये पहले उस भाषामें प्रयुक्त स्वनिमों की सूची बनानी चाहिये । तत्पश्चात् ऐसे

शब्दों को चुनना चाहिये जिसमें ये स्वनिम प्रारंभ, अंतिम और बीच में प्रयुक्त हों सभी भाषाओं में व्यंजन का प्रयोग शब्द के अंत में नही किया जाता है । परिशिष्ट 6.4 में एक उच्चारण सूची का नमूना दिया गया है ।

इस सूची में मिली प्रतिक्रियाओं का उल्लेख हमें परिशिष्ट 6.2 के भाषा प्रयोग में करना चाहिये । उच्चारण सूची में सामान्यतः प्रयुक्त स्वनिमों की सूची है और इन स्वनिमों के लिये अंग्रेजी, तेलुगु और हिंदी शब्द दिये गये हैं । बच्चे के वाक् ध्वनि उत्पादन के निर्धारण में पहले वाक् ध्वनियों का अलग–अलग (आइसोलेशन) से उत्पादन और बाद में शब्दों में उत्पादन देखते है । निर्धारण किये बच्चे को शब्दों का अनुकरण करने के लिये कहा जाये या स्वाभाविक परिस्थितियों में बातचीत का अवलोकन करके निर्धारण किया जाये। चित्र या खिलौनों का प्रयोग करते हुये बच्चों से शब्द निकाल सकते है । इसमें जब बच्चा शब्दों को बोलता है, उसे उसी ढंग में नोट किया जाये, जिस तरह उसने वो शब्द बोला हों । जब सभी शब्दों को नोट कर लिया जायें तब विभिन्न प्रकार के उच्चारण दोषों का अवलोकन करना चाहिये । सामान्यतः चार प्रकार के उच्चारण दोष पाये जा सकते हैं जैसे लक्ष्य ध्वनि को छोडना (ओमिशन) लक्ष्य ध्वनि का गलत ढंग से प्रयोग करना (डिस्टारशन), लक्ष्य ध्वनि के स्थान पर दूसरे ध्वनि का प्रयोग करना (सब्स्टिट्यूशन) या अतिरिक्त ध्वनि को जोडना विभिन्न उच्चारण दोषों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने के बाद उनमें सम्मिलित विभिन्न गलतियों के तरीके (पैटर्न) देखने चाहिये । इसके पश्चात् उचित ध्वनियों को हस्तक्षेप के लिये चुन सकते हैं । इस हस्तक्षेप प्रक्रिया का विवरण अध्याय 7 में दिया गया है ।

3. **वाक् स्पष्टता (इंटेलिजबिलिटी)** – कुशलतापूर्वक वाक् ध्वनियों का उत्पादन और श्रोता से उनकी ग्राह्यता को "स्पष्टता" या "इंटेलिजबिलिटी" कहते हैं । एक बच्चे की वाक् स्पष्टता को उस समय "अच्छा" कह सकते हैं, जब अपरिचित व्यक्ति भी उसे समझ सकें । जब अभिभावक बच्चे के वाक् को समझ लेते है पर अन्य नहीं समझ पाते उसे "साधारण (फेयर) स्पष्टता" कहते है । इन दोनों

वर्गों में स्पष्टता का निर्धारण नही हुआ तब उस वाक्य की स्पष्टता को न्यून (पुअर) कहते हैं । यहाँ अभिभावक व अन्य-व्यक्ति दोनों बच्चे के वाक् को नही समझ सकते ।

4. **प्रयुक्त (अर्थक्रियात्मक-प्रॅगमॅटिक्स) कुशलतायें** – इसमें बच्चे द्वारा बातचीत में भाषा का प्रयोग कितनी कुशलतापूर्वक होता है, इसका मूल्यांकन किया जाता है । बातचीत के दौरान हमें इन विषयों पर ध्यान देना चाहिये कि, क्या बच्चा बातचीत प्रारंभ कर सकता है? उचित रूप से अपनी बारी लेता है ? क्या वह अपनी बातचीत समाप्त कर सकता है ? आदि। इन विषयों का "होना" या "न होना" विवरणों के साथ बताना चाहिये ।

नैसर्गिक दैनिक बातचीत के समय बच्चे के प्रयोग कुशलताओं का अवलोकन करना चाहिये।

5. **इशारे**– शरीर के भाग जैसे हाथ, आँखों द्वारा इशारे किये जाते है । परिशिष्ट 6.3 का मूल्यांकन करते समय तथा परिशिष्ट 6.2 को अभिव्यक्त विषयों का मूल्यांकन करते समय इशारों के प्रयोग नोट करना चाहिये । इसमें इशारों की संख्या व भिन्नता नोट करनी चाहिये । अभिभावकों के अवलोकन द्वारा भी यह सूचना ली जा सकती है । बच्चे द्वारा प्रयुक्त सभी इशारे तथा उनके आशय (इन्टेंशन) की सूची उपयुक्त होगी । परिशिष्ट 6.2 भाग 5 में इन इशारों की संख्या नोट करनी चाहिये । वैसे ही यदि इशारों को बच्चा संयोजित कर सकता है, तो वो भी नोट करना चाहिये । जैसे वाक् स्पष्टता में "अच्छा", "साधारण", और "न्यून" का वर्गीकरण किया उसी प्रकार इशारों की स्पष्टता भी नोट करनी चाहिये ।

निर्धारित क्षेत्रों की पद्धतियों का अभी तक जो विवरण किया गया। वो विभिन्न स्तरों के बच्चे के लिये किया गयाहै । यह आवश्यक नही कि, ये सभी-बच्चों पर लागू हो सकें, प्रारंभिक क्षेत्रों पर केंद्रित करना आवश्यक होगा । उदाहरण के लिये-यदि एक सांकेतिक बच्चे का निर्धारण करना है, तब प्रमुख क्षेत्र होंगे भाषा के आगत व भाषा के विषय वस्तु का संग्रहण । दूसरी ओर यदि बच्चा वाक्य स्तर पर हों तो निर्धारण का क्षेत्र वाक्यों की अभिव्यक्ति वाक्-ध्वनियों का उच्चारण, प्रयोग-कुशलतायें आदि ।

भाषा-निर्धारण एक जटिल कार्य है, जिसमें कार्य अनुभव के साथ ही अधिक निपूणता आती है ।

यह मार्गदर्शक सूचना है कि, बच्चों का पहले सभी तीन मुख्य क्षेत्रों में जैसे आगत, विषयवस्तु, व प्रयोग इन तीन क्षेत्रों में संक्षिप्त रूप से निर्धारण किया जाये और केंद्रित करने के लिये विभिन्न क्षेत्रों को चुना जाये । इसके बाद केंद्रित विषयों का विस्तृत रूप से निर्धारण कर सकते हैं ।

यह ध्यान रखना चाहिये कि, परिशिष्ट 6.2 में दिये गये विभिन्न वर्गों का निर्धारण करना चाहिये, किंतु आवश्यकता पडने पर इन वर्गों को बदला जा सकता है । परिशिष्ट 6.5 में एक केस– उदाहरण दिया गया है जिसमें निर्धारण के (परिशिष्ट 6.2 पर) विभिन्न विषयों का उल्लेख है । इससे जटिल निर्धारण कार्यक्रम के कम से कम कुछ पहलूओं को स्पष्ट रूप से समझने की आशा है ।

सारांश

इस अध्याय में वाक् तथा भाषा का निर्धारण और उसके प्रयोजन आदि विषयों की चर्चा की गई है । निर्धारण के आंकडे के विभिन्न स्त्रोत तथा इन पद्धतियों की कठिनाईयों की भी चर्चा की गई है। निर्धारण कैसे आयोजित किया जाये तथा किस प्रकार और कब किया जाये इसका भी इसमें उल्लेख किया गया है । तत्पश्चात् निर्धारण के विभिन्न क्षेत्रों की भी चर्चा की गई है । निर्धारण-कार्यक्रम में निम्न विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया है । भाषा-आगत जिसमें अभिरक्षक द्वारा बच्चे से की गई भाषा की प्रकृति का विवरण हैं, बच्चे की भाषा योग्यता या विषयवस्तु जिसमें शब्द, वाक्यांश एवं वाक्यों के लिये संग्रहण तथा अभिव्यक्ति सम्मिलित है, तथा भाषा का प्रयोग इसके अंतर्गत है बातचीत की कुशलतायें, वाक्-स्पष्टता और इशारों का प्रयोग ।

वाक् व भाषा के निर्धारण को अधिक स्पष्ट बनाने के लिये एक केस उदाहरण भी दिया गया है । वाक् तथा भाषा निर्धारण के प्रोफॉर्मा और उनके विभिन्न क्षेत्रों को परिशिष्टों में दिया गया है ।

परिशिष्ट 6.1

लैंगवेज असेसमेंट टूल

1. नामः

2. जन्म तिथिः

3. आयु/लिंगः

4. सूचकः

5. प्रयोग के लिये निर्देशः

लैंगवेज असेसमेंट टूल एक जांच पड़ताल सूची है जो वाक् व भाषा विकास के बारे में सूचना प्राप्त करने के मुख्य उद्देश्य से विकसित की गयी है । यह जांचपड़ताल सूची मुख्यतः मानसिक मंद बच्चों के प्रयोग करने के लिये विकसित की गई है । सूचनादाताओं के विवरण से तथा जब संभव हो, बच्चे का मानांकन कर प्रत्युत्तर प्राप्त किया जा सकता है ।

प्रत्येक मद के उत्तरों की हाँ/नहीं/निश्चय नही की तरह गणना की जानी चाहिये । आवश्यकता पडने पर विवरण दिये जाने चाहिए । मौखिक व सांकेतिकदोनों प्रत्युत्तरों को टेपरेकॉर्ड कर सकते हैं (दोनों के उत्तर) । विशेष कर अभिव्यक्त आइटमों में ।

सभी आइटमों पर सूचना प्राप्त करना चाहिये तथा जब आवश्यक हो चिकित्सक परीक्षा रोकने का निर्णय ले सकता है । चिह्न" लगाये गये आईटमों के लिये कुछ प्रेरक चित्र दिये गये हैं, फिर भी, अधिक स्वाभाविक उत्तर प्राप्त करने के लिये परीक्षक वास्तविक परिस्थितियाँ तथा अपने ही उदाहरणों का प्रयोग कर सकते हैं । ("सं" = संग्रहण; "अ" = अभिव्यक्ति)

लैंगवेज असेसमेंट टूल के आइटम्स्

संग्रहण	अभिव्यक्ति
(0–1 महीनें)	
1. परिचित/स्नेही स्वर सुनकर बच्चा शांत हो सकता है ।	1 शिशू रोने के अलावा अनियमित स्वरोच्चारण (रैंडम वोकलाईजेंशन) दिखाता है ।
(1–2 महीने)	
2. बारबार बच्चा अन्यों के स्वर को प्रत्यक्ष ध्यान देता है । अनुक्रिया का उल्लेख करें। उदाः कार्यरोकना या बदलना ।	2. भिन्नता पूर्वक रोना प्रदर्शित करता है । उदाः भूख लगने पर विशेषतः रोना ।
(2–3 महीने)	
3. बोलने वाले की तरफ टकटकी लगाकर पता करता है (लोकलाइजेस)	3. हँसता है तथा प्रसन्नता प्रदर्शित करने के लिये अन्य स्वरों का प्रयोग करता है ।
(3–4 महीने)	
4. सामान्यतः गुस्से के स्वर से भयभीत होता है या घबराता है, रोता या रोने के लियें तैयार होता है ।	4. तुतलाता है (सामान्यतः एक ही ध्वनि को बारंबार दोहराता है) विशेषकर अकेला होने पर ।
(4–5 महीने)	
5. अपने नाम को पहचानता/पहचानती तथा उत्तर देती/देता है ।	5. क्रोध या अप्रसन्नता व्यक्त करने के लिये रोने, चिखने या चिल्लाने के अलावा अन्य आवाजों का प्रयोग करता है ।
(5–6 महीने)	
6. "नहीं" के उत्तर मे कम से कम आधे बार रूकता है या वापिस लेता है (वीथड्राज्)	6. खेलता या प्रसन्नता पूर्वक ध्वनियां व आवाज करता है । जब अकेला हो या अन्यों के साथ हो (कुईंग रेस्पॉस)

संग्रहण	अभिव्यक्ति
(6–7 महीने)	
7 शब्द जैसे आना, ऊपर, ऊँचा, टा–टा, आदि के लिये इशारों से उत्तर देता है ।	7. अन्यों के ध्यान आकर्षित करने के लिए स्वर ध्वनियों का उपयोग करता है ।
8.* ऐसे लगता है कि, नाम सुनने पर कुछ सामान्य वस्तुओं को देखकर पहचानता है।	8.* वाक् जैसे स्वरांच्चारण वाक् का प्रयोग करता है – अपनी ही भाषा में कुछ वस्तुओं के नाम बोलने का प्रयास करता है ।
(8–9 महीने)	
9. लगता है कि, इशारों के साथ सामान्य मौखिक निवेदन समझ सकता है । उदाः आ, दें, मैं बिस्कुट लेता हूँ, आदि ।	9. खेल जैसे "पेट–ए केक" या "पीक–ए.बू" अन्योंसे खेलता है । (बच्चे की मातृभाषा से संबंधित ऐसे खेलों की जांच करें) ।
10. जब वस्तुओं या खिलौनों की बात की जाती है तब उनको देखकर अपना ध्यान बनाये रखता है ।	10. कुछ इशारों का प्रयोग करता है जैसे "नहीं" के लिये सर हिलाना ।
(9–10 महीने)	
11. मौखिक निवेदन पर अक्सर खिलौने व अन्य वस्तुयें माता–पिता को देता है ।	11. स्वरोच्चारण में छः महिने में देख गये से अधिक व्यंजन दिखाई देते है ।
(10–11 महीने)	
12. कभी कभी इशारों के बिना सामान्य निर्देशों का पालन करता है । जैसे उसे नीचे रखो, गेंद कहाँ है ।	12. ऐसा लगता है कि, शब्द विन्यास (इटोनेशनपैटर्न) अपनी भाषा में बोल रहा है – जैसे कि, प्रश्न पूछ रहा है, उत्तर दे रहा है, या मांग रहा है ।

संग्रहण	अभिव्यक्ति
13. प्रश्न जैसे "मोटर कैसे चलती है"? "एक व्यक्ति अपने आप पाऊडर कैसे लगा सकता है? बैलगाडी कैसे चला सकते हैं? को समझता है तथा अर्थ पूर्ण अनुक्रिया दिखाता है ।	13. प्रारंभिक शब्द जैसे दादा, मामा या लाड़ले का नाम या एक खिलौने का नाम बोलता है ।
(11–12 महीने)	
14. कुछ निवेदनों के समुचित मौखिक उत्तर देने व समझने का प्रदर्शन करता है । उदाः टा–टा, नमस्ते आदि ।	14. अन्य व्यक्तियों की ओर इंगित करते हुये उनकी उपस्थिति को व्यक्त कर सकता है तथा निवेदन किये जाने पर कभी कभी नाम भी बोल सकता है ।
(12–14)	
15. लगता है भाषणकर्ता के क्रोध, थक जाने, प्रसन्नता, उदासिनता को समझ रहा है ।	15. स्थिरता के साथ 3 या अधिक शब्दों के प्रयोग करता है ।
16. मुख्य शरीर के भाग को समझता है तथा पूछे जाने पर उनकों इंगित करता है । उदाः सिर, पेट, आँख, आदि ।	16. इंगित करने जैसे इशारों के साथ कुछ स्वरोच्चारण का प्रयोग करते हुये इच्छुक वस्तुओं को पूछता है ।
17 सामान्य आदेशों को समझता है जिनके लिये क्रिया द्वारा स्वरोच्चारण द्वारा उत्तर देता है। उदाः वह गेंद लाओ, मुँह धो लो, हाथ मत लगाना	17. वस्तुओं के, खाद्य पदार्थ तथा जानवरों के नाम "शुशु संभाषण" रूप में नाम देना आरंभ करता है । उदाः "भौ–भौ", "बिकुट", "बच्चों जैसी" बातो से (बेबी टॉक) वस्तुओं खाद्य तथा पदार्थों जानवरों के नाम बताता है । उदाः भौं–भां, बिल्ली, मम मम

संग्रहण	अभिव्यक्ति
(14–16 महीने)	
18.* नाम बताने पर कई वस्तुओं तथा उनके चित्रों को पहचानता है ।	18. दो शब्दों के वाक्यांशों का प्रयोग करना प्रारंभ करता है । इनसे सीमित अर्थ संबंधी (सिमॅन्टिक) संबंधों को व्यक्त करता है। उदाः वस्तु+क्रिया– (खिलौना दो, ऑब्जेक्ट+ॲक्शन (वस्तु+क्रिया) बॉल गीव (बॉल देना) टॉय प्ले (खिलौना खेलो) (एजेंट+ॲक्शन) कर्ता+क्रिया मामा कम धारक+धारणा–मेरा खिलौना, (मम्मी आओ) पोसेसर+प्रोसेशन धारक+धारणा, मायडॉल (मेरी गुडिया मायशर्ट (मेरा शर्ट)
19. प्रश्नार्थक रूपों को अपने को या दूसरों को इंगित करते हुये समझता है । उदाः हुज पेंसिल इस थीस? हुज शर्ट इस थीस?	19. गया, टा–टा, आदि शब्दों के द्वारा अदृश्य होना (डिसअपियरंस) को व्यक्त करता है।
(16–18 महीने)	
20. निवेदन करने पर लगातार दो निर्देशों का पालन करता है । उदाः पुस्तक रख देकर गेंद लाना । लाईट जलाकर दरवाजा बंद करना ।	20. परिवार के सदस्यों के अधिकतर लोगोंके नाम बताता है तथा शरीर के पांचों भागों के नाम बताता है । उदाः भाई, बहन, मामा, दीदी, चाची, ऊंगली, नाखून, आँख, भौंहें आदि ।
(18–20 महीने)	
21.* कर्ता (एजेंटस्) की विभिन्न किर्याओं (ॲक्शन्स) पर आधारित प्रश्न को समझता है । क्रिया में सम्मिलित वस्तुओं के नाम बताकर । उदाः लडकी क्या क़र रही है ? (पी रही है, कंधी कर रही है)	21. और फेंको, जैसे सादारण आदेश (इम्पॅरेटिवस्) देकर एक व्यक्ति से काम करवाता है ।

संग्रहण	अभिव्यक्ति
कुत्ता क्या कर रहा है ? (भौक रहा है, भौं भौं) लडका क्या कर रहा है ? (सो रहा है)	
22. व्यक्तिगत सर्वनामों के अंतर को समझता है । इसको हम बच्चे के जैसे आदेशों के पालन करने में देखते हैं ।	22. खेलते समय पर्यावरण आवाज जैसे मोटर, जानवर, का अनुकरण करता है ।
(20–22 महीने)	
23. आदेश व सुझाव जैसे अप्रत्यक्ष प्रश्नों को समझता है । तुमने लाया है क्या? यह उनको दे सकते हो, क्या? मुन्ने को दोगे क्या?	23. विभिन्न वस्तु/क्रियाओं के संबंध में एक ही शब्द/वाक्यांश का प्रयोग करता है । "आम्मा" शब्द का प्रयोग माँ को बुलाने तथा उसी शब्द को गायब हो जाने के लिये भी कहता है ।
(22–24 महीने)	
24. "कौन" प्रश्नों के समझता है तथा सही उत्तर देता है । उदाः कौनसी पुस्तक? कौन सी आँटी?	24. खेलमें सहयोगियों, से नाम बुलवाने के लिये क्या "और" "कौन" प्रश्नों का प्रयोग करता है । उदाः यह क्या है ? ये कौन है ?
(24–26 महीने)	
25. जटिल वाक्यों को समझता है । उदाः हम जब घर जाते हैं, मै तुम्हें चॉकलेट देता हूँ ।	25. स्वयं को बताने के लिये अपने नाम का प्रयोग करता है ।

संग्रहण	अभिव्यक्ति
26. अत्यधिक संख्या में शरीर के सूक्ष्म भाग जैसे विभिन्न उँगलियाँ, गर्दन, गाल आदि को समझता है ।	26. इन्कार व्यक्त कर सकता है, उदाः वह ग्लास नहीं है । वह मैने नहीं किया ।
(27–30 महीने)	
27. क्यों प्रश्न समझता है और कारण देता है। उदाः आपको पैन क्यों चाहिये ? तुम क्यों रो रहे हो ?	27. वैयक्तिक आवश्यकतायें जैसे हाथ धोना, टॉयलेट जाना आदि के लिये शब्दों का या शब्दों सहित इशारों का प्रयोग करता है ।
28.* माप (साईस) अंतरों को समझता है । जैसे छोटा वृक्ष, बडे वृक्ष, छोटी पैन्सिल, बड़ी पैन्सिल आदि को सही ढंग से चुनता है ।	28. धारणाओं को व्यक्त करता है । जैसे – और एक, सभी, थोडा, – समय बाद में अभी; – बडा, छोटा, आदि
(30–33 महीने)	
29.* अति सामान्य विशेषणों को समझता है । उदाहरण के लिये ठिगना । उँचा आदमी, मोटी/पतली औरत, मोटा/पतला आदमी, आदि को सही इंगित करता है ।	29. अपने को नाम से बेहतर सर्वनाम से इंगित करता है ।
30. निर्देशों के कारकों (पोस्ट पोजिशन) को समझता है । जैसे उपर, में, नीचे, सामने पीछे आदि ।	30. अपना लिंग सही रूप से बताता है जैसे पूछने पर, तुम लडके हो या लडकी?
(33–36 महीने)	
31. काल्पनिक संदर्भ के प्रश्नों को जैसे अगर तुम चोर हों तो क्या करोगे ? तुम शिक्षक हो तो क्या करोगे ?	31. तीन वस्तुओं तक गिन सकता है ।

संग्रहण	अभिव्यक्ति
(3 वर्ष और आगे)	
32. एक काम के निर्देश को बिना निरूपित (डेमॉनस्टेशन) किये समझता है, जैसे–एक छोटासा खिलौना पुस्तक पर रखो । पुस्तक को टेबल के पास रखो ।	32.* एक चित्र देखकर या कार्य को देखकर दो या तीन क्रियाओं को बता सकता है ।
33. एक जैसी वस्तुओं को इकट्ठा कर सकता है जैसे–पिताजी के कपडे, माँ के कपडे, साब्जियों को अलग करना आदि ।	33. बच्चा विशेषण तथा क्रिया विशेषणों के लिये अनुठे शब्दों का प्रयोग करता है ।
34. पहले, बीच और अंतिम कार या आदमियों को चित्र में पहचान सकता है ।	34. पूछे जाने पर पहले, बीच, और अंतिम, बाद जैसे शब्दों का प्रयोग करता है । जैसे सवेरे तुमने क्या किया ? बगीचे में तुमने क्या किया ?
35* नाम के तुलनात्मक शब्दों को समझ सकता है । जैसे बडी पेंसिल, छोटी पेंसिल, छोटा डिब्बा उसी प्रकार गति संबंधी शब्द जैसे धीमे, तेज आदि ।	35. बड़े खिलौने छोटे खिलाने, छोटे बिस्कुट, बडे बिस्कुट आदि को मानता है ।
36* शब्दों के क्रम को निर्देशों में समझता है जैसे बस के पीछे कार है, कार के पीछे बस ।	36. संदर्भ चित्र जिसमें विभिन्न कार्य हो रहे हैं, उसमें सही शब्दों के क्रम से विवरण दे सकता है । उदा: कुत्ता बिल्ली के पीछे दौड रहा है । बिल्ली कुत्ते के पीछे दौड रही है ।
37. यह समझता है कि, 10 रुपये की नोट पाँच रुपये से ज्यादा है, 50 जैसे 25 पैसे से ज्यादा है ।	37. स्पष्टता के लिये अधिक शब्दों का प्रयोग करता है या विवरण देता है ।

संग्रहण	अभिव्यक्ति
38. दुध–दही, चावल– पका हुआ चावल, आदि जैसे शब्दों के संबंध समझता है	38. प्रश्न पूछकर उत्तर की प्रतिक्षा करता है। (टर्न टेकिंग, वाईस वर्सा)
39.* क्रिया शब्दों के रूप जैसे होने वाला कार्य, हो रहे कार्य, पूरा किया गया कार्य, चित्रों में सही पहचानता है, जैसे–चढने की कोशिश करना, चढने वाला, चढ रहा ।	39. बातचीत प्रारंभ करता है और अपने विचारों को व्यक्त कर सकता है, घटनाओं को बताता है ।
40. एक जाने–पहचाने वातावरण में एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिये मौखिक आदेशों का पालन कर सकता है ।	40. पूछने पर नाम और पता बताता है ।
41. वचन दिये गये कार्य को "न" करने का कारण समझता है ।	41. स्पष्ट बात करता है जिसे अपरिचित व्यक्ति भी समझ सकें ।
उदा: हम बाजार नही जा सकते, क्योंकि, आज बारीश हो रही है ।	
42. सही पैसे देने पर दुकान से सामान्य वस्तुओं को खरीद सकता है ।	42. शब्द, वाक्यांश और वाक्यों का अनुकरण करता है ।
43.* साधारण चुटकुले समझता है जैसे–बच्चा बडा जूता पहनना, बडी ऐनक पहनना आदि।	43. सीमित और बारबार बोले हुये शब्दों का प्रयोग अपने बातचीत में करता है ।
44. व्यक्ति, वस्तु या उनकी क्रियाओं के विवरणात्मक वाक्यों को समझता है जैसे– बस और कार को कौन रास्ते में रोकता है ? खेत में कौन काम करते है ? घर में खाना कौन पकाता है? आदि.	44. वर्गीकरण करता है और नाम बताता है जैसे जानवर, सब्जियाँ और फलों के समूह आदि।

संग्रहण	अभिव्यक्ति
45. रात और दिन, सुबह और शाम, आज और कल, के अंतर जानता है ।	45. भविष्य की घटनाओं का पूर्वानुमान लगाता है। जैसे– बदली छाई है, बारीश होगी, छाता लेना है ।
46. वस्तुओं के रंग पहचानता है,	46. झूठ बोल सकता है ।
47. संगीत और नृत्य का आनंद लेता है, और ताली बजाता है ।	47. कहानी सुनाने के लिये कहता है ।
48. भूमिका (रोल प्ले) समझता है, पहचानता है और करता है । जैसे शिक्षक, डॉक्टर, कण्डक्टर आदि जैसा अभिनय करना ।	

"सं" = संग्रहण; "अ" = अभिव्यक्ति

आइटम सं. (सं) 8

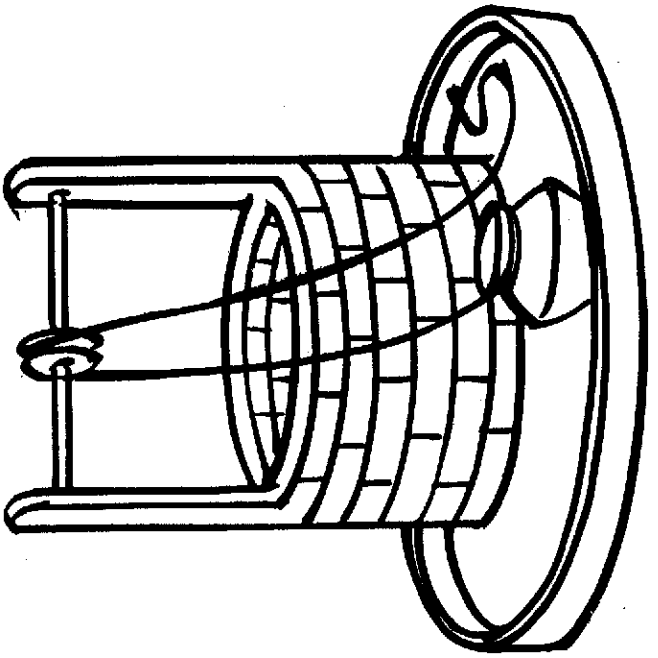

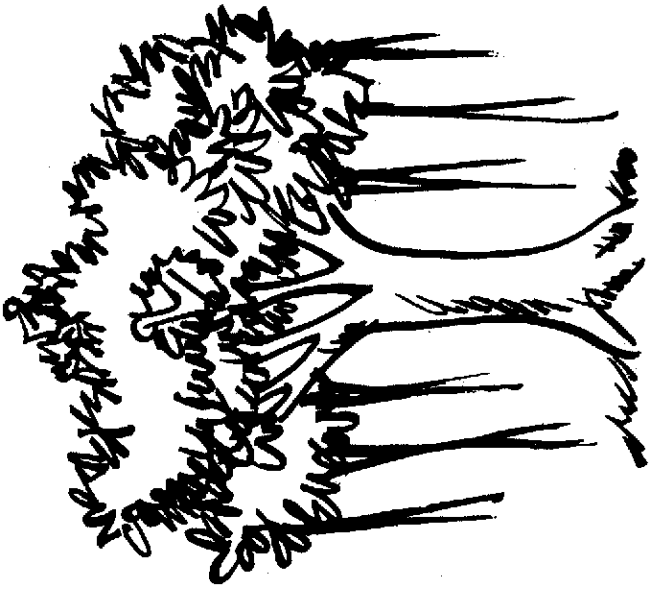

आइटम सं. (सं) 8

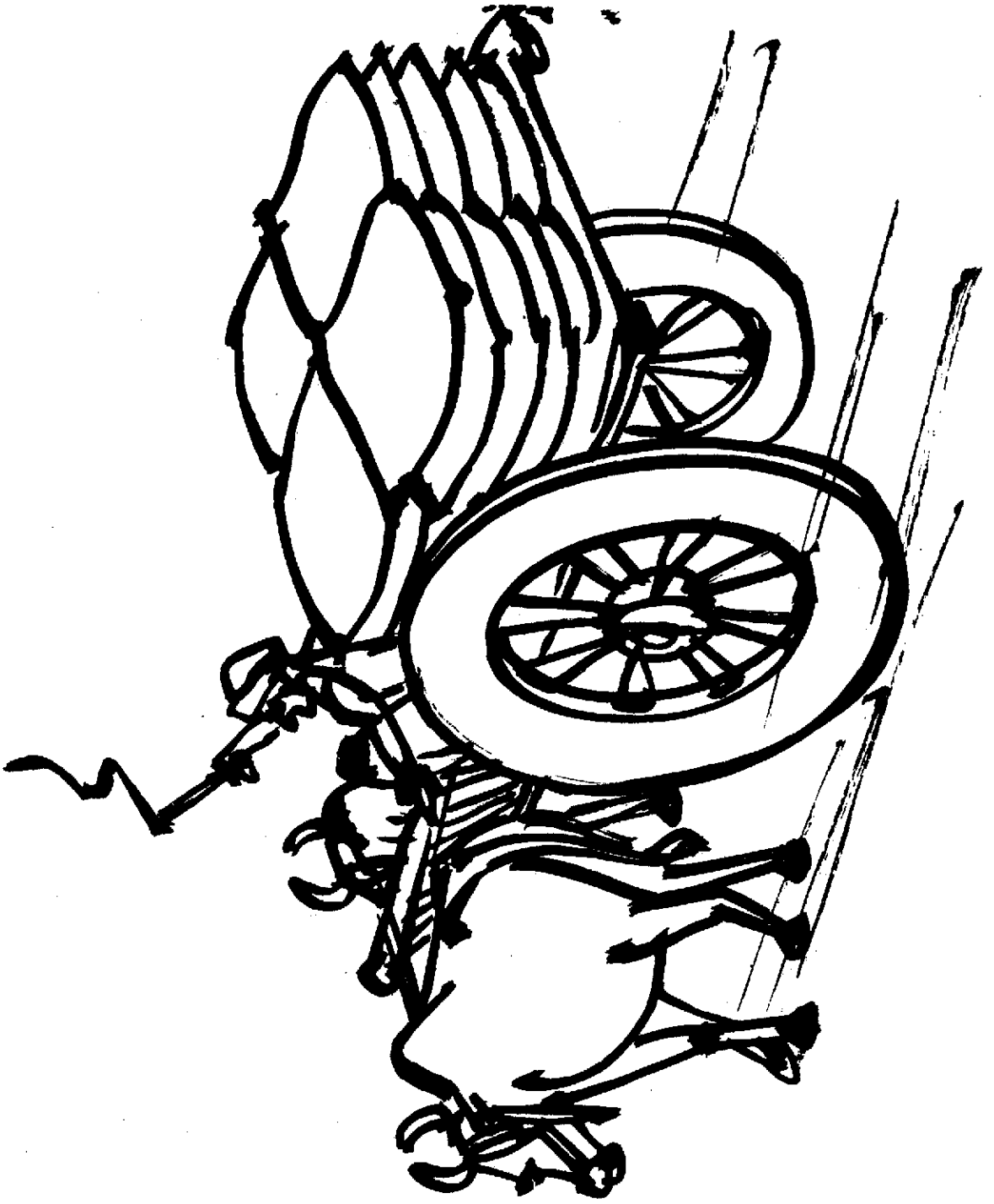

आइटम सं. (सं) 18

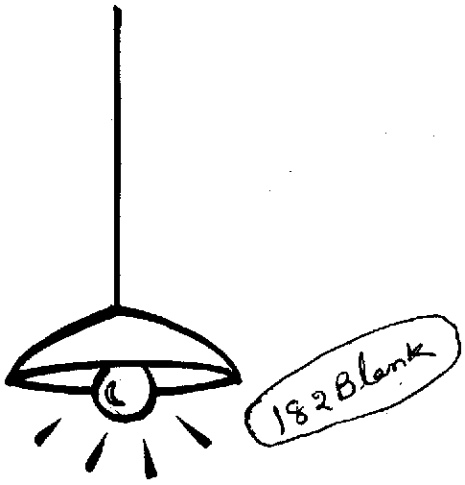

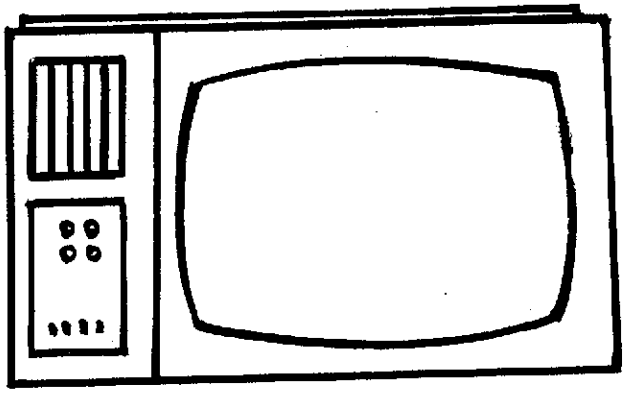

आइटम सं. (सं) 18

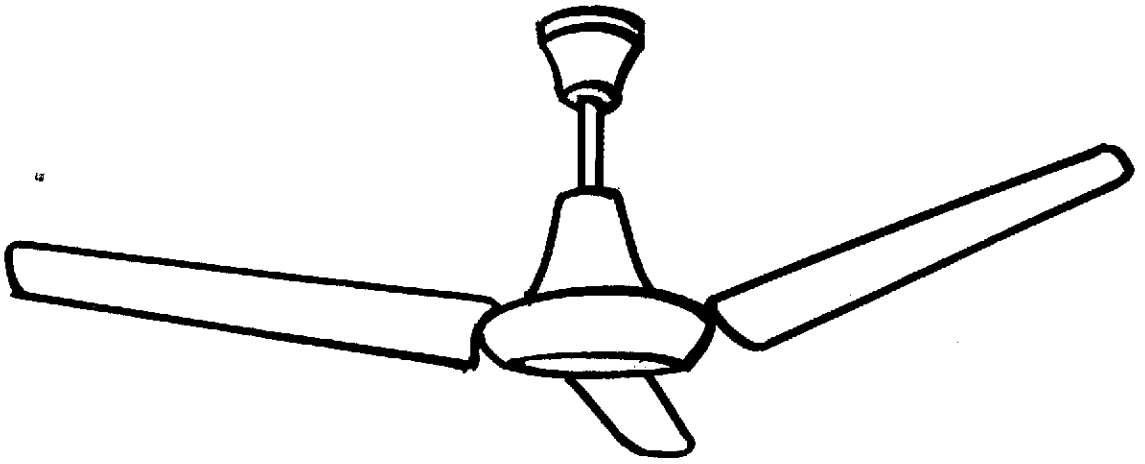

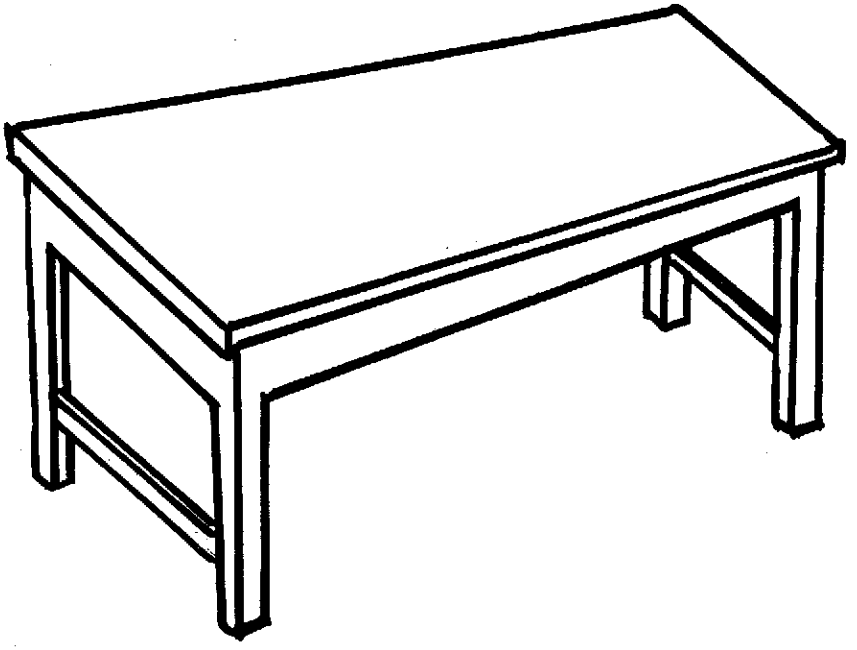

आइटम सं. (सं) 18

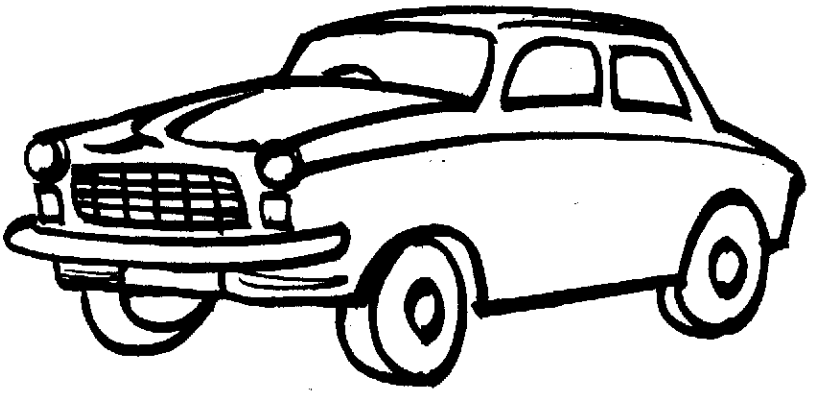

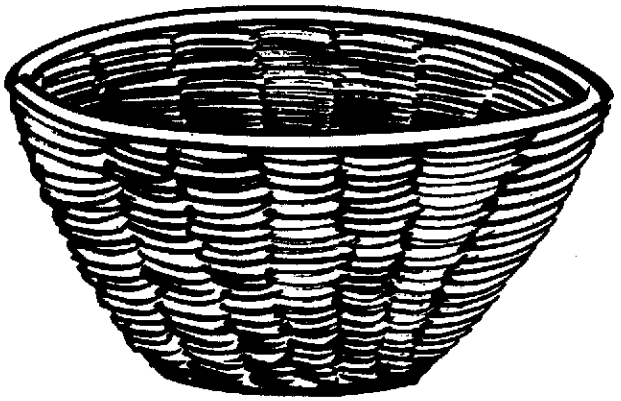

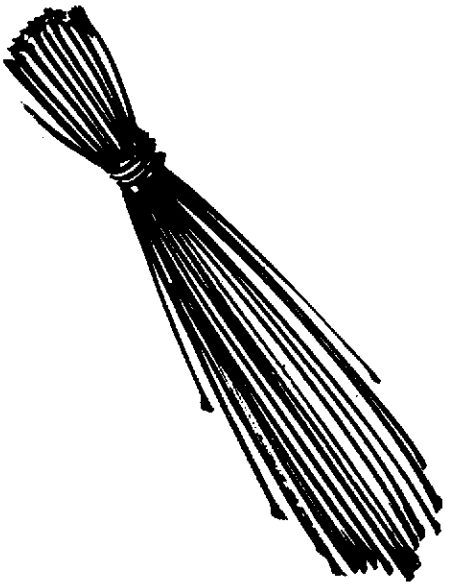

आइटम सं. (सं) 21

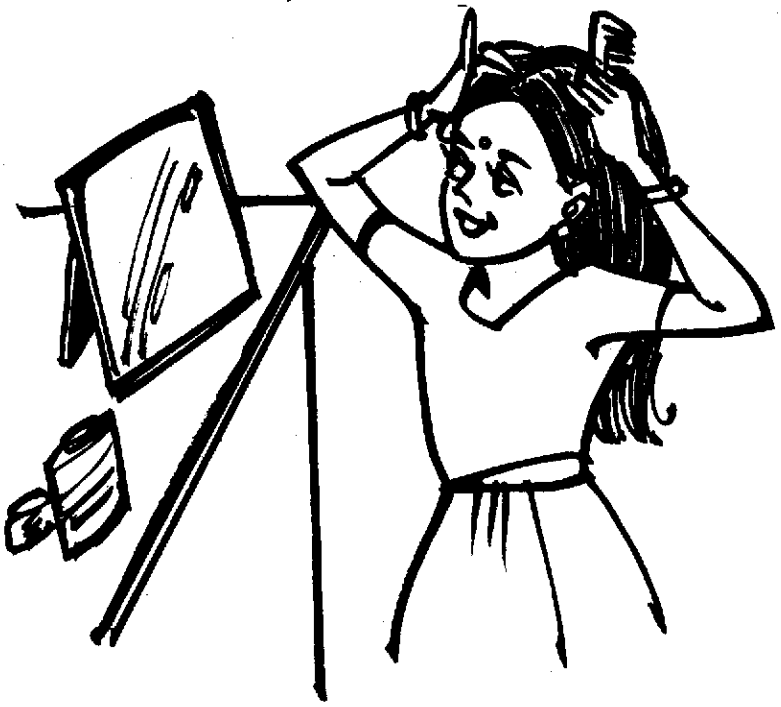

आइटम सं. (सं) 21

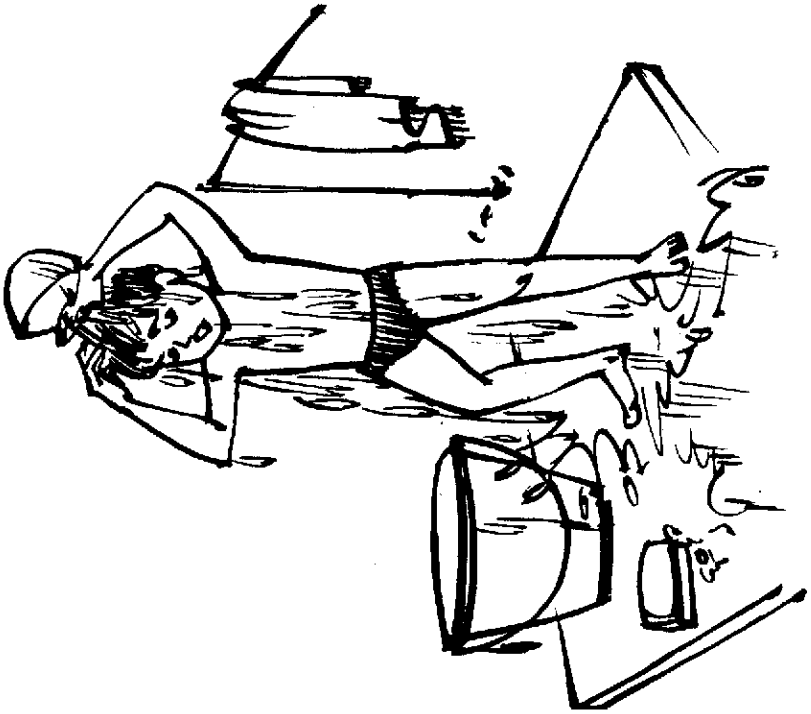

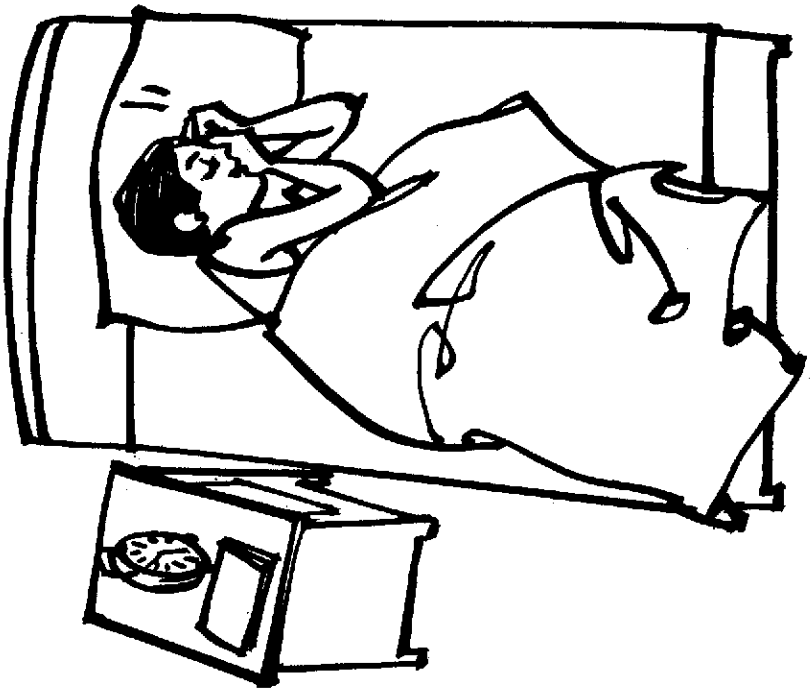

आइटम सं. (सं) 21

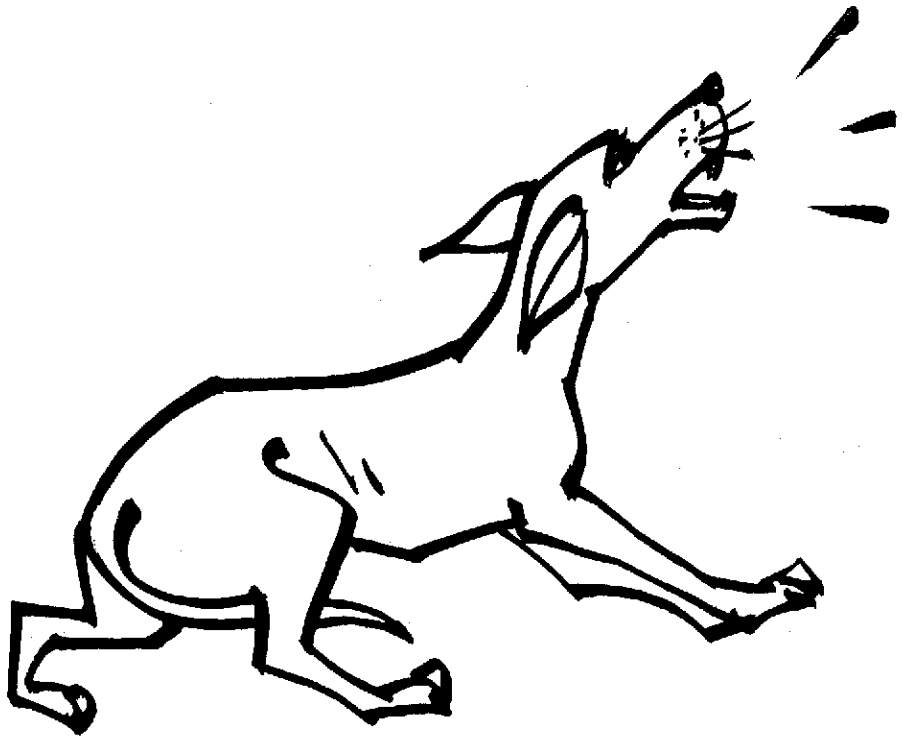

आइटम सं. (सं) 29

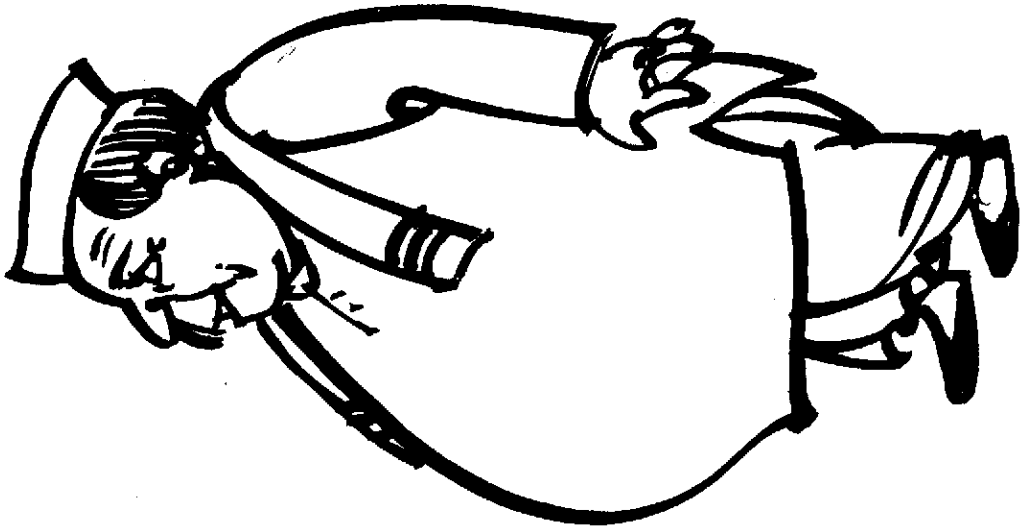

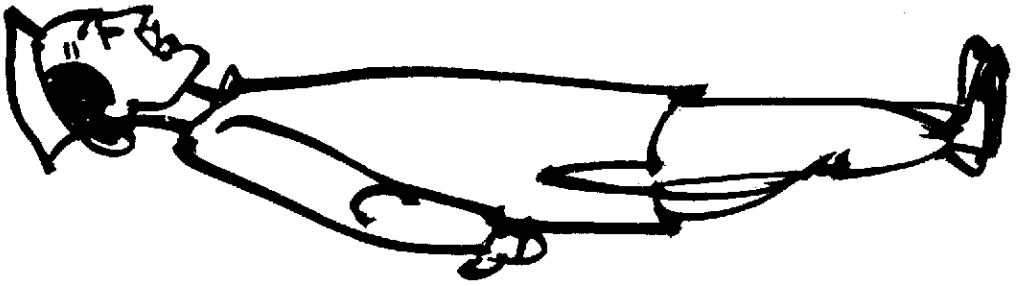

आइटम सं. (स) 29

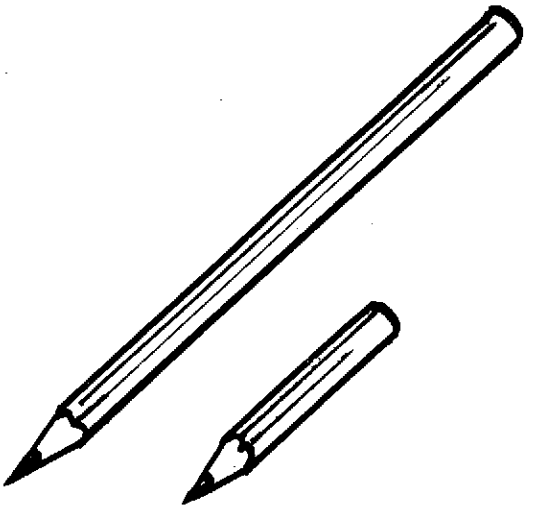

आइटम सं. (स) 34

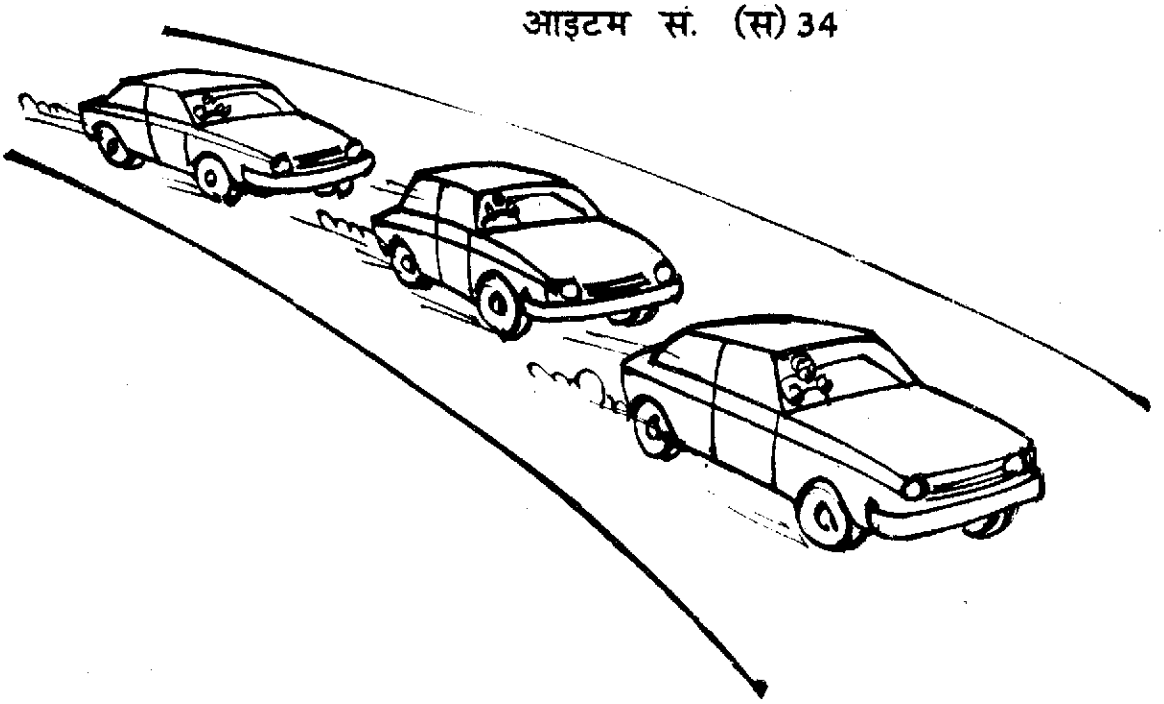

आइटम सं. (सं) 35

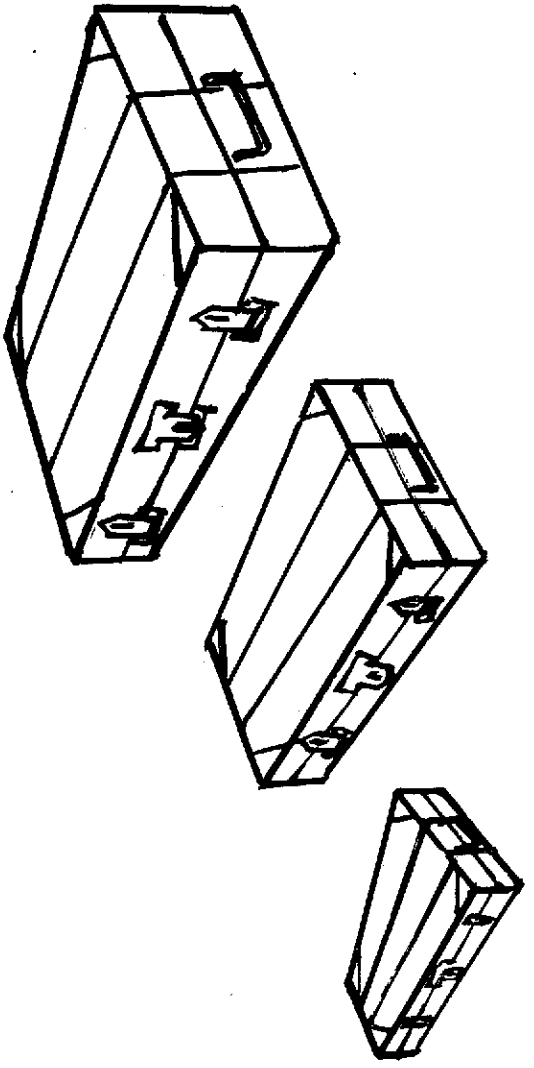

आइटम सं. (स) 36

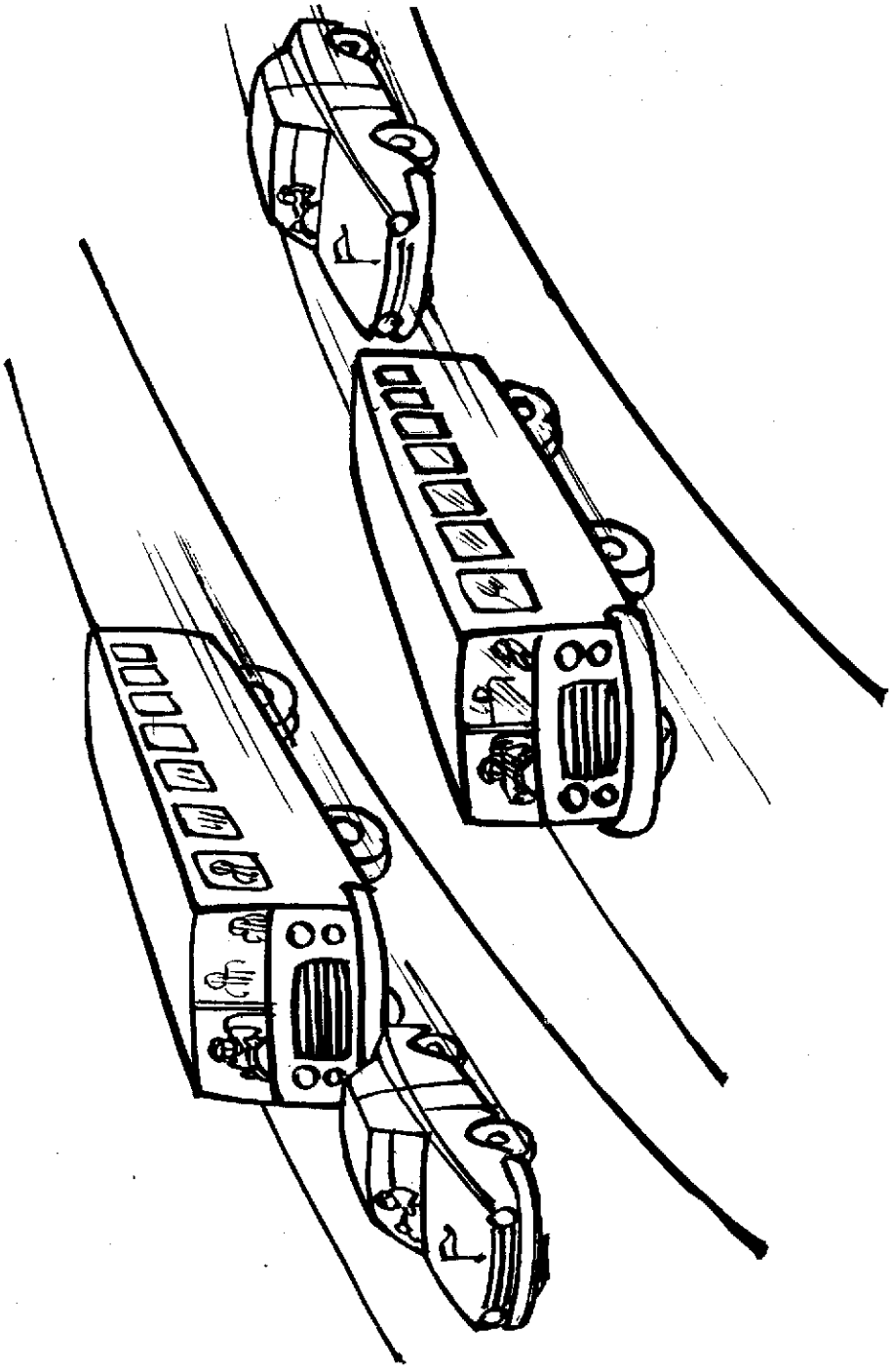

आइटम सं. (सं) 39

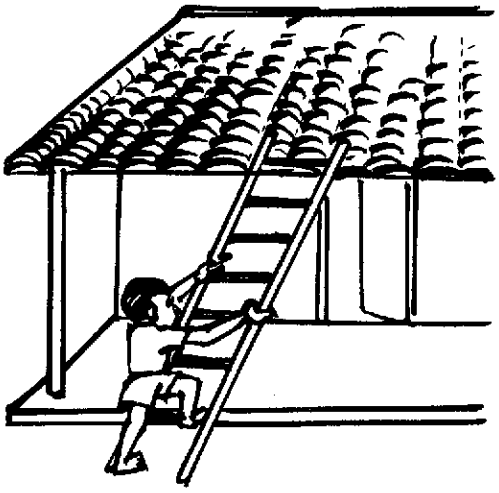

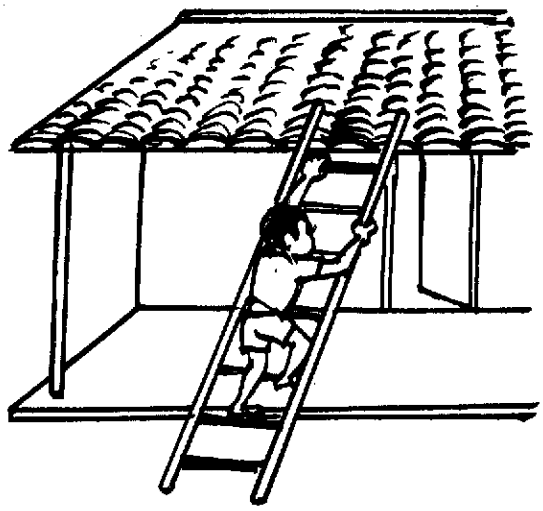

आइटम सं. (स) 43

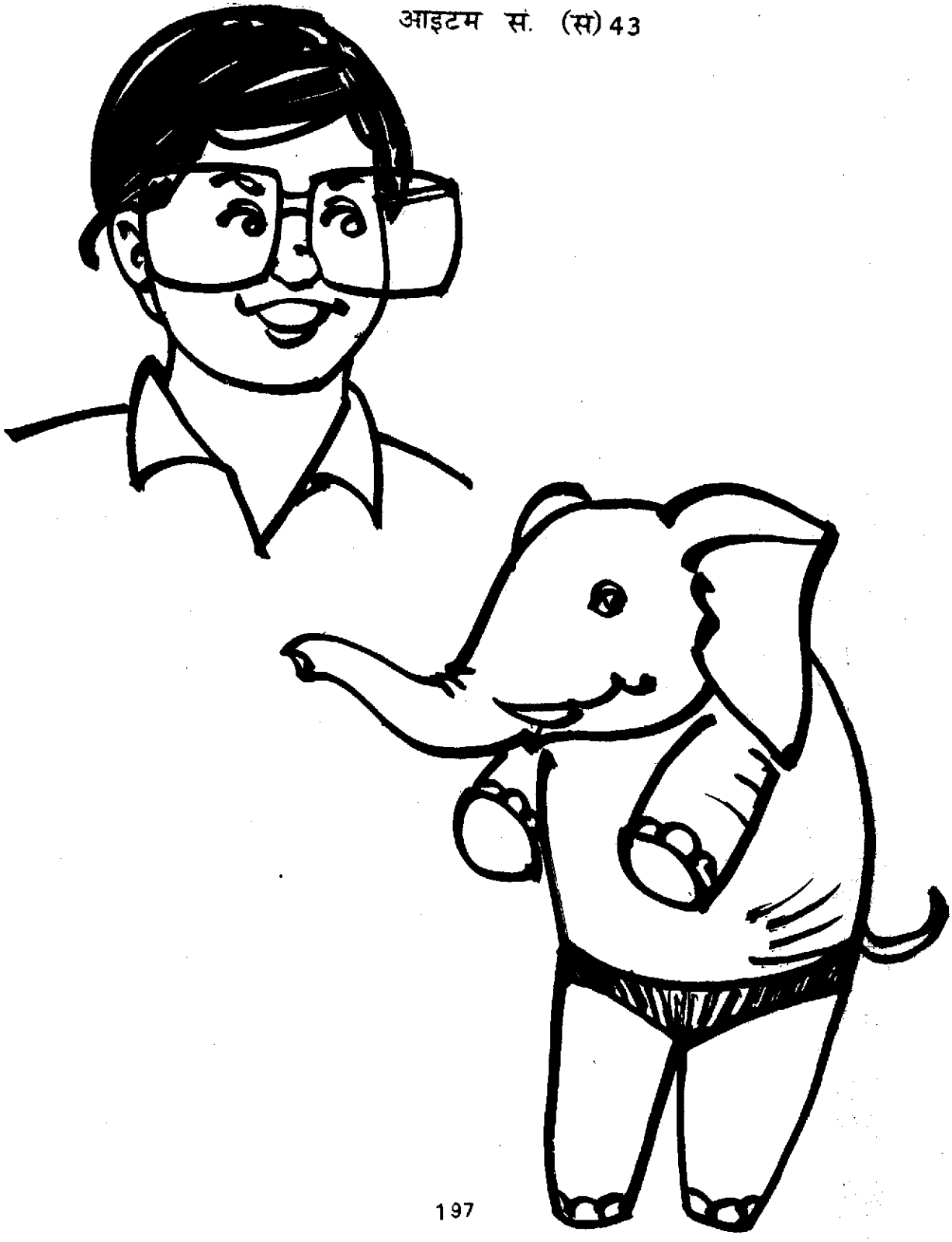

आइटम सं. (सं) 43

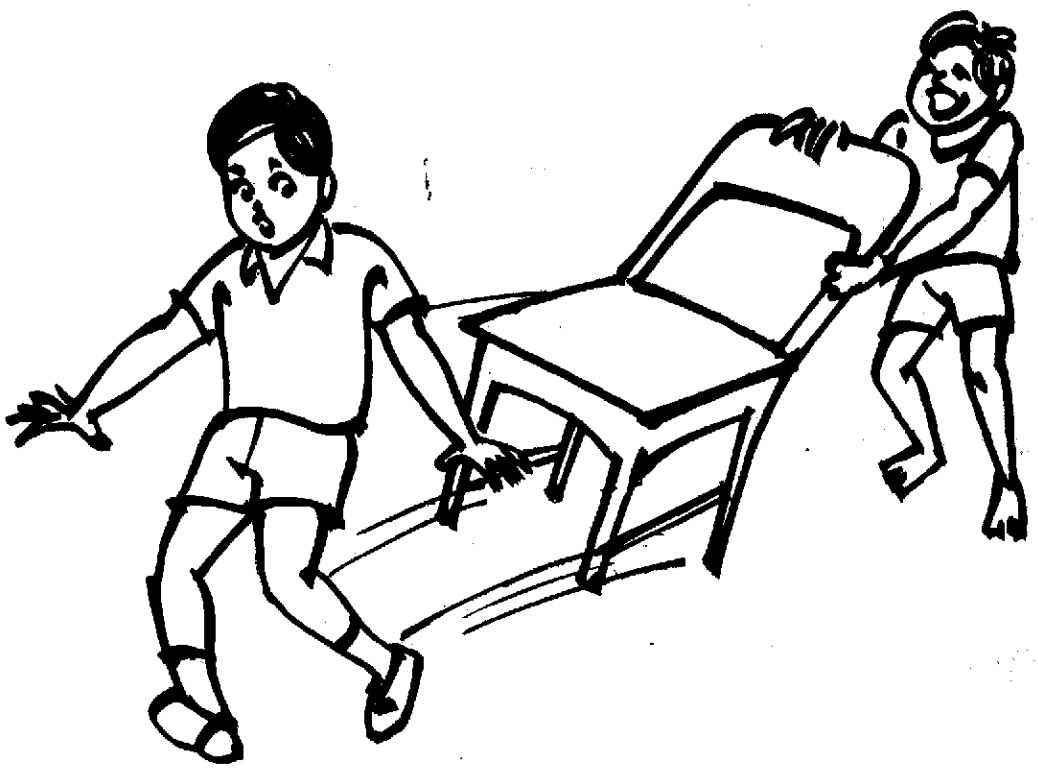

आइटम सं. (स) 45

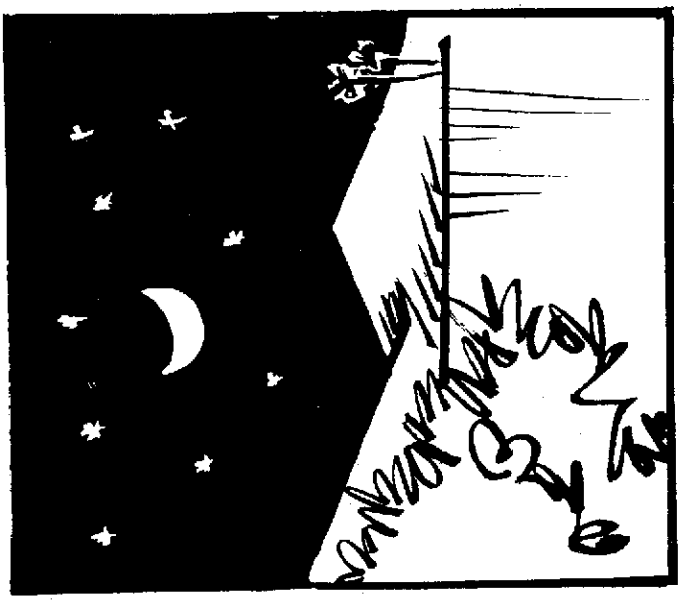

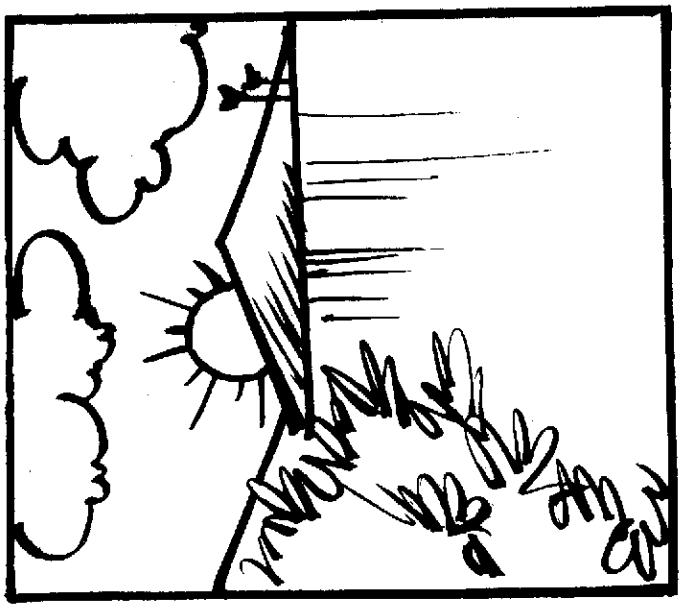

आइटम सं. (अ) 32

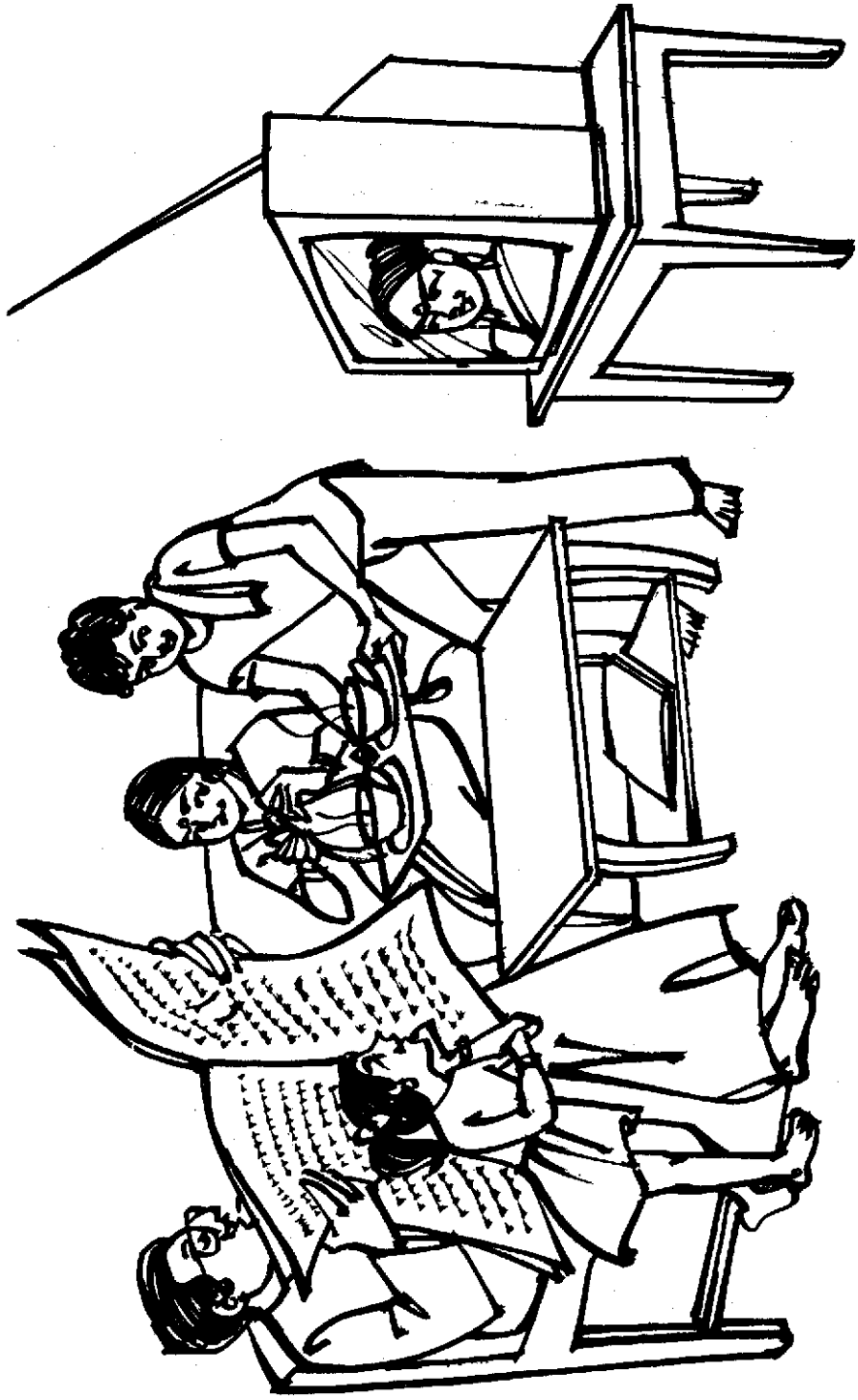

आइटम सं. (अ) 32

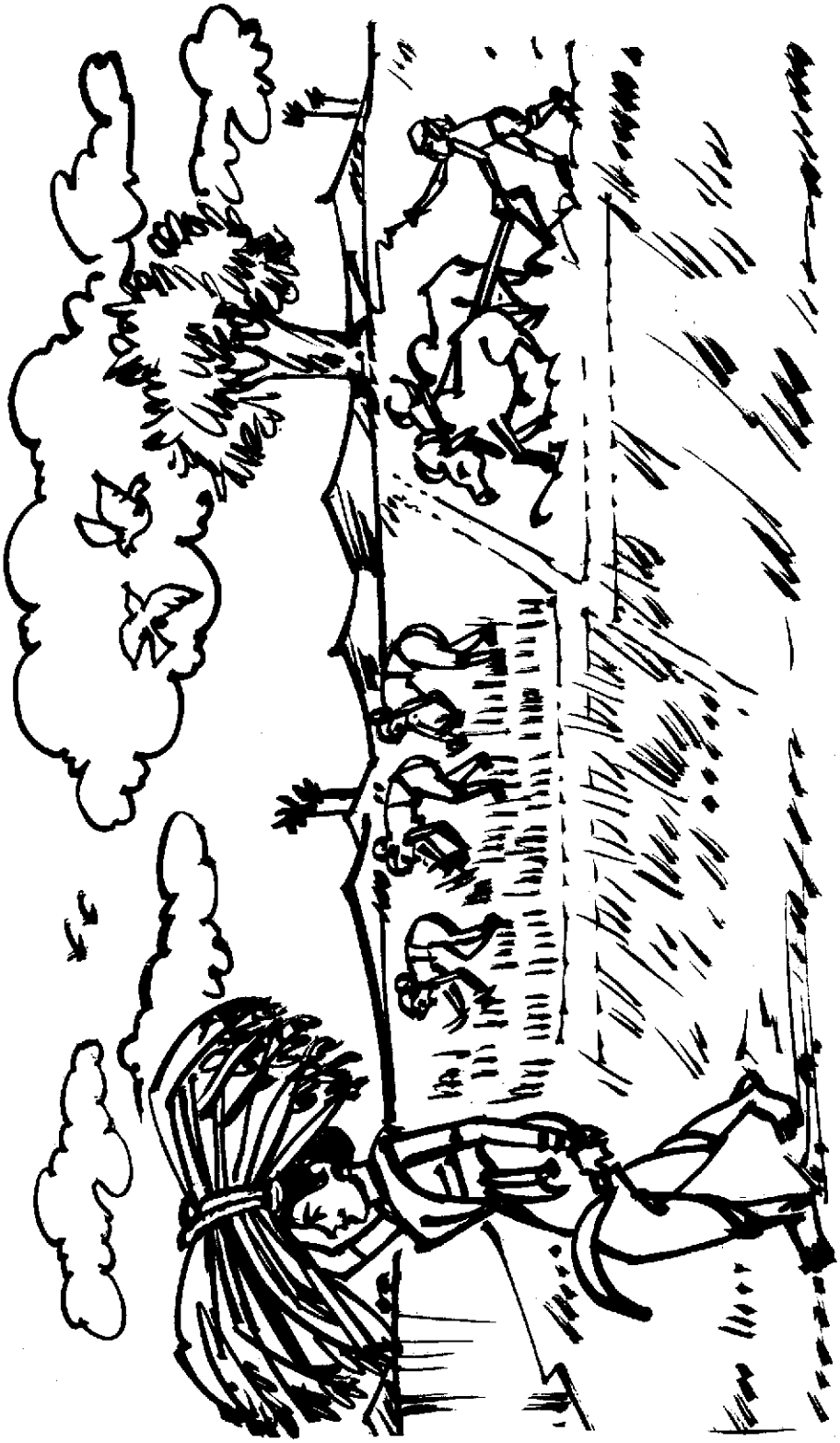

आइटम सं. (अ) 36

परिशिष्ट 6.2

वाक् तथा भाषा निर्धारण प्रोफॉर्मा

नाम _____ दिनांक: _____

आयु/लिंग _____ फाईल संख्या: _____

प्रयुक्त भाषा: घर में :
पाठशाला में :
अन्य परिस्थितियों में :

प्रमुख घटना (सिग्नेफिकेंट हिस्ट्री)

अन्य

I. वाक् यंत्र (मेक्यानिज्म) की रचना तथा कार्य

रचना	प्रकटन/उपस्थिति		कार्य	उपस्थित	अनुपस्थित
	सामान्य	असामन्य			
ओंठ	सामान्य/असामान्य		आगे करना (प्रोटरयुडिग) पीछे लेना (रिटरयॉक्टींग)		
जीभ	सामान्य/असामान्य		आगे निकालना पीछे/अंदर लेना उपर उठाना बाजु में हिलाना		
कठिन तालू	सामान्य/असामान्य				
नरम तालू	सामान्य/असामान्य		उपर/नीचे करना		

II. श्रवण जाँच सूची (हियरिंग स्क्रिनिंग चेकलिस्ट)

निर्धारित कीजिये राय
हाँ या नहीं

1. जन्म के समय

अ) क्या आपका बच्चा जोर की आवाज से उठता है ?

आ) क्या आपका बच्चा आवाज से चौंकता या रोता है ।

इ) क्या आपका बच्चा वाक् सुनता है ?

2. 3 महिने

अ) क्या आपका बच्चा धीमी (सॉफ्ट) आवाज को सुनता है ?

आ) क्या ऐसा लगता है कि, आपका बच्चा माँ की आवाज को पहचानता है ।

इ) क्या आपका बच्चा आवाज या वाक् सुनकर अपना खेल रोकता है ?

ई) क्या आपका बच्चा आवाज या वाक् सुनकर अपना खेल थोडी देर के लिये रोकता है ?

उ.) क्या आपका बच्चा बात करने वाले की ओर मुडने की कोशिश करता है ?

3. 6 महिने

अ) क्या आपका बच्चा "नहीं" सुनकर या अपना नाम सुननेपर प्रत्युत्तर देता है ।

आ) क्या आपका बच्चा कहीं से आ रही आवाज को सुनकर उसकी ओर सर मोडता है।

निर्धारित कीजिये राय
हाँ या नहीं

4. 9 महिने से 1 वर्ष

अ) क्या आपका बच्चा नई ध्वनि को सुनकर ढूँढता या चारों ओर देखता है ?

आ) क्या आपका बच्चा उसे बुलाने पर सर उठाकर देखता है ?

इ) क्या आपका बच्चा निवेदनों का पालन करता है (इधर आओ, क्या तुम्हें और चाहिये ?)

5. 2 1/2 वर्ष – 4 वर्ष

अ) क्या आपका बच्चा आवाज का ध्यान देता है ? (कुत्ते का भौंकना, टेलीफोन की आवाज, टी.वी. की आवाज, दरवाजा खटखटा की आवाज आदि)

आ) टी.वी. या रेडियो सुनने के समय आवाज (लाउडनेस) उतना ही रखता है, जितना अन्य सदस्य रखते हैं ?

इ) दूसरे कमरे से आवाज देने पर क्या आपका बच्चा सुनता है ?

निर्देश– बच्चे की आयु के आधार पर प्रत्येक प्रश्न पढ़िये और "हाँ" या "नहीं" जांचिये यदि अधिकांश उत्तर "हाँ" में हों तो श्रवण शक्ति सामान्य है । और यदि अधिकांश उत्तर "नहीं" में हों तो ऑडियॉलॉजिस्ट और स्पीच पैथॉलॉजिस्ट से संपर्क करें ।

एन.ए.एच.एस.ए. ब्रोचर्स, हाऊ डज युवर चाइल्ड हियर अँड टॉक (1986) से उध्दृत है ।

III. बच्चे का भाषा आगत

अभिभवाक– बच्चे की पारस्परिक-क्रिया (पेरेंट चाइल्ड इंटरेंक्शन)

1. परिमाण (क्वांटिटी)

अभिरक्षक का बच्चे के साथ बात करते हुये बिताया हुआ समय और अंतराल	प्रायः/कभी–कभी

2. गुण (क्वालिटी)

अ) प्रायः प्रयुक्त किये गये वाक्य प्रकार	केवल प्रश्न और आदेश प्रायः प्रयुक्त/हाँ / नहीं ।
आ) नियोजित पद्धतियाँ	केवल कुछ संदर्भ जैसे कहानी सुनाते समय । हाँ / नहीं ।
	दैनिक क्रियाकलाप के समय/हाँ/नहीं
इ) स्पष्ट वाक् बोलने के लिये प्रायः मांग करना	हाँ/नहीं

3. अन्य सूचना

IV. विषय-वस्तु/बच्चे की भाषा-योग्यता

1. **शब्द** :

अ) नामिक

आइटम्स्	संग्रहण आइटमों की संख्या	अभिव्यक्ति आइटमों की संख्या
आहार वस्तु		
फल		
कपडे		
फर्नीचर		
शरीर के भाग		
परिवार के सदस्यों का नाम		
वाहन		
अन्य		

आ) क्रिया शब्द

	संग्रहण है / नहीं / निश्चित नहीं	अभिव्यक्ति है / नहीं / निश्चित नही
सोना		
बैठना		
खडे होना		
दौडना		
कूदना		
ब्रशकरना		
मारना		
देना		
बात करना		
कंधी करना		
जाना		
ढकेलना		
खिंचना		
टपकना		
अन्य		

इ) सर्वनाम

	संग्रहण है / नहीं / निश्चित नहीं	अभिव्यक्ति है / नहीं / निश्चित नहीं
मैं		
मेरा		
तुम		
तुम्हारा		
वह/उसका		
वे		
उनका		
शी		
हर्स		
इट		
इटस्		

ई) संज्ञा परिवर्तक

	संग्रहण है / नहीं / निश्चित नहीं	अभिव्यक्ति है / नहीं / निश्चित नहीं
बड़ा		
छोटा		
पास		
दूर		
खुश		
दु:ख		
उँचा		
ठिगना		
अच्छा		
बुरा		
मोटा		
पतला		
साफ		
गंदा		
अधिक/ज्यादा		
कम		

उ) **क्रिया परिवर्तक**

	संग्रहण है / नहीं / निश्चित नहीं	अभिव्यक्ति है / नहीं / निश्चित नहीं
अंदर		
पर/उपर		
नीचे		
के द्वारा / से		
पास में		
बीच में		
तेज		
धीरे		
अब		
वहाँ		
यहाँ		

ऊ) **समुच्चय बोधक**

	संग्रहण है / नहीं / निश्चित नही	अभिव्यक्ति है / नहीं / निश्चित नही
और		
किंतु		
या		
कारण		
इसलिये		
जैसाकि,		
न तो और न		
या तो		
बाद में		
जब तक तब तक		

2. अर्थ संबधी आशय

	संग्रहण है / नहीं / निश्चित नही	अभिव्यक्ति है / नहीं / निश्चित नही
मूर्त		
अमूर्त		
अदृश्य		
आवर्तन/आवृत्ति		
इंकार/अस्वीकार।		
इंकार/नकार		
स्थान		
स्वामित्व/अधिकार		
क्रिया		
आरोपण		
वस्तु		
कर्ता/एजेंट		

3. **प्रारंभिक वाक्य**

	अभिव्यक्ति हैं / नहीं / निश्चित नहीं
कर्ता + क्रिया	
क्रिया + वस्तु	
कर्ता + वस्तु	
क्रिया + स्थान	
वस्तु + स्थान	
स्वामित्व + स्वामी	
वस्तु + आरोपण	
निरूपक + वस्तु	

4. वाक्यों के प्रकार

		संग्रहण : हाँ / नही / निश्चित नहीं	अभिव्यक्ति हाँ / नही / निश्चित नही
घोषणात्मक/ कथनात्मक			
नकारात्मक	– नहीं		
	– न		
	– नही हो सकता		
प्रश्न			
	हाँ/नहीं		
	प्रश्नात्म रूप में		
	कौन		
	कहाँ		
	क्या		
	कौनसा		
	कब		
	कैसे		
	क्यों		
जटिल/संयुक्त वाक्य			

5. **शब्दांत (व्याकरणिक रूपिम)**

	संग्रहण है / नहीं / निश्चित नहीं	अभिव्यक्ति है / नहीं / निश्चित नहीं
बहुवचन		
वर्तमान सतत्		
भूतकाल		
भविष्यकाल		
प्रथम पुरुष		
द्वितीय पुरुष		
तृतीय पुरुष		
लिंग		
– पुल्लिंग		
– स्त्रीलिंग		
– नपुंसक		

V. भाषा प्रयोग

1. **अभिव्यक्ति के प्रकार**

अ) अधिकतर मौखिक

आ) अधिकतर सांकेतिक

इ) दोनों

2. **वाक् ध्वनि उत्पादन**

त्रुटियों के प्रकार	स्थान		
	प्रारंभ	बीच	अंत
– स्थानापन्न			
– विलोपन			
– विकृति			
– जोड			

3. **वाक्-स्पष्टता** अ) अच्छा आ) साधारण इ) न्यून

4. **प्रयुक्त कुशलतायें** उपस्थित अनुपस्थित विवरण

अ) बातचीत शुरु करने की

आ) बारी लेने की

इ) बातचीत की समाप्ति की

5. **इशारे**

अ) संख्या

आ) इशारों का संयोजन	हाँ	नहीं	विवरण
इ) दूसरों के इशारों को समझना	अच्छा	साधारण	न्यून

परिशिष्ट 6.3

नामिक शब्दावली फॉर्म

इस फॉर्म से बच्चे के शब्दों के प्रयोग के बारे में– संग्रहण और अभिव्यक्ति दोनों को हम जान सकते हैं । निर्धारण और अंतराक्षेपण दोनों के लिये शब्दावली का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि, सभी शब्दों को आदेशात्मक रूप से जांचने की आवश्यकता नही है । यह इसलिये कि, शब्दों का चुनाव बच्चे का संदर्भ, आवश्यकतायें और वातावरण पर आधारित है । इसलिये कोई अन्य आइटम जो बच्चे के वातावरण के लिये सही है, उसको शब्दावली में जोड सकते हैं और जो आइटम्स्आवश्यक नही है उनका विलोप कर सकते हैं । एक शब्द का अंतिम चुनाव शिक्षक को ही करना पडता है जिसमें उस बच्चेके वातावरण को ध्यान में रखना पडता है ।

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति- कहना /संकेत करना
वर्ग 1. आहार वस्तुयें		
1. चावल		
2. दाल		
3. रोटी		
4. आटा		
5. चीनी		
6. पानी		
7. सांबार		
8. सब्जी		
9. छाँछ		
10. दही		
11. अचार		
12. दूध		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
13. कॉफी		
14. चाय		
15. बिस्कूट		
16. चॉकलेट		
17. आइस–क्रीम		
18. घी		
19. तेल		
20. जीरा		
21. राई		
22. काली मिर्च		
23. हरी धनिया / धनिया		
24. पुदीना		
25. मेथी		
26. पालक		
27. अंडा		
28. चना		
29. ब्रेड		
30. मस्का		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
वर्ग 2. कपडे और प्रसाधन		
1. शर्ट		
2. ब्लाउज		
3. स्कर्ट		
4. शॉर्टस		
5. फ्रॉक		
6. जूते		
7. मोजे		
8. रूमाल		
9. साडी		
10. पावडर		
11. सेफ्टी पीन		
12. बालों की पीन (क्लीप)		
13. झूमके		
14. चुडियाँ		
15. चोटी		
16. पैंट		
17. सैंडल्स		
18. चप्पल		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
19. लूँगी		
20. अंडरवीयर/ब्रीफस		
21. पोशाक		
22. बेल्ट		
23. पैजामा		
24. टोपी		
25. चुडिदार		
26. दुपट्टा/चुन्नी		
27. सलवार		
28. फुन्नी		
29. फुन्नी		
30. अंगुठी		
31. बिंदी		
32. काजल		
33. नाइट ड्रेस		
34. हाफ सारी		
35. लॉंग स्कर्ट		
36. सर का तेल		
37. ब्रेसलेट		
38. जीन्स		
39. टी–शर्ट		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना ।
वर्ग–3: रसोई के आईटम्		
1. चम्मच		
2. चाकु		
3. ग्लास		
4. प्लेट		
5. बॉटल		
6. कप–तश्तरी		
7. स्टोव		
8. गॅस		
9. बरनी/जार		
10. काडी की डिबिया		
11. काडी		
12. आग		
13. टीन		
14. ढक्कन		
15. मिक्सी		
16. ग्राईंडर		
17. लाइटर		
18. वॉटर फिल्टर		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
19. कूकर		
20. केरोसीन/घासलेट		
21. सूप		
22. नारियल की झाड़ू		
23. ओवन		
24. मसाले का डिब्बा		
25. टेबल मॅट		
26. फ्राईंग पॅन/तवा		
27. सींक		
28. ब्रश		
29. क्लिनिंग पावडर		
30. अन्यबर्तन		
वर्ग–4– पशु		
1. बिल्ली		
2. कुत्ता		
3. गाय		
4. बकरी		
5. सुअर		
6. घोडा		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
7. गधा		
8. चूहा		
9. छिपकली		
10. बैल		
11. भैंस		
12. भेंड		
13. बंदर		
14. शेर		
15. सिंह		
16. हाथी		
17. खरगोश		
18. लोमड़ी		
19. भेड़िया		
20. जिराफ		
21. सर्प		
22. गिलहरी		
23. भालू		
24. सौंड/वृषभ		
25. मछली		
26. मुर्गी		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
वर्ग/श्रेणी 5: फल		
1. केला		
2. आम		
3. अमरूद		
4. संतरा		
5. अंगूर		
6. सेव		
7. अनन्नास		
8. शरीफा/सीताफल		
9. कठबेल		
10. खरबूज		
11. कटहल/फनस (जैक फ्रूट)		
12. रॉकमेलन		
13. अनार		
14. निंबू		
15. गुजबेरी/काकाबदरी		
16. लिची		
17. जरदालू		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
18. चिकू		
19. बादाम		
20. काजू		
21. पपीता		
22. खजूर		
वर्ग–6 : फूल		
1. चमेली		
2. गुलाब		
3. सूरजमुखी		
4. कमल		
5. डेरा क्रीसन्थमम		
6. गेंदा		
7. दिसम्बर		
वर्ग–7: कीड़े		
1. झिंगुर		
2 मच्छर		
3. चिंटी		
4. मक्खी		
5. खरमल		
6. पतंगा/शलभ		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
7. तितली		
8. चिउरा		
9. मकडी		
10. शतपद/कनखजुरा		
11. गोजर/रामघोडी		
12. कीड़ा		
13. इल्ली		
14. केंचुआ		
वर्ग–8: पंछी		
1. कौआ		
2. गौरैया/चिडिया		
3. तोता		
4. मुर्गी		
5. बतख		
6. सारस/क्रौंच		
7. पपीहा/कोयल		
8. गरूड		
9. कबूतर		
10. चूजा		
11. मुरगा		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
12. मोर		
13. उल्लू		
वर्ग–9: सब्जी/तरकारी		
1. आलू		
2. प्याज्		
3. टमाटर		
4. बिन्स		
5. बैगन		
6. बीटरूट/शलगम		
7. भिंडी		
8. निंबू		
9. नारियल		
10. मिर्च		
11. हरी सब्जियाँ		
12. पत्ता गोली		
13. फूल गोभी		
14. गाजर		
15. कद्दू		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
16. अदरक		
17. लहसून		
18. मूली		
19. चना		
20. शिमला मिर्च		
21. चिचिण्डा		
वर्ग–10: फर्नीचर		
1. मेज		
2. कुर्सी		
3. सोफा		
4. पलंग		
5. चटाई		
6. स्टूल		
7. बैंच		
8. डेस्क		
9. मोढ़ा / मूढ़ा		
10. आराम कुर्सी		
11. अलमारी		
12. टी.वी. स्टैंड		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
13. ड्रेसिंग टेबल		
14. ड्रेसिंग आईना/मीरर		
15. तिपाई		
16. डाइनिंग टेबल		
वर्ग–11: वाहन		
1. सायकल		
2. बस		
3. कार		
4. लॉरी		
5. स्कूटर		
6. मोपेड		
7. आटो		
8. रिक्षा		
9. मोटर बाईक		
10. बैल–गाडी		
11. घोडा–गाडी		
12. वॅन		
13. रेल गाडी		
14. हवाई जहाज		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
15. ट्रॅक्टर		
16. ट्रॉई साईकल		
17. जहाज		
18. नाव/बोट		
19. हेलिकॉप्टर		
20. रॉकेट		
21. मिनि बस		
वर्ग–12: सामान्य आइटम्स्		
1. पलंग		
2. तकिया		
3. बेडशीट ओढना		
4. ब्लैंकेट		
5. रिफिजरेटर		
6. टी.वी.		
7. रेडियो		
8. लाईट		
9. बल्ब		
10. ट्यूब		
11. पंखा		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
12. स्वीच		
13. प्लग		
14. कूलर्स्		
15. टेप रेकॉर्ड		
16. इस्तरी		
17. कैसेट		
18. विडियो		
19. कैमेरा		
20. फोटो		
21. घडी		
22. हवा		
23. डिजल		
24. पेट्रोल		
25. बैग/थैला		
26. वेस्ट पेपर बास्केट		
27. चश्मा		
28. परदे		
29. गालिचा		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
30. कैलेंडर		
31. कंघी		
वर्ग–13: स्कूल आइटम्स्		
1. पुस्तक/कागद		
2. टेक्स्ट बुक/पाठ्य पुस्तक		
3. नोट बुक		
4. पेन्सिल/कलम		
5. पेन्सिल का डिब्बा		
6. रंगीन पेन्सिल्स्		
7. क्रेऑन्स		
8. स्केच पेन्स		
9. पेन		
10. श्यामपट्ट		
11. बॉलपेन/इंक पेन		
12. पेन नीब		
13. पेन कॅप		
14. रबड		
15. चॉक/खडू		
16. स्लेट		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
17. युनिफॉर्म		
18. डस्टर		
19. इंक/स्याही/रिफिल		
20. स्केल/रूलर		
21. बैग/थैला		
22. परीक्षा		
23. छुट्टी		
24. समय-सारणी/टाईम-टेबल		
25. अंक		
26. क्लास की अवधि		
27. डेस्क		
वर्ग–14: शरीर के अंग		
1. सर		
2. गर्दन		
3. हाथ		
4. पैर		
5. छाती		
6. पेट		
7. पीठ		
8. चेहरा		
9. आँखे		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
10. कान		
11. नाक		
12. मुँह		
13. गाल		
14. ठ्यूडी		
15. मस्तक/माथा		
16. बाल		
17. उंगलियाँ		
18. कलाई		
19. बाँहें		
20. द्विशीर/पेशी		
21. मांडी		
22. तलुवा		
23. हथेली		
24. ओंठ		
25. घुटना		
26. कमर		
27. टखना		
28. जीभ		
29. नाखून		

नाम	संग्रहण	अभिव्यक्ति–कहना/संकेत करना
वर्ग–15: पारिवारिक सदस्य		
1. पिता		
2. माता		
3. भाई बडा/छोटा		
4. बहन बडी/छोटी		
5. दादा		
6. दादी		
7. नाना		
8. नानी		
9. चाचा/मामा/मौसा		
10. चाची/मामी/मौसी		
11. मित्र		
12. छोटे भाई/बहन		
13. भतीजी.		
14. भतीजा		
15. ससूर		
16. सास		
17. जीजाजी/साला		
18. बेटा		
20. बेटी		

उच्चारण तालिका/सूची

हर एक स्वनिम के तीन शब्द दिये गये हैं,(जो तीन स्थानों में हैं जैसे प्रारंभ, मध्य, और अंत)। सबसे उपर के शब्द तेलगु में, बीच के हिंदी भाषा में और नीचे इगलीश में है । ये शब्द आदेशात्मक नही हैं । वे इसलिये चुने गये हैं क्योंकि, ये सामान्यतः प्रयुक्त होते हैं । कोई और शब्द जो सामान्यतः प्रयुक्त हों, उसका प्रयोग कर सकते है, केवल सामान्यतः प्रयुक्त स्वनिमों को ही इसमें दिया गया हैं ।

स्वनिम–	स्थान		
	प्रारंभ	मध्य	अंत
ई	ईःगा	भीसम	लॉरी
	ईख	दीपक	रोटी
	ईट	पीपुल	स्काय
इ	इल्लू	किटकी	बडी
	इडली	तील	पानी
	इंक	निट	–
ए	एनुगु	मेका	सरे
	एनक	डेरा	सारे
ए (ह्रस्व)	एद्दू	चेरऊ	वंटे
	सेवा	मेरे	–
	लेम	बे	–
अः	आऊ	दारम	डब्बा
	आलू	चावल	आटा
	अंकल	रॅट	–
अ	अद्दम	पलका	ईगा
	आम्मा	घर	धागा
	अप	हट	–
ओ	ओडा	कोती	कुरचो
	ओखली	धोती	भागो
ऊ	ऊगू	मूटा	–
	ऊँट	पूरी	–
	–	फूड	ब्लू

च	चेपा	मंचमु	–
	चप्पल	मछली	नाच
	चीन	टीचर	वॉच
ज	जेबु	गाजुल्लू	–
	जीब	गाजर	कागज
	जिप	रेजर	नोज
फ	फोनु	काफी	
	साफ	सफ़र	बर्फ
	फोर	सोफा	रूफ
व	वाना	पावला	–
	–	हवा	–
	वॅन	सेवन	फाईव
श	शंकम	तमाशा	रमेश
	शीखर	नाश्ता	–
	शीप	फैशन	पूश
स	सीसम	पसपू	–
	साँप	पैसा	–
	सोप	पेंसिल	बस
र	राइलू	परपु	
	रेल	सूरज	चार
	रोप	अँरो	कार
द	दीपम	अद्दमु	–
	दादा	बंदर	मदद
	दी	मदर	–
क	कम्बु	आक्का	–
	कान	लकडी	पालक
	काऊ	ॲक्सिडेंट	बुक
ग	गुड्डु	गोडगु	–
	गमेला	अंगुर	आग
	गोट	वॅगन	लेग
ट	टोपी	चेट्टू	–
	टमाटर	कटोरी	सीट
	टी	कॉटन	कोट
ड़	डब्बा	गुडी	–
	डेरा	सड़क	गुड
	डॉग	बॉडी	हेड

उ	उडता	तलुपु	मुक्कु
	उल्लू	कुत्ता	भालू
	–	बुक	च्यू
आई (ऐ)	ऐदू	पैसा	–
	आईस	बाईक	हाई
औ	आऊनु	गौनु	–
	और	भौज	–
	औल	हाउज	कौ
म	मेका	बोम्मा	–
	मोर	गमला	नाम
	मॅन	लेमन	आर्म
न	निच्चना	कन्नू	पेन
	नमक	खाना	कान
	नोज	बनाना	स्पून
ल	लड्डू	चिलका	–
	लाल	नाला	नील
	लैप	बलून	बॉल
य	यंत्रम	राई	–
	यम	छाया	गाय
	यू	क्रायन	बाई
प	पूवू	पापा	–
	पानी	कपडा	साँप
	पिग	पप्पी	कप
ब	बुट्टा	तबला	–
	बिल्ली	कबुतर	किताब
	बॉटल	बेबी	बल्ब
त	तलुपु	कत्तेरा	–
	तितली	पत्ता	रात
	–	–	–

परिशिष्ट 6.5

केस का उदाहरण
वाक् तथा भाषा निर्धारण प्रोफॉर्मा

नाम सी.एम दिनांक 7.6.91

आयु/लिंग 11 पुरुष फाईल सं. 109/90

प्रयुक्त भाषा
घर में : तेलुगु
स्कूल में: तेलुगु
अन्य परिस्थितियों में: तेलुगु

प्रमुख घटना
माइल्ड मानसिक मंद बच्चा

अन्य -

I. वाक् यंत्र (मेक्यानिजम) की रचना तथा कार्य

रचना	प्रकटन/उपस्थिति: सामान्य	प्रकटन/उपस्थिति: असामान्य	कार्य	उपस्थित	अनुपस्थित
ओंठ	✓		बाहर निकालना	हाँ	
			अंदरखिंच लेना	हाँ	
जीभ		✓	बाहर करना/खिचना/लेना		
			पीछे लेना	हाँ	
			उपर उठाना	हाँ	
			आस पास घुमाना	हाँ (मंद/सुस्त)	
कठिन तालू	✓				
नरम तालू	✓		उपर/नीचे होना	✓	

II. श्रवण जांचसूची

		जांच करें हाँ/नहीं	राय
1.	जन्म के समय		
	अ) क्या आपका बच्चा जोर/तेज आवाज से उठता है?	हाँ	
	आ) क्या आपका बच्चा आवाज से चौंकता है या रोता है ?	हाँ	
	इ) क्या आपका बच्चा वाक्/बात सुनता है ?	हाँ	
2.	3 महिने		
	अ) क्या आपका बच्चा धीमी आवाज को सुनता है ?	हाँ	
	आ) क्या आपका बच्चा माँ की आवाज को पहचानने जैसा लगता है ?	हाँ	
	इ) क्या आपका बच्चा आवाज या वाक् सुनकर अपना खेल थोडी देर के लिये रोकता है ?	हाँ	
	ई) क्या आपका बच्चा बात करने वाले की ओर मुडने की कोशिश करता है ?	हाँ	
3.	6 महिनें		
	अ) क्या आपका बच्चा "नहीं" सुनकर या अपना नाम सुननेपर प्रत्युत्तर देता है ?	हाँ	
	आ) क्या आपका बच्चा कहीं से आ रही आवाज को सुनकर उस ओर सर मोडता है ?	हाँ	

		निर्धारित कीजिये हाँ/नहीं	राय
4.	**9 महिने से /1 वर्ष**		
	अ) क्या आपका बच्चा नई ध्वनि को सुनकर ढूँढता या चारो ओर देखता है ?	हाँ	
	आ) क्या आपका बच्चा उसे बुलाने पर सर उठाकर देखता है ?	हाँ	
	इ) क्या आपका बच्चा निवेदनों का पालन करता है । ("यहाँ आओ क्या तुम्हे और चाहिये"?)	हाँ	
5.	**2 1/2 वर्ष–4 वर्ष**		
	अ) क्या आपका बच्चा आवाज का ध्यान देता है ? (कुत्ते का भौंकना, टेलीफोन की आवाज, टी.वी, की आवजा, दरवाजा खरखराने की आवाज आदि)	हाँ	
	आ) टी.वी या रेडियो सुनने के समय आवाज (लाउडनेस) उतना ही रखता है, जितना अन्य सदस्य रखते हैं ?	हाँ	
	इ) दूसरे कमरे से आवाज देने पर आपका बच्चा सुनता है ?	हाँ	

श्रवण शक्ति सामान्य है ।

निर्देशः बच्चे की आयु के आधार पर प्रत्येक प्रश्न पढ़िये और "हाँ" या "नहीं" जांचिये । यदि अधिकांश उत्तर "हाँ" में हों तो श्रवण शक्ति सामान्य है । और यदि अधिकांश उत्तर "नहीं" में हों तो "ऑडियॉलॉजिस्ट और स्पीच पैथॉलॉजिस्ट से संपर्क करें ।

एन.ए.एच.एस.ए. ब्रोचर्स, हाऊ इज युवर चाइल्ड हियर अँड टॉक, (1986) से उध्दृत है ।

III. बच्चे का भाषा आगत

अभिभावक-बच्चे की पारस्परिक क्रिया (पेरेंट चाइल्ड इंटरेक्शन)

1) परिमाण (क्वांटिटी)
अभिरक्षक का बच्चे के साथ बात करते हुये बिताया हुआ समय और अंतराल — ✓ प्रायः/कभी-कभी

2) गुण (क्वालिटी)

अ. प्रायः प्रयुक्त किये गये वाक्य प्रकार — केवल प्रायः प्रश्न और आदेश प्रयुक्त - नहीं

आ. नियोजित पद्धतियाँ — केवल कुछ संदर्भ जैसे कहानी सुनाते समय - हाँ/नहीं दैनिक क्रियाकलाप के समय - हाँ/

इ. स्पष्ट वाक् बोलने के लिये प्रायः मांग करना — ✓ हाँ/नहीं

IV. विषय वस्तु/बच्चे की भाषा-योग्यता

1) **शब्द :**

अ) नामिक

आइटम्स्	संग्रहण आइटमों की संख्या	अभिव्यक्ति आइटमो की संख्या
अन्न	20/30	12/30
फल	8/22	4/22
कपडे	13/39	6/39
फर्नीचर	5/16	3/16
शरीर के भाग	15/29	9/29
परिवार के सदस्यों के नाम	10/20	6/20
वाहन	8/21	6/21
अन्य	41/158	27/158

आ) क्रिया शब्द

	संग्रहण			अभिव्यक्ति		
	हाँ	नही	निश्चित नहीं	हाँ	नही	निश्चित नहीं
सोना	✓			✓		
बैठना	✓			✓		
खडे होना	✓			✓		
दौड़ना	✓				✓	
कूदना	✓				✓	
ब्रश करना	✓			✓		
मारना	✓			✓		
देना	✓				✓	
बात करना	✓				✓	
कंघी करना	✓				✓	
जाना	✓				✓	
ढकेलना		✓			✓	
खिंचना		✓			✓	
टपकना		✓			✓	
अन्य						

इ) सर्वनाम

	संग्रहण			अभिव्यक्ति		
	हाँ	नही	निश्चित नहीं	हाँ	नहीं	निश्चित नहीं
मैं	✓			✓		
मेरा	✓			✓		
तुम	✓			✓		
तुम्हारा	✓			✓		
वह/उसका	✓				✓	
वे	✓			✓		
उनका	✓				✓	
शी	✓				✓	
हर्स	✓				✓	
इट		✓			✓	
इटस्		✓			✓	

ई) संज्ञा परिवर्तक

	संग्रहण			अभिव्यक्ति		
	हाँ	नही	निश्चित नहीं	हाँ	नही	निश्चित नहीं
बडा	✓			✓		
छोटा	✓			✓		
पास		✓			✓	
दूर		✓			✓	
खुश	✓				✓	
दुःख		✓		✓		
ऊँचा	✓			✓		
ठिगना	✓				✓	
अच्छा		✓			✓	
बुरा		✓			✓	
मोटा		✓			✓	
पतला	✓				✓	
साफ	✓			✓		
गंदा	✓				✓	
अधिक/ज्यादा	✓				✓	
थोड़ा	✓			✓		

उ) क्रिया परिवर्तक

	संग्रहण			अभिव्यक्ति		
	हाँ	नही	निश्चित नहीं	हाँ	नहीं	निश्चित नहीं
अंदर	✓			✓		
उपर/पर	✓			✓		
नीचे	✓				✓	
के द्वारा/से		✓			✓	
पास में		✓			✓	
बीच में		✓			✓	
तेज	✓				✓	
धीरे	✓				✓	
अब	✓				✓	
वहाँ	✓				✓	
यहाँ	✓				✓	

ऊ) समुच्छाय बोधक

	संग्रहण हाँ / नही / निश्चित नहीं	अभिव्यक्ति हाँ / नही / निश्चित नहीं
और	✓	✓
किंतु/मगर	✓	✓
या	✓	✓
क्योंकि,	✓	✓
इसलिये	✓	✓
वैसे ही	✓	✓
न तो	✓	✓
या तो	✓	✓
बाद में	✓	✓
तब तक –जबतक	✓	✓

2. **अर्थ संबंधी आशय**

	संग्रहण			अभिव्यक्ति		
	हाँ	नही	निश्चित नहीं	हाँ	नही	निश्चित नहीं
मूर्त	✓			✓		
अमूर्त	✓			✓		
अदृश्य	✓			✓		
आवर्तन/आवृत्ति	✓				✓	
इंकार/अस्वीकार	✓				✓	
इंकार/नकार	✓				✓	
स्थान	✓			✓		
स्वामित्व/अधिकार	✓			✓		
क्रिया	✓				✓	
आरोपण	✓				✓	
वस्तु	✓				✓	
कर्ता/एजेंट	✓				✓	

3. प्रारंभिक वाक्य

	अभिव्यक्ति हाँ / नही / निश्चित नहीं	
कर्ता + क्रिया	✓	
क्रिया + वस्तु	✓	
कर्ता + वस्तु	✓	
क्रिया + स्थान	✓	
वस्तु + स्थान		✓
स्वामी + स्वामित्व	✓	
वस्तु + आरोपण		✓
निरूपण + वस्तु		✓

14. वाक्यों के प्रकार

		संग्रहण			अभिव्यक्ति		
		हाँ	नही	निश्चित नहीं	हाँ	नहीं	निश्चित नहीं
घोषणात्मक/ कथनात्मक		✓			✓		
नकारात्मक	– नही	✓			✓		
	– न	✓				✓	
	– नही हो सकता	✓				✓	
प्रश्न							
	हाँ/नहीं	✓			✓		
	प्रश्नात्म रूप में						
	कौन	✓				✓	
	कहाँ		✓			✓	
	क्या	✓			✓		
	कौनसा		✓			✓	
	कब		✓			✓	
	कैसे		✓			✓	
	क्यों		✓			✓	
जटिल/सयुक्त वाक्य			✓			✓	

5. **शब्दांत (व्याकरणीक स्थनिय)**

	संग्रहण			अभिव्यक्ति		
	हाँ	नही	निश्चित नहीं	हाँ	नही	निश्चित नहीं
बहुवचन	✓				✓	
वर्तमान सतत	✓			✓		
भूतकाल	✓				✓	
भविष्यकाल	✓				✓	
प्रथम पुरुष		✓			✓	
द्वितीय पुरुष		✓			✓	
तृतीय पुरुष		✓			✓	
लिंग						
– पुल्लिंग	✓				✓	
– स्त्रीलिंग	✓				✓	
– नपुसंक		✓			✓	

VI. भाषा प्रयोग

1. **अभिव्यक्ति के/का प्रकार**

अ) अधिकतर मौखिक

आ) अधिकतर सांकेतिक

✓ इ) दोनों

	स्थान		
2. वाक् ध्वनि उत्पादन	प्रारंभ	मध्य	अंत
त्रुटियों के प्रकार			
– स्थानापन्न	सभी स्थानों पर घोष के लिये उघोष		
– विलोपन			स, र s, r
– विकृति	नही		
– जोड	/स/ के पहले /इ/		

3. वाक् – स्पष्टता	अ) अच्छा	आ) साधारण ✓	इ) न्यून

4. प्रयुक्त कुशलतायें	उपस्थित/ हाँ	अनुपस्थित/ नही	विवरण
अ) बातचीत प्रारंभ करने की	✓		जब भी सूचना आवश्यकता हों वह प्रारंभ करता है ।

आ) बारी लेने की ✓

इ) बातचीत की समाप्ति की ✓

5. इशारे

अ) संख्या

आ)	इशारों का संयोजन	उपस्थित/हाँ	उपस्थित/नही ✓	विस्तृत
इ)	दूसरों के इशारों को समझना	अच्छा	साधारण ✓	न्यून

स्वः परीक्षा–6

I. निम्नलिखित वाक्यांश ध्यान से पढ़िये और "सही" या "गलत" बताइये ।

1. वाक् तथा भाषा का निर्धारण भाषा–अंतराक्षेपण के लिये आवश्यक नही है । सही/गलत

2. वाक् तथा भाषा निर्धारण कठिन है क्योंकि, निर्धारण के लिये आये मंद बुद्धि व्यक्ति अलग–अलग है । सही/गलत

3. निर्धारक को सामान्य वाक् तथा भाषा विकास की जानकारी रखनी चाहिये सही/गलत

4. अभिभावकों से इंटरव्यू निर्धारण की एक पद्धति है । सही/गलत

5. एल.ए.टी. आई.क्यू. निर्धारण का एक टेस्ट है । सही/गलत

6. मानसिक मंद बच्चों में श्रवण निर्धारण की आवश्यकता नही है । सही/गलत

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये –

7. निर्धारण के मूल कारण

_____

_____

_____

8. बच्चे के भाषा आगत के निर्धारण के समय आगत के_____ और_____ का अवलोकन करना चाहिये ।

9. बच्चे की भाषा योग्यता के निर्धारण का सबसे अच्छा तरीका है बच्चे का_____ _____ संदर्भ में अवलोकन करना

10. अंतराक्षेपण कार्यक्रम के समय निर्धारण को_____कहते है ।

11. भाषा-प्रयोग के क्षेत्र में निर्धारण करते समय निम्न लिखित विषयों को चुनना चाहिये (कोई तीन)

_____

_____

_____

12. भाषा-निर्धारण अति महत्वपूर्ण है क्योंकि, वो निम्नलिखित विषयों की सूचना देता है ।

_____

_____

_____

III. सही उत्तर चुनिये –

13. वाक् तथा भाषा निर्धारण के पद्धतियाँ हैं
   अ) बच्चे से प्रत्यक्ष रूप से पारस्परिक-क्रिया (इंटरॅक्शन)
   आ) अभिभावकों से इंटरव्यू
   इ) अभिभावक-बच्चे की मारस्परिक-क्रिया का अवलोकन करना ।
   ई) उपरोक्त सभी

14. वाक् तथा भाषा निर्धारण निम्नलिखित में से केवल_____को छोडकर सभी विषयों की सूचना देता है ।
   अ) बच्चे के कार्य का वर्तमान स्तर भाषा-प्रयोग के क्षेत्र में

आ) संप्रेषण के विभिन्न क्षेत्रों में तुलनात्मक ताकते एवं कमियाँ ।
इ) बौद्धिक योग्यता
ई) उपरोक्त में से कोई भी नही.

15. वाक्-ध्वनि-उत्पादन में सामान्य गलतियाँ
अ) स्थानापन्न
आ) विलोपन और विकृति
इ) विकृति और जोड
ई) उपरोक्त सभी

16. वाक् स्पष्टता (इंटेलिजिबिलिटी) को न्यून कहते है जब–
अ) केवल अभिभावकों द्वारा वाक् समझी जाती है ।
आ) अभिभावक तथा नये व्यक्ति दोनों से बात समझी जाती है ।
इ) दोनों से भी बात समझमें नही आती ।
ई) उपरोक्त कोई भी नही ।

17. आवाज के स्त्रोत की ओर मुडकर देखना सामान्य बच्चों में _____ उम्र से प्रारंभ होता है ।
अ) जन्मतः
आ) 2 1/2 वर्ष के बाद
इ) 6 महिने
ई) उपरोक्त कोई भी नही ।

स्वः परीक्षा–6 की कुंजी

1. गलत
2. सही
3. सही
4. सही
5. गलत
6. गलत
7. भाषा–समस्यावाले बच्चों को पहचानना, बेस लाइन कार्यस्तर को स्थापित करना, बढोत्तरी (प्रोग्रेस) का मूल्यांकन करना ।
8. भाषा-आगत के परिमाण और गुण
9. स्वाभाविक परिस्थितियाँ
10. पुर्नः मूल्यांकन
11. अभिव्यक्ति के प्रकार
    - वाक्-ध्वनि-उत्पादन
    - वाक्-स्पष्टता
    - प्रयुक्त कुशलतायें
    - इशारे
12. - संप्रेषण के विभिन्न क्षेत्रों में तुलनात्मक ताकतें एवं कमियाँ
    - बच्चे में पाई गई भाषा-संप्रेषण-समस्याओं की मदत करना/नही करना बताना
    - बच्चे का वर्तमान कार्यस्तर
13. ई
14. इ
15. ई
16. इ
17. इ

अध्याय 7

भाषा व संप्रेषण अंतराक्षेपण

पाठक ध्यान दे सकते हैं कि अध्याय के शीर्षक मे वाक् शब्द स्पष्टतः अनुपस्थित है । इसका यह अर्थ नहीं कि, हम वाक् की प्रमुख भूमिका को कम कर रहे है जो हमारे संप्रेषण का एक अनिवार्य अंग है । इसमे हम संप्रेषण की भूमिका पर प्रकाश डालना चाहते है जिस मे वाक् भी एक प्रमुख भाग है ।

हाल ही के वर्षों मे सामान्य भाषा विकास के अध्ययन द्वारा वाक् व संप्रेषण अंतराक्षेपण (भा.सं.अं.) को लाभ हुआ । इस क्षेत्र मे वर्तमान अनुसंधान ने अनुभव की भूमिका एवं प्रधानता पर जोर दिया है। ये अनुभव भाषायी कार्यों एवं अन्य भाषायी कार्यों दोनो मे महत्वपूर्ण हैं उसी प्रकार ज्ञानात्मक विकास की भूमिका का आलोचनात्मक महत्व है । सानात्मक विकास की भूमिका का आलोचनात्मक महत्व है। हमारे सारे अंतराक्षेपण वास्तव मे प्रत्यक्ष उपक्रम या अप्रत्यक्ष रूप से सानात्मक विकास के सुधार के लिये हैं ।

भा सं.अ. जानबुझकर करने का उपक्रम है, जो विद्यमान संप्रेषणात्मक व्यवहार मे सुधार लाता है तथा नये, संप्रेषण व्यवहार को सुसाध्य बनाने मे सुविधा उत्पन्न करता है । इसके अतंर्गत कारणों की पूर्णस्थापना (रिअरेंजमेंट ऑफ फॅक्टर्स) जो भाषा एवं संप्रेषण विकास को सुसाध्य बनाती है । भा.सं.अं. को चाहिये कि, अर्थपूर्ण परिस्थितियों मे व बच्चो मे संप्रेषण के इच्छा का विकास करने तथा उसको व्यक्त करने के लिए अर्थ पूर्ण स्थिति प्रदान करें ।

भाषा और संप्रेषण वि ;कास में उत्तेजना लाने के लिये अनेक कारकों का परिवर्तन करना चाहिये इसी प्रक्रिया को एलसीआई कहते हैं ।

अध्याय का उद्देश्य

पाठक को समर्थ करना कि,

1) भाषा व संप्रेषण अंतराक्षेपण को प्रभावित करने वाले मुख्य सिद्धांतों को समझ सके ।

2) वास्तविक रूप मे विभिन्न निर्धारित लक्ष्य चुन सकें ।

3) अंतराक्षेपण लक्ष्य को पाने के लिये बच्चे के प्रतिदिन की क्रियाकलापों को चुन सके ।

4) संप्रेषण प्रशिक्षण को पाठशाला के विभिन्न कार्यों में सम्मिलित किया जाय ।

5) भारतीय परिस्थितियों को ध्यान मे रखते हुए मानसिक विकलांगों के लिये सांकेतिक संप्रेषण की भूमिक (कार्य) एवं आवश्यकतों को समझ सके ।

भा.सं.अं. के प्रमुख सिद्धांत

बच्चों के भाषा व संप्रेषण कुशलताओं मे सहायता देने वाले वर्तमान उपयोगी कार्यक्रम मुख्यतः दो स्त्रोंतों से प्राप्त किये गये है– सामान्य बच्चों में भाषा विकास बढते हुए ज्ञान तथा दैनिक जीवन की परिस्थितियों मे कार्यात्मक संप्रेषण के बढते हु[illegible] व ।

उपर्युक्त क्षेत्रों में उपलब्ध जानकारी के परिणाम स्वरूप विचारों में परिवर्तन आया । वाक् व संप्रेषण अंतराक्षेपण केवल वाक् चिकित्सक द्वारा ही नही होती बल्कि, भाषा व संप्रेषण प्रशिक्षण भाषा चिकित्सक, अभिभावक तथा शिक्षकों द्वारा भी दिया जा सकता है, जो बच्चे के दैनिक जीवन में संपर्क रखते हैं । चुने गये प्रशिक्षण लक्ष्य तुरंत उपयुक्त शब्द व बच्चों पर केंद्रित होने चाहिये । मंद–बुद्धि बच्चों को अच्छी तरह सिखाने में वाक् चिकित्सक मददगार या मार्गदर्शक का कार्य कर सकता है । वास्तव मे कार्यक्रम लागु करने मे तथा अनेक कार्यक्रमों की योजना के अवसर पर अभिभावकों तथा अन्य परिवार के सदस्यों के सम्मिलित हुये बिना व शिक्षक से प्रभावित हुये बिना एक संप्रेषण प्रशिक्षण कार्य सफल नही हो सकता ।

एल.सी.आई को अभिभावकक और शिक्षक दोनों निपूणता के साथ [illegible]र सकते है ।

भाषा एवं संप्रेषण कार्यक्रम पर आधारित कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत निम्नलिखित है ।

1 बच्चों व उसके साथ रहने वाले बडे व्यक्तियों के बीच मे गहरा संबंध अंतराक्षेपण का एक प्रधान अंश है । बच्चे यह ध्यान देते है कि, अभिभावक व शिक्षक क्या करते हैं व बोलते है तथा उनके ध्यान एवं प्रशंसा से प्रसन्न होकर उनसे व्यवहार करता है।

भाषा अंतराक्षेपण में वयस्क और बच्चे के नि कट संबंध बहुत आवश्यक है ।

2. बच्चे के वाक् या अन्य संप्रेषण की प्रणाली के सीखने के कारणों पर विचारणीय बल दिया जाता है, जैसे उनका ध्यान आकर्षित करना, विरोध करना, निवेदन करना आदि, शब्दों या इशारो को एक कारण के लिये सीखना, अन्य कारणों के लिये भी उसी का प्रयोग करना आवश्यक नही है ।

3. भाषा व संप्रेषण सिखना बडों व बच्चों के परस्पर दिनचर्या पर निर्भर करता है, जिसमे दैनिक कार्य जैसे, कपड़े पहनना, खाना, धोना, आदि होते हैं । इन क्रियाकलापों को "संयुक्त दैनिक कार्य" (जॉईंट ॲक्शन रूटिन) कहा जाता है ।

4. बच्चों को उनके आसपास की दुनियाँ से रूचि होनी चाहिये। जिनमे ऐसे व्यक्ति सम्मिलित हो जो संबंधित घटनां और वस्तुओ को जोडने मे मदत दे सकें, हमे मंद-बुद्धि बच्चे या वयस्क मे अधिक सम्मिलित हो-कर दुनियाँ, मे रुचि बढाने व प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है ।

5. जैसे कि, बच्चा उसके वातावरण, लोग, कार्य, वस्तुओं के बारे में अधिक से अधिक जानना सीखता है, वह अधिक से अधिक अभिव्यक्त करने व समझने की पद्धतियाँ चाहता है । यह वाक् या संप्रेषण की कोई अन्य प्रणाली (माध्यम) भी हो सकती है । जैसे एक मंदबुद्धि व्यक्ति को वातावरण से व्यवहार अधिक से अधिक अनुभव करने तथा साथ ही साथ संप्रेषण बढाते हुये सुधार लाने की आवश्यकता है ।

6. मानसिक विकलांग बच्चों को अन्य लोगों के साथ या परस्पर मिलने का अवसर देने की आवश्यकता है । जिससे वे अपनी आवश्यकतायें बता सकें, ध्यान आकर्षित कर सकें, प्रश्न पूछ सकें व निर्देश दे सकें । उन्हें यह सीखने की आवश्यकता हो सकती है, कि, कैसे बातचीत प्रारंभ करें, कैसे एक विषय चुने व उसका निर्वाह करें, दूसरे का मानते हैं इसका अनुमान कैसे लगायें, उनकी बारी आने तक कैसे रूकें व कैसे बातचीत समाप्त करें ।

7. बच्चे के साथ हमें ऐसे संदर्भ की रचना करनी चाहिये जिसमें संप्रेषण का महत्व हैं । उसे बिल्कुल पूछे बिना कार्य न कर सकें। इससे संप्रेषण के कारण पर दिया जा रहा है ।

संप्रेषित संदर्भ का निर्माण करना चाहिये ।

8. भाषा को सामाजिक कार्य के रूप में मानना चाहिये जो वातावरण के संदर्भों में होते हैं । तब संप्रेषण लोगों के बीच पारस्परिकता या आदान-प्रदान का एक पहलू बन जाता है ।

9. भाषा सीखने में स्वर, शब्द, वाक्य, संकेत तथा उनके उपयोग के संग्रहण व अभिव्यक्ति दोनों सम्मिलित हैं । अंतराक्षेपण जो केवल अभिव्यक्ति या उच्चारण पर केंद्रित है वो स्पष्टतः असंगत है ।

10. बच्चों को केवल एक अवस्था (स्टेज) से दूसरी अवस्था तक ही मदत नही देना चाहिये (जैसे-शब्दों से वाक्यों तक) बल्कि, विद्यमान अवस्था तक उनके विस्तार में मदत करनी चाहिये ।

जो अंतराक्षेपण कार्यक्रम अभिव्यक्ति पर ही जोर देता है वो अनुचित है ।

11. बच्चों वयस्कों (बडों) के शब्द रूपों को लेकर शब्द बोलना नही शुरू करते तथा स्वयं निर्मित शब्द (बच्चों जैसे) बोलते है तथा धीरे-धीरे हो वयस्कों (बड़ों) की तरह बोलने का प्रयास करते है अतः मंदबुद्धि बच्चों को समान अवसर दिया जाये, बड़ों की तरह "सही" तरीके से बोलने की मांग हमें नही करनी चाहिये ।

12. बच्चों के लिये खेल–क्रियाओं को सीखने का प्रमुख माध्यम सामाजिक वातवरण में बनाया है, और उसका प्रयोग आशानुकुल (ऑप्टीमल) होना चाहिये ।

13. सभी प्रकार की अभिव्यक्तियाँ, वाक्, हावभाव, संकेत, संप्रेषण बोर्ड पर बल देना आवश्यक है, केवल 'वाक्' पर ही बल देना नही चाहिये ।

प्रत्येक अभिव्यक्ति पद्धति को महत्व देना चाहिये केवल वाक् को नहीं ।

14. अंतराक्षेपण की सभी प्रक्रियाओं का केंद्र है बच्चा जैसे लक्ष्य का चुनाव तथा बच्चे के स्तर और समस्याओं के योग्य क्रियाओं कोबड़ों की चुनना चाहिये, बड़ों की इच्छा से नही ।

15 भाषा के सीखने के तीन अंग हैं जिनका पारस्परिक संबंध है •।

1. क्या संप्रेषण करना (विषय वस्तु)

2. किस तरह से समझा जायें व अभिव्यकत किया जाये (रूप)

3. कैसे, कब, कहाँ भाषा की उपयोगिता है (उपयोग)

विषयवस्तु, रूप व प्रयोग ये तीनों पहलू एक ही साथ सीखे जाते हैं ।

16. भाषा का सामाजिक आधार बच्चे पर ध्यान देने वाले की पारस्परिकता को महत्व देता है ।

17. बच्चे को भाषा व संप्रेषण का महत्व उसी समय स्पष्ट होगा, जबकि, वह अपने वातावरण, जैसे व्यक्ति, वस्तुयें व क्रियाओं को नियंत्रित करेगा ।

बच्चा भाषा के संप्रेषण कार्य के लिये प्रयोग करेगा, जब उसको यह पता चलता है कि, वो वातावरण को नियंत्रित कर सकता है ।

• ब्लूम एंड लेही (1978) और इस मेनुयल के अध्याय–2 देखिए ।

इन सूचित सिद्धांतों के आधार पर ही भाषा संप्रेषण अंतराक्षेपण की आगे चर्चा की जायेगी, निम्नलिखित अनुच्छेद में कुछ सामान्य रूप से प्रयुक्त शिक्षा प्रणाली, तथा उसकी हानियाँ, सुधार किये गये शिक्षा अभ्यास के सुझाव, निर्धारण आंकड़े तथा लक्ष्य के चुनाव के जोड़ एवं अंत में इस लक्ष्य को पाने के क्रिया-कलाप ।

सामान्य अंतराक्षेपण प्रणालियाँ

संग्रहण तथा अभिव्यक्ति शब्दावली सिखाने व उनके साथ उनके उपयोगों की चार विशिष्ट प्रणालियाँ बताई गई हैं ।

1. संग्रहण कुशलतायें सीखाना-

इस स्थिति में विद्यार्थी को प्रारंभ में दो या दो से अधिक विकल्प (ऑलटरनेटिव) चुनने को कहे जायेंगें। जैसे एक प्रश्न की प्रतिक्रिया में जैसे "चाबियाँ कहां है बताओ जब सही विकल्प पर प्रतिक्रिया हों, तो सामान्यतः सही प्रतिक्रिया पर वस्तु के रूप में या मौखिक रूप से प्रशंसा की जाती है या उपहार दिया जाता है ।

इस प्रणाली का बहुत अधिक प्रयास किया गया व प्रभावित भी होगी यदि परिस्थिति में सही प्रतिक्रिया का निर्णय लिया गया हों। फिर भी यह स्थिति कई कारणों के लिये अनुठी या विशिष्ट है । यह स्थिति शिक्षक या निर्देशक द्वारा पूर्णतः नियंत्रित है, जो यह निर्णय लेता है कि, किस विषय पर बात हो तथा उसका उत्तर क्या हों जब बातचीत के विषयवस्तु की तुलना की गई हों तब । आगे, उपहार ऐच्छिक (ऑर्बीटरी) है । दूसरें शब्दों में हम बहुत ही अकृत्रिम शिक्षा प्रणाली से संपर्क रखते हैं (जब हम सामान्य भाषा विकास की तुलना करते हैं)

संग्रहण प्रशिक्षण के समय बच्चे को अनेक विकल्पों को इंगित करना एक कृत्रिम परिस्थिति है ।

*केरनन, रीड और गोल्ड बॉट (1987) देखिये ।

2. निर्देश पालन करना सीखना

व्यक्ति को केवल एक विशेष वस्तु दिखाने की अपेक्षा उन्हें निर्देशों का पालन करना सीखायें जैसे– यहाँ आओ,या इधर आओ, नीचे बैठो, खड़े रहो आदि । उपहार पुनः ऐच्छिक है तथा परिस्थिति शिक्षक के पूर्ण नियंत्रण में है ।

इस प्रणाली का कुछ महत्व उस समय है, जब हम ऐसे व्यक्ति से संपर्क रखते हैं जो बहुत कम परस्पर सामाजिक व्यवहार दिखाता है । यह दो शब्द निर्माण करना सीखाने में भी प्रयुक्त हो सकता है जैसे–संज्ञ+क्रिया के कई संयोजन में ।

3. अनुकरण प्रशिक्षण

यह प्रणाली सामान्यतः प्रारंभ में अभिव्यक्ति वाक् या संकेत सीखाने में प्रभावकारी प्रयुक्त होती है । विद्यार्थी के शिक्षक द्वारा प्रतिरूपण (मॉडलिंग) का प्रयोग होता है । जिसमें पहले शारीरिक रूपसे अनुबोध (प्रॉम्टींग) देते हैं, अभ्यास से बच्चा नई प्रतिक्रियाओं का अनुकरण करना सीखता है और यह इस प्रणाली को मूल्यवान बनाता है ।

अनुकरण प्रशिक्षण पुनः विशेषतः शिक्षक या निर्देशक द्वारा नियंत्रित है । फॉर्मेट मूलतः एक ही है जिसमें विद्यार्थी को बैठाकर उस समय तक शिक्षक की ओर देखना सिखाया जाता है, जब तक कि, विशेष निर्देश का संकेत न हों । जहाँ तक संभव हो बच्चा अच्छी तरह नकल करके सही उत्तर दें । उपहार ऐच्छिक है उदाहरण के लियें बच्चे से "चाय" जैसे शब्दों का अनुकरण करने के बाद बच्चे को थपथपाकर उपहार दिया जाता है, पढ़ाने की स्थिति पूर्णतः कृत्रिम है ।

4. अभिव्यक्ति करण कुशलता सीखाना :

अभिव्यक्तिकरण कुशलता प्रणाली में प्रायः उपयुक्त पध्दति है कि, विद्यार्थी को एक वस्तु, चित्र या घटना बतायें और कहें – "इधर देखो, यह क्या है ?" नाम बतायें या वह आदमी

• मैकब्रियन (1981) जैसे केरनन् (1987) में उधृत

क्या कर रहा है ? (वर्णन करें) आदि । यदि बच्चा सही उत्तर दें तो उसे उपहार देते हैं, यदि गलत हों, तो अनुबोध या प्रॉम्प्ट देते हैं और बाद में उपहार ।

यह प्रणाली पुनः प्रभावकारी हो सकती है, किंतु यह परिस्थिति प्रस्तुत करती है जो पूर्णतः कृत्रिम है और शिक्षक द्वारा नियंत्रित है, उत्तर, अपेक्षां के विपरीत हों तो उनका कोई महत्व नही है ।

उपरोक्त चार प्रणालियाँ हमें यही सुझाव देती है कि, बच्चे या तो अनुकरण करें, लोगों के नाम बताये, घटनायें बतायें इसका विवरण दें या फिर यह ध्यान रखा जाये कि, "व्यक्ति को अनुकरण करना सीखाना, नाम सिखाना या विवरण देना–शब्दावली या वाक्य रचना को सीखने में मदत करें यह आवश्यक नही है, जो बच्चे ने दूसरे उद्येश्य के लिये प्राप्त किया है, आगे उपरोक्त बताई गई प्रणालियों में बच्चा निश्क्रिय भागीदार है, जो पूछने पर ही उत्तर देता है । पुनः याद रखें कि; संप्रेषण एक ऐसी पद्धति है जिसमें व्यक्ति उनके वातावरण में कार्य करता है तथा अपने ही ढंग से उसमें परिवर्तन लाता है, जैसे, बच्चे से पूछा जा सकता है कि, उसे क्या चाहिये? "नही" कहें, सामाजिक पारस्परिक संबंध का निर्वाह करें, प्रश्न पूछे आदि । इसी परिप्रेक्ष्य को दृष्टि में रखते हुये यह देखना इतना कठिन नही है कि, सामान्य शिक्षण परिस्थितियों में, बच्चा भागीदार है तथा इसलिये इस शिक्षण पद्धतियों में परिवर्तन लाना आवश्यक है ।

बच्चे को अनुकरण करना, नाम बताना, विवरण देना सीखाने से बच्चे को शब्दावली या वाक्य रचना का प्रयोग करना नही आता है ।

परिवर्तन के लिये दिये गये सुझाव •

सामान्य एवं मानसिक विकलांग बच्चों के भाषा एवं संप्रेषण सीखने में वयस्क सुविधात्मक कार्य करते है जैसे बच्चे के वातावरण को बदलना । वातावरण में परिवर्तन हमें प्रभावकारी "संप्रेषण संदर्भ" निर्माण करने की ओर अग्रसर करते है । यदि किसी ने "संप्रेषण संदर्भ" निर्माण करने से संबंधित सम्मिलित पहलू सीख लिया हों तो शिक्षा प्रनाली बच्चे को प्रभावित भाषा व संप्रेषण प्राप्त करने में सहायता

• कीरमन् एट.आल. (1987); स्नाइडर–मेकलियन एट.आल. (1984); वेनराइपर (1990); और विनिट्ज (1983), के आधार पर

कर सकती है । कुछ अधिक सक्रिय रूप से एक दूसरे को प्रभावित करने वाले नमूने निम्न लिखित है ।

सक्रिय पारस्परिक क्रिया (ऑक्टिव इंटरॅक्शन पैटर्नस्) के नमूने बच्चे को प्रभावकारी भाषा संप्रेषण सीखने मे मदत करते है

1. **बच्चे की संप्रेषण आवश्यकताओं को संतुष्ट करना :**

इसमें बच्चे के संप्रेषण तथा पुनः व्यवस्थित वातावरण बनाकर बच्चे को अपने जरूरतों को पूछने पर प्रोत्साहित करना जिससे बच्चे को उस वस्तु को मांगने के अन्य शब्दों में हम संप्रेषण नामक संदर्भ में संप्रेषण की आवश्यकता का निर्माण करें ।

2. **"नही" बोलना या इंगित करना सीखाना :**

बच्चे को चाहिये कि, संकेत या शब्दों के प्रयोग द्वारा इन्कार करें, इसके लिए वातावरण को पुनः स्थापित करना चाहिये, बड़ो (वयस्कों) को चाहिये कि, बच्चे के निवेदन के बाद जानबूझकर गलत चयन करें ।

3. **दैनिक घटनाओं का उल्लंघन :**

इसमें दैनिक घटनायें जैसे पानी देना, भोजन करना, आदि का जानबूझकर उल्लंघन करना, जिससे बच्चे में प्रतिरोध जगाना, या बच्चे में विशेष पहलू के लिये ध्यान आकर्षित करना ।

4. **वस्तुओं को या उनकी बारी को रोकना :**

यह बच्चों को दूसरों का ध्यान केंद्रित करने के लिये वस्तु क लिये प्रार्थना, या टीका करने के लिये भाषा का अनुकरण करने में सहायक होता है ।

5. **वस्तु के कार्य का उल्लंघन या वस्तु का हेर फेर करना :**

जब बच्चे दैनिक कार्य से परिचित हो जाते है जैसे पेन खोलना और लिखना, कपड़ों में लगाना, बड़े (वयस्क) जानबूझकर दैनिक क्रियाओं का उल्लंघन करते है., जिससे बच्चों को उपदेश देने तथा विरोध करने की आवश्यकता है ।

6. **वस्तुये छिपाना :**

यह प्रणाली विशेषतः प्रश्नावली बनाने तथा प्रारंभिक प्रतिवाद को सुगम बनाने में उपयोगी है । बच्चा देखता है कि, वस्तु उपस्थित या विद्यमान, नही है और पूछता है कहाँ है ?

7. **भूमिका उलटना (रोल रिवर्सल) :**

इसमें बच्चा बड़ों के आदेशों का पालन करता है और उत्तर देता है, तब भूमिका उलटी हो जाती है, जिससे बच्चा प्रश्न पूछकर स्थिति पर नियंत्रण कर पाता है । इस अनुकरण में बड़ो का नियंत्रण कम हो जाता है और बच्चे का उत्तेजना स्तर अधिक हो जाता है ।

अर्थपूर्ण परिस्थिति भाषा सीखने के लिये आवश्यक है ।

8. **टी पार्टी टेकनिक :**

इस टेकनिक में अर्थपूर्ण ढंग से भाषा सिखाई जाती है, जैसे चाय पार्टी, प्रीति भोज स्थिति आदि । इसमें बच्चा पहले सामान्य अर्थपूर्ण स्थितियों में ज्ञान आधार पाता है । उदाहरण के लिये–एक चाय पार्टी, भाव यह है कि, इसमें बच्चा कप, प्याली, प्लेट, छूरी, चाय, दूध, चीनी आदि के प्रयोग से कैसे एक टी पार्टी चलाई जाती है, और उससे संबंधित कार्य जैसे चाय हिलाना, काटना, उंडेलना आदि सीखता है । ध्यानपूर्वक संयोजित और नियंत्रित किए नैसर्गिक परिस्थितियों में बच्चे को स्थिति में सम्मिलित होना सीखाया जाता है, जहाँ भाषा सग्रहण की सुविधा हों । भूमिका उलटकर इन परिस्थितियों में अभिव्यक्ति करण भी सीखाया जा सकता है । दैनिक कार्यों भी विभिन्न रूप से प्रयुक्त करके नये संप्रेषण तरीके सीखायें और प्रयुक्त किये जा सकते है ।

9. **सम्मिलित क्रियाकलाप (जॉईंट ॲक्शन रूटीन्स्) :**

यह पद्धति भी चाय–पार्टी टेकनिक के समान ही है, जिसमें स्थिति या स्थिति का क्रम जैसे–बस यात्रा, भोजन का समय इत्यादि के साथ चुने गये एक कर देनेवाले प्रसंग तथा ध्यानपूर्वक चुने गये अपेक्षित शब्द, वाक्य, हाव–भाव तथा संकेत जिससे कार्य निर्धारित किये जा

• ब्रिंकर (1978) जैसे कीरनन् (1987) मे उधृत

•• स्नाइडर–मेक्लियन एट.आल. (1984) जैसे कीरनन् (1987) मे उधृत

सकते हैं, स्थिति का पालन करते समय सम्मिलित वयस्क (बड़े) निम्नलिखित में से किसी भी तकनीक का विभिन्न अभिव्यक्ति संग्रहण के लिये प्रयोग कर सकते हैं ।

तोडफोड करना या बिगाड़ना – जानबूझकर उपकरण खिलोनों में परिवर्तन लाना जो अकथनीय घटना की ओर अग्रसर करता है ।

विलोपन – बच्चे या विद्यार्थी से अपेक्षित कार्य को नही करना ।

गलतियाँ (एरर) – कुछ कार्यको गलत रूप से करना जैसे – चाय में चाकु से चीनी मिलाना ।

घटनामें – दैनिक संदर्भ में नये कार्य करना ।

चुनाव – विकल्प देना – जैसे – कक्षा में दो प्रकार की पुस्तके प्रस्तुत करना ।

कुछ प्रणालियाँ बच्चे के स्तर से मेलखाने के संयोजन में तथा परिस्थिति में प्राप्त सुविधाओं में प्रभावकारी प्रयुक्त की गई हैं ।

संयुक्त दैनिक क्रियाओं का कुशलता पूर्वक प्रयोग करना चाहिये जिससे बच्चा संप्रेषण करने में उत्तजित होता है ।

10. **भाषा विवरण/कहानी तकनीक :**

बच्चों के लिये कहानी का अर्थ है आमोद-प्रमोद तथा उत्तेजना, विशेषतः यदि कहानीकार कहानी की घोषणा करते समय तथा पाठक को उचित सामग्री प्रदान करते समय सजीव नाटकीय प्रभाव जोडता हों ।

कहानी का प्रयोग करते समय विशेषत : उनके आसपास के विषय से परिचित तथा मोहक हों तो बच्चों के लिये सीखने का अनुभव मिलता है जो शिक्षकों के लिये चुनौती है ।

यह तकनीक व्याकरणीक नियमों द्वारा भाषा में सुधार पर जोर देती है । यह वाक्य रचना, शब्दावली के विषय में तथा के नियंत्रित वर्ग

• मेकगिवरन् एट.आल. (1978) के आधार पर

को सीखाने के लिये भी प्रयुक्त हो सकती है । भाषा कहानी विद्यार्थी को व्याकरणीक नियमों का अभ्यास, उन्हें घटनायें बताकर तथा बार-बार कहानी में बताये गये चरित्र द्वारा कथन का अवसर प्रदान करती है । कहानी माध्यम स्थिर अनुकरणीय पद्धति से अधिक वाक्य रचना पर जोर देती है । विद्यार्थियों को अर्थ विज्ञानात्मक आधार प्रदान किया जाता है । जिससे वे कहानी को समझें और कहानी में प्रस्तुत रचना का निर्माण करें ।

"कहानी बोलना" तकनिक में प्रारंभ में अर्थ क्रिया संबंधी विषयवस्तु पर जोर देना चाहिये बाद में वाक्य विन्यास रचनाओं पर ।

भाषा पर एक टिप्पणी

हमारा समाज स्वाभाविक रूप से द्विभाषी या बहुभाषी है, जैसे - हम एक से अधिक भाषायें बोलते हैं । अधिकतर साधारण बच्चे दो या तीन भाषायें एक साथ सीखने में कठिनाई का अनुभव नही करते । फिर भी, मानसिक रूप से मंद बच्चे एक से अधिक भाषा सीखने में समस्या या कठिनाई का अनुभव कर सकते हैं । यह स्पष्ट है कि, मानसिक रूप से मंद बच्चे प्रशिक्षण तथा मदत से भी एक भाषा पर भी अधिकार पाने में समस्या का अनुभव करते है । इसलिये यह परामर्श दिया जाता है कि, एक भाषा चुनी जा सकती है, जिसमें प्रशिक्षण पूरा कर सकें । यह भाषा ऐसी हों जिसमें बच्चा अपने दैनिक जीवन में उस भाषा का अनुभव करता है । शिक्षक को चाहियें कि, अभिभावकों के परामर्श में व्यावहारिक निर्णय लें ।

जो भाषा बच्चे के साथ अधिकांश समय प्रयुक्त होती है, उसको चुनना चाहिये ।

अंतराक्षेपण के लिये निर्धारण आंकड़े का प्रयोग करना -

पाठक से निवेदन है कि, पाठ-6 का परिशिष्ट 6.2 को ध्यान में रखकर, चर्चा के लिये अग्रसर हों, प्रत्येक बच्चे के लिये निर्धारित आंकडा प्रोफार्मा पर उपलब्ध हों तथा वो प्रभावित अंतराक्षेपण के लिये आवश्यक हों । लक्ष्य को पाने के लिये अंतराक्षेपण में उचित संदर्भ में अन्य व्यावसायिकों के पास भेजना । साथ ही साथ उचित

निगलना सीखाने के लिये निम्नलिखित सोपान लिये जा सकते है ।

i) बच्चे के होठों को उंगली से धीरे से बंद करें ।

ii) उंगली को बच्चे के नासाविवर पर रखें, और

iii) निगलने के लिये कहें और लगातार कुछ सेंकंड तक पकड़े

iv) निगलने के प्रमाण के लिये गले की हलचल कुछ समय तक देखते रहिये ।

v) हाथ निकाल दीजिये ।

vi) प्रारंभ में उसी पद्धति को प्रत्येक कुछ मिनट के लिये कार्यान्वित कीजिये । जैसे ही बच्चा समझने लगे, केवल 'निगलो' शब्द का प्रयोग करे (विशेषतः क्षेत्रीय भाषा में) जो बच्चे को निगलने के लिये उत्तेजित करता है ।

भौतिक चिकित्सक तथा व्यावसायिक चिकित्सक से भी लार की समस्या के लिये परामर्श कर सकते हैं ।

लार टपकने तथा लार न टपकने के अंतर को ध्यान देने में बच्चे को मदत करें, बच्चे को "कितना सुंदर लग रहा है" कहकर प्रोत्साहित करें और साथ ही साथ उचित प्रबलन (पुर्नबलन) भी प्रदान किये जा सकते हैं ।

लार टपकने के नियंत्रण के लिये बच्चे को लार टपकते रहने व लार टपकते नहीं रहने का अंतर दिखाना चाहिये ।

2. श्रवण से संबंधित पहलू

अवलोकन की गई सामान्य समस्यायें –

i) श्रवण दोष के अनुमान पर जांच सूची के अधिकांश उत्तर "नही" हैं ।

ii) प्राय : कान से पीब निकलना या कान बहना ।

iii) वातावरण की ध्वनियों पर कोई प्रतिक्रिया न होना, आवाज करने पर न पलटना,

iv) आदेशों को न समझना।

क्या किया जाये ?

i) अनुमानित श्रवणदोष की समस्या के लिये, आगे की मदत तथा अनुमोदन के लिये ऑडियोलाजिस्ट से परामर्श कर सकते हैं, ऑडियोलॉजिस्ट न हों तब इ.एन.टी (कान नाक, गला) सर्जन से परामर्श ले सकते हैं ।

अल्प श्रवण दोष या कान का संक्रमण एक मानसिक मंद बच्चे के भाषा विकास में बाधा डाल सकता है ।

ii) प्राय : बच्चों के कान से पीब निकलता हों या कान बहता हो तो (कान, नाक, गले) एन.टी. सर्जन या किसी मेडिकल व्यक्ति से परामर्श लें ।

iii) कभी–कभी बच्चा ध्यान न देने के कारण हो सकता है बच्चा वातावरण की ध्वनि पर प्रतिक्रिया न करता हों । तब भी, यह श्रवण दोष के कारण हो सकता है । ऐसे व्यक्तियों के लिये ऑडियोलॉजिस्ट से परामर्श करना आवश्यक है ।

iv) मानसिक मंद बच्चों में आदेशों को समझना श्रवण योग्यता की कमी से अधिक भाषा की कमी के कारण हो सकता है । ऑडियोलॉजिस्ट से परामर्श करें तथा भाषा मूल्यांकन का भी पालन करें ।

बच्चे जो आदेशों को नही समझते उनका कारण श्रवण से अधिकक भाषाई कमियाँ है।

श्रवण साधन (हियरिंग एड) का प्रयोग करना :

श्रवण साधन ऐसे व्यक्तियों को प्रदिष्ट निर्धारित किये जाते हैं जिनमें श्रवण दोष हों, जिन्हें चिकित्सिय सेवायें असंभव हों । केवल श्रवण साधन ही व्यक्तियों को अच्छी तरह से सुनने के लिये सहायक नही होता, ध्यान से सुनना/श्रवण (लिजनिंग) के प्रशिक्षण आवश्यक है । स्वाभाविक रूप से सुनने में और, श्रवण साधन से सुनने में अंतर होता है । इसीलिये, बच्चे को विभिन्न प्रकार की आवाजें बतायें तथा उन्हें श्रवण साधन द्वारा सुनायें तत्पश्चात वाक् ध्वनि तथा शब्द भी सम्मिलित किये जा सकते है ।

यदि बच्चा पहले से ही श्रवण साधन का प्रयोग करता हों तब श्रवण पुर्न–मूल्यांकन के लिये प्रति 6 माह में ऑडियोलॅजिस्ट से परामर्श

अवलोकन की गयी सामान्य समस्यायें—

क) होठो तालू में दरार (क्लेफ्ट लिप्स् एंड पैलेट)

आ) मुँह में चिपकी हुई जीभ (टंग टाई)

इ) जीभ को हिलाने में समस्यायें, विशेषतः उठाने में

ई) लार टपकना

क्या किया जाये ?

अ) फटे हुये होठों व तालू के संदर्भ में दंत चिकित्सक या प्लास्टिक सर्जन के पास चिकित्सा के लिये भेजा जाये ।

आ) टंग टाई को निकालने के लिये अभिभावक तथा मेडिकल व्यक्तियों के परामर्श से सावधानी से निर्णय लें । यह ध्यान रखें कि, टंग टाई को निकालने से वाक् उत्पादन ठीक होगा यह आवश्यक नही ।

टंग टाई का निकालने से ही वाक् उत्पन्न नहीं होता ।

क) जीभ में यदि रचनात्मक समस्यायें न हों तथा तब भी चलन समस्यायें विद्यमान हों तब जीभ को हिलाने के लिये कोशिश कर सकते हैं । जीभ को बाहर लाने के लिये चीनी/जॅम चम्मच में बच्चे के जीभ के समीप. बच्चे की मदत के लिये रख सकते हैं तथा बच्चे को धीरे-धीरे जीभ व होंठों को चाटने लगा सकते हैं, धीरे-धीरे होंठों से चम्मच का अंतर बढ़ा सकते हैं । इन क्रियाओं के दौरान आइने (दर्पण) के प्रयोग से बच्चे को शीघ्र सीखने में मदत मिल सकती है । जीभ की अन्य हलचल को शारीरिक सहायता के लिये कूंद चम्मच का प्रयोग उपयोगी हो सकता है । कठिन समस्याओं/गंभीर समस्याओं वाले व्यक्तियों के लिये वाक् चिकित्सक/व्यावसायिक चिकित्सक/भौतिक चिकित्सक से परामर्श लें ।

ख) जब बच्चा मुँह से उत्पन्न हुई लार को निगल नही पाता है तब लार बाहर आती है। लार केवल उसी समय कम हो सकती है जब कि, बच्चा लार को निगलना सीखता है । बच्चे को लार

अगर बच्चा लार को निकलना सीखता है तो लार कम टपकती है ।

करें, अनुवर्तन (फॉलोअप) आवश्यक है । कुछ मंद बुद्धि बच्चे श्रवण संक्रमण तथा कन्डक्टिव हियरिंग लॉस के अधिक अधोमुख होते हैं । इसलिये सुरक्षितता के लिये प्रायः श्रवण मूल्यांकन किया जाना चाहिये ।

टिप्पणी : *सामान्यतः जब ये कहा जाता है कि, बच्चे को श्रवण दोष है तब यह मान लिया जाता है कि, वह बहरा है । तथापि, अधिकांश मंद बुद्धि बच्चों में मध्यम से लेकर अल्पडिग्री श्रवण दोष पाया जाता है । मंद बुद्धि बच्चों में अल्प श्रवण दोष हों तब भी भाषा एवं समस्त विकास में घातक हो सकता है । इसलिये अल्प-श्रवण दोष हों तब भी अवहेलना नही करनी चाहिये ।*

सामान्य श्रवण योग्यता होने पर भी प्राय मंद बुद्धि बच्चे ध्वनि, वाक् व अन्य वाक् को समझने में समस्या बताते हैं । प्रारंभ में बच्चों को ध्वनि से अवगत (अवेअरनेस) होना चाहिये, ध्वनि को पहचानना सीखना चाहिये तथा तत्पश्चात् ध्वनि के भेद (डिसक्रिमनेट) का पहचानना चाहिये । प्रशिक्षण के लिये वातावरण की ध्वनि से आरंभ करना उपयुक्त हो सकता है । बच्चे के वातावरण में सामान्यतः पाई गई ध्वनि की एक सूची आवश्यक है । एकबार, एक वातावरणीय ध्वनि चुनी गई हों तो प्रायः प्रदर्शन द्वारा बच्चे को इससे अवगत कराना चाहिये । समयानुसार बच्चा ध्वनि को पहचानना सीखेगा, सीखने की तेजी प्रशिक्षण के गुण या लक्षण पर आधारित होगें । पहचानने के बाद, दूसरी ध्वनियाँ प्रशिक्षण के लिये ली जायें । एकबार वातावरणीय ध्वनिं पहचानने के बाद भेद प्रशिक्षण (डिसक्रिमनेशन ट्रेनिंग) आरंभ कर सकते हैं ।

सामान्य श्रवण शक्ति होने के बाद भी मंद बुद्धि बच्चे कमजोर श्रोता होते है ।

प्रारंभ में बहुत (ग्रॉस डिफरंट) विभिन्न ध्वनियों के बीच के भेद का प्रशिक्षण होना । उदाहरण के लिये–जैसे – "दरवाजा खटखटाना" तथा "सीटी" की ध्वनि । धीरे–धीरे क्रम विभिन्न (फाईनली डिफरंट) ध्वनि की जोडियाँ ली जा सकती है । जैसे–ग्लास में चम्मच से हिलाने की ध्वनि बनाम सिक्के की ध्वनि । सामान्यतः प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक ध्वनि के लिये एक प्रतिक्रिया का संबंध है (उदा दरवाजे

को खटखटाने के लिये दरवाजे की ओर संकेत करना तथा सिटी की आवाज के लिये मुख की तरफ संकेत करना) बार-बार के प्रयास से, बच्चे की ध्वनि के अंतर जानने की योग्यता बढ़ जाती है ध्यान रहे कि, बहुत भिन्नता (ग्रॉस) तथा क्रम विभिन्नता (फाइन) का अंतर तुलनात्मक है, यह महत्वपूर्ण है । साथ ही ध्यान रहे, प्रतिक्रियायें भी विशेष बच्चे के योग्य चुनी हुई हों

3 बच्चे के लिये भाषा आगत

बच्चे सामाजिक संदर्भ में भाषा सीखते है । सामाजिक संदर्भ का महत्वपूर्ण अंग है पोषक (अभिभावक) बच्चे का पारस्परिक संबंध, परिमाण तथा गुण दोनों पर जोर दिया जाये । परिमाण का अर्थ है अभिभावक द्वारा कितनी "बात" की गई तथा बच्चे से यह "बात" कितने अच्छे ढंग से की गई ।

बच्चे के दैनिक क्रियाकलाप एक ऐसा महत्वपूर्ण स्त्रोत है जिससे अभिरक्षक लगातार भाषा आगत बच्चे को दे सकता है ।

पाई गई सामान्य समस्यायें –

i) विशेषक अभिभावक तथा अन्य पोषक अपने मंद बुद्धि बच्चे से कम बोलते है, क्योंकि, वे समझते है कि, बच्चा शायद नही समझता हों । अभिभावक बच्चे को केवल कहानी सुनाते समय तथा ऐसे ही विशेष क्रियाकलापों के समय ही बोलते है तथा दैनिक क्रियाकलापों के समय बहुत कम बोलते है ।

भाषा-आगत की समस्यायें भाषा सीखने में समस्यायें पैदा कर सकती है ।

ii) जब मानसिक मंद बच्चे से कोई बोलता है, तो उनके बोलने में भिन्नता कम होती है, क्योंकि, उनके आदेश "आओ", "देदो", "खाओ", जैसे रूंठिगत होते है । वस्तुओं या कार्यों के बारे में बताना या विवरण देने के अतिरिक्त अभिभावक उन्हें प्रश्न पूछते रहते है या आदेश देते रहते है ।

iii) पोषक अपने मद बुद्धि बच्चे में बोलते समय त्रुटियों को प्रायः ठीक करते है तथा ठीक वाक् उत्पादन की मांग करते है ।

परिवर्तन के लिये सुझाव :

अभिभावक तथा पोषकों के लिये आवश्यक है कि दैनिक जीवन

में बात करने के परिमाण में वृद्धि करें, क्योंकि, बार-बार प्रदर्शन बच्चे को भाषा जानने में सहायक होता है । इस उद्देश्य के लिये आंखों देखे हाल या विवरण देना चाहिये । विवरण के लिये बच्चे के साथ या सामने हो रही घटना का प्रयोग कर सकते हैं । उदाहरण के लिये, बच्चे के साथ खेलते समय लगातार बड़ों के क्रियाकलापों का वर्णन बच्चों के सामने जैसे होते रहे/कहते रहें स्वतः बात (सेल्फटॉक) बच्चा क्या कर रहा है या बाहर क्या हो रहा है (समांतर बात) (पैरललटॉक) का वर्णन बड़े भी कर सकते हैं । उदाहरण के लिये – रास्ते पर वाहन चल रहे हैं, क्या हो रहा है इसका विवरण दे सकते हैं ।

सेल्फ टॉक में जो काम हम कर रहे हैं उसका साथ ही साथ विवरण देना पॅरलल टॉक में दूसरें के कार्य का साथ ही साथ विवरण देना

ii) बात करने की प्रासंगिकता के सुधार के सुझाव (गुण) :

टिप्पणी : अ) बच्चे मे क्या बात की जाये इसका निर्धारण करनें के लिये पहला सोपान है बच्चे के दैनिक क्रियाकलापों की पहचान करना और उस समय आँखों देखा हाल जैसे प्रारंभ करें ।

आ) तुरंत उत्तर न मिलने पर अभिभावक हतोत्साहित न हो ।

इ) धीरे-धीरे बच्चे की प्रतिक्रियाओं को सम्मिलित करने के लिये एक ही ओर से बात करने की पद्धति बदलती है क्यों कि, अभिभावक अनुभव करें कि, वे बच्चे से बात कर रहे हैं, जो उत्तर दे रहा है।

जैसे आप कार्य कर रहें हैं या देख रहे हैं, बच्चे को साथ ही साथ उसका विवरण दें ।

भाषा आगत विभिन्न बच्चे को भाषा सीखने में अधिक प्रभावकारी सिध्द होती है । भाषा-आगत की विभिन्नता को बढ़ाने के लिये निम्नलिखित कार्य कर सकते है ।

- बच्चे को ऐसे क्रियाकलापों में सम्मिलित करें, जहाँ बच्चा भाग ले सकता हो, और उसे विवरण दें ।
- आदेश व प्रश्न कम कर दें, तथा क्रियाकलापों का वर्णन बढ़ा दें । प्रश्न पूछने पर बच्चे से कोई उत्तर नही मिल सकता है इसलिये बातचीत बंद हो सकती है ।
- कहानी बोलने जैसी विशिष्ट परिस्थिति की अपेक्षा दैनिक जीवन की परिस्थितियों में वर्तमान (हियर एंड नाऊ) क्रियाकलापों का विवरण दें ।

iii) प्राय : वाक् के सही उत्पादन की मांग बच्चे को अपने आप बात करने पर हतोत्साहित कर सकती है । यह ध्यान में रखा जा सकता है कि, जब बच्चा प्रारंभ में शब्दों का प्रयोग करता है वो साधारणतः बड़ो के शब्दों के निकट होता है । यह सुझाव दिया गया है कि, बच्चे के शब्दों को स्वीकार करें, भले ही वो अस्पष्ट हों ।

सही वाक् उत्पादन की मांग को प्रायः करने से एक मानसिक मंद बच्चे को बात करने से हतोत्साहित कर सकते है ।

उपरोक्त सुझावों का शिक्षक भी प्रयोग कर सकते हैं । घर में प्रयोग करने के लिये शिक्षक अभिभावकों को ये सुझाव दे सकते हैं ।

4. भाषा विषयवस्तु/बच्चे की योग्यता

जैसे कि, पहले ही बताया गया है कि, इस अंश में शब्द, वाक्यांश तथा वाक्यों की संग्रहण और अभिव्यक्ति दोनों सम्मिलित हैं । अभिव्यक्ति में मौखिक तथा संकेत की पद्धति सम्मिलित है । जैसे- बच्चा नाम (मौखिक रूप से) कहने की जगह वस्तु को देखकर या दिखाकर (संकेत के द्वारा) वस्तुओं की ओर इशारा कर सकता है । कुछ बच्चे संप्रेषण के लिये संकेत तथा हावभाव बड़े ही प्रभावकारी ढंग से सीखते हैं ।

पाई गई सामान्य समस्यायें –

अ) संग्रहण के लिये सीमित शब्दावली होना – परिचित वस्तुओं में सीमित होना जैसे-कुछ खाने के पदार्थ ।

आ) विस्तृत पर्याप्त शब्दावली होने के पश्चात् भी कुछ चीजों के लिये कई बार अभिव्यक्ति कम हो सकती है। मौखिक अभिव्यक्ति नही ।

इ) संज्ञा परिवर्तक में, किया परिवर्तक में तथा संयोजक आदि शब्दों में बच्चे की संग्रहण तथा अभिव्यक्ति शब्दावली दोनों भी सीमित हो सकते हैं ।

ई) सीमित अर्थ आदेश के लिए शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं ।

उ) शब्द हैं किंतु उन्हें जोडने में कठिनाई बताते हैं ।

ऊ) प्रश्न पूछने व समझने मे कठिनाईयाँ ।

ए) आदेशों की श्रृंखला का पालन करने में कठिनाईयाँ ।

ऐ) साधारण वाक्यों का प्रयोग करना किंतु व्याकरणीक रूप ग्राम जैसे बहुवचन, काल निशान (चिह्न) आदि का प्रयोग न करना ।

मंद बुद्धि बच्चों में व्याकरणीक रूपिम का प्रोयग सामान्यतः कम होता है ।

नमूने लक्ष्य – विषय वस्तु :

(एक विशेष बच्चे के उद्देश्य के लिये बनाये गये लक्ष्य अधिक विशेष होंगे) ।

अ) बच्चों के शब्दों के संग्रहण को बढाना नामिक तथा क्रिया शब्दों के क्षेत्र में ।

आ) बच्चे के द्वारा अभिव्यक्त करने के लिये संकेतों को नामिक तथा क्रिया शब्दों की संख्या बढ़ाना

उचित निर्धारण आंकडे का होना ही अंतराक्षेपण लक्ष्य को विशिष्ट बनाता है ।

इ) संज्ञा,-परिवर्तक तथा क्रिया-परिवर्तक (विशेषरूप से) को बच्चे की संग्रहण में तथा तत्पश्चात् अभिव्यक्ति में सम्मिलित करें ।

ई) अधिक संख्या के अर्थ उद्येश्य को अभिव्यक्त करने के लिये बच्चे को शब्दों के प्रयोग करने में मदत करें ।

उ) शब्द संयोजन में बच्चे की मदत करें जैसे – कर्ता+कर्म, कर्म+स्थान, आदि,

ऊ) संग्रहण एवं विभिन्न प्रश्नों की पद्धतियों की अभिव्यक्ति में मदत करें ।

ए) आदेशों के संयोजन का पालन करने में मदत करें ।

ऐ) संग्रहण में व्याकरणीक रूपग्राम तथा शब्दों व वाक्यों की अभिव्यक्ति को मिलाने में बच्चे की मदत करें ।

ओ) वाक्यों को एक ढंग से जोडकर एक स्थिति का वर्णन करने में बच्चे की मदत करें ।

दिये गये लक्ष्य और क्रियाकलापों को केवल उदाहरणात्मकक रूप में देखना चाहिये आदेशात्मक रूप में नही ।

उदाहरण लक्ष्य – (अ) 1) स्कूल की वस्तुओं में संज्ञाओं के संग्रहण को बढ़ाना ।

निर्धारण पर (परिशिष्ट – 6.3 में दी गई सुझाव शब्द सूची का प्रयोग करते हुये) एक बच्चे के पास 3 वस्तुयें ही है बैग, पुस्तक तथा कलम । अन्य वस्तुओं में पेंसिल, रबड़ शब्दों के संग्रहण में अब मदत करने की आवश्यकता है ।

अपेक्षित उत्तर हो सकता है जब बच्चा वस्तु की वास्तविक दैनिक परिस्थिति में बच्चा देख कर लेकर, या रबड़ की ओर जाये

भाषा-अंतराक्षेपण के सिद्धांत तथा सतर्क परस्पर पद्धति (ॲक्टिव इंटरॅक्शनल पॅटर्न) के आधार पर दैनिक क्रियाकलापों में सम्मिलित होने के अनुभव पर लक्ष्य को पाया जा सकता है । कुछ ऐसी ही क्रियाकलापों की रूपरेखा निम्नलिखित है ।

नमूने के क्रियाकलाप :

कुछ क्रियाकलापों के लिये सक्रिय पारस्परिक क्रियाकलापों का निर्देश दिया गया है ।

1) शिक्षक पेंसिल का प्रयोग कर बच्चे की नोट-बुक में कुछ लिखेगा और बच्चे से मिटाने के लिये, रबड़ लाने का निवेदन बच्चे से करेगा, जब शिक्षक रबड़ की जगह उंगली से मिटाये (दैनिक घटनाओं का उल्लंघन)

2) रबड़ गलत जगह पर रखा हो और बच्चे को शिक्षक के साथ रबड़ खोजने को कहा जाये । (वस्तुयें छिपाना)

3) ऐसी ही स्थिति में बच्चे को मिटाने के लिये एक लकडी का टुकडा और बाद में रबड़ दिया जाये । (वस्तु के कार्य का उल्लंघन)

टिप्पणी : यह क्रियायें प्रतिदिन पाई जाती हैं और कई बार दोहराई जाती हैं । नैसर्गिक तथा निर्मित दोनो परिस्थितियाँ जिसमें पेंसिल, रबड़, आदि का प्रयोग किया गया हों यह सब सीखने की स्थिति में संभव हैं । उदाहरण के लिये – रबड़ खरीदना, मित्रों में रबड़ बांटना ।

– इस क्रियाकलाप की पाठ के प्रारंभ में चर्चा किये गये मार्गदर्शन से तुलना करें ।

– प्रारंभ में बच्चे को अरूचि हो सकती है, किंतु बाद में इस संप्रेषण कार्य के पूर्ण होने पर बच्चे में रूचि उत्पन्न हो सकती है ।

– अलग अलग वस्तु के आधार पर क्रियाकलाप पूर्णतः (बिलकुल) बदल जायेगें ।

– इसी उद्देश्य को लगातार घर में, घरेलू परिस्थिति में जुडने वाली क्रियांकलापों के साथ होना चाहिये । एक ऐसे ही क्रियाकलाप का उदाहरण है – बच्चा अपने पिता के साथ रबड़ खरीदने जाता है ।

– महत्वपूर्ण बात यह है कि, बच्चे को विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न वस्तुओं का प्रयोग (एक ही प्रकार की) तथा वास्तविक परिस्थिति में उनको समझने का अनुभव प्रदान करें ।

दैनिक जीवन में लगातार घटने वाले क्रियाकलापों को चुनने से बच्चे को शीघ्र सीखने में सहायता मिलती है ।

लक्ष्य अ (2) : "कंघी करना" क्रिया शब्द के संग्रहण में बच्चे की मदत करें ।

नमूने के क्रियाकलाप :

1 दूसरे बच्चे के बिखरे बालों में कंघी करने के लिये जब बच्चे से निवेदन किया जाये, और साथ ही यह भी कहा जाये कि, इस बच्चें से अन्य बच्चे को मदत चाहिये (बच्चे की संप्रेषण आवश्यकता को संतुष्ट करना)

2 खेल में गुडिया को दुल्हन बनाकर बच्चा शिक्षक के साथ (बेबीडॉल) गुडिया के बालों में कंघी कर सकता है, जो जान बूझकर गुडिया की ठीक से कंघी नही करेगा। (दैनिक–संयुक्त क्रियायें–गलत)।

3) शिक्षक बात करते समय एक बच्चे के बाल बिखरे हुये हैं और दूसरे बच्चों से उसके बाल संवारने को कहेगा/जब शिक्षक समांतर बात करता रहेगा (भूमिका पलटना) करेगा।

4) बच्चे से कहा गया है कि, लड़का "कंघी कर रहा है ।" जबकि, लड़का वास्तव में भोजन कर रहा है । (दैनिक-संयुक्त कार्य-गलत)

नमूने के लक्ष्य : (ब) कपडे पहनने की कोटि में बच्चे को नामिक अभिव्यक्त करना सीखायें – उदा – शर्ट.

बच्चे के शर्ट का संग्रहण 6 महिने से है, जब आवश्यकता होगी शर्ट की ओर दिखायेगा । अपेक्षित उत्तर "शर्ट" कहना होगा, या "शर्ट" के निकट ऐसे "श" । इस बच्चे में पहले ही 10–15 एक शब्द विभिन्न स्वनिम संयोजन के साथ उत्पन्न करने की क्षमता है ।

नमूने के क्रियाकलाप :

– घर में स्नान के बाद "शर्ट" के अतिरिक्त उसके सामान्य कपडे पहनायें । बच्चे से पूछें तुम्हें दूसरे कौनसे नयें कपडे चाहिये ? जब बच्चा शर्ट की ओर देखेगा, तब बड़े या बच्चे कह सकते हैं – ओह, तुम्हें ये शर्ट चाहिये ? जब बच्चा "हाँ" कहने के लिये सर हिलाये, उसे शर्ट दें । कुछ दिन बाद बच्चे को केवल "शर्ट" शब्द बोलने या शर्ट के समकक्ष शब्द बोलने के प्रयास के बाद ही–शर्ट दें । (संप्रेषण के लिये आवश्यकता निर्माण करें)

– कपड़े पहनने की प्रक्रिया के दौरान जानबुझकर शर्ट की जगह पैंट पहनायें, बच्चे को विरोध करने के लिये बुलाये, उस समय बडे लोग से प्रश्न कर सकते है कि, क्या पहनाया जाये ? शर्ट धोते

बच्चे के संप्रेषण में किये गये भाषा का ही उदाहरण ही प्रयुक्त करना चाहिये ।

समय, प्रेस करते समय, पिताजी का शर्ट आदि लाते समय उसी प्रकार की दैनिक घटनाओं का उल्लंघन किया जा सकता है ।

– स्कूल में बारी रोकने (विथहोल्ड इन टर्मस्) बच्चे को शर्ट अभिव्यक्त करने में प्रभावकारी प्रयुक्त हो सकते हैं । उदाहरण के लिये – प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला बच्चा तथा उसके साथ कक्षा में जो अन्य बच्चे हैं उनके कपड़ों के नाम शिक्षक के साथ बताते रहें । शिक्षक के साथ कपड़ों के नाम बच्चे सफलता पूर्वक दोहराने लगें, तब शिक्षक जानबुझकर बारी रोकेगा जिससे बच्चे को शब्द पूर्ण करने या उसके निकटस्थ शब्द को कहने के लिये उद्यत (प्रॉम्पिंग) करेगा

– स्कूल में, "भूमिका पलटना" भी एक उपयुक्त तकनीक है । उदाहरण के लिये-प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला बच्चा पेड़ों में पानी डालते समय गीले शर्ट की ओर इंगित करेगा या फिर चेहरे के हावभाव या संकेत के द्वारा दूसरे बच्चों का शर्ट है बतायेगा । कुछ कार्यों में भूमिका बदल सकते है, जो बच्चे जो शर्ट गीला है बताने में मदत कर सकते हैं ।

– कुछ उच्च स्तर के बच्चों को संयुक्त दैनिक-क्रियाकलाप के अन्य कार्यों मे समिलित कर सकते हैं जैसे – दो बच्चों में एक बच्चे ने साफ शर्ट पहना हो और उसको अन्य बच्चा शिक्षक के साथ बधाई देता है । वैसे ही अन्य क्रियाओं का भी उपयोग कर सकते हैं । उसी प्रकार शर्ट छिपाने वाले क्रियाकलाप, शर्ट धोने जैसे अभिनय, ले सकते हैं जहां बच्चे को प्रश्नों के उत्तर देना आवश्यक है प्रश्न का उदाहरण है, वह क्या कर रहा है ? या क्या हो रहा है ? और अपेक्षित कार्य न होने पर पूछना जैसे, उस साबून की जगह पत्थर ले आयें।

जो आइटम्स् बच्चे के संग्रहण शक्ति में है उन्हीं को अभिव्यक्ति प्रशिक्षण के लिये लेना चाहिये । कम से कम संग्रहण में एक महिने का अनुभव आवश्यक है ।

टिप्पणी :

केवल वही वस्तु अभिव्यक्ति प्रशिक्षण के लिये लें जिसे बच्चे ने पहले ही संग्रहण किया हों, (प्राथमिकता एक महिने से अधिक समझने के अनुभव हों) बच्चे के स्तर पर आधारित मौखिक व सांकेतिक उत्तर दोनों के लिये वही तकनीक ली जा सकती है ।

– यह ध्यान रखें कि, यदि बच्चा प्रथम शब्दों के स्तर पर हो, बच्चे द्वारा कहा गया पहला शब्द वास्तविक शब्द के निकटस्थ हो सकता है (स्वाभाविक स्वनिमी प्रणाली) यह प्रयास भी स्वीकार किये जा सकते हैं ।

– बच्चे को शब्दों के नाम प्रारंभ करने में प्रत्येक क्रियाकलापों के कई सत्रों की आवश्यकता हो सकती है । बच्चे को या तो बड़ों का (शिक्षक) या बच्चे का प्रतिरूप (मॉडल) (जो शर्ट बोल सकता है) प्रदान कर सकते है । शिक्षक पूरी कक्षा में बतायें कि, बच्चा कितनी अच्छी तरह शर्ट पहन रहा है, यही पुरस्कार होना चाहिये । स्कूल में जारी क्रियाकलापों को अभिभावकों को घर में करने के लिये बता देना ।

– प्रसाधन जैसे एक विषय पर क्रिया शब्दों की श्रृंखला बना सकते हैं । प्रसाधन-कुशलता के प्रशिक्षण में कंघी करने का बोध एक महत्वपूर्ण सोपान (चरण) होगा (टी–पार्टी तकनीक) ।

पुरस्कार कार्य से जुडा हुआ होना चाहिये, और ऐच्छिक नही होना चाहिये । उदाहरण के लिये – आईने के सामने उसके सुव्यवस्थित बालों की प्रशंसा करना "शाबाश" बोलने से अच्छा पुरस्कार हैं ।

प्रत्येक क्रिया-शब्द के लक्ष्य के लिये विभिन्न अर्थपूर्ण क्रियाकलापों के सेट चाहिये ।

उदाहरण के लक्ष्य क(1):"बड़ा" संज्ञा प्रवर्तक को संग्रहण करने में बच्चे को मदत करें ।

निर्धारण के बाद, पाया गया कि, बच्चा सामान्य संज्ञायें तथा क्रिया शब्द समझने लगा है । इस बच्चे में "छोटा" व "बड़ा" तुलनात्मक धारणा का ज्ञान भी है । पर "बड़े" या "छोटे" सुनकर वह पहचान नही पाता है । इसलिये संज्ञा प्रवर्तक "बड़े" का बोध कराने का लक्ष्य चुना गया है । इस उद्देश्य के लिये कुछ सामान्य क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं ।

नमूने के क्रियाकलापः–

कक्षा में, शिक्षक बच्चों के साथ छोटे और बडे–गुडियाओं की दो जोडियाँ उठायेंगी और सारे क्रियाकलापों में उसके साथ अपने आप

बात करेंगी, जहाँ भी संभव हों, "बड़े" शब्द पर जोर देंगी । एक खेल की योजना बना सकते हैं, जिसमें एक बडी गुडिया को कपड़े में लिपटा कर रखें और छोटी गुडिया को सबके सामने रखें, बच्चे को लिपटी हुई गुडिया को खोजने के लिये कहें, तथा शिक्षक चिल्ला उठें– "तुमने बडी गुडिया ढूँढ ली" ।

उसी प्रकार प्रसाधन के क्रियाकलाप में बड़ी गुडिया को लेकर, गुडियाओं को अलग–अलग जगह छिपाने का खेल भी ले सकते हैं । बगीचे जैसी परिस्थिति में, "टी–पार्टी–तकनीक" उपयुक्त सिद्ध हुई । बच्चों को विभिन्न वस्तुयें बताने की आवश्यकता है (बड़े व छोटी दोनो) जैसे, चाकू, पानी का पात्र, पत्ते और पेड आदि । प्रारंभ में प्रशिक्षण लेने वाला बच्चा शिक्षक के साथ बडी वस्तुओं को पहचान पायेगा, और बाद में अपने आप पहचान लेगा, ध्यान पूर्वक योजना आवश्यक है ।

एक विशिष्ट भाषा में उचित संज्ञा–परिवर्तकों को चुनना चाहिये ।

घर मे बच्चा कपडे धोने में सम्मिलित हो सकता है । सभी बडे कपडे जैसे ओढना, पिताजी का शर्ट, बड़ों के साथ पहचान सकेगा। इस स्थितिमें, बच्चा कौनसा कपडा "बड़ा" नही है । आदि बोल सकेगा। ऐसी स्थिति में रसोई घर, स्नान घर तथा अन्य क्रियालाप भी प्रयुक्त किये जा सकते हैं ।

उदाहरण के लक्ष्य– क(2) :बच्चे को "नीचे" क्रिया परिवर्तन की अभिव्यक्ति सीखाने में मदद करें ।

निर्धारण पर पाया गया कि, बच्चा "में" और "पर" क्रिया परिवर्तक व्यक्त करना तथा "नीचे" शब्द संग्रहण भी सीख गया । अब बच्चे को "नीचे" शब्द को व्यक्त करना चाहिये । संपूर्ण अभिव्यक्ति पर बच्चा दो शब्द वाले वाक्य प्रभावपूर्वक प्रयोग करेगा ।

नमूने के क्रियाकलाप–

- क्रियाकलापों के समय सम्मिलित कर बातें करें। जैसे–

  मेज के नीचे जूते रखना ।

- दूसरी पुस्तक के बीच में एक पुस्तक रखना ।
- दरवाजे के नीचे कागज या पोस्ट कार्ड खिसका / ढकेल कर रखना ।
- कागज या कपड़ों के बीच खिलौना छिपाकर रखना । यह क्रिया कलाप प्रारंभ में बच्चे को याद दिलाने के लिये होंगी जिसमें क्रिया परिवर्तक "नीचे" का प्रयोग हुआ है, बच्चे को मदत करने के लिये दोहराई जायेंगी ।

क्रियाकलापों के समय स्वतः भाषा का प्रयोग करना संग्रहण के लिये आवश्यक है।

दरवाजे के नीचे कागज ढकेल कर रखने जैसे क्रियाकलाप में बच्चा देखते समय कागज दरवाजे में ढकेलने या खिसकाने/सरकाने में शिक्षक यह क्रियाकलाप पूरा करेगा । क्रियाकलाप के साथ शिक्षक संभवतः "नीचे" शब्द पर जोर देते हुये विभिन्न सोपानों का वर्णन करेगा । अब बच्चा वही करेगा तथा शिक्षक एक घंटे से कुछ समय तक वर्णन जारी रखेगा, बच्चा "नीचे" शब्द के प्रयोग से परिचित होगा। अब शिक्षक क्रियाकलाप प्रारंभ करेगा और "नीचे" शब्द की जगह हिचकिचायेगा । यहाँ बच्चा रिक्त स्थान की पूर्ति करेगा । उदाहरण के लिये– शिक्षक कहेगा – मैं कागज ढकेल रहा हूँ...." (हिचकिचायेगा)बच्चा "नीचे" कहेगा, और शिक्षक "दरवाजा" कहते हुये वाक्य पूरा करेगा तथा कागज को सरकायेगा । इसी प्रकार के क्रियाकलाप अन्य परिस्थितियों में पूरे कर सकते हैं । (भूमिका पलटना तथा बारी रोकना) ।

संयुक्त दैनिक-क्रियाकलाप घर में उपयुक्त हो सकते है । उदाहरण के लिये– बच्चे को उसकी पुस्तक ढूँढने के लिये कहे जो सामान्यतः हमेशा रखनेवाली–जगह पर हों, जैसे रॅक में बड़े बिगाड (सबोटेज) सकते हैं, और पुस्तक को धागे या रिबन से बांधकर रैक के नीचे रखे, तक न मिलने पर बच्चे को धागा खिचकर पुस्तक निकालने को कहें, बच्चे से पूछें- "पुस्तक कहाँ थी"? बडे भी उत्तर देने में मदत कर सकते हैं, ऐसे ही कई क्रियाकलाप बच्चे को सम्मिलित कर दैनिक कार्य में प्रयुक्त कर सकते हैं ।

टिप्पणी–

क्रिया–परिवर्तक जैसे "नीचे" प्राप्त होने पर (सीखने पर) बच्चे "में" और "पर" अभिव्यक्त करना सीखते हैं, अभिव्यक्त करने के पहले एक या दो महिने से पहले समझने का अनुभव आवश्यक है ।

प्रारंभ में बच्चे इस क्रिया परिवर्तक को हाथ के संकेत से व्यक्त कर सकते हैं और अन्य क्रिया परिवर्तक "में" में उलझ भी सकते हैं ।

उदाहरण के लक्ष्य(ड): बच्चे को केवल नाम (संज्ञात्मक या विद्यमान) बताने के आशय के अतिरिक्त कुछ नामिक शब्दों को अन्य आशयों के प्रयोग करने में मदत करें । जैसे चावल, पानी, माँ, पिताजी आदि। प्रारंभ में वाक्य एवं चुने गये अर्थ-आशय (सिमँटिक एंटेन्शन्स) है अदृश्य होना एवं स्थान बताना ।

निर्धारण के बाद, बच्चा वस्तुओं के नाम देने के लिये घडी, गेंद शब्दों का प्रयोग करेगा । प्रशिक्षण देने का विशेष उद्देश्य अदृश्य होना एवं स्थान बताना । नमूने के उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

घड़ी– अदृश्य होना–

घडी बताते हुये, बच्चे से पूछा जायेगा, यह क्या है ? जैसे कि, बच्चा पहले ही विद्यमान (एक्जिसटेंस) उद्देश्य का प्रयोग कर रहा है । वह वस्तु का नाम बतायेगा । बच्चे को आंखे बंद करने के लिये कहकर, शिक्षक घडी छिपायेगा । आंखे खोलने पर बच्चा अदृश्यता से संबंधित चेहरे के हावभाव बतायेगा । ऐसी स्थिति में, शिक्षक बच्चे के साथ घडी बोलेगा, और संभवतः "नही" संकेत के लिये या कहने के लिये हाथ मिलायेगा । धीरे-धीरे इस खेल में शिक्षक शब्द का प्रयोग नही करेगा, और बच्चे को अपने आप कहने की अनुमति देगा ।

घर में ऐसे ही खेल जारी कर सकते हैं, उदाहरण के लिये, माँ और बच्चा पिताजी की घडी छिपायेंगे और ढूँढेंगें ।

घडी ढूँढना–

घड़ी को विभिन्न स्थानों पर छुपायेंगे जैसे, मेज पर, कुर्सी पर,

बच्चे को विभिन्न स्थानों पर खड़ा करेंगे जैसे, मेज पर, कुर्सी पर, दीवार पर, अलमारी पर आदि, बच्चे से पूछेंगे घडी कहाँ है? और साथ में बच्चे को "घडी" बताते हुये / घडी की ओर संकेत करते हुये कहेगे "घड़ी" । शिक्षक स्वरविन्यास का प्रतिरूपण (मॉडल) करते है । ऐसे ही क्रियाकलाप अन्य वस्तुओं के लिये भी किये जा सकते है (उदाहरण के लिये गेंद अदृश्य हो जाना या गेंद का स्थान बताना)।

अर्थ क्रिया उद्देश्यों का प्रशिक्षण अन्य प्रशिक्षण क्रियाकलापों का अंग बन सकता है ।

टिप्पणी–

अर्थक्रिया आशय के प्रशिक्षण का प्रयोग, अन्य प्रशिक्षण क्रियाकलापों के साथ भी हो सकता है ।

– जैसे ही बच्चा आशय को व्यक्त करना सीखता है, विकसित आयु स्तर के लिये अभिव्यक्ति की पद्धति का लक्ष्य लगा सकते हैं । उदाहरण के लिये – अदृश्यता की अभिव्यक्ति के लिये, पहले गेंद प्रयोग की जगह बच्चा "गेंद नहीं" बोलना सीख सकता है ।

– सभी प्रकार की अभिव्यक्ति तक उद्देश्यों को बढ़ाना चाहिये।

लक्ष्य के उदाहरण – (इ)

बच्चे को कर्ता+क्रिया जैसे वाक्यांश में मदत करें । शब्दों को जोड़ने के लिये बच्चों में कम से कम 40–50 शब्दों को अभिव्यक्त करने की शब्दावली आवश्यक है । जिसमें सामान्यतः विकासशील बच्चा 2 वर्ष का हो । कर्ता+क्रिया प्रकार के वाक्यांश प्रारंभ में बच्चों में पाये पाते हैं ।

सामान्यतः प्रयुक्त कर्ता+क्रिया वाक्यांश तैयार करने चाहिये, जो शब्दों के संयोजन के हों, जो पहले ही बच्चा व्यक्त करता हों, प्रारंभ में कम शब्द जोडने वाले वाक्य चुनने चाहिये, और विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न अर्थ या उद्देश्य व्यक्त करने वाले होने चाहिये । (अर्थ-क्रिया संबंधी) (सिमेंटिक रिलेशन्स)

अर्थ क्रिया संबंधी वाक्यांशों को सीखाते समय एक ही तरह के वाक्यांशों को अनेक परिस्थितियों में प्रयुक्त कर सकते है ।

मानलिजिये, एक मंदबुद्धि बच्चा एक शब्द व्यक्त करने के योग्य है और वह 2 शब्द स्तर सीखने के लिये तैयार है, उसकी शब्दावली

का मूल्यांकन करना चाहिये । अब हम देखेंगे–निर्धारण पर निम्नलिखित शब्दावली पाई गई । लोगों के नाम, माँ (मम्मी), पिताजी (डैडी), बहन, शिक्षक (टीचर), आया ।

वस्तुओं के नाम–प्लेट, गुडिया, जूते ।
क्रियाओं के नाम–आओ, लाओ, दो, लो आदि. ।
अब कर्ता+क्रिया वाक्यांश के उदाहरण होंगे–माँ दो (मम्मी दो) पिताजी आओ,(डैडी आओ), प्लेट लाओ, जूते दों आदि ।

क्योंकि, भारतीय भाषाओं मे विकास का आंकडा प्राप्त नही है, वाक्यांशों को चुनते समय अधिक सतर्क होना चाहिये ।

बच्चे को वाक्यांश का प्रयोग सीखने में मदत करना ।

यदि बच्चे को "डैडी आओ" वाक्यांश का प्रयोग सीखाने में मदत करना विशेष लक्ष्य हों तो निम्नलिखित क्रियाकलाप कर सकते हैं।

रात्री के भोजन का समय–माँ बच्चे से कहेगी कि, डैडी को बुलाए बच्चा केवल "डैडी" (पिताजी) कहकर बुलायेगा । अब माँ "आओ" जोडकर व्यक्त करना समाप्त करेगी । इस क्रियाकलाप के दोहराने के बाद माँ के साथ बच्चे को "आओ" शब्द कहने के लिये प्रोत्साहित करेंगें । धीरे–धीरे "माँ" बच्चे को अपने आप "डैडी आओ" कहने की अनुमति देंगी । (बारी रोकना)

इसी प्रकार की विभिन्न स्थिति में जानबूझकर डैडी कुछ अनअपेक्षित कार्य करेंगें । जब बच्चा कहेगा "डैडी", पिताजी (डैडी कहेंगा "नहीं डैडी आयेंगे" बच्चा इसे इंकार करेगा और संभवतः कहेगा "डैडी आओ" ।

खेल समय– बच्चा अपने साथ डैडी को खेलने के लिये बुलायेगा । बच्ची "डैडी" कहती ही रहेगी । पिताजी कह सकते हैं । (बच्चे की ओर आने की जगह) हाँ, मैं, यहाँ हूँ.... जब तक बच्चा "आओ" कहें । यह क्रियाकलाप उस समय कार्यान्वित कर सकते हैं, जब सहोदर या माँ बच्चे को उद्यत करें ।

एक क्रियाकलापें को अन्य क्रियाकलापों के साथ जोडने से और पुनरावृत्ति से उसमे नविनता आती है ।

पाठशाला समय– इसी प्रकार कर्ता+क्रिया वाक्यांश पाठशाला के योग्य स्थिति जैसे, "आओ", "आया आओ", आदि लिये जा सकते हैं, यहां उद्येश्य एक ही है पर स्थिति अलग है ।

संयुक्त दैनिक-क्रिया में, परिवार के सभी सदस्यों को रात के भोजन के लिये बुलाकर, स्कूल के सभी बच्चों को, खेल या अन्य क्रियाओं के लिये बुलाकर, बच्चों को सम्मिलित कर कर्ता+क्रिया, वाक्यों के प्रकारों को प्रयुक्त कर सकते हैं ।

संभवतः जैसे बच्चा बुला रहा है, "डैडी आओ" बाजारें, सिनेमा, बगीचे आदि में जाने के लिये संभवतः ऐसी स्थिति का अधिक प्रयोग करना चाहिये ।

लक्ष्य फ. (1): "कहाँ" प्रश्न समझने में बच्चों को मदत करें ।

नमूने के क्रियाकलाप– "कहाँ" सीखाने में वसतुयें छिपाने की पद्धति का प्रयोग कर सकते हैं । उस समय जब पिताजी बच्चे के साथ खेल रहे हैं, और बच्चा खिलौने की कार छिपाने में तल्लीन है । तब खेल के रूप में कार की ओर देखें । कार गायब हो गई ? और पूछें कहाँ है कार ? कहकर बच्चे का ध्यान आकर्षित करें तब उसे ढूँढने की कोशिश करें और जब बच्चा कार ढूँढ निकालें तब कहें – "ओह वहाँ है कार" ।

उसी प्रकार उसे पूछें "मम्मी कहाँ है ? ढूँढने पर बताना" रसोई में है," इसी तरह अन्य वस्तुओं व लोगों को ढूँढने के प्रयोग से पहले कहाँ ? और कुछ देर बाद आप आसपास देखना बंद कर दें और उसे ढूँढने दें । कहाँ ?

इस क्रियाकलाप में क्लास-रूम की स्थिति में जब बच्चा लिखना प्रारंभ करें, पुस्तक व कलम छिपा दें । ड्राईंग ने मूँद दें, बच्चे आंख मिचौली (लुका-छिपी) वाले खेल में एक दूसरे को ढूँढेंगे, मध्याह्न-भोजन के समय बच्चों को प्लेट या चम्मच आदि ढूँढने को कहें ।

प्रश्न पूछने से हमें सूचना मिलती है, इसीलिये प्रश्न के लक्ष्य प्रमुख है ।

टिप्पणी : प्राकृतिक व कार्यात्मक स्थिति के दौरान क्रियाकलापों को कार्यान्वित करना आवश्यक है । विभिन्न स्थितियों का बोध धीरे-धीरे कार्यान्वित करें, "हाँ" या "नही" प्रश्नों से आरंभ कर, "wh" प्रश्न तक, और "शायद" "क्यों" और "कैसे" अंत में सीखेंगे । जब बच्चा दो शब्द वाले वाक्यांश बोलना आरंभ करताहै, तब प्रश्न के संग्रहण आवश्यक हैं । जहाँ तक संभव हों विभिन्न ढंग व परिस्थितियों में क्रियाकलापों को कार्यान्वित करें ।

उदाहरण के लक्ष्य फ (ii) बच्चे को "कौनसा" प्रश्न के तरीके कों अभिव्यक्त करने में मदत करें ।

निर्धारण पर, एक बच्चे को "कौनसा" प्रश्न की समझ होती है । अभिव्यक्ति में, "क्या" और "कहाँ" प्रश्न के तरीके को साधारण वाक्यांश तथा वाक्यों में प्रयुक्त किया गया है ।

नमूने के क्रियाकलापः बच्चे को प्रश्न के तरीके को अभिव्यक्त करने में भूमिका पलटना एक उपयुक्त तकनिक सिद्ध होती है ।

उदाहरण के लिये – बाजार में अनेक कलमो को दिखाकर पिताजी बच्चे से पूछेंगें तुम्हें कौनसी कलम चाहिये । जब बच्चा एक कलम का चयन करेगा, पिताजी को बच्चे को पूछने के लिये प्रोत्साहित करना चाहियें – तुम्हें कौनसी कलम चाहियें ? और पिताजी एक कलम का चयन करेंगें और बच्चे को धन्यवाद देंगें ।

– सब्जी बाजार के समय माँ बच्चे से पूछेगी तुम्हें कौनसी सब्ज़ी पसंद है ? और बच्चा उसे जो चाहिये वो बतायेगा । भूमिका पलटती है और बच्चा को तुम्हें क्या चाहिये ? पूछने के लिये प्रोत्साहित करें, और माँ उसे जो चाहिये वो सब्जी बतायेगी ।

– क्लास रूम की परिस्थिति में, शिक्षक बच्चें को खिलौने, पुस्तकें आदि का चयन करने को कह सकते हैं । तुम्हें कौनसी चाहिये? इधर भूमिका पलटना लागू कर सकते हैं ।

– कहानी कहना भी संभवत : एक सीखने की स्थिति है । उदाहरण

के लिये, "बच्चा फल खा रहा है" कहानी में, शिक्षक कहेगा, देखो, फल हैं – केला, आम, सेब, बच्चा कौनसा फल खायेगा ? बच्चा एक फल कहेगा या बतायेगा इस बच्चे को दूसरे बच्चों को पूछने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये, बच्चा कौनसा फल खायेगा ?

कई दैनिक संयुक्त-क्रियाओं का प्रयोग प्रश्न के तरीके को सीखने के लिये प्रयुक्त कर सकते हैं ।

उदाहरण के लक्ष्य(ग): बच्चे को दो सोपान वाली अज्ञायें/आदेशों के सीखने में मदत करे ।

दो सोपान आज्ञा/आदेश का पालन करने के लिये बच्चे को "और" संयोजन (समुच्चय बोधक) ज्ञान होना चाहिये, और साधारण निर्देश पालन करने की क्षमता होनी चाहिये ।

प्रारंभ में, दो आदेश जो प्रायः दो सोपान आदेशों के साथ, जो एक दूसरे से संबंधित भी न हो सामान्यत : एक साथ पाये जाते हैं, उनमें प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है । उदाहरण के लिये – "मेरे लिये खाना? भोजन लाओ और मेरे लिये पानी लाओ, दोनो एक दूसरे से संबंधित है । मेरे लिये खाना, भोजन लाओ, और स्नान करो दोनों एक दूसरे से संबंधित नही हो सकते ।

मूल्यांकन पर, बच्चे में, बुनियादी आवश्यकतायें पाई गईं . और उसका लक्ष्य "दरवाजा खोलो" और "बिजली जलाओ" संबंधित आदेशों का पालन करना सीखना था । साधारणतः यह बच्चा आदेश देने पर केवल पहले भाग का ही पालन करता है ।

नमूने के क्रियाकलाप –

बड़ो के द्वारा बच्चे को "दरवाजा खोलो" और "बिजली जलाओ" निर्देश का पालन करने के लिये कहा जाता है । बच्चा पहले भाग का पालन करेगा और दरवाजा खोलेगा । तुरंत बडे लोग पूरे निर्देश को दोहरायेंगे और बच्चे को बिजली के स्वीच के पास ले जायेगें और बच्चे को बिजली जलाने लगायेंगें, पर्याप्त प्रयास के बाद, तत्परता

कम कर दें और बच्चे को कार्य पूर्ण करने की अनुमति दें । संप्रेषण स्थिति की समाप्ति ही अपने आप में एक प्रबल पुर्नबलन है । सीखने को बढ़ावा देने के लिये बच्चे को दूसरे बच्चोंको शब्दों या संकेतों के संयोजन या बच्चा कोई अन्य अभिव्यक्त करने के तरीके का प्रयोग करता हों, उसे दूसरे बच्चे को आदेश देने के लिये कह सकते हैं ।

बच्चे को अनेक संप्रेषण परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये दोहराये गये आदेशों को चुनना चाहिये ।

टिप्पणी – विभिन्न परिस्थितियों में, बच्चे में विभिन्न संप्रेषण स्थितियों को पूर्ण करने में किसी दो सोपान निर्देशों को सम्मिलित करना आवश्यक है ।

– "दरवाजे के पास जाओ, और उसे खोलो" ऐसे निर्देश मुख्यतः सामान्य आदेश है ।

– ऐसे निर्देशों के चयन की आवश्यकता है, जिनमें बच्चे के संप्रेषण की तुरंत सम्बद्धता हों ।

उदाहरण के लक्ष्य(ह): बच्चे को "बहुवचन" का संग्रहण करने में मदत करे । विभिन्न भाषाओं में बहुवचन चिह्न परिवर्तित हो जाते हैं । कुछ नियमित चिह्न हैं और कुछ सामान्य नियमों के अपवाद हैं ।

– तेलुगु में नियमित बहुवचन चिह्न एकवचन में "लू" को जोडते हैं, जैसे (पुस्तक के लिये पुस्तकमू,) पुस्तकमू के लिये पुस्तकालू, (बच्चों के लिये) पिल्ला–पिल्ललू , हिंदी में एकवचन में किताब–बहुवचन में किताबें, चिड़िया – चिड़ियाँ ।

निर्धारण पर पाया गया कि, बच्चे को तेलगु के बहुवचन में चिह्न "लू" चिह्न के बोध की आवश्यकता है । निम्नलिखित पंक्तियों में क्रियाकलापों की योजना बनाई गई है ।

नमूने के क्रियाकलाप– ऐसी परिस्थिति को चुनना जिसमें बच्चे को बहुवचन बोलने की आवश्यकता है । जैसे–चॉकलेटस्, बिस्कुटस् मांगना। एक ओर एक चॉकलेट और दूसरी ओर अनेक चॉकलेट रखें और उनकी ओर बताते हुये बच्चे को चयन करने के लिये

नियमित और अनियमित बहु वचनों का ज्ञान विशिष्ट भाषाओं में होना चाहिये ।

कहें । और जब वह समूह वाले चॉकलेट की ओर इशारा करें "चॉकलेटलू" कहकर, एक या दो बार दोहराइये और उसे दीजिये। ऐसी ही स्थिति में, बच्चे को एक चॉकलेट देने को सर हिलाकर या "नहो" कहकर इन्कार करने में मदत करें ।

– बच्चों को चॉकलेट या फल देते समय इस बच्चे को सम्मिलित कर उसे जानबुझकर एक चॉकलेट दें और उसे विरोध करने के लिये तैयार करें या बुलायें । विरोध करने पर उसे पूछिये, क्या उसे चॉकलेटस् चाहियें ? और उसे दीजिये ।

– एक-एक वस्तु का वैषम्य दिखाकर, कमरे में विभिन्न जगहों पर छिपाते हुयें कलम, पत्थर, पत्ते, बच्चे को ढूँढने को कहें ।

– बागवानी, रसोई, चाय बनाना आदि । ये कार्य दैनिक-क्रियाकलापों का एक भाग हैं ।

– बहुवचन का बोध एक कर देने वाले विषय बनाने चाहिये, जिनमें विभिन्न वस्तुयें सम्मिलित हों । उदाहरण के लिये – बड़े लोग बच्चे के साथ बसें, सीटें, टिकटें, दुकाने, पेन, चूडियाँ आदि यात्रा कार्यक्रम में ढूँढ सकते हैं (चाय-पार्टी तकनीक) ।

नोट :
अनेक भाषा रचना इन्हीं पँक्तियों पर आधारित हों । इस अध्याय में पहले जैसे चर्चा की गई है उसी प्रकार की रचना विपरीत कार्य तकनीक के द्वारा बढ़ायी जाये ।

बच्चे के लिये संग्रहण बहुवचन को व अभिव्यक्त करने के लिये सामान्य वाक्य उपलब्ध करना आवश्यक है।

– जैसे ही बच्चा एक व्याकरणीक रूपग्राम सीखता है, दूसरों को भी तत्पश्चात् लेना चाहिये ।

– इस समय भारतीय भाषाओं में बच्चे के संदर्भ पर आधारित व्याकरणीक रूपग्राम के चुनाव को सावधानी से करने के विकासशील प्राप्ति की कोई सूचना नही है ।

लक्ष्य के उदाहरण – (ए) स्थिति का वर्णन करने के लिये

बच्चों को वाक्य जोड़ने में मदत करें ।

– साधारणत समुच्चय बोधक शब्दों के द्वारा वाक्य जोडे जाते हैं । प्रारंभ में अंड (और) आफ्टर, (बाद) बट (किंतु) आदि सामान्य समुच्चयबोधक शब्द सीखाये जाते हैं । इन्हें व्यक्त करने से पहले इनका संग्रहण होना आवश्यक हैं । परिस्थिति के क्रियाकलाप में बच्चे को एक समान्य वाक्य बनाने की योग्यता होनी चाहिये

– निर्धारण पर, बच्चे में उपरोक्त पूर्वापेक्ष है, और उसका "आफ्टर" (बाद) शब्द का प्रयोग सीखना लक्ष्य है । अधिकतर भारतीय भाषाओं में बच्चे "आफ्टर" (बाद में, इसके बाद) शब्द सीखते हैं ।

नमूने के क्रियाकलाप – नैसर्गिक पाई जाने वाली परिस्थितियों में वर्णन एक साथ किया जा सकता है । उदाहरण के लिये – बच्चा दो श्रृंखला श्रेणी वाले कार्यो का वर्णन कर सकता है, जैसे – चाचा बैठे हैं, इसके बाद में वह दौड रहा है, या तुम पेन खोल रहे हों, उसके बाद तुम लिख रहे हों, आदि संदर्भानुसार । प्रारंभ में बच्चे से एक घटना के वर्णन की अपेक्षा करें – जैसे – "तुम पेन खोल रहे हों" और दूसरे होने वाली घटना का वर्णन करें । इस अवकाश में "बाद में" शब्द का प्रयोग बड़े लोग कर सकते हैं, और एक प्रकार का संकेत प्रदान कर सकते हैं (उदाहरण के लिये – हाथ हिलना या हाथों की हलचल – बाद के संकेत को दर्शाना) धीरे–धीरे केवल हाथों की हलचल हों और बच्चा शब्द पूरा करें ।

समुच्चय बोधक शब्दों को सीखना मंद बुद्धि बच्चों के लिये कठिन है, सीखने पर उनका सामान्यीकरण और कठिन है ।

उपरोक्त बताई गई पद्धतिनुसार बच्चे के क्रियाकलापों के साथ प्रसिद्ध व जानी मानी कहानियां शिक्षक द्वारा सुनाई जा सकती हैं ।

5) भाषा प्रयोग :

यह क्षेत्र सीखी गई भाषा के विषय प्रयोग से संबंधित है । इसमें सम्मिलित पहलू वाक्-स्पष्टता बातचीत में भाग लेना और उसी

चाहिये जानते हुये भी, (क्या संप्रेषण करना) बातचीत में भाग लेने में कठिनाई अनुभव करता हैं । उदाहरण के लिये – बातचीत प्रारंभ करने में कठिनाई या बातचीत में विषय का निर्वाह करने में कठिनाई ।

3. सांकेतिक संप्रेषण

अधिकतर संकेत, किंतु सीमित सांकेतिक अभिव्यक्ति – कुशलता उदाहरण के लिये – कई बच्चों में वाक् नही होता और उनके हावभाव और संकेत सीमित होते हैं ।

लक्ष्य – 1:

उच्चारण प्रशिक्षण –

मंदबुद्धि बच्चों में यह एक अति सामान्य समस्या है, जिससे अभिभावक और शिक्षक चिंतित हैं । कम उच्चारण कुशलताओं के प्रभाव से बात अस्पष्ट होती है । कई बार मानसिक मंद बच्चों में अस्पष्ट बात ही भाषा के दोषों को छिपाती है ।

कई बार उच्चारण दोष भाषायी दोषों पर पर्दा डालता है ।

मंद बुद्धि व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त त्रृटिपूर्ण ध्वनि उत्पादन पद्धति में सुधार के द्वारा पूर्ण रूप से वाक् की स्पष्टता में सुधार लाना, पूर्ण रुप से उच्चारण प्रशिक्षण का उद्देश्य है ।

जैसे कि, चर्चा की गई है, सामान्य ध्वनि-उत्पादन की त्रृटियाँ सही ध्वनि के स्थान पर नई ध्वनि (स्थानापन्न): शब्द में ध्वनि को छोड देना (विलोपन): अस्पष्ट उत्पादन (विकृति), तथा शब्द में नई ध्वनि जोडना (जोड़ना) इनमें स्थानापन्न, विलोपन और विकृत करने की त्रृटियाँ प्रायः मंदबुद्धि बच्चे की वाक् में पाई गई हैं ।

सामान्यतः उच्चारण प्रशिक्षण चार स्तरों पर कार्यान्वित करते है

1) पृथक (आईसोलेशन) ध्वनि स्तर (उदाहरण क,ट,ड,)

2) अक्षर (सिलेबल) स्तर (उदाहरण की, कू,टे,डू)

3) शब्द (वर्ड) स्तर (उदाहरण राजा, लो, बतख), तथा

4) वाक्य (सेंटेन्स) स्तर (वाक्यों में शब्द).

टिप्पणी –

> कई लोगों से चर्चा की गई कि, प्रशिक्षण शब्द स्तर से ही आरंभ करना चाहिये, यह विचार बताता है कि, पृथक स्तर को सीखना उपयोगी नही हो सकता, क्योंकि, हम पृथक ध्वनियों में बात नही करते दैनिक बातचीत में प्रशिक्षणार्थी के लिये सबसे अच्छी पद्धति का प्रयोग करें ।

प्रत्येक स्तर पर सफलता अगले स्तरों की ओर अग्रसर करने के लिये उद्यत करती है । प्रत्येक स्तर के प्रशिक्षण में 4 निम्नलिखित सोपान सम्मिलित हैं ।

1) संवेदी प्रत्यक्षण-प्रशिक्षण, (सेंसरी परसेप्शुयेल ट्रेनिंग)

2) सुधारना (करेक्टिंग)

3) दृढ़ता स्थायीकरण (स्टेबिलाइजिंग)

4) स्थानांतरण, (ट्रांसफरिंग)

प्रशिक्षण के प्रत्येक सोपान के सामान्य लक्ष्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं ।

एक व्यक्ति के सही वाक् ध्वनि को पहचानना, उत्पन्न करना और दैनिक कार्य में प्रयुक्त करना चाहिये ।

प्रकार के पहलू, हैं । (विस्त्रृत वर्णन के लिये अध्याय 6 और परिशिष्ट 6.2 संदर्भ देखें).

साधारणत : पाई गयी समस्यायें हैं –

1) **वाक् की न्यून स्पष्टता**•विशेषरूप से ऐसे व्यक्तियों द्वारा देखी गई जो बच्चे की वाक् से अपरिचित हैं । प्रायः वाक् ध्वनि उत्पादन के दौरान गलती का यह परिणाम है । सामान्यतः निम्नलिखित गलतियों के मिलने से –

I) **एक ध्वनि का दूसरी ध्वनि से स्थानापन्न–** उदाहरण के लिये पेंसिल के लिये पेन्थील.("स" के लिये "थ" का स्थानापन्न)

II) **एक शब्द में ध्वनि का विलोपन–** उदाहरण के लिये – बस स्टैंड के लिये बटैंड ("स" का विलोपन)

III) **ध्वनि की विकृति –** जब मूल ध्वनि छोडी गई ध्वनि जैसी न लगने पर, कही गई ध्वनि विकृत कर देना, और उसी समय वो विभिन्न ध्वनियों की तरह कठिन न हों (स्थानापन्न)

IV) **जोडना –** शब्द में एक अतिरिक्त ध्वनिजोडना (जैसे स्कूल के लिये इस्कूल् – "स्कूल" शब्द के साथ "इ" जोडना)

उपरोक्त के अलावा वाक् की अस्पष्टता निम्नलिखित कारणों से भी हो सकती हैं ।

अ) वाक्य के शब्दों पर अनुचित दबाव का प्रयोग और बेसुरा स्वर विन्यास । (सुप्रासेगमेंटल फीचर्स)

ब) जब भी बच्चा बात करता है अन्य व्यक्ति उसे सुन नही सकते । धीमी आवाज से बात करता है ।

2) **प्रयोग कुशलतायें -**

भाषा प्रयोग क्षेत्र में दूसरी समस्या है, कि, बच्चे को क्या कहना

1) व्यक्ति सही ध्वनि के उत्पादन की विशेषता से अवगत हो जाता है, (लक्ष्य-ध्वनि) और अपने आप की गई लक्ष्य-ध्वनि से अलग त्रुटियों को पहचानता है ।

संवेदी/प्रत्यक्षण प्रशिक्षण , प्रशिक्षणार्थी को सुनने में उसका, उसके त्रुटियों और सामान्य वाक् में तुलना में मदत करता है ।

2) व्यक्ति को चाहिये परिनिष्ठित ध्वनियों को कैसे अच्छी तरह से उत्पन्न करें जैसे, उसे चाहिये कि, नयी ध्वनि को उत्पादित या स्थापित करने की खोज करें । विभिन्न ध्वनि के उत्पादनों को परिवर्तित करना और सुधारना है, जब तक वो सही ढंग से उत्पादित न करें ।

टिप्पणी -

प्रशिक्षक के लिये वाक् ध्वनि को कैसे उत्पन्न करना सीखना आवश्यक है । जिससे प्रशिक्षणार्थी की त्रुटियों को वह सुधार सकें । अध्याय 3. वाक् उत्पादन का मार्गदर्शन करेगा । महत्वपूर्ण सूचना का एक टुकड़ा (भाग जो प्रशिक्षक की ध्वनि को कैसे उत्पादन कर सकते है समझने में मदत कर सकता है । उस ध्वनि को अपने आप 8–10 बार उत्पन्न करें और स्थान और उत्पादन के ढंग को देखें ।

3) व्यक्ति को अक्षर में पृथक स्तरीय स्थानिय (स––), अक्षर में, (श,स,शु) और शब्दों, वाक्यांश और वाक्य जैसे प्रत्येक स्तर पर बल बढाना, आदि के प्रयोग पर दृढ़ होना या बल देना चाहिये ।

व्यक्ति को सभी परिस्थितियों में स्वैच्छिक वाक् में ध्वनि लक्ष्य के प्रयोग के योग्य होना चाहिये । यह स्थानांतरण या निर्वाह कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आवश्यक है । उदाहरण के लिये–दैनिक प्रयोग के लिये स्थानांतरण कुशलतायें ।

आकृति 7.1 अभी तक चर्चित विषय बतायेगी ।

लक्ष्य ध्वनि का चुनाव :

उच्चारण का निर्धारण (देखिये अध्याय 6.) त्रुटियों की संख्या व प्रकारों

की सूची देगा । अब प्रश्न ये उठता है कि, कौनसी ध्वनि सही होना चाहिये । यदि त्रुटि केवल एक ही हों, तो वही लक्ष्य होना चाहिये/तथापि, साधारणतः मदबुद्धि बच्चे में एक से अधिक त्रुटियाँ पाई जाती हैं । ऐसी स्थिति में, लक्ष्य ध्वनि निम्नलिखित सुझावों के आधार पर चुननी चाहिये ।

परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये चिकित्सक को सही लक्ष्य ध्वनि को चुनना चाहिये ।

1. व्यावसायिक प्रायः उस वाक् ध्वनि का प्रथम लक्ष्य के रूप में चयन करते हैं जो कभी-कभी अन उच्चारित होती है । जैसे कुछ परिस्थितियों में वो सही उच्चारण उत्पन्न करते हैं ।

2. अपेक्षांकृत सरल ध्वनि का पहले चयन करते हैं । उदाहरण के लिये–यदि त्रुटियों आर, एल तथा फ्, फ में से हों तो चुनी जा सकती हैं ।

3. प्रबल उत्तेजना पर सही उत्पन्न की गई ध्वनि पहले चुनी जाती है । उदाहरण के लिये – "ड़" और "आई" ध्वनियां यदि अन उच्चारित ध्वनियां हों तो प्रशिक्षणार्थी इन दो में से कौनसी ध्वनि पृथक या अनर्थक शब्द में बार–बार (दोहराये गये) अनुकरण पर उत्पन्न की गई है, समझ सकता है, तब प्रशिक्षण उस ध्वनि से प्रारंभ करे ।

4. यदि सामान्य बच्चे में कई वाक् ध्वनियाँ अनुच्चारित हो, और एक ध्वनि पहले विकासशील पाई गई हों, तो उसका पहले चयन किया जाता है ।

यह ध्यान रखना आवश्यक हैं कि, स्थिति की प्राथमिकता पर व्यावसायिक का निर्णय आधारित हों ।

त्रुटि ध्वनि पर ही प्रशिक्षण या चिकित्सा केंद्रित हों । यह अनउच्चारित, अपरिशिष्ट ध्वनि है जो शब्दों या वाक्यों को बिगाड़ देती हैं । इसलिये, परिशिष्ट ध्वनि की प्राप्ति और प्रयोग ही मुख्य लक्ष्य है ।

प्रशिक्षण का क्रम - अवस्थ–1 संवेदी प्रत्यक्षण प्रशिक्षण (सेंसरी परसेप्शुयल ट्रेनिंग)

संवेदी–प्रत्यक्षण प्रशिक्षण - मंदबुद्दि बच्चे के लिये त्रुटियों वाली ध्वनि

को सुनना और परिशिष्ट ध्वनि से तुलना करना एक कठिन कार्य है । लक्ष्य को ठोस बनाकर इन्हें कुछ तरीकों से जैसे लक्ष्य वाक् ध्वनि को प्रमुख बना सकते हैं ।

लक्ष्य ध्वनि को प्रमुख/ठोस बनाना :

सबसे पहले व्यक्ति को चाहिये कि, लक्ष्य ध्वनि को ठोस बनाना, उसको उत्तेजना को बहुमूल्य बनाना अत्यधिक आवश्यक है । हम उसे निम्नलिखित आतरिक संबंधों के सोपानों द्वारा पा सकते हैं ।

1) **पहचान :**

लक्ष्य ध्वनि की अलग विशेषता होती है । उदाहरण के लिये – लक्ष्य ध्वनि को जानवर या वस्तु के रूप में चित्रित कर सकते हैं –"ज" मेढ़क बन जाता है, "गाडी": "श,–" "उश" बन जाता है "ऽ" "टुस" बन जाता है, (न जलने वाले पटाखों के लिये) आदि यहाँ पर लक्ष्य ध्वनि श्रवण, दृष्टि और स्पर्श मुख्य बताई गई है।

2) **पृथकता :**

एक बार परिनिष्ठित ध्वनि को पहचानने के बाद, बच्चे को उसका उत्तर संकेत के रूप मे देना चाहिये । यह बच्चे को ध्वनि के शब्दो व वाक्यो मे आसानी से अतर्विष्ट करने मे मदत करता है । शब्दो की परिनिष्ठित ध्वनि को केवल मिश्रण में, हाथ हिलाकर, चलाती हुई कार कूदकर, जब परिनिष्ठित ध्वनि उत्पन्न की जाती है या सभी बच्चों को छूकर जिनके नाम मे परिनिष्ठित ध्वनि को

बच्चे की शारीरिकक योग्यता को ध्यान मे रखते हुये प्रतिक्रिया का स्वरूप तय करना चाहिये ।

3) **उत्तेजना :**

प्रशिक्षणार्थी लक्ष्य ध्वनि को बच्चे को उत्पादन के इंद्रिय के बमबारी द्वारा बढा सकता है उदाहरण के लिये – बच्चे को परिनिष्ठित ध्वनि के शब्दो या विभिन्न लय द्वारा उत्पन्न ध्वनि के प्रयोग से कहानी सुनाना

4) **विभेदीकरण, पृथ्थककरण विभेदन–**

बच्चे को उसके स्वयं के ही वाक् में गलतियों को पहचानने मे

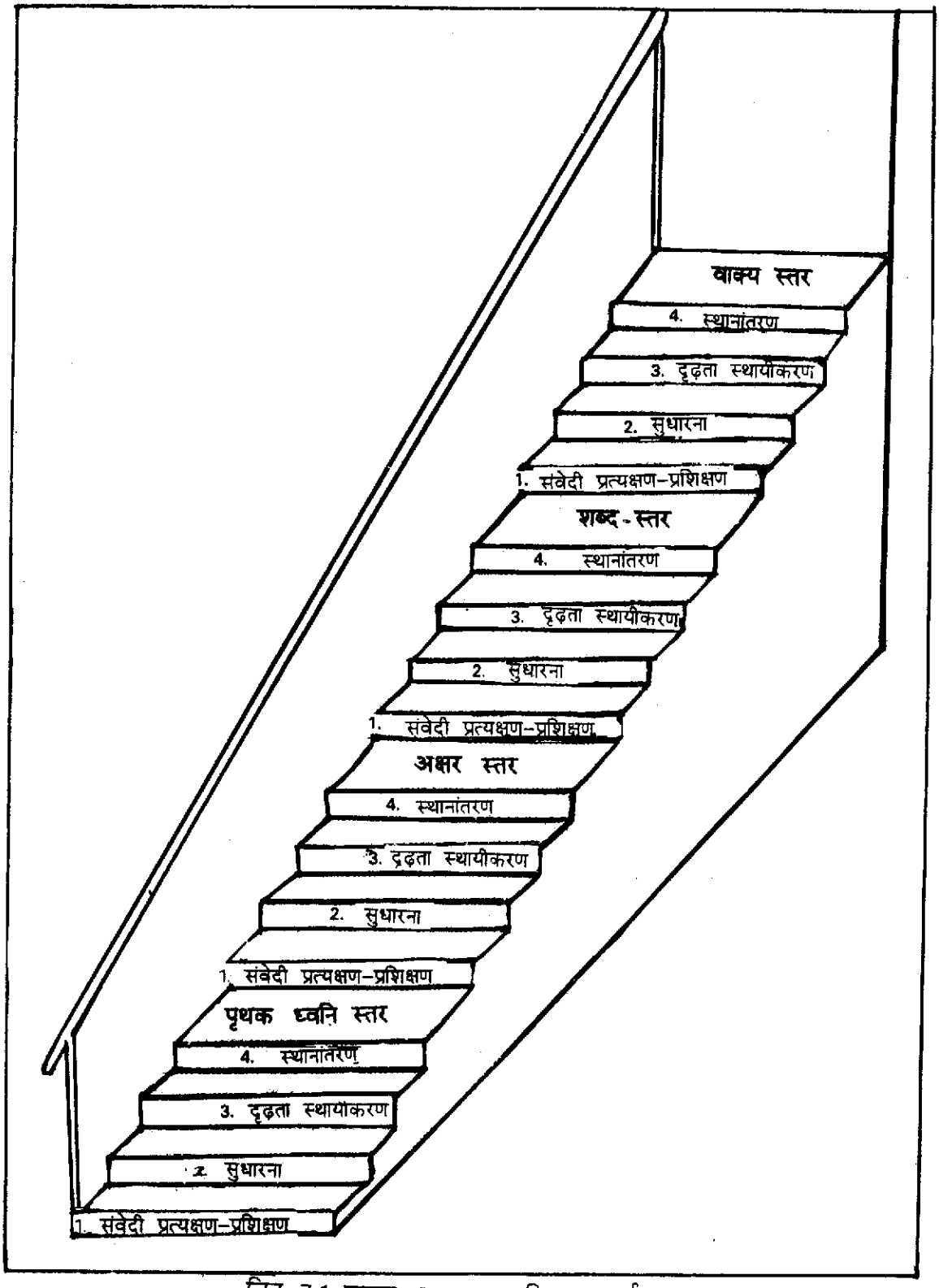

चित्र 7.1 क्रमशः उच्चारण प्रशिक्षण कार्यक्रम

मदत करने से पहले हमें पता कर लेना चाहिये कि, जब दूसरे लोग (शिक्षक/चिकित्सक) गलतियाँ कर रहे हों तब बच्चा गलतियों को पहचान पा रहा है ।

जब शिक्षक जानबुझकर गलतियाँ कर रहा हों, तब बच्चे को गलतियों को ढूँढने के लिये कहा जा सकता है । बच्चा यह भी बता सकता है कि, गलतियों को किस तरह से सुधार सकते हैं ।

इस कान-प्रशिक्षण के पूर्ण अवधि के दौरान, बच्चे को नयी ध्वनि उत्पन्न करने के लिये नही कहा जाता है । बच्चा नमूने का अवलोकन करता है और सीखता है कौनसी ध्वनि त्रृटिपूर्ण उत्पन्न की गई है और कौनसी परिनिष्ठित ध्वनि है ।

श्रवण-प्रशिक्षण-क्रम का उद्देश्य नये ध्वनि को पहचानना है उत्पन्न करना नही ।

अपने आप सुनना एक महत्वपूर्ण सोपान है, जब वो अपने आप दूसरे की वाक् को सुनता है । जब यह सुधार बच्चे के कान और मुँह के बीच स्थापित होता है, तब उसकी स्थायी गलतियाँ घट जाती हैं । इस संबंध में टेप रेकॉर्ड और खेलना बहुत उपयोगी कार्य है । संभव हों तो, बच्चों को नये शब्दों की त्रृटियों को ढूँढ निकालनें के लिये कह सकते हैं । सभी मंद बुद्धि बच्चे इसमें भाग नही ले सकते । तथापि, यदि एक बार बच्चा त्रृटियों वाली ध्वनियों और परिनिष्ठित ध्वनि में अंतर समझ लें तो अगला सोपान नई ध्वनि को उत्पन्न करना होगा ।

अवस्था 2. नई ध्वनि का उत्पादन

जैसा कि, बताया गया है – नई ध्वनि का उत्पादन पृथक स्तर से सामान्य परिस्थिति तक सभी स्तरों पर संभव होना चाहिये । बच्चों को नई ध्वनियाँ उत्पन्न करने की कुछ पद्धतियाँ इस प्रकार है :

– बच्चा परिनिष्ठित ध्वनि प्रगतिशीलता से सन्निकट तक सीखता है । इस पद्धति से बच्चा जो त्रृटि एक साथ करता है, शिक्षक भी उसी तरह की त्रृटि करता है । मध्यस्थ ध्वनियों की श्रृंखला शिक्षक द्वारा उत्पादित होती है और बच्चा उसका अनुकरण करता है, धीरे–धीरे परिनिष्ठित ध्वनि उत्पन्न होती है । यह रूप देने वाली

पद्धति विभिन्नता को प्रोत्साहन देती है, और यह अति आवश्यक है, विशेषतः मध्यम मंद बुद्धि वाले समूह के लिये ।

– अल्प मंद बुद्धि समूह में, चित्र, आकृत्तियों, दर्पण/आईने और अन्य साधनों का उचित प्रयोग, जीभ, जबड़ा और ओंठ के स्थापन को दिखाने के लिये कर सकते हैं । बच्चे को स्थिति की सन्निकटता में मदत देने के बाद, उत्पादन प्रारंभ कर सकते हैं । यह ध्यान रखें – कुंद किनारे वाली चम्मच, कागद, कलम, मोमबत्ती, आईना/दर्पण, चीनी, नमक आदि जैसी आसानी से प्राप्त सामग्री उपयुक्त होगी ।

सही ध्वनि का उच्चारण स्थान और प्रयत्न दिखाने के लिये बच्चे के साथ पेपर के टुकडे, शीशा जैसी वस्तुओं का प्रयोग कर सकते हैं ।

– कभी–कभी पहले से विद्यमान अन्य ध्वनि में परिवर्तन उपयुक्त हो सकता है । उदाहरण के लिये – एक बच्चा जो "श" के लिये "च" को प्रतिस्थापित करता है, उसे "इट" और "शी" पहले अलग–अलग कहने के लिये कहा जाता है और क्रमशः तेजी–तेजी से "इची" शब्द विलीन हो जाता है । यह पद्धति भी बच्चे को मेलखाने में सहायक होती है ।

अवस्था 3. स्थायीकरण– (स्टेबिलाईजेशन)

जब तक नये कौशल को सावधानी से और व्यवस्थित रूप से न बढायें, इसे जल्दी ही भूल सकते हैं ।

पृथकी करण में (इनआईसोलेशन)

जहाँ तक संभव हों, नई ध्वनि को दोहराना और दीर्घीकृत करना चाहिये । यह फुसफुसाहट, धीमी आवाज या शांत उत्पादन हो सकता है । जैसे ही बच्चा नई ध्वनि को उत्पन्न करने में अधिक से अधिक निपूण होता जाये, दीर्घीकरण कम होना चाहिये ।

अगर सीखी गई नई ध्वनिका उत्पादन का अक्षर, शब्द और वाक्यों में स्थाई करना सही ढंग से नही होता, बच्चा भूल सकता है ।

अक्षरों में (इन सिलेबल्स)

अक्षरों का प्रयोग बाद की अवस्था में शब्दों के उत्पादन को बढ़ावा देता है । सारे संयोजनों में ध्वनि का प्रयास किया जा सकता है । उदाहरण के लिये "ट" को "टू" "टी" "टे" "टा" इत्यादि के

रूप में दोहराया जा सकता है । कभी-कभी अनर्थक अक्षरों का भी प्रयोग किया जा सकता है । यह उच्चारण योग्यता को पाने का पहला सोपान है ।

शब्द स्तर में (इन वर्ड लेवल)

ऐसे शब्द जो बच्चे की क्षमता में हों, उनका सावधानी पूर्वक चयन, किया जाये । सरल और छोटे शब्द पहले चुने जायें, कभी-कभी चिकित्सा भी शब्द स्तर पर आरभ होती है ।

वाक्य के स्तरपर (इन सेंटेंस लेवेल) :

जो वाक्य बच्चा पहले उत्पन्न करता है, केवल उन्हीं का चयन करना चाहिये । अधिकांश बच्चे 2 शब्द वाले वाक्यों का प्रयोग करते हैं, इस स्तर की स्थिरता लेनी चाहिये, कहानी का प्रयोग और घटनायें बताना, सावधानीपूर्वक चुनना चाहिये क्योंकि, मंदबुद्धि बच्चों में यह क्षमता नही होती । नेमपूर्वक प्रश्न-उत्तर का प्रयोग किया जाये ।

अवस्था 4. स्थानांतर और दूसरी ओर ले जाना (ट्रांसफर एण्ड कैरी ओवर)

मानसिकमंद बच्चे को प्रवीण बनाने के लिये यह एक बड़ा ही कठिन स्तर हो सकता है । अभिभावकों और अन्य लोगों को उस बच्चे को उस सीखी हुई ध्वनि के प्रयोग को सभी परिस्थितियों में लगातार देखते रहने की आवश्यकता है । कठिनाईयों को रोकने का एक तरीका अभिभावकों को उच्चारण प्रशिक्षण के सभी स्तरों पर सम्मिलित करना है ।

सामान्यीकरण के लिये सीखी गई ध्वनि को दैनिक परिस्थिति में प्रयोग करना चाहिये ।

केस उदाहरण :

उपरोक्त रूपरेखा प्रक्रिया, प्रयोग से परिचित हो जायेगी । एक बच्चे का उदाहरण जो "स" के लिये "त" कहता है, स्पष्ट उदाहरण सोपान के लिये लिया गया है । यह बच्चा 12 वर्षिय अल्पमंद बुद्धि बच्चा है ।

अवस्था 1: संवेदी प्रत्यक्षण प्रशिक्षण :

इस बच्चे के लिये प्रशिक्षण पृथकीकरण स्तर से प्रारंभ होता था ।

लक्ष्य ध्वनि को प्रमुख बनाना :

दिये गये क्रियाकलापों का पिछले सेक्शन में चर्चित क्रम से तुलना कीजिये ।

हवा निकाला गया गुब्बारा, लक्ष्य ध्वनि "स" के पहचान के लिये दिया गया । चिकित्सक ने दूसरी ध्वनि को कार्य के साथ, कई बार गुब्बारे के गले में हवा भरी, और हवा निकाली ।

– बच्चे को एक साईकिल, स्कूटर, अपने भाई साई को फोटो के खिलौनो का एक सेट, अन्य खिलौनों के साथ दिया गया । चिकित्सक ने फोटो और खिलौने एक के बाद एक करके "स" ध्वनि बनाई । साईकिल "ढकेलो" जैसे विभिन्न आदेशों का प्रयोग किया गया ।

– चिकित्सक के मुख के सामने बच्चे की हथेली पकडकर हवा जैसे हथेली को मार रही हों, जैसा पेंसिल का अनुभव बच्चे को आगे उत्तेजित करने के लिये किया गया था । उसी तरह, बच्चा कुछ कागज के टुकड़े हाथ में पकडकर, चिकित्सक के मुख के सामने "स.....र....." की ध्वनि उत्पन्न करते हुये फुंकेगा ।

– बच्चा साईकिल, साई, स्कूटर आदि परिचित शब्दों का प्रयोग करेगा । बच्चा जो गलती करेगा, चिकित्सक उसी प्रकार की गलती करेगा, और बच्चे को चिकित्सक की प्रत्येक गलती पर ताली बजाने के लिये कहेगा ।

– बच्चे को "स" शब्द सुनने पर, एक बार कूदने को कहा गया और दूसरी बार "त" शब्द सुनने पर दो बार कूदने के लिये कहा गया, यह खेल आंतरिक सम्मिश्रण से बडे चाव से या मजे से खेला गया ।

2 सप्ताह के बाद बच्चा, उपरोक्त क्रियाकलाप जो क्लिनिक और घर में आयोजित किये गये, उन्हें त्रुटिवालीध्वनियों और परिनिष्टित ध्वनियों के अंतर 80% पहचानने योग्य हो गया ।

अवस्था–2 नई ध्वनि "स" का उत्पादन–

प्रारंभ में बच्चे को "स" ध्वनि का अनुकरण करने के लिये कहा गया और कई बार के प्रयास के बाद केवल "स" ध्वनि को ही उत्पन्न कर सका ।

– चिकित्सक ने बच्चे को देखने के लिये कहा कि, जब उसे पेय (सॉफ्टड्रींक) दिया जाता है, स्ट्रा जीभ के किनारे पर रखना, आंशिक रूप से होठों को बंद कर दिया । होंठ खुले थे और बच्चे के सामने बंद किये, यह बताने के लिये कि, स्ट्रा जीभ के किनारे पर कैसे रखी जाती है ।

– जब चिकित्सक फूंकेगा तब बच्चे को ठंडी हवा की वाफ/ पेंसिल की बीम अनुभव करने को कहा जायेगा ।

– बच्चे को उसी प्रकार की परिस्थितियाँ दी गई । थोडी सी व्यवस्था से बच्चे व चिकित्सक द्वारा आईने के सामने खडे होकर स्ट्रा एकसाथ पकड़वाया गया ।

– बच्चे को उसी तरह से फूंकने को कहा गया, 10 बार के प्रयास के बाद बच्चा स्ट्रॉ के द्वारा हवा की ठंडी बीम भेजने योग्य हुआ ।

– बच्चे के निपूण होने के बाद, बच्चे को लगातार फूंकने को कहा गया और स्ट्रॉ मूँह से निकाल लिया गया । बच्चा "स" जैसी ध्वनि को जारी रखने लगा, और तुरंत रोकने लगा । इस क्रियाकलाप के प्रयास पर बच्चा लगातार "स....." बोलने योग्य हुआ ।

(टिप्पणी– प्रगतिशील (अप्रॉक्सिमेशन) सदृश्य स्थापन तकनीक आदि पद्धतियाँ "स" पृथकता उत्पादन में संयोजित की गई । अन्य ध्वनियों का स्थान व उत्पादन का ढंग तद्नुसार प्रयुक्त किया गया ।)

अवस्था–3 पृथकता की स्थिरता–

– अब गुब्बारे की हवा निकाल दी जाने पर बच्चे को "स" बोलने को कहा गया ।

– चिकित्सक के हाथ की हलचल के साथ बच्चे को "स" लयात्मक ढंग से कहने योग्य बनाया गया ।

– कितनी बार चिकित्सकने "स" कहा बच्चे ने भी उतनी बार "सस....." कहा । और तब की जब बच्चा अपने आप टेबल को धपथपाने लगा ।

(सावधानी– यह कहा जायेकि, यहाँ शब्दों में नई ध्वनि लाने की तीव्र उत्तेजना होनी चाहिये इसका सामना करने के लिये बच्चे को नई कुशलता को बढ़ाना देने के लिये पर्याप्त समय देना चाहिये । वरन् बच्चा नई ध्वनि को आसानी से भूल सकता है ।)

अक्षरों में स्थिरता

– प्रारंभ में अक्षर देखें, सी.सू.सू.सा दीर्घीकृत थे और बच्चे को चिकित्सक का अनुकरण करने के लिये कहा जाता था, "सी", "सू" आदि कहने के लिये बच्चे को कई दिन लग जाते थे, इसको पाने के बाद,

– बच्चे को "सी" और "सा" जोडने को कहा गया था और ऐसे ही कुछ और जोडने के लिये कहा गया था, जब घर में बैठे छोटे भाई ने जब इसी ध्वनि को बोलना आरंभ किया तब बच्चा अत्यधिक प्रसन्न हुआ ।

– अंतिम अवस्था के समय, अक्षराभिव्यक्ति की गति कम की गई ।

– **शब्द स्तर पर स्थिरता–**

जिसमें "स" सम्मिलित है, ऐसे शब्दों का चयन किया गया था, जो बच्चे की क्षमता के बोध और अभिव्यक्ति में हो । उत्तम सामर्थ्य के चयेन के लिये निम्नलिखित समूहों का पालन किया गया।

यह ध्यान में रखना चाहिये कि, लक्ष्य की ध्वनि को भी शब्दों में देखना चाहिये और अन्य ध्वनि नहीं, उदा. के लिये, स्कूटर शब्द में केवल "स" ध्वनि पर ही ध्यान देना "क" पर नही ।

वस्तुओं से संबंधित शब्द–

खिलौने	–	साइकिल स्कूटर, पैसा ।
जानवर	–	पुस्सी (पसंद की बिल्ली) ।
वाहन	–	बस ।
खाद्य पदार्थ	–	चीनी (शुगर) सांबार ।
लोगों के लिये शब्द	–	साई (भाई) ।
कार्यों के लिये शब्द	–	तिस्को (लो) इत्यादि ।

(यह ध्यान रखना चाहिये कि, जब बच्चे को शब्दों में नई ध्वनि उत्पन्न करने को कहें, तब केवल नई ध्वनि ही अवधान का

लक्ष्य हों, सभी ध्वनियाँ नहीं, उदाहरण के लिये, "स्कूटर" शब्द के लिये बच्चे ने "क" छोडकर "सूटर" कहा हों तो इसे स्वीकार करें)

– शब्द उत्पादन के समय, बच्चे को चिकित्सक के द्वारा उंगलियों को झटका देकर संकेत दिया जायेगा, उस समय जब शब्द में नई ध्वनि को उत्पन्न किया गया था, उदाहरण के लिये– अब बच्चे को "साईकिल" कहना है, प्रारंभ में संकेत किया गया था, यह बच्चे को सीखी हुई ध्वनि में ध्यान आकर्षित करने में सहायक था ।

– जब बच्चा चुने गये शब्दों को सीख लेगा, उसे शब्दों से खेलने को कहा गया था, उदाहरण के लिये– "बस" शब्द के लिये उसे "बट", उसी प्रकार "साइकिल" के लिये जानबुझकर "टाइकिल" शब्द बोलने को कहा गया था ।

– शब्द उत्पादन के समय, शब्द तोडे गये जिससे "स" उत्पादन के लिये साध्य हों । उदाहरण के लिये "साईकिल" शब्द प्रारंभ में "स.....इकिल" के रूप में कहा जाता था । यह अंतर क्रमशः कम हो गया था सारे शब्द इसी प्रकार सीखे गये ।

– शब्द उत्पादन की अवस्था के समय पृथकता और अक्षरस्तर को फिर से सीखना आवश्यक हुआ ।

जब बच्चा शब्द या वाक्य स्तर पर स्थाईकरण में कठिनाईयाँ दिखाता है, पृथक स्तर पर एक बार और प्रशिक्षण देना उचित होना ।

वाक्य स्तर में स्थिरता–

– इस बच्चे को बहुत कम वाक्य और बच्चो ने जो नये शब्द सीखे और इन नये शब्दों की सहायता से बच्चे को दर असल नये वाक्य बनाने में मदत मिली ।

अवस्था–4:

स्थानांतरण तथा निर्वाहण

— अभी तक सीखी गई कुशलता को बनाये रखने के लिये घर में भी बच्चे को सीखाया गया ।

– अभिभावक बच्चे को कई जगह ले गये जैसे, बस स्टॉप, होटल, और जानबुझकर बच्चे को वस्तुयें पूछने दी या पूछने को कहा– उदाहरण के लिये – होटल में "और सांबार" चाहिये ।

– बच्चे के उत्पादन और निर्वाह को सीख लेने के बाद, सुधार के लिये नई त्रुटियां ली गई । वाक् की स्पष्टता सार्थकता पाने लगी।

टिप्पणी– उच्चारण प्रशिक्षण में वर्णित सोपान, सभी अन उच्चारण के सुधार के लिये अच्छे साबित होंगे । तथापि, "नयी ध्वनियों के उत्पादन" की अवस्था, विशेष ध्वनियों के उत्पादन के स्थान और विभिन्न पद्धतियों पर आधारित होगी । कुछ व्यंजन ध्वनियाँ (जो उदाहरण में वर्णित नही हैं) जो प्रायः अनउच्चारित हैं (गलत उच्चारित है) और जो उत्पादन के क्रियाकलाप में उच्चारण प्रशिक्षण के लिये प्रकाश में लाई गई हैं । वो नीचे दी गई है ।

– बाईलेबियल "प" – "प" उत्पादन के समय, मुँह के सामने हाथ पकड़ो, हवा की फूंक हथेली को स्पर्श करेगी, यदि कागज का एक टुकडा मूँह के सामने ढीला रखा जायें, उसी प्रकार की हवा की फूंक देखी जा सकती है ।

- "म"– उंगली नाक को स्पर्श करने पर नाक की प्रतिध्वनि या गूँज अनुभव कर सकते हैं । "ब" और "म" के बीच का प्रत्यावर्तन इसे और अधिक स्पष्ट करता है ।

- दंत्यौष्ठय "फ"- लगातार हवा की वाफ और आवाज (नॉईस) जो मूँह के सामने अनुभव होती है । इसको हम "फ" उत्पादन के समय पेपर मुडने से "व"–"अ" लगातार "अ" कहने के समय उपर के दांत और नीचे के होंठ समीप लाने से "व" शब्द उत्पन्न होगा ।
- स्वरकंपन (ट्रील) "र" – "ट" ध्वनि को बलपूर्वक स्थापित करना (रोकना) और अचानक छोड देने से "ट्र" जैसी ध्वनि, साधारणतः पाई जाती है । जो बाद में "र" के रूप में प्रशिक्षित की जा सकती है ।

- वर्त्स्य "त" – "थ" जैसी थूकने की क्रिया, "ट" स्पर्श क्रिया को रोकने का आधार हो सकता है ।

- पार्श्विकः "ल"– बच्चे को बिना होठों को बंद किये मूँह भर कर पानी निगलने लगायें, जीभ की "ल" जैसी स्थिति होगी ।

- कंठय "क" और "ग" – प्रारंभ में लमगोडा क्रिया और बाद में बिना पानी के कंठय में रोकने की क्रिया होगी ।

- स्वरयंत्र मुखी "ह"- खांसना और "अ" को उत्पन्न करना, सहायक हो सकती है ।

सावधानी– बच्चों ने भले ही क्रियाकलापों पर आधारित ध्वनियाँ उत्पन्न करना सीख लिया हों, जब तक कि, शब्दों का प्रयोग न हो, वे उन्हें वाक् ध्वनि के रूप में प्रयोग नही करेंगें ।

लक्ष्य 1 (अ)– बच्चे के वाक्यों के शब्दों पर उचित बल द्वारा और उचित स्वर के विभिन्न प्रश्नों के तरीकों और कथनों पर बल द्वारा वाक् की स्पष्टता को सुधारने में बच्चे की मदत करेंगें ।

बच्चे से उचित प्रश्न पूछकर और आवश्यक शब्दो पर बल देने लगाकर, बोलने वाले के अभीष्ट अर्थ पर आधारित बल का उचित प्रयोग, कर, यह नमूना बताया जा सकता है ।

उदाहरण के लिये–

प्रश्न – यह क्या है ? (जानवरों के समूह में से बंदर बताकर)

उत्तर – यह बंदर है, (अंतिम शब्द पर जोर देकर)

प्रश्न – यह किसने किया ?

उत्तर – यह मैंने किया (दूसरे शब्द पर जोर देकर) आदि उसी प्रकार– यह किसने किया ? प्रश्न पूछने पर "यह मैंने नही किया," बच्चे को बोलने लगाना चाहिये ।

– इस उद्देश्य के लिये, कहानी बोलने की तकनीक, "संयुक्त दैनिक किया", टी पार्टी तकनीक का प्रयोग कर सकते हैं ।

– यदि दैनिक क्रियाकलाप में प्रश्न और स्तरों के विपरीत ढंग का प्रयोग करेंगें, तो बच्चे को प्रश्न के स्वर में भूमिका पलटन जैसे प्रश्न पूछने में मदत मिलेगी ।

– शिक्षक, पिताजी, माँ, मौकरानी आदि जैसी विभिन्न भूमिकायें कर क्रिया की इच्छा का प्रयोग बच्चे को उचित स्वर में सहायक हो सकते है ।

– **लक्ष्य 1 ("ब")–** बच्चे को बातकरते समय उसकी आवाज (वॉइस) उँची करने में सहायता करें ।

उचित स्वर-विन्यास का प्रयोग करने के लिये, सशक्त श्रवण फीड बैक की जरूरत है, स्वर विन्यास सीखने में अधिक समय लग सकता है ।

कभी–कभी गले में संक्रमण धीमी वाणी या आवाज के कारण हो सकती है । ऐसी स्थिति में, चिकित्सक से परामर्श करें । श्रवण दोष के लिये भी, धीमी आवाज का होना भी एक कारण हो सकता है। ऐसे बच्चों की सहायता ऑडियॉलॉजिस्ट कर सकता है । तथापि, कई मानसिक विकलांग बच्चों में प्रत्यक्ष समस्यायें न होने के बावजूद भी धीमी आवाज का प्रयोग करते है । ऐसे बच्चों के लिये निम्नलिखित सुझावों का प्रयोग कर सकते है ।

जब बच्चा बोलना या अंक सुनाना प्रारंभ करता है, टेप रेकॉर्ड धीरे–धीरे आवाज बढ़ाते हुये लगा सकते हैं । बच्चे को अपने आप अपनी आवाज को बढ़ाना चाहिये । ऐसा ही लगातार कई बार करना चाहिये और अचानक टेप बंद कर देना चाहिये, बच्चे को पता चले कि, उसकी आवाज बढ़ रही (तेज हो रही) है । टेप रेकॉर्ड की जगह रेडियो का प्रयोग भी कर सकते हैं ।

– वॉकमैन टेपरेकॉर्डर हेडफोन का प्रयोग, उपरोक्त विवरणित सोपानों की तरह कर सकते हैं ।

– बच्चे को मार्केट जैसी गडबडी वाली जगहों पर ले जा सकते हैं, और वस्तुयें पूछने को कह सकते हैं ।

– बच्चे से बात करते समय, धीरे से दूर हट जायें, आवश्यकता होने के कारण उसकी आवाज बढायेगा ।

– कभी–कभी बड़े बच्चों को खांसने को कहें, और खांसने के स्तर पर शब्द बोलने को कहें, यह भी उपयुक्त होगा ।

2. प्रयुक्त कुशलतायें–

हम कई उद्देश्यों से जैसे सूचना देने के लिये घोषणा करने के लिये, प्रश्न करने के लिये, आवास/वास के निवेदन आदि का सामना करने के लिये हम वाक् व भाषा का प्रयोग करते हैं । वक्ता "क्या" बोलना चाहिये व "कैसे" बोलना चाहिये निर्धारणकरता हैं । इन योग्यताओं को प्रस्तुत करना सीखने के लिये, जैसे वार्तालाप प्रारंभ करना, और

निर्वाह करना, सुनने वाले की जागरूकता और परिस्थितियाँ जैसी कई कुशलताओं की आवश्यकता है । यह बिल्कुल स्पष्ट नही है कि, बच्चे कैसे इन कुशलताओं को सीखते हैं । ऐसा लगता है कि, उन्हें बड़ो का अवलोकन करने और सामाजिक अनुभव से सीखने की आवश्यकता है । यह ध्यान रखा जा सकता है कि, पूर्व वाक् के बहुत पहले से ही प्रयोग कुशलतायें प्रारंभ होती है । मानसिक विकलांग बच्चे प्रायः अपने आप वार्तालाप करना प्रारंभ नही करते, तथापि कम से कम कुछ प्रश्नों के उत्तर अपनाते हैं । एक 10 वर्षीय डॉन्स सिन्ड्रोम और अल्प मंदबुद्धि बच्चे में वार्तालाप प्रारंभ करने या प्रश्न पूछने की समस्या है । अभिभावक उस बच्चे को शर्मिली लडकी कहते हैं । उसके साथ वार्तालाप प्रारंभ करने के लिये कुछ क्रियाकलाप निम्नलिखित है, विभिन्न बच्चों के योग्य परिवर्तन करके प्रयुक्त किये जा सकते हैं ।

भाषा-प्रयोग सामाजिक अनुभव में सीखा जाता है ।

इसका लक्ष्य है, विरोध करने लगाना, आवश्यकताओं को पूरा करना–आज्ञा देना, वास्तविक संप्रेषण परिस्थिति में अपने आप प्रश्न पूछना कि, कहाँ ? चिकित्सालय और घर में किये गये क्रियाकलाप निम्नलिखित है ।

विरोध करने के लिये उकसाना

दैनिक परिस्थिति में, जैसे पिताजी बच्चे को पानी लाने को कहते हैं, जानबुझकर, घटनाओं का उल्लंघन किया गया । एक बार पानी का बर्तन खाली रख दिया गया, – बच्चे को पानी नही मिलने पर उसने कहा "पानी नही" तब माँ ने आकर बच्चे की मदत की । दूसरे अवसर पर, छोटे ग्लासे की जगह बड़ा जग रख दिया, जिसे पकड़ कर लाने में बच्चे का कठिनाई हुई, बच्चे ने कहा– "नहीं" और ग्लास की ओर देखने लगा, (इन दोनों परिस्थितियों में, बच्चे ने वार्तालाप आरंभ किया)

– चिकित्सालय में ऐसी ही पद्धति का प्रयास किया गया, जब अलमारी को ताला लगा था और अलमारी में से बच्चे को खिलौने लाने को कहा गया था ।

– चिकित्सक ने बिस्कुट की जगह कागज खाना आरंभ किया, विरोध उत्पन्न हुआ, ओह/नहीं ।

आज्ञा/आदेश देना–

– गेंद "लेने" और "देने" या फेंकने और "पकडने" का खेल चल रहा था, जानबुझकर माँ ने गेंद को पुनः फेंका बिना गेंद फेंकने की क्रिया को पूर्ण किया, तुरंत बच्चे ने कहा– "गेंद दो" ।

– चिकित्सक ने कुछ ब्लॉकों को बच्चे की पहुँच से दूर रखा, बच्चे को ये कहने लगाने के लिये कि, "ब्लॉक ढूँढो"

कहाँ? प्रश्न पूछना –

– कमरे में चिकित्सक के साथ वस्तुओं के नाम बताने का खेल चल रहा था, बच्चे से प्रश्न पूछे जा रहे थे और वह नाम बता रहा था । यह क्या है ? (पंखे की ओर इंगित करके) जैसा खेल चल रहा था । कुछ प्रयास के बाद भूमिका पलटने का प्रयास किया गया, जहाँ बच्चे को यह क्या है ? प्रश्न पूछने के लिये प्रोत्साहित किया गया, प्रारंभ में तैयार करने के बाद बच्चा नयी वस्तुओं के नामों के साथ अपने आप प्रश्न पूछने लगा ।

– स्कूल जाने से पहले, माँ ने बच्चे के जूते छिपाये, और बच्चा पूछने लगा, जूते कहाँ हैं ? उसी प्रकार की कई स्थितियाँ प्रयुक्त की गई । एक महिने के लगातार प्रशिक्षण के बाद बच्चे ने अपने आप शब्दों का प्रयोग कर वस्तुयें मांगना प्रारंभ किया ।

शिक्षक को चयन करने के लिये प्रोत्साहित किया और अध्याय के प्रारंभ में चर्चा किये गये सिद्धांतों पर आधरित अपने आप की पद्धतियाँ अपनाई ।

शिक्षक के लिये क्रियाकलापों को चुनना ही प्रमुख और कठिन कार्य बनेगा ।

3. मंदबुद्धि बच्चों के लिये सांकेतिक संप्रेषण–

हाल ही के वर्षों में अधिक से अधिक मंदबुद्धि बच्चों के वाक् से अधिक संप्रेषण के तरीकों में मदत की जा रही है । यद्यपि भाषा संकेत, की कई पद्धतियाँ, संप्रेषण के अन्य साधन पाने पर

भी भारतीय संदर्भ में मंदबुद्धि बच्चों के लिये पाठशाला व घर में उन पर प्रत्यक्ष रूप से लागू करना संभव नही है । यह भाग मंदबुद्धि बच्चों के लिये सांकेतिक संप्रेषण के विषय को पाठकों की धारणा को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है ।

इस अंश का उद्येश्य निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देना है ।

1. सांकेतिक संप्रेषण क्या है ?

2. मंदबुद्धि व्यक्तियों के समुदाय (जन संख्या) में कौनसे व्यक्ति हैं, जिन्हें सांकेतिक संप्रेषण चाहिये ?

3. विद्यमान प्रमुख पद्धतियाँ क्या हैं ?

4. अपने संदर्भ में बच्चों को क्या उपयुक्त/अनुकुल हो सकता है ?

संप्रेषण की सांकेतिक पद्धतियाँ सभी सामान्य वक्ता से प्रयुक्त की जाती है ।

सांकेतिक संप्रेषण क्या है ?

हम सभी बात करने से परिचित है, और इस संप्रेषण की विधि को मौखिक संप्रेषण कहते हैं, यदि आप लोगों को बात करते हुये देखेंगे (हम सबको) तो उनके हाथों की हलचल, चेहरे के हावभाव, शारीरिक स्थिति जैसे हम बात करते हैं इनमें परिवर्तन देखेंगें, जिससे हम वक्ता को अच्छी तरह जान सकते हैं । कल्पना कीजिये, कुर्सी से बिना मुडे, किसी से हाथ बांधकर बात कर रहे हैं, ये अतिरिक्त क्रियायें हम हमेशा अन औपचारिक रूप से बात करते हुये करेंगें । यदि हम इस क्रिया को औपचारिक बनायेंगें, और पद्धति में विशेष अवयव जोडेंगे, जैसे संकेत और हाथ के इशारों का प्रयोग करेंगें, या चित्रों के बोर्ड का प्रयोग करेंगें, तो यह पद्धति सांकेतिक संप्रेषण कहलायेगी।

क्या आपने दो बधिर व्यक्तियों को एक दूसरे से बात करते देखा है? आपने संकेत भाषा का प्रयोग देखा होगा (आगे अधिक विवरण प्राप्त होगा)

सांकेतिक पद्धति को 2 प्रमुख क्षेत्रों/भागों में बांट सकते हैं ।

1. असहायक संप्रेषण पद्धति और

2. सहायक संप्रेषण पद्धति

असहायक (अनएडेड) पद्धति के लिये शरीर के भाग, बाहूयें, हाथ, उंगलियाँ आदि चाहिये, उन्हें किसी प्रकार का उपकरण या साधन नही चाहिये । संकेत भाषा पद्धति के उदाहरण हैं – ब्रिटिश संकेत भाषा, अमेरिकन संकेत भाषा ।

सहायक (एडेड) पद्धति के लिये एक प्रकार का बाह्य साधन या सहायता के लिये मदत चाहिये । उदाहरण के लिये, चित्रों के चार्ट, विद्युत साधन, संप्रेषण समिति ।

ये पद्धतियाँ किसको चाहिये ?

साधारणतः यह देखा गया कि, जो बात करना सीखने में कठिनाई दिखाते हैं, उन्हें सांकेतिक पद्धति की आवश्यकता है । इन व्यक्तियों में स्नायु तंत्रिका पद्धति क्षतिग्रस्त (नर्व सिस्टम्डैमेज, विवरण दोष (सामान्यतः बधिर के रूप में जाने जाते है) सेरेब्रल पाल्सी, ऑटिजम्, अफेसिया (पक्षघात स्ट्रोक) अपकर्षक बिमारियाँ (डिजनरेटिव डिसीजेस), सदमा या मानसिक आघात, बहु विकलांग और इसी प्रकार के अन्य कई बच्चे इसमें सम्मिलित हैं । अति मानसिक मंद बुद्धि बच्चों के लिये सांकेतिक संप्रेषण का एक छोटासा सेट बनाया जाता है ।

कोई बच्चा मौखिक संप्रेषण सीखने के लिये कठिनाई दिखाता है, तब सांकेतिक पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिये, मंद-बुद्धि व्यक्ति भी ऐसा ही एक अभ्यर्थी है ।

1980 के दौरान, मानसिक विकलांग व्यक्तियों को संकेतों के प्रकारों की चर्चा पर मुख्यतः जोर दिया गया । इन बच्चों में वाक् न होने पर भी संप्रेषण पर इनका अधिकार है । 300 मंद बुद्धि बच्चों का सर्वेक्षण करने पर 25.67% में वाक्की कमी पाई गई और 30.33% कुछ ही शब्द बोलने वाले थे*। इतनी अधिक जनसंख्या को संकेतों के पद्धतियों की आवश्यकता है, अतः इनके लिये सांकेतिक संप्रेषण के प्रयोग को मुख्यतः प्रोत्साहित करना है ।

* सुब्बाराव एण्ड श्रीनिवास (1989)

हाल ही में, कुछ बच्चे जो जिम्मेदारी पर बात करना सीख रहे हैं, (उदाहरण के लिये एक मंदबुद्धि बच्चा श्रवण दोष या अति श्रवण क्षीण हों) ऐसे बच्चे संभवतः सांकेतिक पद्धतियों को सीखने के योग्य समझे जाते हैं । ऐसे परिवर्तक तरीके (अल्टरनेटिव मोडस) सामान्यीकरण के महत्वपूर्ण सोपान हो सकते हैं । बच्चों को संकेत और हावभाव सीखाने की धारण उन्हें "बात" करने की अनुमति नही देती, यह भी असत्य पाई गई । फिर भी, संकेतों के तरीकों की पद्धतियाँ वाक् प्राप्त करने में मदत करने जैसी लगती है**।

विद्यमान पद्धतियाँ क्या है ?

दो प्रमुख असहायक पद्धतियाँ हैं ब्रिटिश संकेत भाषा और अमेरिकन संकेत भाषा । प्रतिकात्मकता एक महत्वपूर्ण सहायक पद्धति है । यह अंश उन पद्धतियों का संक्षिप्त पुनरावलोकन करेगा जो मंदबुद्धि व्यक्तियों के लिये भारतीय संदर्भ में प्राप्त हों और जिसमें विद्यमान पद्धतियों से हानी हों ।

ब्रिटिश संकेत भाषा– • • •

ब्रिटिश संकेत भाषा ग्रेट ब्रिटन में बधिर समुदाय की संकेत भाषा है । यह वर्तमान (सजीव) भाषा है, प्राकृतिक भाषा है, ये बधिर लोग जो इसका प्रयोग करते हैं, वो उनके वाक्य में उनकी दैनिक आवश्यकताओं में विकसित होती है । संकेतों का प्रत्यक्ष रूप से बोलचाल की अंग्रेजी में अनुवाद नहीं करते । ब्रिटन संकेत भाषा से बोलचाल की अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिये कुछ बधिर लोगों व बधिरे लोगों के शिक्षकों ने एक पद्धति का विकास किया है जिसे सांकेतिक अंग्रेजी (साईन्ड् इंग्लिश) कहा जाता है । सांकेतिक अंग्रेजी, बोलचाल के अंग्रेजी शब्दो में ही प्रयोग करते हैं, जो वाक् में साथ देते हैं । नये संकेतों को काल रचनाओं (स्ट्रक्चर) व अन्य रचनाओं

ब्रिटिश संकेत भाषा और अमेरिकन संकेत भाषा ग्रेट ब्रिटन और अमेरिकका में बधिरों की भाषा है ।

•• मेक् कार्मिक एंड सीफिल बुश (1984)

••• कीरनन् एट. ऑल (1987)

की बोलचाल की अंग्रेजी के अंगों (एलिमेंट) का अविष्कार किया गया, जो संकेत भाषा में विद्यमान नही थे ।

ब्रिटिश संकेत भाषा प्रारंभ में मंदबुद्धि व्यक्तियों के लिये "मेकाटन शब्दावली" के रूप में प्रस्तुत की गई । मेकाटन शब्दावली में ब्रिटिश संकेत भाषा से संकेतों का प्रयोग, और वाक्यों में कुंजी शब्दों के प्रयोगों का समर्थन किया गया । क्रम में बोलचाल की अंग्रेजी शब्द का प्रयोग किया गया परंतु जैसा वे संकेत करते हैं वैसा ही पूर्ण वाक्य होना चाहिये ।

अमेरिकन संकेत भाषा

यू.एस.ए. में बधिरों द्वारा अमेरिकन संकेत भाषा का प्रयोग किया जाता है । उसमें कुछ विभिन्न सांकेतिक अंग्रेजी प्रकार अमेरिकन सकेत भाषा के साथ भी हैं । यह स्वतः के व्याकरण की स्तरीय भाषा है, जो बोलचाल की भाषा से भिन्न है । जब कोई संकेत वस्तु या धारणा के लिये विद्यमान नही है, यह प्रायः उंगली के शब्दों के वर्ण विन्यास (फिंगर स्पेलिंग ऑफ वर्डस्) के संपूरक है ।

पियाजे गार्मन वाक् संकेत

यह एक अविष्कार की गई संकेत भाषा है, जिसे वाक् के "संकेत दर्पण" (साईनमीरर) के रूप में बनाया गया है । लगभग 400 आइटम्स् बोलचाल की अंग्रेजी को संकेत रूप में प्रयोग करने के लिये मदत देती है । यह हस्त विन्यास के कुछ मूल सेट/मूल संकेतों पर बनाई गई है । मूल संकेत एक धारणात्मक वर्ग को प्रस्तुत करता है और उसके आसपास के सारे आयोजित प्रासंगिक शब्दों (रिलेंवेंट टर्मस) को प्रस्तुत करते हैं (उदाहरण के लिये जानवर) मूल संकेतो में अन्य संकेतों का जोडकर विशेष संकेत बनाये गये हैं (उदाहरण के लिय–बिल्ली)

ब्लिस सिम्बॉलिक्स

ब्लिस सिम्बॉल्क्सि में रेखाचित्र (लाइन ड्राइंग का प्रयोग किया जाता है जो देखने में जो सरल से लेकर जटिल भी हो सकते हैं । प्रत्येक चित्र एक चिह्नों को प्रस्तुत करता है । चिह्न समकोण (रेक्टँग्युलर) में बनाये जाते हैं और कुछ मूल आकारों की सीमित संख्या में नियोजित

किये जाते हैं । मूल आकार विभिन्न परिमाण (माप) के गोलाकार, चौकोन, टेढे और समकोण है । चिह्नों को बनाने के लिये उनको विभिन्न प्रकारों से जोड़ा जाता है । विशेषकर संकेतों के उपर शब्द भी लिखे जाते हैं । कार्य चिह्नों (एक्शन सिंबल) के साथ व्यक्ति चिह्न (पर्सन सिंबल) के संयोजन से चिह्न बनाये जाते हैं । उदाहरण के लिये – पिताजी पुरुष हैं, जो रक्षा करते हैं । उसी प्रकार माँ स्त्री है, जो रक्षा करती है । ब्लिस सिम्बल प्रायः बोर्ड पर प्रदर्शित करते हैं, जिससे बच्चा आसानी से बता सकें, और वाक्य बनाने के लिये चिह्नों को जोड सकें । या संयोजित कर सकें ।

भारतीय संकेत भाषा *

भारतीय संकेत भाषा अनेक भावी समुदायों की असमान/विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये बनाई गई है । लगभग 2500 बुनियादी शब्दावली का प्रलेखन किया गया हैं और हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी एवं गुजराती में प्रस्तुत की गई है । यह बताया गया है कि, लगभग 6 लाख बधिर व्यक्ति इसका प्रयोग करते हैं ।

भारतीय संदर्भ में मंदबुद्धि के लिये इन सांकेतिक पद्धतियों के प्रयोग में समस्यायें

अधिकतर पद्धतियाँ बोलचाल की अंग्रेजी के विभिन्न स्तर को प्रस्तुत करती है । भारत में मंदबुद्धि व्यक्तियो में इतनी प्रचलित अंग्रेजी भाषा नही है । हावभाव/इशोर व संकेत हर एक संस्कृति में विशेष हैं और भौगोलिक स्थानों में अलग होते है । भारतीय संकेत भाषा विस्तार पूर्वक प्रयुक्त नही है व प्राप्त नही है । इसके अतिरिक्त दूसरे सुनानेवालों को इन पद्धतियों को समझने में, प्रशिक्षण देने के लिये ये समस्यों होती है । मंदबुद्धि बच्चे के लिये संक्षिप्तता व आसान पद्धति और प्रयुक्त अवयव सीमित संख्या में होने चाहिये ।

विदेश में प्रयुक्त सांकेतिक पद्धतियाँ भारतीय संदर्भ में उचित नही होंगे क्योंकि, सांस्कृतिक, भाषायी, श्रोता प्रशिक्षण, और मूल्य जैसे कारण है ।

इस समस्याओं को ध्यान में रखते हुये हावभाव/इशारे और कम्युनिकेशन बोर्ड अधिक लागू करने जैसी प्रतीत होती है । अगला अंश इन पद्धतियों का संक्षिप्त विवरण देगा ।

• वशिश्ट (1980)

कम्युनिकेशन बोर्डस्–

विद्यार्थियों के व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये कम्युनिकेशन बोर्डस्बनाये जाते हैं । यहाँ वस्तुओं के लिये तरह–तरह के फोटोग्राफ्स या चित्र मुख्य चिनह् हैं, जिनको विद्यार्थी दिखाकर अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं । उदाहरण केलिये – एक बच्चे को पानी बताने के लिये एक कप के चित्र, अपनी कार ढूँढने के लिये कार के चित्र मिठाई बताने के लिये चॉकलेट के चित्र दिये गये थे । चित्रों को एक बोर्ड पर लगाया जा सकता है, या अलग–अलग रखा जा सकता है ।(चित्र 7.2 देखिये)* उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं के आधार पर चिह्नों को कितनी आसानी से बनाया जाये और कम्युनिकेशन बोर्ड को कैसे एक स्थान से दूसरे स्थान ले जायें आदि निर्भर है । कुछ विद्यार्थी केवल रंगीन फोटोग्राफस् ही समझते हैं । और कुछ विद्यार्थी इन फोटोग्राफस् के ट्रेसिंग या रेखाचित्र को पहचान सकते हैं । क्योंकि, हम इन कम्युनिकेशन बोर्ड को प्रत्येक व्यक्ति के लिये बनाते हैं, जो काफी सुसंस्कृत हो सकता है । लेकिन, जैसे हम वाक्य बनाते हैं वैसे ही चित्रों की क्रमबद्धता से प्रयोग करना सामान्यतः इतना महत्वपूर्ण नही है ।

कम्युनिकेशन बोर्ड सीखाने के लिये कोई औपचारिक पद्धति नही है। तथापि, सामान्य सिद्धांत है, पहले चिह्न आवश्यकताओं से संबंधित हों, जो शीघ्र पूर्ण हों, जैसे पीना, प्रसाधन आदि आवश्यकतायें बोर्ड के निर्माण के समय ध्यान में रखी जाती हैं । प्रायः बोर्ड शारीरिक दोष वाले व्यक्तियों के लिये "हाँ" और "ना" बताने के लिये उपाय बनाये हैं, पर अति मानसिक विकलांग लोगों के प्रारंभिक विचार धारा की ग्रहण शक्ति के बाहर भी हो सकता है । लेबल, जूते, कुत्ता आदि के रूप में प्रयोग के लिये वास्तविक वस्तु से चित्र तक मिलाने की वास्तविक पद्धति के लिये चिह्नों का प्रयोग लिया जा सकता है।

हमारी ही अपनी सांकेतिक संप्रेषण पद्धतियों का विकास करने के अतिरिक्त रास्ता नही है, इस काम के लिये शिक्षक उपयुक्त स्थिति मे है ।

---

* जोन्स् एंड क्रेगन् (1986); वॉडरहीडेन एंड ग्रिल्ली (1976); आदी आधार पर

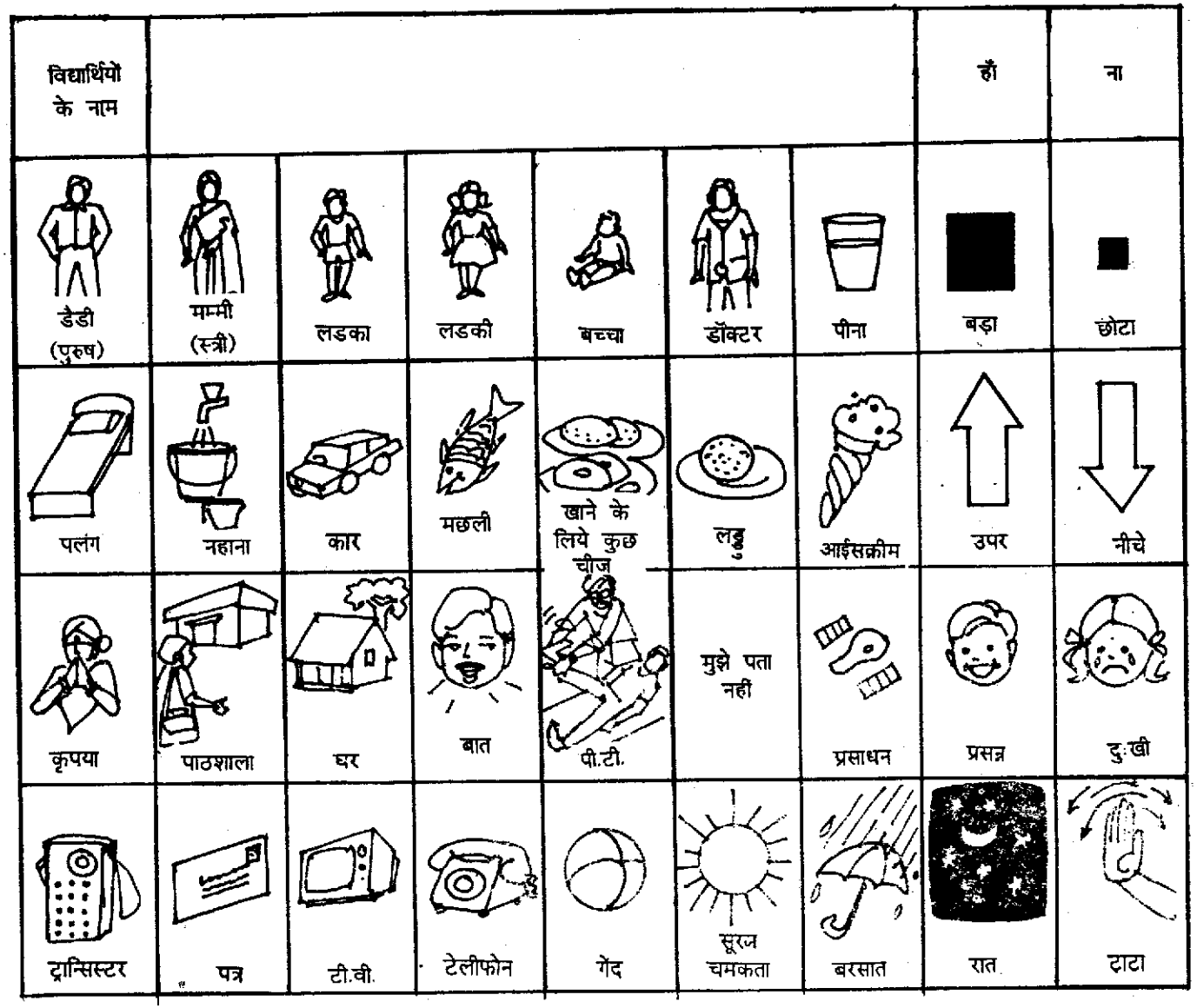

चित्र 22 चित्र/शब्द कम्युनिकेशन बोर्ड

इशारे का महत्व –

शरीर भाषा अधिक नियमित प्रकार है ये इशारे अधिक सहज हैं। इसे अभिभावक, शिक्षक और अन्य लोग बिना विशेष प्रशिक्षण के आसानी से समझ सकते हैं । जैसे ये इशारे साधारणतः ग्रॉस मोटर मूवमेंट है इसलिये वे शारीरिक विकलांग व्यक्तियों में भी संभालने योग्य हो सकते हैं । उन्हें उपकरण या साधनों की अधिक आवश्यकता नही होती[1] । दूसरी प्रणाली से अलग करने पर सीमित अभिव्यक्ति योग्यता उनकी मुख्य हानी है ।

एन.आई.एम.एच. विकसित किये गये संकेत–

मंदबुद्धि बच्चों के लिये संकेतों के महत्व को ध्यान में रखते हुये, और उनकी सभावना को समझते हुये 48 संकेत चुने गये और उनकी सूची बनाई गई । संकेतों की सूची परिशिष्ट 7.1 में चित्रित की गयी है । संकेत दैनिक क्रियाकलापों के लिये बनाये गये है और उनके आशयों के आधार पर वर्गीकृत किये गये है ।

इशारे और संप्रेषण बोर्ड का प्रयोग–

प्रारंभ में चर्चा किये गये पद्धतियों के अतिरिक्त अन्य विशिष्ट पद्धति इस प्रशिक्षण के लिये नही है । यह ध्यान रखना उचित है कि, अभिव्यक्ति मूल्यांकन के समय बच्चे का सांकेतिक रूप से नोट करना भी नोट किया जाता है ।

इन इशारों को अलग–अलग करके या समूहों में प्रविष्ट किया जा सकता है, जो बच्चे के संप्रेषण आवश्यक्ताओं पर आधारित होना चाहिये । प्रारंभ में बच्चे के इशारों को बताने के लिये शारीरिक रूप से मार्गदर्शन करना चाहिये । प्रशिक्षण को वास्तविक परिस्थितियों में करना चाहिये, जो संदर्भ अनुसार है ।

परिशिष्ट 6.2 में उचित जानकारी प्राप्त करना, कम्युनिकेशन बोर्ड या इशारों को चुनने में प्रयुक्त होता है।

संप्रेषण बोर्ड को प्रयोग प्रत्येक बच्चे के लिये विशिष्ट रूप से किया जा सकता है । शब्दों या चित्रों को चुनने के समय विभिन्न कारक

जैसे बच्चे का स्तर, आवश्यकतायें, काल्पनिकता (ॲबस्ट्रॅक्टनेस) का स्तर, इंगित करने की सुविधा आदि पर आधारित होना चाहिये ।

मॅन्युअल के अंत मे उपयुक्त पाठन-सामग्री की सूची दी गई है ।

पाठशाला सारणी में एल. सी. आई. बिठाना :

भाषा और संप्रेषण हमारे दैनिक जीवन के अनिवार्य अंग/पहलू हैं। बच्चे के लिये पाठशाला दैनिक क्रिया कलाप है । और विभिन्न क्रियाकलापों में जैसे- खिलाने की कुशलतायें कपड़े पहनने की कुशलतायें, शैक्षणिक, मनोरंजनात्मक क्रियाकलाप आदि सीखाते समय सीखने की संभावना है । संप्रेषण इन क्रियाकलापों का अनिवार्य अंग माना जाता है । वे सभी संभावित संप्रेषण संदर्भ है । उदाहरण के लिये पाठशाला में भाषा और संप्रेषण सभी परिस्थितियों में पढ़ाये जाने पर जोर दिया गया है ।

एक विशिष्ट समय सारणी का नमूना निम्नलिखित है तथा इन परिस्थितियों के विभिन्न उदाहरण लक्ष्य पाये जा सकते है । एक उदाहरण लक्ष्य के लिये तथा प्रत्येक क्रियाकलाप के समय एक संभव क्रियाकलाप की पहचान भी की गई है ।

क्लास रूम सारणी का नमूना

1.	8.45 – 9.00 सवेरे	आगमन तथा अभिवादन
2.	9.00 – 9.25 सवेरे	संगठित होना
3.	9.25 – 9.30 सवेरे	कक्षा में पुनः जाना
4.	9.30 – 9.45 सवेरे	कक्षा में चर्चा (वर्तमान घटनायें)
5.	9.45 – 10.15 सवेरे	अंक कार्य (गणित) (नंबर वर्क)
6.	10.15 – 10.45 सवेरे	चित्रकारी (ड्रॉईंग) तथा कलाकारी (पेंटिंग)/संगीत (म्युजिक)
7.	10.45 – 11.00 सवेरे	अवकाश

8.	11.00 – 11.30 सवेरे	कार्यात्मक लेखन
9.	11.30 – 12.00 दोपहर	नैसर्गिक विज्ञान (एनवायरनमेंटल) साइंस
10.	12 दोपहर – 12.15 मध्याह्न	वस्तुओं को यथास्थान रखना
11.	12.15 – 1.30	मध्याह्न भोजन
12.	1.30 – 2.00	कलाकारी क्राप्ट/कहानी का समय
13.	2.00 – 2.30	
14.	2.30 – 3.00	वाचन बहिश्शाल खेल (आउट डोर गेम्स्)
15.	3.00 – 3.15	जाने की तैयारी भेंट, घर जांना

1. आगमन तथा अभिवादन

इस अवधि के दौरान कुछ लाभदायक लक्ष्य चुने जा सकते हैं, जैसे– सामाजिक अभिवादन के इशार या शब्दों का संग्रहण या अभिव्यक्ति । उदाहरण के लिये– "नमस्ते", "गुडमॉर्निंग", "आओ" आदि इशारे या शब्दों को स्वाभाविक परिस्थितियों में अर्थपूर्ण रूप से प्रयुक्त कर सकते हैं ।

इसी अवधि में शिक्षक एक भाषा आगत का एक अच्छा उदाहरण बन सकता है । जब वह "पैरलल टॉक" का प्रयोग करता है । उदाहरण के लिये– बच्चे को, "बच्चा आ रहा है", "अपना बैग उठा रहा है" "यह बच्चा धीरे चल रहा है" आदि क्रियाकलापों का वर्णन कर सकते हैं ।

2. संगठित होना–

शब्दों या आवाज के बीच में श्रवण अंतर के प्रशिक्षण के लिये यह अवधि उपयुक्त है । उदाहरण के लिये–ड्रील या व्यायाम के समय बच्चों को विभिन्न ताल के लिये विभिन्न क्रियाकलाप करना सीखा सकते हैं । व्यायाम के समय विभिन्न आदेशों का पालन करने के लिये इस समय प्रशिक्षण दिया जा सकता है ।

चुने गये लक्ष्य केवल उदाहरणात्मक हैं, आदेशात्मक नही ।

उपस्थिति लेते समय, बच्चे को अन्य बच्चों के नाम जानना सीखा

सकते हैं । बच्चे को अपनी वस्तुओं का वर्णन करना भी भाषा आगत को बढाने में सहायक सिद्ध हो सकता है, जैसे शर्ट का रंग आदि।

3. कक्षा में पुनः प्रवेश

बच्चे अपनी कक्षा में जाते समय प्रमुख विशेषण शब्द जैसे पहला बच्चा, बीच का बच्चा, अंतिम बच्चा, स्थिति शब्द जैसे सामने, दाहिने आदि सम्मिलित हो सकते हैं । शब्दों के प्रयोग जैसे तेज चलो, धीरे जैसे क्रिया परिवर्तक संग्रहण को प्रारंभ कर सकता है व सुगम, बना सकता है । अधिक कठिन उपसर्ग शब्द जैसे "तुम दरवाजे से जा रहे हो", "तुम बच्चों के बीच में हो", भी प्रभावकारी रूप से प्रयुक्त कर सकते हैं ।

4. कक्षा में चर्चा करना :

वर्तमान घटनाओं की चर्चा करते समय दिन दिनांक, महीना आदि का प्रयोग कर सकते हैं । वाक्यों के संग्रहण में भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल का प्रयोग कर सकते हैं ।

उदाहरण के लिये– "तुम कल रात सोये थे" "तुम आज कक्षा में उपस्थित हो" तथा "तुम शाम में घर जाओगें", इस अवधि के दौरान वाक्यों की अभिव्यक्ति में विशेषतः घोषणात्मक तथा नकारात्मक प्रकार हो सकते हैं । उदाहरण के लिये– "मैंने सेव खाया" जैसे वाक्य (घोषणात्मक), "मैंने सिनेमा नही देखा" (नकारात्मक), का भी प्रयोग कर सकते हैं । बच्चे को व्यावहारिक कुशलतायें जैसे बातचीत प्रारंभ करना, बारी के लिये रूकना आदि सीखने में भी बच्चे के लिये यह संदर्भ लाभदायक हैं ।

5. अंक कार्य

कुछ महत्वपूर्ण भाषा प्रशिक्षण क्रियाकलाप हैं, वस्तुओं की पहचान का सामान्यीकरण, कितने? पूछना और समझना, प्रश्न के तरीके बहुवचन की अभिव्यक्ति व संग्रहण । उदाहरण के लिये–पेन, तीन पेन्स (तीन पेन) अंक कार्य में समुच्चय बोधक जैसे "और" का भी

प्रयोग कर सकते हैं । उदाहरण के लिये– दो केले और एक सेव के लिये एक दो और तीन आदि, यदि "वन टू बकल माय शूं" जैसी कविताओं का प्रयोग किया हों, तो स्वरविन्यास पद्धति का अभ्यास कर सकते हैं । कुछ क्रियाकलापों में भूमिका पलट कर, जैसे शिक्षक बच्चे से पूछता है "यह कितने हैं? और बच्चा "तीन" कहता है स्वर विन्यास का उचित तरीका सीख सकता है ।

6. चित्रकारी/कलाकारी संगीत

कलाकारी, चित्रकारी करते समय रंगों के नाम देना, विभिन्न रंगों के संग्रहण प्रभावकारी प्रयुक्त कर सकते हैं । वस्तुओं के नामों का सामान्यीकरण भी चित्रकारी के साथ ले सकते हैं । उदाहरण के लिये– जानवरों के चित्र बनाना, वाहनों के चित्र बनाना, शरीर के भागों के चित्र बनाना आदि । संगीत का प्रयोग केवल स्वर (लय) लाने के लिये ही नही किया जाता बल्कि, वाक् के एक महत्वपूर्ण पहलू के प्रयोग के लिये भी किया जा सकता है जैसे रीदम लय या वाक् ध्वनियों का ताल बद्ध प्रयोग । बच्चे के लिये महत्वपूर्ण अभ्यास है शब्दों की लंबाई को नियंत्रित करना और वाक्य बनाना। संगीत में उच्चारण प्रशिक्षण में सीखे गये कुशलताओं के सामान्यीकरण भी ले सकते हैं जो आनंददायक परिस्थिति हैं ।

7. अवकाश

अवकाश के समय बच्चे व बच्चों के बीच पारस्परिक क्रिया भाषा आगत के लिये एक महत्वपूर्ण संदर्भ है । शौचालय के लिये इशारों या शब्दों का अभ्यास लिया जा सकता है ।

8. कार्यात्मक लेखन–

आदेशों का पालन करना क्रियात्मक लेखन क्रियाकलाप में प्रभावकारी रूप से बच्चे की मदत के लिये लिया जा सकता है । उदाहरण के लिये, लड़की/लड़के का अपना नाम लिखते समय, विभिन्न आदेशों जस "अब लिख", "इधर लिखो", "जल्दी लिखो", "ये काट दो" आदि आदेश दिये जा सकते हैं । आदेशों का मिलाकर शब्दों को उक्त

लेख देते समय कर सकते हैं । अभिव्यक्ति प्रशिक्षण के लिये बच्चे को क्या लिखा हुआ है ? क्या किया गया है ? आदि प्रश्न पूछकर प्रयोग कर सकते हैं । वाक्यों का संग्रहण जो काल में भिन्न हो भी उदाहरण के लिये दिया जा सकता है । उदाहरण के लिये– "मैं नाम लिख दिया" मैं नाम लिख रहा हूँ मैंने नाम लिख दिया" ।

9. नैसर्गिक विज्ञान

समूह क्रियायें जैसे फूल, पक्षी, पेड़, जानवरँ, आदि को पहचानना सीखने में आनंददायक अनुभव है । जानवरों, फूलों, के नाम संग्रहण करना और अभिव्यक्त करना भी इस समय लिया जा सकता है । उदाहरण के लिये– निवेदन करने पर बच्चा "गुलाब" को पहचानता है और पूछने पर नाम बताता है । विभिन्न अर्थादेशों को सीखाना भी सम्मिलित किया जा सकता है । उदाहरण के लिये– "पेड़ों में पानी कौन डालता है"। कर्ता– (एजेंट); लडका पानी डाल रहा है (कार्य– ॲक्शन)! उसी प्रकार शब्दों का संयोजन (सिमेंटिक रिलेशन्स) को भी लिया जा सकता है ।

संज्ञा परिवर्तक शब्द जैसे, सूखा, गीला आदि को लिया जा सकता है । उदाहरण के लिये गीली मिट्टी, सूखी मिट्टी, गीले कपडे आदि।

पाठशाला के वातावरण में वस्तुओं के साथ अनुभव और वाक् को सुनने में अनुभव दोनों के लिये अधिक अवकाश है, यही भाषा सीखने का आधार बनेगा ।

10. वस्तुओं को यथास्थान रखना

तुलनात्मक शब्दों का संग्रहण जैसे–बड़ा–उससे बड़ा–सबसे बडा, पहला, बीच का, अंतिम, ऊपर–उससे ऊपर, भारी–बहुत भारी, आदि का प्रयोग कर सकते हैं । उदाहरण के लिये–बच्चे से सबसे बडे खिलौने, सबसे छोटे खिलौने को लाने के लिये कह सकते हैं ।

11. मध्याह्न भोजन

मध्याह्न भोजन के समय क्रिया परिवर्तक शब्द जैसे जल्दी खाना, धीरे खाना भी सम्मिलित हो सकता है । दूसरे बच्चे को खाना सीखाने के लिये, बातचीत प्रारंभ करने का एक अच्छा अवसर है । इसी संदर्भ में विभिन्न खाद्य पदार्थों और उनकी रुचि का नाम बताना भी

सम्मिलित हो सकता है । उदाहरण के लिये– चावल, रोटी, सब्जियाँ आदि वस्तुओं को बच्चे पहचानेंगे और नाम बतायेंगें । उसी प्रकार विशेषण शब्द जैसे गरम, ठंडा आदि भी समझ सकते हैं ।

12. कलाकारी/कहानी का समय

कहानी कहने के समय विभिन्न वाक्य प्रकार के संग्रहण और अभिव्यक्ति ली जा सकती है । उदाहरण के लिये– वक्तव्यों को प्रश्नों में बदलना लिया जा सकता है । "प्यासा कौवा" कहानी में" कौआ प्यासा है" वाक्य को प्रश्न जैसे क्या कौआ प्यासा है? में परिवर्तित करके "हाँ" "नहीं" जैसे प्रश्नों का प्रशिक्षण दिया जा सकता है । उसी प्रकार अन्य प्रश्न रूपों को भी लिया जा सकता है ।

कहानी बोलते समय वाक् शैली बदलना (काड स्पीचिंग) भी दिखाया जा सकता है । उदाहरण के लिये एक वयस्क और बच्चे के बीच की बातचीत बताते हुये वाक् शैली में अंतर दिखाया जा सकता है। बच्चे को कहानी बोलने के लिये उत्तेजित करने से ही वाक्यों को सम्मिलित करना कहानी की विषयवस्तु को बनाये रखना आदि सीखने में सहायक सिद्ध होत है । अतः समुच्चय बोधक शब्दों का प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है ।

पाठशाला में प्रशिक्षण के समय प्रत्येक परिस्थिति में अनना संख्याओं के लक्ष्य चुने जा सकते है । केवल हमारी सृजनात्मकता ही सीमित कर सकती है ।

13. वाचन

उच्चारण प्रशिक्षण में पाई गई कुशलताओं के सामान्यीकरण के लिये वाचन एक लाभदायक संदर्भ है । जैसे– नाम, पता, चालू शब्द (सरवाईवल वर्ड्स्) आदि का वाचन करना । उदाहरण के लिये एक बच्चे ने "क" ध्वनि का स्पष्ट उच्चारण सीखा है और इस कुशलता के सामान्यीकरण के लिये शब्द जैसे– कमला, कारपेंटर, कृष्णापूरी कालोनी, आदि का प्रयोग कियाजा सकता है । एक ही प्रकार की ध्वनिवाले शब्दों का वाचन सुनकर अंतर बताने के प्रशिक्षण के लिये वाचन आवश्यक हो सकता है । उदाहरण के लिये– "डेंजरस् कार" शब्द पढना ठोस (ग्रॉस) स्वनीम अंतर का उदाहरण हो सकता है और "मेन–वुमेन" जैसे शब्दों का वाचन करना सूक्ष्म (फाइन) स्वनीमअंतर बताने का उदाहरण है ।

14. बहिश्शाल खेल

खेल बच्चे व बच्चे की पारस्परिक क्रिया का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, आदेशों की एक श्रृंखला के संग्रहण का भी अवसर है । उदाहरण के लिये– एक गुडिया को ढूँढने के खेल में, आदेशों की श्रृंखला जैसे– "बॉल लाओ", "बॉल के पीछे दौडो", "बॉल को देखो", "वहाँ कंचे हैं ले लो" आदि का प्रयोग कर सकते हैं । बच्चे भी अन्य लोगों को आदेश दे सकते हैं । "टी–पार्टी–तकनीक" जैसे कार्यक्रम को भी सम्मिलित किया जा सकता है ।

15. घर जाने के लिये तैयार होना और जाना

टाटा, बाई बाई जैसे इशारे, फिर मिलेंगें, यहाँ ऐसे शब्दों का प्रयोग इन संदर्भों में किया जा सकता है । घर जाने से पहले अपनी वस्तुओं को ढूंढने के लिये वस्तुओं के नाम बताना, कहाँ? जैसे प्रश्न पूछना, अन्य व्यक्तियों को ढूंढना आदि लिया जा सकता है । उसी प्रकार भाषा–प्रयोग की अन्य कुशलताओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है ।

उपरोक्त दिये गये लक्ष्यों का वर्णन बहुत संक्षिप्त है और सभी लक्ष्यों की सूची नही है, लक्ष्यों को विधायक नही समझना चाहिये, केवल मार्गदर्शक के रूप में प्रयोग करना चाहिये । सरल तथ्य यह है कि, भाषा–प्रशिक्षण के विभिन्न पहलूओं को उपरोक्त हर एक संदर्भ में लिया जा सकता है । शिक्षकों के लिये उपरोक्त चर्चा को और अधिक स्पष्ट करने के लिये एक उदाहरण लक्ष्य दिया गया है और इस लक्ष्य को समय–सारणी के विभिन्न सत्रों में कैसे किया जाय इसका उल्लेख भी किया गया है ।

उदाहरण के लक्ष्य

बच्चे को अर्थ संबंधी वाक्यांश (सिमेंटिक रिलेशन्स) कर्ता+क्रिया को अभिव्यक्ति करने के लिये सहायक है । यह स्कूल के समय में क्रियाओं का वर्णन करने में, दूसरों को निर्देश देने में, सम्मिलित करना है ।

क्लास् रूम के समय–सारणी के आधार पर अन्य लक्ष्यों को भी चुनिये और संग्रहण, अभिव्यक्ति प्रशिक्षण की योजना बनाइये ।

1. आगमन तथा अभिवादन

बच्चे को समूह बनना सीखाना रामू आओ, शिक्षक आओ, आदि

उसी प्रकार बच्चा भी दूसरे बच्चे को विनती कर सकता है, "बैग लो" "कलम दो" आदि ।

2. संगठित होगा

बच्चा मॉनिटर का अभिनय करता है, बच्चों को बुलाता है, जैसे रामू खड़े हो जाओ, "राजु बैठो", रवि दौड़ों आदि परिस्थिति की आवश्यकता पर ।

3. कक्षा में पुनः प्रवेश

बच्चे को अभिव्यक्त करने को कहा जाता है, जैसे "रामू रूको", जब इसकी आवश्यकता हो, उसी प्रकार "रवि आवाज" तेज आवाज में, दूसरों को चुप कराने के लिये आदि ।

4. वर्तमान घटना में

रामू दूसरे बच्चों को तारीख बताने को कहता है, तुम बोलो, रामू बोलो (तेज आवाज में) आदि ।

5. अंक कार्य

बच्चे को कर्ता+क्रिया जोडने में मदत करता है । जैसे रवि मिलाओ, अनिल दो, आदि प्रत्येक बच्चे के अंक के बाद बच्चा दो को बुला सकता है एक आओ, दो जाओ आदि.

6. चित्रकारी/कलाकारी संगीत

एक बच्चा दूसरे बच्चों को "रामू आओ", रवि चित्र बनाओ" आदि का निर्देश दे सकता है ।

7. अवकाश

एक बच्चा दूसरे बच्चों को "लडके आओ", "लडकी आओ", आदि कह सकता है । वह निवेदन कर सकता है "दरवाजा खोलो" "पानी उंडेलो", बाल्टी लाओ" (मलमूत्र क्रिया में)

8. कार्यात्मक लेखन

एक बच्चा दूसरे बच्चों को श्यामपट्ट के पास आकर "रवि लिखो", "रामु जाओ" आदि लिखने का निवेदन कर सकता है ।

9. **नैसर्गिक विज्ञान**

बच्चा शिक्षक के साथ दूसरे बच्चे क्या कर रहे है, इसका वर्णन कर सकता है । जैसे– "रामू दौड रहा है", "सीता बैठी है", रवि पेड लगा रहा है" आदि ।

10. **वस्तुओं को यथास्थान रखना–**

शिक्षक के कार्य तथा अन्य बच्चों के विवरण लिये जा सकते हैं, जैसे– बच्चा वर्णन करता है, "रामू लेता है" बच्चा रखता है आदि.

11. **मध्याह्न भोजन**

मध्याह्न भोजन के समय की क्रियायें जैसे–अन्न परोसना, हाथ धोना आदि का उपयोग किया जा सकता है । उदाहरण के लिये "रोटी दो", "चावल खाओ", "पानी पीओ", "हाथ धोओ" आदि का उचित रूप से प्रयोग किया जा सकता है ।

12. **कलाकारी तथा कहानी का समय**

बच्चा शिक्षक को निवेदन कर सकता है "टीचर बोलो" और वह शिक्षक द्वारा छोडे गये अधूरे वाक्य "प्यासा कौआ" आदि. को पूरा कर सकता है । जब शिक्षक यह एक प्रारंभ करता है (कौओ के चित्र की ओर संकेत करते हुये), बच्चा अधूरी कहानी पूरी कर सकता है ।

13. **वाचन**

बच्चा दूसरे बच्चे को चित्र पढ़ने, संकेत पढ़ने तथा "रामू पढ़ रहा है, रामू सो रहा है" आदि का निवेदन कर सकता है व विवरण दे सकता है ।

14. **बहिश्शाल खेल**

विभिन्न कार्य बच्चे जो करते है, उनका बच्चे व शिक्षक द्वारा विवरण दिया जा सकता है, उदाहरण के लिये–लडका कूदता है, लडकी रस्सी खेलती है, रामू दौडता है आदि घर जाने के लिये तैयार होना और जाना–

यद्यपि, लक्ष्य व्यक्तिनिष्ट है, फिर भी संयुक्त दैनिक क्रिया, टी–पार्टी–तककनिक जैसी पद्धदतियाँ समूह कार्य के लिये मदत करती है ।

15. जाने की तैयारी, भेंट, घर जाना

बच्चा दूसरों को निर्देश देता है, बैग लो, (थैला लो) "दरवाजा खोलो" "चप्पल पहनो" आदि का निर्देश दे सकता है । टाटा, बाय–बाय आदि जैसे शब्दों का भी प्रयोग किया जा सकता है ।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि, क्रियायें एक बच्चे की विशिष्ट आवश्यकता, संग्रहण स्तर व्यक्त करने की योग्यता, घरेलू वातावरण आदि से मेलखाती हों । इस पाठ के अंत में दिये गये निर्देशों के अनुसार योजना बनानी चाहिये ।

ध्यान दीजिये कि, केवल "कर्ता + क्रिया" रूप का ही उदाहरण दिया गया है, कोई भी अन्य क्रिया संबंधी वाक्यांशों को चुन सकते है, विशिष्ट भाषा के उदाहरण को चुनना भूलना नही चाहिये ।

सारांश

यह भाग भाषा तथा संप्रेषण अंतराक्षेपण की व्याख्या करता है तथा प्रमुख सिद्धांतों के साथ साथ में सम्मिलित सामान्य प्रणालियों का वर्णन करता है । सामान्य प्रणालियों को सुधारने के विभिन्न सुझावों के साथ निर्धारण आंकडों को समाविष्ट में अंतराक्षेपण में कैसे सुलझायें इसकी भी चर्चा की गई है । इस पाठ के अंतर्गत एल सी आई का क्रम वाक् और भाषा निर्धारण प्रोफार्मा नमूने से मेल खाता है । आसान ढंग से समझाने के लिये, प्रत्येक क्षेत्रों में, उदाहरण लक्ष्य तथा नमूने की क्रियाये भी जोडी (ॲड) गई है ।

विकास को ध्यान में रखते हुये हमने विभिन्न सांकेतिक संप्रेषण के प्रकार जो भारत व विदेशों के कुछ भागों में प्रयुक्त हैं जोडे हैं और अधिक व्यावहारिक बनाने के लिये संकेतों की एक सूची 7.1 में चित्रों सहित प्रस्तुत की है ।

एन.आई.एम.एच. में चयन किये गये इशारों की सूची

अ) निम्नलिखित उद्देश्यों को व्यक्त करने के इशारे

- विद्यमान (एक्जीसटेंस) (टिप्पणी/निवेदन अथवा समीक्षा)
  - अ1. खाना खाना/ भोजन करना
  - अ2. पीना
  - अ3. कंघी करना
- स्थान निर्धारण
  - अ4. सुनना
  - अ5. वहाँ
  - अ6. उपर
- कर्ता
  - अ7. पक्षी
  - अ8. माँ
- वस्तुयें
  - अ9. पैसा/धन
  - अ10. घर
  - अ11 दवाई/औषधि
  - अ12. समय
  - अ13. पुस्तक

आ) निम्नलिखित उद्देश्यों को व्यक्त करने के इशारे –

- क्रिया
  - ब14. खिंचना
  - ब15. लिखना

ब16. घुमाना

ब17. चुप रहो

ब18. उठाना

ब19. प्रसाधन/मूत्र

ब20. प्रसाधन/टट्टी करना

ब21. मुँह धोना

ब22. मारना

ब23. बंद करना

ब24. खोलना

ब25. उँडेलना

ब26. देना

ब27. उठना

ब28. जाना

ब29. आना

ब30. वहाँ रखना

ब31. सुनना

ब32. सिनेमा देखना

ब33. कूदना

ब34. सोना

C. निम्नलिखित उद्देश्यों को व्यक्त करने के इशारें

– सामाजिक संकेत	क35. नमस्ते
	क36. टाटा
– पुनरावृत्ति	क37. अधिक/अत्यधिक
– नकार	क38. नही
– अधिकार	क39. मै
	क40. तुम
– प्रश्न	क41. क्या
	क42. कौनसा
– आरोपण	क43. हाँ
	क44. सोचना
	क45. विजय
	क46. थोडासा
	क47. ज्वर/बुखार
	क48. उँचा

अ1. खा रहा है

अ2. पी रहा है

अ3 कंधी कर रहा है

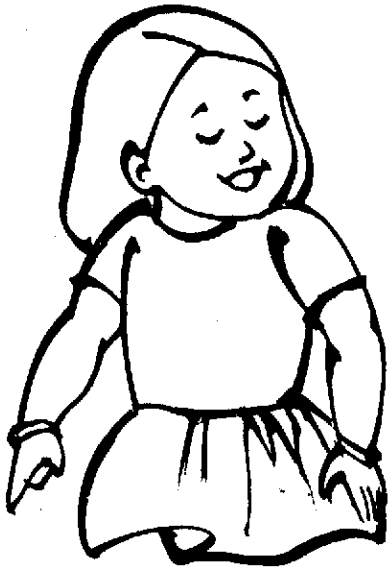

अ4. यहाँ

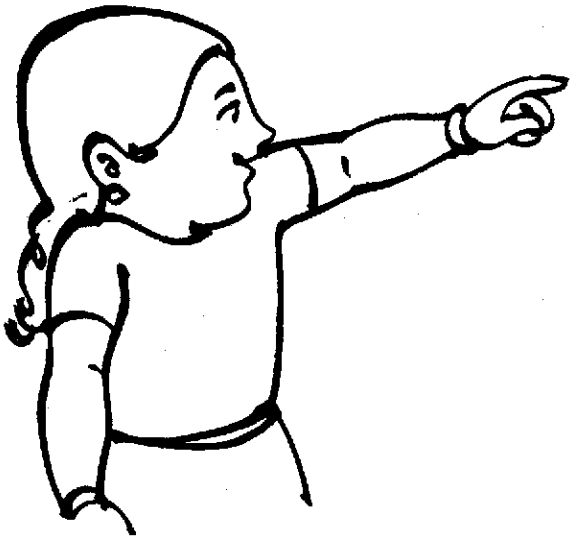

अ5. वहां

अ6. ऊपर

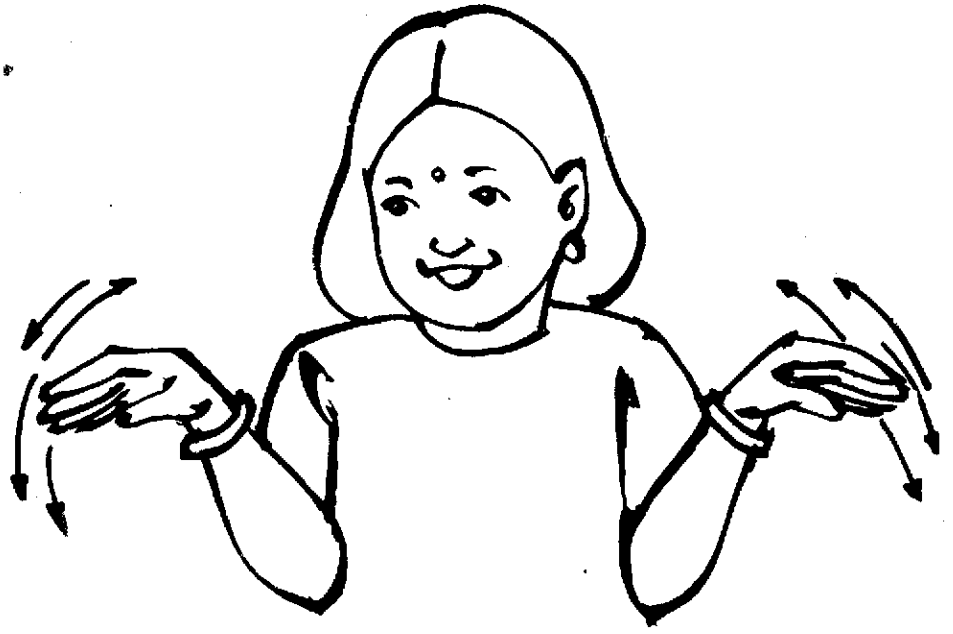

अ7 पछी

अ.8 माँ

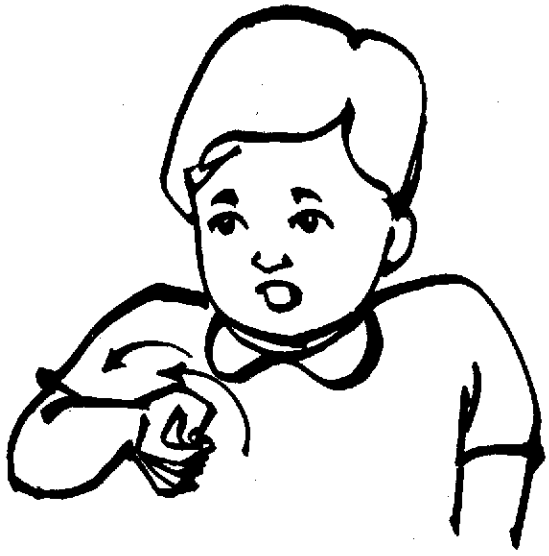

अ9. पैसा

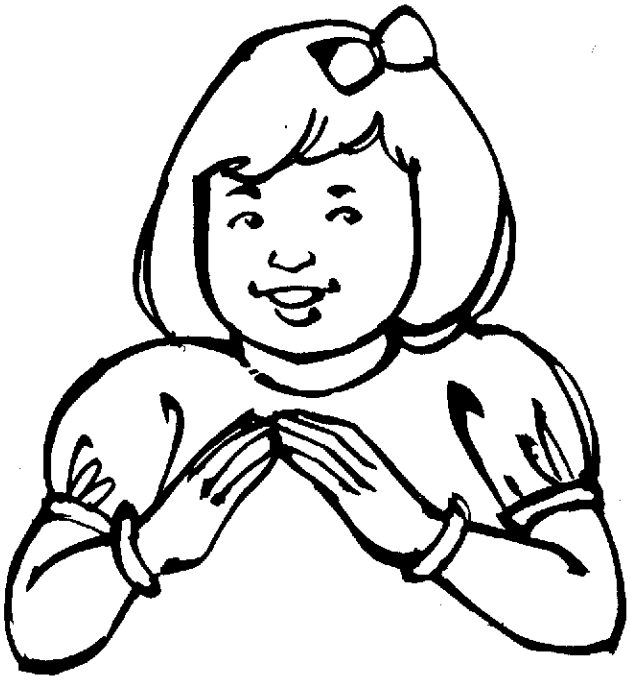

अ10 घर

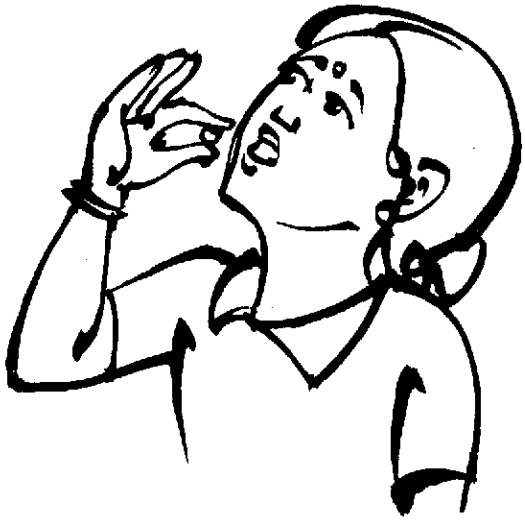

अ11 औषाधि दवाई

अ12 . समय

अ13 . पुस्तक

ब14 . खिंचना

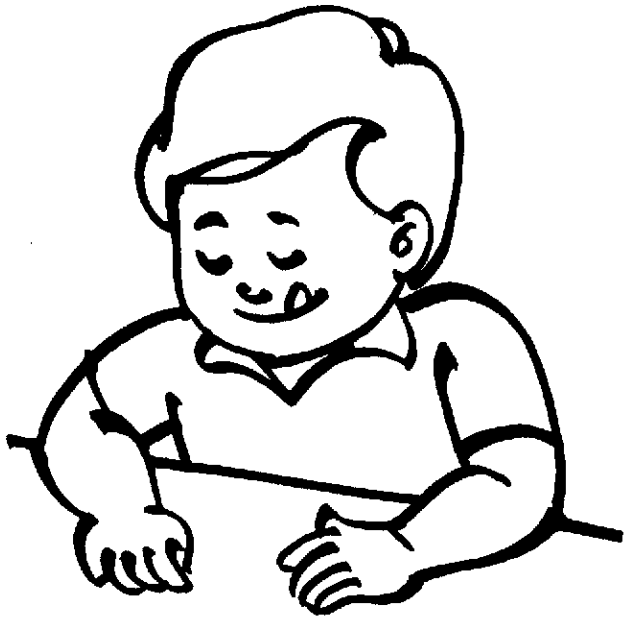

ब15 . लिखना

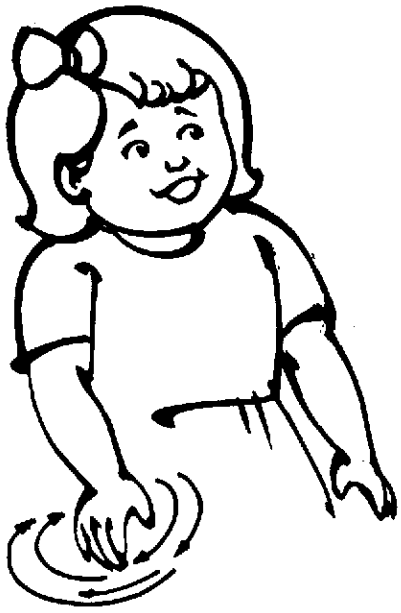

ब16. घुमाना

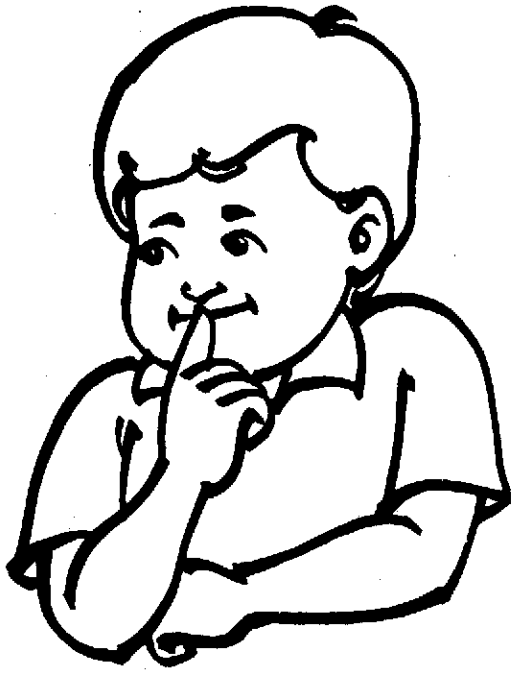

ब17. चुप रहो

ब18. उठाना

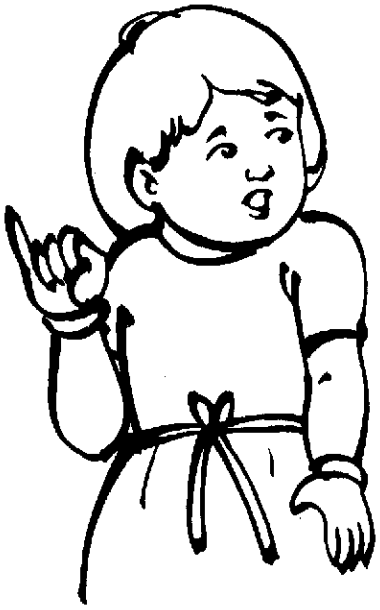

ब19. प्रसाधन मूत्र

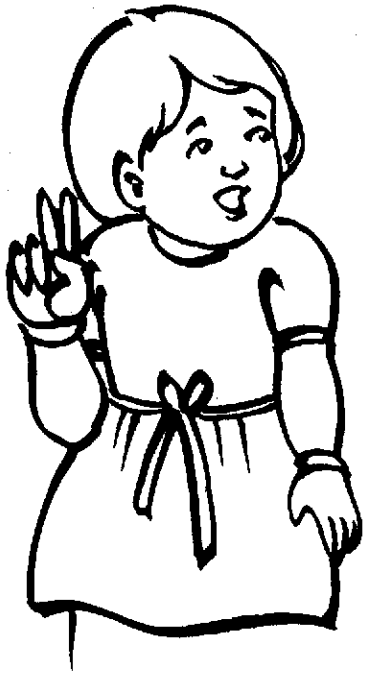

ब20. प्रसाधन रट्टा करना

ब21. मुँह धोना

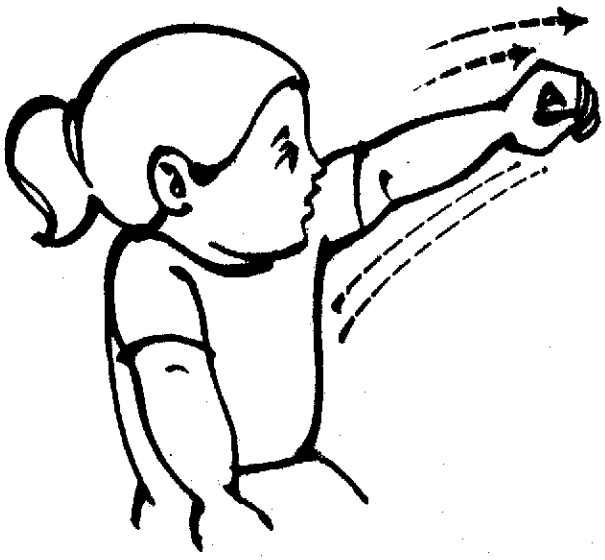

बि22. मारना

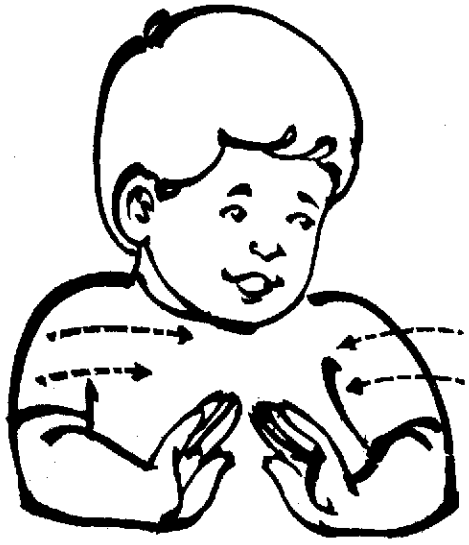

ब23. बंद करना

ब24. खोलना

ब25. उडेलना

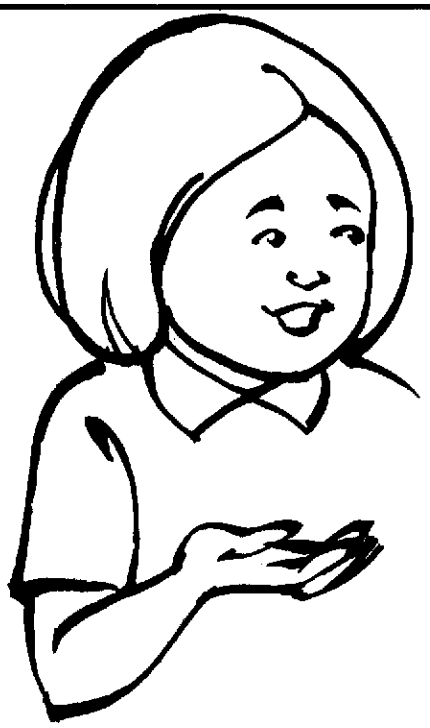

ब26 . देना

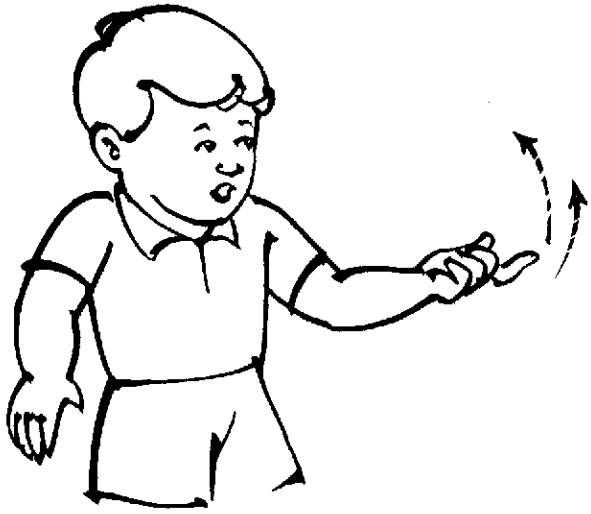

ब27 . उठना

ब28 जाओ

ब29 . आओ

ब30 . रखना

ब31. सुनना

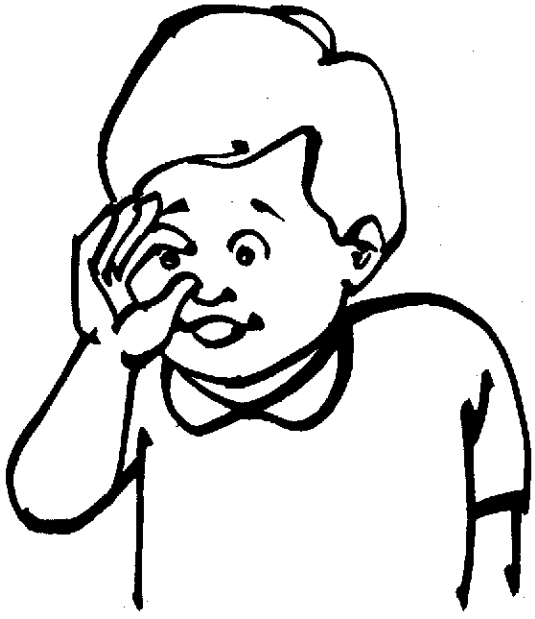

ब32. देखना

ब33. कूदना

ब34. सोना

क35. नमस्ते

क36 "टाटा"

क37 और अधिक

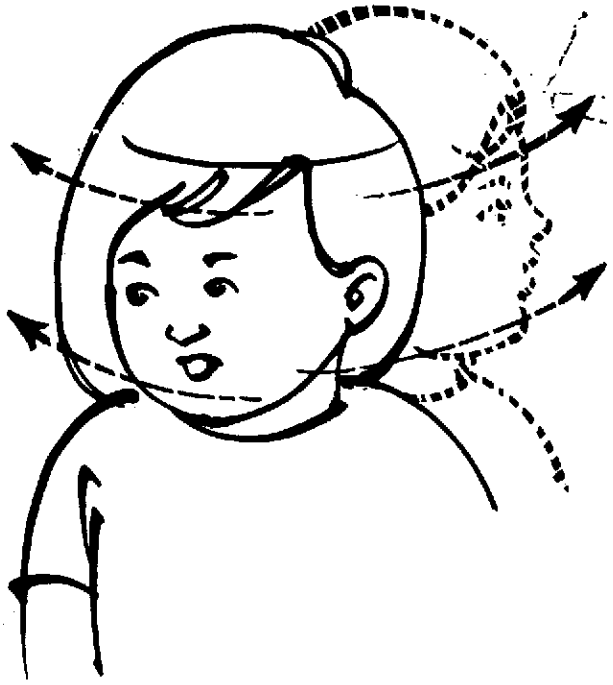

क38. नहीं

क39 मैं

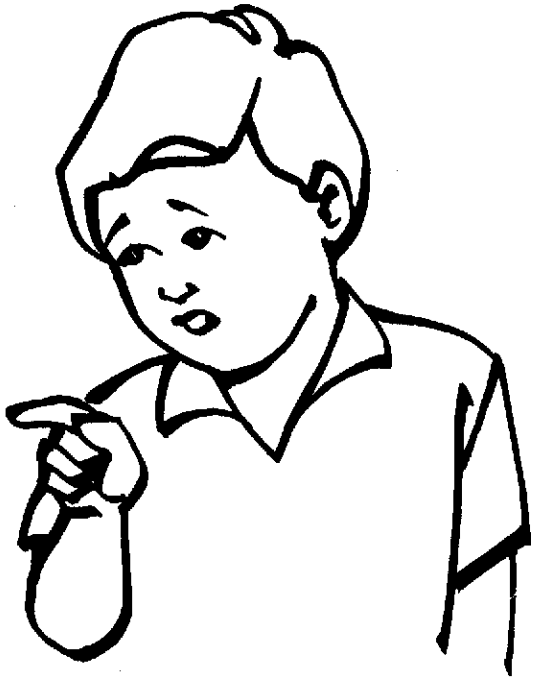

क40 तुम

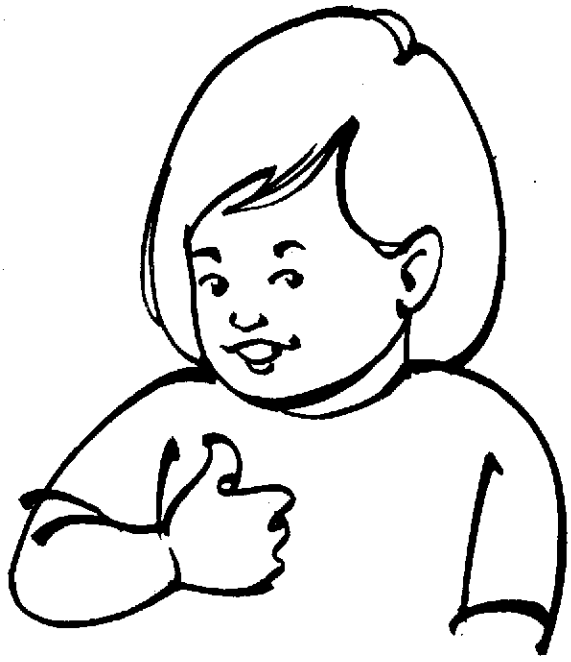

क41 क्या?

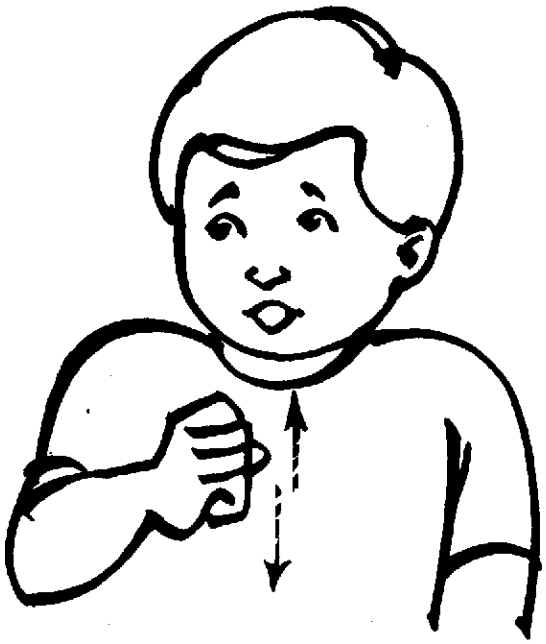

क42 कौनसा

क43 हाँ

क44 सोंचना

क45 जीतना/विषय पाना

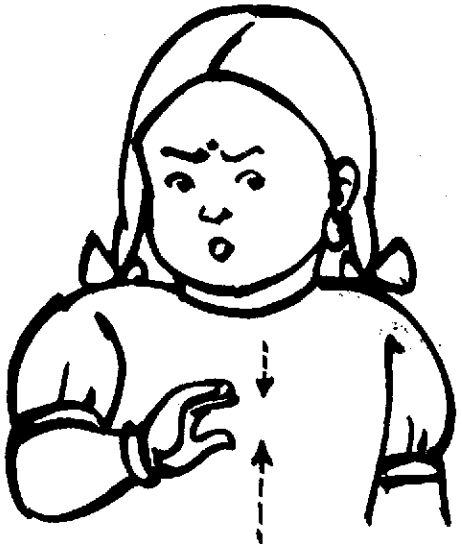

क46. थोडासा

क47. ज्वर/बुखार

क48. ऊँचा

स्वतः परिक्षण–7

I. निम्नलिखित वाक्य सही/गलत है बताइये

1. एल.सी.आई. का एक प्रमुख सिद्धांत भाषा सीखना माना जा सकता है, जिसमें कम से कम 3 घटक जो अन्योन्याश्रित है । सही/गलत

2. पॅरलल टॉक बताती है कि, साथ–साथ बच्चा क्या कर रहा है । सही/गलत

3. यदि बच्चा लक्ष्य ध्वनि (टार्गेट साउंड) को अलग (आइसोलेशन) व ध्वनि (सिलेबल) स्तर पर उत्पन्न करने में सक्षम हों, तब उस शब्द स्तर को लिया जाता है । सही/गलत

4. सांकेतिक पद्धति दो मुख्य क्षेत्रों में समूहित की जा सकती हैं । सही/गलत

5. जापान में ब्लीस संकेत, श्रवण विकलांगों की संकेत भाषा हैं । सही/गलत

6. संप्रेषण बोर्ड हर एक बच्चे के लिये विशेष रूप से बनाई जा सकती है । सही/गलत

II. निम्नलिखित में से सर्वोत्तम उत्तर बताइये :

1. भाषा सीखाने के लिये सामान्यतः प्रयुक्त पद्धतियों के अतरिक्त परिवर्तित सुझाव को चुनिये ।
   अ) संग्रहण कुशलता सीखाना ब) अभिव्यक्ति कुशलता सीखाना
   क) संयुक्त दैनिक क्रिया ड) अनुकरण प्रशिक्षण
   इ) उपरोक्त सभी फ) उपरोक्त एक भी नही

2. दैनिक घटनायें जैसे पानी लाना, खाने के लिये जाना, आदि का जानबुझकर उल्लंघन करने से, बच्चे में विरोध करने की भावना उत्पन्न होती है और उसका ध्यान कुछ भाषा पहलू पर केंद्रित करने में सहायक सिद्ध होता है । "हमें बताना है कि, यहाँ प्रयुक्त की गई शिक्षण पद्धति है –
   अ) वस्तु या बारी को रोकना ब) "नहीं" बोलना/या इंगित करना
   क) दैनिक घटनाओं का उल्लंघन ड) वस्तुयें छिपाना
   इ) भूमिका पलटना

3. बच्चे के लिये भाषा आगत की क्षमता को सुधारने के लिये
   1. अधिक आदेशों व प्रश्नों का प्रयोग करना चाहिये ।
   2. यहाँ और अब के बारे में बात करना
   3. बच्चे को सभी क्रियाकलापों में जहां बच्चा भाग ले सकता है सम्मिलित करे ।
   4. वर्णनों को बढ़ाना चाहिये ।

   क) उपरोक्त सभी ब) केवल 1, 2 & 4 क) केवल 2 & 4 ड) 2, 3 & 4

4. लक्ष्य ध्वनि से गलत ध्वनियों के समूह से लक्ष्यध्वनि को चुनने में मार्गदर्शक सूचना है ।
   I) वो ध्वनि जो बच्चा कभी-कभी सही निकालता हों ।
   II) ऐसी ध्वनि को चुने जो उत्तेजना का प्रत्युत्तर देता हों ।
   IV) ऐसी ध्वनि का चुनाव करें जो सामान्य बच्चों में पहले प्राप्त हों ।
   IV) ऐसी ध्वनि का चयन करें जो छोडी गई हों, उसे पहले दें ।
   V) केवल ध्वनि जो स्थानांतरित हो उसे पहले लें ।

   अ) उपरोक्त सभी ब) I, III & IV, क) V, IV & II, ड) I, II & III

2. बच्चे जिन्हें सांकेतिक प्रणाली की आवश्यकता हों
   अ) श्रवण दोष वाले तथा सेरेब्रल पॉलसिड ।
   ब) आर्टिस्टिक
   क) मानसिक मंद बच्चे
   ड) बहु विकलांग
   इ) उपरोक्त सभी

6. भारत में संकेत भाषा के प्रयोग में जिन समस्याओं का सामना किया गया हों वो
   अ) अधिकतर बोलचाल की अंग्रेजी को प्रस्तुत करते है
   ब) इशारें तथा संकेत हर एक संस्कृति के अपने विशिष्ट हैं ।
   क) भारतीय संकेत भाषा विस्तृत रूप से प्रयुक्त है तथा अभिगम्य नही है ।
   ड) दूसरों को इस प्रणाली को समझाने के लिये प्रशिक्षण देना चाहिये ।
   इ) उपरोक्त सभी

7. संप्रेषण बोर्ड के लिये चुने गये चित्र तथा शब्दों के मूलतत्व हैं
   अ) बच्चे की आवश्यकता
   ब) अमूर्तता का स्तर (शब्दों/चित्रों के)
   क) इंगित करने में आसानी
   ड) उपरोक्त सभी
   इ) केवल ब) और क)
   फ) केवल अ) और क)

III. जोडे लगाइये –

1.	भाषा एवं संप्रेषण अंतराक्षेपण	अ)	शरीर भाषा का नियमित रूप जो अधिकतर स्वाभाविक है तथा अन्यों द्वारा आसानी से समझी जाती है।
2.	दैनिक संयुक्त क्रिया	ब)	सेल्फ टॉक तथा पॅरलल टॉक
3.	इशारे	क)	एक जानबुझकर प्रयास है ।
4.	आगत के परिमाण को सुधारने के लिये इनका प्रयोग किया जाता है ।	ड)	तोडफोड विलोपण, गलती, घटनायें तथा चुनाव

स्वः परिक्षण की कुंजी–7

1. सही
2. सही
3. सही
4. सही
5. गलत
6. सही

II. सर्वोत्तम उत्तर चुने ।

1. क) अन्य तरीके सामान्यतः प्रयुक्त है ।
2. क) "दैनिक घटनाओं का उल्लंघन" के स्पष्टीकरण के लिये मूल पाठ देखिये ।
3. ड) केवल 2, 3 और 4
4. ड) "लक्ष्य ध्वनि" मूल पाठ देखिये ।
5. इ) उपरोक्त सभी
6. इ) उपरोक्त सभी
7. ड) उपरोक्त सभी

III.

1. क)
2. ड) दैनिक–संयुक्त–कार्य में प्रयुक्त प्रणालियाँ
3. अ) इशारों का वर्णन
4. ब) आगत के परिमाण को सुधारने की तकनीके

शब्दावली

क्रिया शब्द (अक्शन वर्ड्स्) : ऐसे शब्द जो एक व्यक्ति द्वारा अवलोकित किये गये कार्यों का वर्णन करने योग्य हों । उदाहरण के लिये – बैठना, देखना

पारस्परिक क्रियाकलाप (अक्टिव इंटरैक्शन पैटर्न) : संदर्भ जो जानबूझकर संप्रेषण की स्थिति उत्पन्न करते हैं ।

अनुकुल व्यवहार : व्यक्ति को उसके वातावरण की प्रकृति और सामाजिक मांग से अप्रभावकारी समंजन ।

ॲलवियोलरिज़ : उपर के दाँत के पीछे का उन्नत भाग ।

अमेरिकन संकेत भाषा (अमेरिकन साईन लैंगवेज) : यह यू.एस.ए. के बधिर समुदाय की संकेत भाषा है । इसमें हाथ के चिह्न विषय को प्रस्तुत करते हैं, और उंगली के चिह्न वर्ण विन्यास से अनुपुरक हैं ।

उच्चारण (आर्टीक्युलेशन) : यह वाक् ध्वनि उत्पादन की प्रक्रिया है ।

उच्चारण चिकित्सा (आर्टीक्युलेशन थिरैपी) : उच्चारण में त्रुटियों को या व्यक्ति में वाक् ध्वनि उत्पादन की त्रुटियों को सुधारना ।

निर्धारण (असेसमेंट) : इसमें बच्चे के संप्रेषण के बारे में कुशलता, क्षमता, और सीमितता की औपचारिक या अनौपचारिक पद्धतियाँ प्रयुक्त होती हैं ।

श्रवण विज्ञान (आडियॉलोजी) : यह ऐसा क्षेत्र है जिसमें अध्ययन किया जाता है जिससे श्रवण दोष के प्रकार की तुलना की जाती है तथा पुनर्वास कार्यक्रम भी किया जाता है ।

संवधी संप्रेषण (ॲगमनटेटिव कम्युनिकेशन) : यह मौखिक संप्रेषण है, जो व्यक्ति के ज्ञान व मोटर योग्यता पर आधारित उपकरणीय (एडेड) या अउपकरणीय (अनएडेड) हो सकता है ।

तुतलाना (बॅबलींग) – मुख से बात निकलने से पहले वाले बच्चो से प्रयुक्त अक्षरों की श्रेणी का उत्पादन या पूर्व–मौखिक बच्चों से प्रयुक्त अक्षरों या ध्वनि (सिलैवल) श्रेणी का उत्पादन।

ब्लिस संकेत (सिम्बल्स) – ब्लिस संकेत में शब्द और धारणा के संकेतों में प्रस्तुत करने के लिये चित्रों या रेखाचित्रों का प्रयोग करते है ।

ब्रिटिश संकेत भाषा (ब्रिटिश साईन लैंगवेज) – ग्रेट ब्रिटन में ब्रि. सं. भा. बधिर समुदाय की संकेत भाषा है इसमें हाथों के संकेत होते है और इसका प्रत्यक्ष (स्पष्ट) रूप से बोल चाल की अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया जाता ।

होंठ/तालू के दरार (क्लिफ्ट लिप/पैलेट) – तालू या होंठ में जन्मजात दरार जो एक साथ या अलग से हो सकती है ।

सह उच्चारण (कोआर्टीक्युलेशन) – यह ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें शब्द या एक वाक्य की ध्वनि, पास–वाली ध्वनि से प्रभावित होती है ।

संप्रेषण (कम्युनिकेशन) – वक्ता व श्रोता के संदेशों के विनिमय की प्रक्रिया है ।

संप्रेषण बोर्ड – संप्रेषण बोर्ड सामान्यतः चित्रों का शब्दों, का सेट, पुस्तक की तरह रखना या परत करके रखने का ढंग है, जिसका प्रयोग जहाँ भी मौखिक अभिव्यक्ति कठिन हो तब संप्रेषण के उद्येश्य के लिये किया जाता है ।

संग्रहण (कॉम्प्रिहेन्शन) – शब्द या शब्दों की श्रृंखला (वाक्य) का अर्थ समझना या उचित ध्वनि श्रेणी के उचित धारणा के साथ जोड़ना ।

संयोजक शब्द (कनेक्टिंग वर्ड्स्) – ऐसे शब्द जो वाक्य या वाक्यों के शब्दों को जोडने के लिये प्रयुक्त है, जैसे–और, क्योंकि ।

विषयवस्तु (कन्टेंट) – विषयवस्तु भाषा योग्यता है जिसका संग्रहण भाग है अर्थविज्ञान (सिमँटिक्स) या अर्थ पहलू को संबोधित करता है, और भाषा द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है ।

देर से वाक् व भाषा विकास– यह ऐसी स्थिति है जिसमें बच्चे वाक् व भाषा के विकास के माइलस्टोन्स अगले स्टेज में प्राप्त करते है ।

लार टपकना (ड्रॅलिंग) – मूँह से अनियंत्रित लार का टपकना, जब मूँह थोडा खुला रहता है ।

अनुनाद वाक् (एकोलेलिया) – अपने आप या अनैच्छिक सुने गये वाक्यांश या वाक्यों को दोहरान।

पुनर्निवेश (फीड बैक) – मोटर प्रणाली के निगत की सूचना का पीछे का प्रवाह उटाहरण के लिये श्रवण (स्वतः सुनना) ।

वाक् पटुता (फ्लुएंसी) – वाक् का सुगम या लयात्मक प्रवाह ।

रूप (फॉर्म) – भाषा का कैसे अवयव/जिसमें स्वनीम विज्ञान, रुप ग्राम, वाक्य विन्यास, और ध्वनि को अर्थ से जोडने वाले ढंग ।

इशारे (गेस्चर्स) – ये शरीर के अंगों की हलचल है, प्रायः अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने के लिये हाथ का प्रयोग । ये इशारे लोगों के एक समूह में सामान्य हैं ।

– दूसरों को बुलाने के लिये हाथ का इशारा जैसे "आओ" ।

व्याकरणीक रूपग्राम (ग्रॅमटिकल मॉरफीमस्) – यह ऐसे शब्दों के लिये है जो शब्द के अंत में प्रयोग होता है । जिससे अर्थ बदलता है या विशिष्ट हो जाता है ।

श्रवण (हियरिंग) – कान द्वारा ध्वनि को प्राप्त करना और केंद्रीयनस प्रणाली (सेंट्रल नर्बस सिस्टम) को संचारित करना ।

श्रवण जांच/(हियरिंग स्क्रिनिंग)– यह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कुछ परिक्षण किये जाते हैं या प्रश्न पूछे जाते है जिससे श्रवण दोष वाला व्यक्ति पहचाना जाता है ।

स्वतः शब्द (इडियोमॉर्फ) – स्व शब्द बच्चे द्वारा स्वयं बनाये गये शब्द या ध्वनि तरीका जो विशेष संदर्भ में किया जाता है, वयस्क जैसे शब्द सीखने के पहले ।

वाक् स्पष्टता (इंटेलिजिब्लिटी)	– यह वाक् की स्पष्टता है अर्थात् श्रोता द्वारा एक वाक्य को अप्रभावित रूप से समझना।
बुद्धि लब्धि (आईक्यु)	– बुद्धि लब्धि का संक्षिप्त रूप है, जो बौद्धिक स्थिति का परिमाणात्मक अनुमान है ।
भाषा (लैंगवेज)	– यह एक ऐच्छिक चिह्नों का सेट है जो एक समूह के व्यक्तियों के लिये सामान्य है, जो नियमित रूप से आवश्यकताओं विचारों, मनोभावों के संप्रेषण के लिये प्रयुक्त होता है ।
भाषा और संप्रेषण अंतराक्षेपण– (लैंग्वेज एण्ड कम्युनिकेशन इंटर्वेन्शन)	यह एक जानबुझकर किया गया प्रयास है, जिस में वातावरण की पुनः स्थापना होती है । इसका मुख्य उद्देश्य है बच्चे में संप्रेषण के लिये इच्छा उत्पन्न करना और उसको पूरी करने के लिये पद्धति को सीखना ।
सुनना (लिसनिंग)	– अर्थ समझाने के उद्येश्य से ध्वनि को श्रवण करने की प्रक्रिया है।
रूपग्राम (मार्फोलोजी)	– भाषा के घटक, जो शब्द और उसके अर्थपूर्ण घटकों का अध्ययन करता है ।
नामिक शब्द (नॉमिनल्स)	– ऐसे शब्द जो वस्तु या व्यक्तियों के नाम (संज्ञा) के लिये हैं जैसे–मेज, कुर्सी, माँ
संज्ञा परिवर्तक (नाउन मार्डीफायर्स)	– ऐसे शब्द जो वस्तुओं या व्यक्तियों के नाम को बढ़ाते या विशेष अर्थ देते है (गुणवाचक) जैसे – उँचा आदमी, बड़ा दरवाजा ।
संवहन (रिसोनेंन्स)	– प्रवर्धन (सेलेक्टिव एम्प्लीफिकेशन) प्रक्रिया है ।
स्वयं बात (सेल्फ टॉक)	– ऐसी पद्धति है जिसमें वह स्वयं क्या कर रहा या कर रही है या श्रोता का अनुभव क्या है इसका आखों देखा हाल सुनाना ।
अर्थ विज्ञान (सिमैंटिक्स)	– यह भाषा का अंग है जिसमें अर्थ और उसके विकास का अध्ययन है ।

अर्थ आशय (सिमैंटिक इंटेन्शन्स) – निर्दिष्ट अर्थ ।

अर्थ संबंधी (सिमैंटिक रिलेशन्स) – बच्चे के दो शब्द संयोजन के स्तर के समय मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा अर्थ निर्दिष्ट करना ।

वाक् (स्पीच) – वाक् मौखिक चिह्नों से प्रयुक्त भाषा की अभिव्यक्ति की एक प्रमुख पद्धति है ।

प्याजेट गॉर्मन संकेत पद्धति – इस संकेत पद्धति में बोलचाल की अंग्रेजी को सांकेतिक रूप में दिखाया जाता है । ये संकेत कुछ विशेष हाथ संकेतों पर और परिवर्तन द्वारा पूर्नबलित होते हैं या आधारित होते है ।

तालू (पैलेट) – यह मुँह की छत है, जिसके 2 भाग हैं, सामने के कठिन भाग को कठिन तालू और पीछे के कोमल भाग को कोमल तालू कहते हैं।

पैरलल टॉक – ऐसी पद्धति है जिसमें एक माडॅलमें श्रोता और दूसरे क्या बात कर रहे हैं और अनुभव कर रहे हैं इसका आंखों देखा हाल देता है।

वाणी उत्पादन (फोनेशन) – स्वरयंत्र (लैरिग्स) द्वारा ध्वनि उत्पादन की प्रक्रिया ।

स्वनीम विज्ञान (फॉनौलॉजी) – एक भाषा के स्वाभाविक वक्ता द्वारा प्रयुक्त वाक्ध्वनि की पद्धति का अध्ययन ।

अर्थक्रिया विज्ञान (प्रॉग्मैटिक्स) – भाषा के घटक है, जो एक सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग के नियमों को प्रस्तुत करता है ।

सर्वनाम (प्रोनाउन) – वाक्य में नाम के स्थान पर प्रयुक्त शब्द जैसे, मैं, वह, वे ।

वाक् चिकित्सा विज्ञान (स्पीच पैथॉलाजी) – व्यक्ति के निदान और इलाज के उद्देश्य के लिये वाक् और भाषा की अव्यवस्था का अध्ययन है, इस क्षेत्र के व्यावसायिकों को वाक् चिकित्सक (स्पीच पेथोलॉजिस्ट) के नाम से जाना जाता है ।

उप खंडीय विशेषतायें (सुप्रा सेगमेंटल फीचर्स)	– भाषा की स्वर या ताल विशेषता जैसे स्वर विन्यास और जोर आदि वाक्य पर लागू करना ।
वाक्य विन्यास (सिन्टेंक्स)	– भाषा के घटक जो शब्द क्रम और शब्दों के बीच के संबंध का अध्ययन करता है । सामान्यतः व्याकरण के नाम से जाना जाता है ।
तार जैसे वाक्य (टेलीग्राफिग सेंटेंस)	– जिसमें केवल विषयों (कटेंट) शब्दों का प्रयोग होता है और कार्य (फंक्शन) शब्दों को निकाला जाता है ।
टंग टाई	– जिसमें जीभ का अग्रभाग मुँह के नीचे लटकता है, जो सामान्य स्थिति से ज्यादा है और इससे जीभ के अग्रभाग को उठाना कठिन होता है।
रूपांतरण	– यह व्याकरणिक प्रक्रिया है जिसमें कुछ वक्तव्य जैसे वाक्य इन्कार, प्रश्न, और अन्य रूप में परिवर्तित किये जाते हैं ।
प्रयोग (युजेस)	– यह भाषा का "क्यों," "कब" और "कहाँ" है यह अर्थ क्रिया विज्ञानिक या सामाजिक विनिमय आयाम है ।
क्रिया परिवर्तक (वर्ब मॉडिफायर्स)	– यह क्रिया विशेषण और उपसर्ग जैसे शब्द है जो क्रिया शब्दों का गुण निश्चित करते हैं । जैसे तेजी से दौड़ो ।

संदर्भ - ग्रंथ - सूची

1. एडलर सोल, इटि.एल. (1980) ॲन इंटर डिसिप्लिनरी लैंगवेज इंटरवेंशन प्रोग्राम फॉर द मॉडरेटली टू प्रो फाउंडली लैंगवेज रिटार्डेड चाइल्ड, ग्रून एंड स्ट्रटोन, इनक्यु, न्यूयॉर्क।

2. ब्लूम, एल,एंड लेही, एम. (1978) लैंगवेज डेवल्पमेन्ट एंड लैंगवेज डिसआर्डर्स, जॉन विले एंड सन्स. एनवाय ।

3. बोचनर, एस, इटि, एल, (1984) लर्निंग टू टॉक: अ प्रोग्राम फॉर हेल्पिंग लैंगवेज डिलेड चिल्ड्रन अक्वायर अर्ली लैंगवेज स्कील्स स्पेशल एजुकेशन सेंटर, मेक्युरिया युनिवर्सिटी, नॉर्थ राईड, सिडनी ।

4. बोस; एस (1989) ऑगमेंनटेटिव कम्युनिकेशन – इटस् स्टेटस् एंड स्कोप इन द एडुकेशन ऑफ डेफ पर्नन्स इन इंडया, प्रोसिडिगस ऑफ द फर्स्ट आइजक रिजनल कॉन्फरन्स इन इंडिया ।

5. केरन्स, एस, एंड पिटर्स, एम. (1984) टी.ई.एल. एल; अ कम्युनिकेशन प्रोग्राम फॉर चिल्ड्रन हू ॲट रिस्क फॉर लैंगवेज डिले (3र्थ एडि.) स्पेशल एडूकेशन सेंटर, मेक्वेरिया युनिवर्सिटी, नॉर्थ राईड, सिडनी ।

6. कॉरो उल, फोक ई. आई. एंड लिंच, जे आई, (1982) – ॲन इंटिग्रेटिव अप्रोच टू लैंगवेज डिसआर्डर्स इन चिल्ड्रन, ग्रून एंड स्ट्रॅटन, इनक्यू – लंडन ।

7. कूप, जे एंड गोल्डबर्ट, जे (एडिशन) (1988) कम्युनिकेशन बिफोर स्पीच नॉर्मल डेवलपमेंट अंड इम्पेअर्ड कम्युनिकेशन, ग्रूम हेल्म पब्लि, केंट ।

8. क्रिस्टल डेविड (1987) द केम्ब्रीज इन साइक्लेपिडिया ऑफ लैंगवेज, केम्ब्रिज युनिवर्सिटी, प्रेस ।

9. एमरिक, एल, एल, एंड हेन्स, डब्लू.डी, (1986) डायगनोसिस अँड इव्यालूयेशन इन स्पीच पैथोलोजी (3र्ड एडिशन), प्रेन्टिस हॉल, इनक्लू एन. जे ।

10. फ्लेचर, जी, एंड गार्मन, एम (एडि) (1986) लैंगवेज अक्वेजिशन इन फर्स्ट लैंगवेज डेवलपमेंट (सकेंड एडिशन) कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, केम्ब्रिज ।

11. ग्लिसन, बी.जे, (1989) द डेवलपमेंट ऑफ लैंगवेज, मेरिल्ल पब्लिशिंग कंपनी ।

12. ग्रूंडी, कीम (1989) लिंगविस्टीक्स इन क्लिनिकल प्रॅक्टिस्, टेलर एंड फ्रांसिस, लंडन ।

13. हैंडबुक फॉर द ट्रेनर्स ऑफ द मेटली रिटार्डेड पर्सन्स–प्री– प्रायमरी लेवल, एन.आई.एम.एच (1989) ।

हिक्सन – टी.जे. श्रीबर्ग लैरेंस डी, एंड सेक्समेन जॉन, एच, (एडिसन) (1980) इंट्रोडक्शन टू कम्युनिकेशन डिसऑडर्स, प्रेन्टिस हॉल, इनक्लू – एन. जे. ।

15. जोन्स पी.आर. एंड क्रिगन, ए. (1986) साइन एंड सिम्बल कम्युनिकेशन फॉर मेंटली हैंडिकैप पीपूल, क्रूम हेल्म, लंडन (1986)

16. कौल सुधा, अ पर्सनल कम्युनिकेशन डेटेड (1991)

17. केरन ा, सी, रेल, बी. एंड गोल्ड बर्ट, जे; (1987) फाउंडेशन्स, ऑफ कम्युनिकेशन अंड लैंगवेज; अ कोर्स मेन्युअल (फोकल), मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस ।

18. कॉस्ि क, डी, जॉर्ज, मिट्टर, ए, एंड कृष्णमूति, बी.एच, (1987) अ शॉर्ट आऊट लाईन ऑफ तेलुगु फोनटिक्स, इंडियन स्टॅटिस्टिकल, इन्स्टिटयूट, कलकत्ता ।

19. मेकोहं न लिंडा, फ्रेड्रिक्स बड़ एच.डी,इटि.एल. (1985) टिचिंग एक्सप्रेसिव एंड रिसिप्टिव लैंगवेज टू स्टूडेंटस विद मॉडरेट अंड सर्व हैड्रिकैप्स, प्रो. एड, ऑस्टिन, टेक्सास (1985) ।

20. मॅक ार्मिक, एल, एंड शैफल बुश्च, आर.एल. अर्ली लैंगवेज इंटरवेंशन, इन्ट्रोडक्शन, चार्लस, सी, मेरिल पब्लि, कंपनी, (1984) ।

21. मॅक ि वर्न, ए.बी, रिफ, एल.एल. अंड वेंडर, बी.एफ, (1978) लैंगवेड स्टोरिस, द जॉन देव कंपनी. नई दिल्ली ।

22. मेंटल रेटार्डेशन : अ मैन्युअल फॉर गाइडेंस कैसिलर्स, एन.आई.एम.एच. 1989 ।

23. मेंटल रिटार्डेशन : अ मैन्युअल फॉर साईकोलॉजिस्ट, एन.आई.एम.एच 1989 ।

24. रिच, पी.ए (1986) लैंगवेज डेवलपमेंट, प्रेन्टिस हॉल, एन.जे. ।

25. शेफल बुश्च, आर.एल. (1980) नॉन स्पीच लैंगवेज ॲड कम्युनिकेशन ; ॲनलसिस अंड इंटरवेशन, यूनिवर्सिटी पार्क प्रेस बल्टि मोर,

6. स्नो, सी.एन. (1989) लैंगवेज डेवलपमेंट इन इनफैंट डेवलपमेंट, प्रेन्टिस हॉल, एन.जे ।

7. स्निडर मैकलिन, एल, सोलोमन, बी. मॅकलिन, जे, अंड सॅक्स एस. (1984) स्ट्रक्चरिंग जॉईंट अक्शन रूटिन्स, अ स्ट्रॅटजी फॉर फेसिलिटेटिंग कम्युनिकेशन अंड लैंगवेज डेवलपमेंट इन द क्लास रूम, सेमिनारस् इन स्पीच एंड लैंगवेज, 5, थेम स्ट्रॅटन, न्यूयॉर्क ।

28. सुब्बा राव. टी. ए.-एंड श्रीनिवास, एन.सी. (1989) स्पीच एंड लैंगवेज डेफिसिट्स अंड मेंटल रिडार्डेशन – अ रिपोर्ट ऑन द ॲनलॅसिस ऑफ 300 मेंटली रिटार्डेड पर्नन्स, आई.जे.डी.आर. जुलाई 1989, 31–43 ।

29. अपडेप इन मेंटल रिटार्डेशन; मेटेरियल फॉर थर्ड रिफ्रेशर कोर्स, 1989, एन.आई.एम.एच.

30. वेल्लीटूट्टी, पी.जे. एंड बेंडर, एम. (1976), टिचिंग द मॉडरेटली एंड सिवियरली हैंडिकैप, करीकुलम ऑब्जेक्टिवस् स्ट्रॅटजीस अंड ॲक्टिविटिज; वोल्युम 2; कम्युनिकेशन अंड सोशलाइजेशन ।

31. वेंडर हैडन, जी.सी. ॲड ग्रिल्ली, के. (1976) नॉन वर्बल कम्युनिकेशन टेकनिक्स् अंड एड्स फॉर द सिवियरली फिजिकली हैंडिकैप, युनिवर्सिटी. पार्क प्रेस, बाल्टीमोर ।

32. वैन राइपर चार्लस एंड एमरिक, स्पीच करेक्शन, (1990) ॲन इंन्ट्रोडक्शन टू स्पीच पैथोलोजी एंड ऑडियोलोजी, प्रेन्टिस हाल, एन.जे.

33. विज् सी.ई. एंड लिल्ली व्हाईट, एच. एस. (1976), कम्युनिकेशन डिसऑडर्स – अ हैंडबुक फॉर प्रिवेंनशन ॲंड अली इंटरवेन्शन, द सी.वी. मोस्ली कैंप, सेंट, लुईस (1976)

34. विम्निट्ज, हैरिस (एडि) (1983) ट्रिटिंग लैंगवेज डिसआर्डर्स, फॉर क्लिनिशियन्स बाय क्लिनिशियन्स, युनिवर्सिटी – पार्क प्रेस, बाल्टीमोर (1983) ।

अतिरिक्त पुस्तकों की सूची

1. मेटल रिटार्डेशन – अ मॅन्युअल फॉर गाइडेंस कौंसलर्स, एन.आई.एम.एच. (1989) (प्रथम अध्याय के लिये)

2. मेटल रिटार्डेशन – अ मॅन्युअल फॉर साईकॉलोजिस्ट, एन.आई. एम.एच. (1989) (प्रथम अध्याय के लिये)

3. केरनॅन, सी, रेल,बी, एँड गोल्ड बर्ट जे, : (1987) फाउडेशन्स, ऑफ कम्युनिकेशन एंड लैंगवेज : अ कोर्स मॅन्युअल; मॅनचेस्टर युनिवर्सिटी प्रेस, (दूसरे और सातवें अध्याय के लिये, सीखाने की नीतियाँ)

4. विनिट्ज, एच. (एड़) (1983) ट्रिटिंग लैंगवेज डिसऑर्डस फॉर क्लिनिशियन्स, बाय क्लिनिशयन्स, युनिवर्सिटी पार्क प्रेस, बाटलीमोर

5. वेनराइपर, सी एंड एमरिक, एल. (1990) स्पीच करेक्शन; ॲन इंन्ट्रोडक्शन टू स्पीच पैथोलॉजी एंड ऑडियॉलोजी, प्रेंटिस हाल, एन.जे.

6. रौच, पी.ए (1986) लैंगवेज डेवलमेंट, प्रेन्टिस हॉल, एन.जे.

7. कॉस्टीक, डी, मीट्टर, ए, अँड कृष्णमूर्ति, बी. एच. (1977) अ शॉर्ट आउट लाइन ऑफ तेलुगु फोनटिक्स, इंडियन स्टॅटिस्टिकल इनिस्टट्यूट, कलकत्ता ।

8. जोन्स, पी.आर. एंड क्रिगन, ए., (1986) साइन्स अँड सिम्बल कम्युनिकेशन फॉर मेंटली हैंडिकैप पीपल, कूम हेल्स, लंदन ।

9. हिक्सन, टी, श्रीबर्ग, जे.एल, अँड सेक्समैन, एच, (एडि) (1980) इन्ट्रॉडक्शन टू कम्युनिकेशन डिसआर्डस, प्रेन्टिस हॉल, इनक्लू एन. जे.

10. कैरो–उल फोक, ई. आई. अँड लिंच, जे आई. (1982) ॲन इंटिग्रेटिव ॲप्रोच टू लैंगवेज डिसऑर्डस् इन चिल्ड्रन, ग्रून अँड स्ट्रॅलटन, इनक्लू – लंदन ।

11. इमरिक, एल.एल. हेन्स, डब्लू.सी. (1986) डायगनोसिस एंड इव्यालूयेशन इन स्पीच पैथोलोजी (3 रा एड़) प्रेन्टिस हॉल, इनक्लू, एन. जे ।